इतिहास रो साच

(अभिलेखां पर आधारित शोध-आलेख)

डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा

आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध-संस्थान
(आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान, गंगाशहर रो प्रकल्प)

आंशिक अर्थ-सहयोग :

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर

पैलो संस्करण : 2002

मोल : सामान्य संस्करण 30 रिपिया
पुस्तकालय संस्करण 80 रिपिया

आवरण : शंकरसिंह राजपुरोहित, छाया : दिनेश गहलोत
प्रकाशक : आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध-संस्थान
आचार्य तुलसी समाधि-स्थल,
नोखा रोड, गंगाशहर-334401 (बीकानेर) ✆ 270396
मुद्रक : कल्याणी प्रिंटर्स, माल गोदाम रोड, बीकानेर ✆ 526890
टाइप सैटिंग : मंगल कम्प्यूटर आर्ट, बीकानेर ✆ 530571

[illegible] (Essay) by Dr Girija Shankar Sharma Rs. 30.00 (P.B.), 80.00 (H.B.)

समर्पण

हेत-हिंवळास सूं हळाबोळ
अर
ममता रा मूरत
मा'सा धनदेवीजी री
पावन-स्मृति में सादर समर्पित

आशीर्वचन

सिवाणची मालाणी केन्द्र
(बालोतरा)
20 मार्च, 2002

अर्हम्

डा. गिरिजा शंकर शर्मा अभिलेखां रै आधार पर इतिहास रै साच नैं सांमी ल्याया है। इतिहास री बहुत सारी बातां काळ री पोथी में ही छिपी रह ज्यावै। बांनै वांचणिया थोड़ा ही आदमी हुवै। डॉ. शर्मा बीं काळ री पोथी रा कुछ पन्ना पढणै री चेष्टा करी। जिज्ञासु पाठकां रै वास्तै उपयोगी निवड़सी।

पं. विद्याधरजी शास्त्री तेरापंथ धर्मसंघ, आचार्य तुलसी और म्हारै भी बहुत निकट रैया। उणांरै ही सुपुत्र डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा री पोथी आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध-संस्थान छपावै, आ बहुत ही प्रासंगिक बात है। ईं स्यूं पाठकां नैं बहुत सारी नई जाणकारियां मिलसी और इतिहास रो साच बोल र जन-जन रै सामनै आवैला।

मंगळ-भावना।

आचार्य महाप्रज्ञ

अंतस रा आखर

पच्चीस बरसां पैली म्हारै विभाग रा सैयोगी अर मातृभाषा रा हिमायती डॉ. सत्यनारायण स्वामी, राजस्थानी भाषा मांय लिखण सारू म्हनैं प्रेरित कर्‌यो। उण बगत म्हैं खालस राजस्थान रै सामाजिक अर आर्थिक इतिहास रो लेखन राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर मांय उपलब्ध दस्तावेजी स्रोतां रै आधार माथै कर रह्यो हो। आं दस्तावेजां मांय म्हनैं जिकी घटनावां रोचक अर अछूती रह्योड़ी लागी, उणां पर विना किणीं लाग-लपेट रै म्हारै घरां बोलीजण आळी राजस्थानी भाषा में लिखणो सरू कर्‌यो। इण सारू अभिलेखागार रै शोध अर संदर्भ कक्ष सूं म्हनै मोकळी सामग्री मिली।

उणीं बगत म्हारो सम्पर्क राजस्थानी भाषा में छपण आळी मासिक पत्रिका 'माणक' रा उप-सम्पादक डॉ. नृसिंहजी राजपुरोहित सूं हुयो। राजपुरोहितजी म्हारी इसी पंदरैक रचनावां इण पत्रिका रै नियमित स्तंभ 'इतिहास रै झरोखै' में लगोलग छाप दीवी। इणसूं नीं फगत राजस्थानी लिखण में म्हैं अभ्यस्त हुयो बल्कै इतिहास रा उपेक्षित पात्रां अर घटनावां नैं उजास में लावण री म्हारी हूंस भी बधती गयी। तापछै तो राजस्थानी भाषा री दूजी पत्र-पत्रिकावां भी म्हारा शोध विषयक आलेख छापणा सरू कर दिया।

आज आ बात म्है आछी तरयां जाणूं हूं कै अबार ताईं राजस्थानी रा पाठक, राजस्थान रै इतिहास री शोधपरक रचनावां नैं पढण मांय पूरी रुचि नीं लेवै। पण आं ईज रचनावां रै हळकै-फुळकै सरूप नैं बख-पड़्यां पढ ई लेवै है। इण बात नैं दीठ में राखनै इण पोथी मांय म्हैं सगळी रचनावां रै शोध-संदर्भा नैं हटाय लिया है। इण पछै भी आं रचनावां मांय भाषागत ऊंच-नीच तो रैय सकै है पण तथ्यगत चूक नीं रै बरोबर रैवण रो म्हनैं पूरो भरोसो है।

आं रचनावां नैं पोथी रूप में छपावण सारू राजस्थानी भाषा रा हिमायती अर चावा समालोचक डॉ. किरणचन्द नाहटा खासै समै सूं जोर देय रह्या हा। संजोग सूं राजस्थानी अकादमी रा उपसचिव श्री पृथ्वीराज रतनू ई प्रकाशन सहयोग सारू म्हनैं पाण्डुलिपि देवण रो कह्यो। इण भान्त पोथी नैं छपावण में अकादमी कानीं सूं जिको थोड़ो अर्थ-सैयोग मिल्यो है, उण सारू अकादमी रो घणो आभार मानूं। आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान, गंगाशहर रै प्रकल्प आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध संस्थान सूं आ पोथी छपणी म्हारै सारू अंजस री बात है। इण सारू प्रतिष्ठान रा अध्यक्ष श्री मूळचन्द बोथरा अर मंत्री श्री सोहनलाल बैद रो घणैमान सूं आभार जका कै इण पोथी नैं प्रतिष्ठान खातर अेक उपलब्धि मानै। इण मौकै म्हारा बडा भाईसा डॉ. दिवाकर शर्मा अर प्रोफेसर मकरध्वज शर्मा, जिणां रो आशीर्वाद म्हनैं सिरजण री प्रेरणा देंवतो रह्यो है, उणांनै अर म्हारा सैंधा-अणसैंधा सगळा हिमायत्यां नैं निंवण !

गिरिजा शंकर शर्मा

प्रकाशकीय

आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध-संस्थान रो उद्देश्य राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति री सांवठी ओळखाण करावण सारू किणी भी महताऊ विषय री पाण्डुलिपि नैं उजास में लावणो है। इण दीठ सूं 'इतिहास रो साच' पोथी रो प्रकाशन संस्थान सारू अेक उपलब्धि मान्यो जाय सकै। अैतिहासिक दस्तावेजां पर आधारित डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा रै आलेखां रो औ संकलन राजस्थानी शोध-जगत सारू घणो महताऊ है। इण सूं पैलां शोध-संस्थान श्रीमद् जयाचार्यजी रै 'उपदेश-रत्न कथाकोश' रो पैलो खण्ड छाप चुक्यो है। अेक बरस रै बिचाळै संस्थान री राजस्थानी ग्रंथमाळा रो औ दूजो पुष्प आपरै हाथां सूपतां घणो हरख अर अंजस हुवै।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार में उप निदेशक रै पद सूं सेवानिवृत्त शोध-अध्येता डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा रै शोध-आलेखां रो औ दस्तावेजी संकलन राजस्थान रै इतिहास नै नूंवी दीठ सूं समझण-परखण रो प्रयास है।

आज भारतीय इतिहास रै सरूप रो इत्तो ज्यादा विस्तार हुयग्यो है कै उण रो क्रमबद्ध अर विगतवार लेखन अबखो काम है। इतिहास रो औ विस्तारित सरूप समाज रै हरेक अंग नैं आपरी परिधि मांय संवेटण री खिमता राखै। इण दीठ सूं इणरै भावी विगसाव में क्षेत्रीय भाषावां रै साथै समाजू जनजीवण सूं जुड़्योड़ी बातां अर घटनावां रै दस्तावेजी सबूतां रै महत्त्व नैं आंख्यां अदीठ कोनीं कर सकां। 'इतिहास रो साच' रा महताऊ आलेख इण दीठ सूं घणा उपयोगी साबित हुवैला।

इण पोथी नैं आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध-संस्थान सूं छपावण री स्वीकृति सारू डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा रो आभार मानां। म्हांनैं भरोसो है कै इण पोथी री रचनावां राजस्थानी रा सुधी पाठकां री पसन्द पर खरी उतरसी।

सोहनलाल बैद
मंत्री

मूळचन्द बोथरा
अध्यक्ष

आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान, गंगाशहर

साख रा सबद

जठै तांई अकादमिक 'थर्स्ट' री बात है, भारतीय इतिहास-लेखन में मोकळा बदळाव आया है। आजादी री लड़ाई सूं लेयनै देस री आजादी मिलण रै पछै घणकरा बरसां रै लांबै आंतरै में इतिहासकार रो 'जनरल' इतिहास लिखण रो अेक खास चाव अर झुकाव रैयो है। इण रो औ अरथ नीं है कै क्षेत्रीय इतिहास सिरै सूं ई नीं लिखीज्यो, लिखीज्यो पण नमूनै भान्त। लारलै मोकळै बरसां सूं क्षेत्रीय इतिहास लिखण रो अेक सांतरो अर लगूलग 'ट्रेंड' बिगस्यो है जाणै 'जनरल' इतिहास री प्रतिक्रिया सरूप।

इतिहास-लेखन में अेक दूजो विगसाव भी सांमी आयो है जिकै नैं 'माइक्रो लेवल्ड' भणत कैयनै पुकारै जिका में स्थान अर थीम दोनूं भेळा है। इण तरै रै इतिहास री मूळ खाद हुवै दस्तावेज अर अै दस्तावेज ही हुवै इण इतिहास रो मूळ आधार। पण दस्तावेज खुदोखुद नीं बोलै। वै तो भण्या अर अणभण्या खातर हुवै अेक कोरो कागद। उणनैं बोलावण सारू जरूरी हुवै उणमें लिख्योड़ी लिपि रो ज्ञान अर अेक खास पारखी निजर। दस्तावेज उणसूं खुलनै बात करै। जिकै हाथ री परस नै बै जाणै, उणरी सौरम नैं पिछाणै। दूजै सबदां में दस्तावेजां रो पारखी-तपस्वी ही उणां नै गुदगुदा'र मोकळी बातां कैवाय सकै।

अभिलेखागार, बीकानेर में अंवेरयोड़ा लाखूंलाख भान्त-भान्त रा दस्तावेज हुवो चावै सेठ-साहूकारां रा वसता-बुगचियां री बहियां अर चावै जैन मुनियां रा रच्योड़ा ग्रंथ हुवो, जे बै सगळा किणीं अेक हाथ री परस नैं पिछाणै तो बै है दस्तावेजी पारखी-तपस्वी डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा रा हाथ। आ संजोग री बात है कै अै सगळा ही दस्तावेज इतिहास रै बदळतै विगसाव रा मूळ अर महताऊ स्रोत है। खासकर बीकानेर अभिलेखागार में अेक लांबै समै तक उठै राजस्थान री विभिन्न रियासतां री मोकळी पुराणी बहियां अर तोजियां सूं बंतळ करतां शर्माजी नैं म्हैं खुद देख्या है। दस्तावेजां सूं लगूलग डायलॉग रो फळ है उणां रो इतिहास जगत रो नांमी ग्रंथ 'मारवाड़ी व्यापारी' जिकै इतिहास-लेखन में अेक नूंवी लीक पाड़ी।

दस्तावेजां सूं शोधार्थियां री जाण-पिछाण करावणी डॉ. शर्मा री खास आदत रैयी है। बहियां सूं म्हारी मुलाकात भी उणां री मेहरबानी सूं ईज हुई। म्हारो ई नीं, जापानी इतिहासकार प्रो. मासानोरी सातो जिसा घणकरा देसी-विदेसी इतिहासकार दस्तावेज सूं आंमी-सांमी करावण सारू शर्माजी रा हमेस ई गुण गांवता रैवै। दस्तावेज खुदगर्ज अर अंतर्मुखी नीं हुवै। जिका लोग अर विद्वान उणां सूं साचै मन सूं मेळ-मिलाप राखै अर लगूलग बंतळ करता रैवै उणांरै सांमी बै आपरो सगळो अंतस खोलनै दिखाय देवै। डॉ. शर्मा इण दस्तावेजां रै अंतस री गैराई सूं रंग-बिरंगा मोती काढनै आपरी 'क्राफ्ट' रै सागै आपरी पोथी 'इतिहास रो साच' में आपांरै सांमी अंवेरनै राख दिया है। इण सूं पैलां इण भान्त री शोध सामग्री नैं उजास में लावण सारू डॉ.

शर्मा राष्ट्रीय अर अंतरराष्ट्रीय सेमिनारां में राजस्थान रै विभिन्न पखां रै शोध-संदर्भां नैं लेयनै कई पत्रवाचन करया अर उणांनै छपवाया। देस री नामी-गिरामी शोध-पत्रिकावां में आपरा अभिलेख स्रोतां माथै छप्योड़ा शोधपरक आलेख इतिहास जगत में खासी सम्मानित दीठ सूं देख्या जावै है। राजस्थान रै आर्थिक, विशेष रूप सूं व्यापारिक इतिहास रा तो आप अेक आधिकारिक अध्येता रैया ही है, राजस्थान रै स्वतंत्रता आन्दोलन रै शोध में भी आपरो सांतरो दखल रैयो है। साथै ही राजस्थानी भाषा सूं भी आपरो सांतरो लगाव रैयो है। राजस्थान अभिलेखागार सूं प्रकाशित 'देसदर्पण' (दयालदास) अर कूर्मविलास (कवि चन्द) जिसा महताऊ अैतिहासिक ग्रंथां रा सम्पादकीय लिखनै अर मारवाड़ी भाषा री हजार रै अेडैगेडै बहियां रो विगतवार सूचीकरण रै साथै उणा में प्रयुक्त हुवण आळी मारवाड़ी भाषा री राजस्व सम्बन्धी शब्दावळी री व्याख्या करनै डॉ. शर्मा राजस्थानी शोध-जगत में आपरी निरवाळी पैठ बणाई है।

डॉ. टैस्सीटोरी पर राजस्थानी भाषा में ई लिख्योड़ा आपरा चार शोध-पत्रां सूं प्रभावित हुयनै इटली री 'सोसाइटिया इण्डोलोजिका लूईजी पीओ टैस्सीटोरी' संस्था उदीनै (इटली) रै पछै जद भारत मांय डॉ. टैस्सीटोरी माथै दूजी 'इंटरनेशनल कांफ्रेंस' आयोजित करी तो उणरै अन्तिम सत्र री अध्यक्षता वास्तै आपनैं मनोनीत करयो हो।

'इतिहास रो साच' नांव री इण पोथी रै मांय राजस्थानी भाषा रै पाठकां में जिज्ञासा अर रोचकता पैदा करण आळी चाळीस रचनावां सांमै राखीजी है। अै रचनावां किणी खास उद्देश्य अर विषय नैं लेयनै तो लिख्योड़ी कोनीं पण लेखक पाठकां री सुविधा सारू सगळी रचनावां नै इण भान्त विषयवार बांट दी है जिणसूं पाठक नै आपरी रुचि आळी रचना रै चयन मांय दिक्कत नीं आवै। विषयगत इण विभाजन रै पैलै खंड 'आजादी री अलख' री रचनावा मांय राजस्थान में सन् 1857 सूं 1949 तांई स्वतंत्रता आन्दोलन रै दौरान जिकी महत्वपूर्ण घटनावां घटी पण इतिहास में उणां रो समुचित मूल्यांकन नीं हो सक्यो, उणां नैं उजास में लावण रो खेचळ करीजी है। दूजै खंड 'सत्याग्रह री जूनी परम्परा' शीर्षक रा आलेखां मांय 18वीं अर 19वीं सदी में राजस्थान मांय व्यापारियां अर बुद्धिजीवियां में प्रचलित सत्याग्रह रै सरूप रो वर्णन है। इणीं भान्त 'अभिलेखां री अंवेर' मांय अभिलेख संरक्षण री परम्परावां नैं केन्द्र मे राखीजी है। चौथै खंड 'संस्कृति री संभाळ' मांय राजस्थानी संस्कृति रै विभिन्न अैतिहासिक पखां अर परम्परावां नैं उजागर करता आलेख दिरीज्या है। इण मांय साम्प्रदायिक सद्भाव अर पर्यावरण संरक्षण सूं सम्बन्धित रचनावां नै ई स्थान दिरीज्यो है।

पांचवै खंड '...ज्यारा साहित जगमगै' में राजस्थानी भाषा अर उणरै पुराणै साहित्य रै विभिन्न पखां नैं उकेरती रचनावां भेळीजी है। 'इतिहास रै झरोखै : बीकानेर' खंड में बीकानेर नगर रै विगसाव रा चौतरफा चितरामां रै साथै अठै री स्थापत्य कला,

भित्ति-चित्र परम्परा, संस्कृति रा संवाहक अठै रा सेठ-साहूकार, वीर-जोद्धा अर आम-आदमी रै सामाजिक, धार्मिक अर आर्थिक पखां नैं तथ्यात्मक बातां रै पाण सांगोपांग ढंग सूं सांमी राखीज्या है। इणीं भान्त 'हाल डॉ. टैस्सीटोरी रो' शीर्षक हेठळ दिरीज्या चार आलेखां में इटालियन विद्वान डॉ. लूईजी पीओ टैस्सीटोरी रै जीवण, उणांरै शोधकार्य अर उणां रै सर्वेक्षण में सैयोगी रैया लोगां री अपणायत माथै घणी सिद्दत रै साथै विवरण दिरीज्यो है। पोथी रो आखरी खंड 'इतिहास रा कागद' री रचनावां मिरग री नाभि में छिपियोड़ी किस्तूरी री दांई है, जिकी छोटी हुवतां थकां ई रोचक-रंजक अर घणमोली है।

जद्यपि आं रचनावां नैं सरस अर रोचक बणावण रै उद्देश्य सूं आंरा शोध-संदर्भ हटाय दिया गया है। इणसूं आं रचनावां रो शोध महत्त्व कीं कम हुयो है पण राजस्थानी साहित्य नैं सिमरध अर शोधार्थियां रो मारग-दरसण करण में आंरो योगदान सदां कायम रैसी। राजस्थानी मांय इण महताऊ पोथी री रचना करनै शर्माजी मातृभाषा री मोकळी सेवा करी है जिकै खातर आवण वाळी पीढी उणां रो हमेस उपगार मानैला।

प्रोफेसर, राजस्थान इतिहास,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ

-डॉ. भंवर भादाणी

पुरोवाक्

'इतिहास रो साच' डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा प्रणीत विविध शोधपरक आलेखां री पोथी है। इण पोथी रो सीधो-सीधो सम्बन्ध इतिहास सूं है, इण खातर आगै थोड़ी-सी चरचा इतिहास नैं लेय'र करल्यां। इतिहास रो सम्बन्ध काल सूं अर काल सतत-प्रवाही। यूं सुविधा री दीठ सूं अतीत, वर्तमान अर अनागत-- उण रा तीन भेद करीजै पण तीनूं अेक-दूजै सूं गूंथीज्योड़ा। आं तीनां रै विचाळै वर्तमान ऊभो है, अतीत अर अनागत दोनूवां रो अेक-अेक हाथ झाल्योड़ो। जे वर्तमान नैं सावळसर जाणणो है तो आपां नैं अतीत कनै जावणो ही पड़सी अर इणी भान्त जे अनागत री झिलमिल करती झांकी रो अंदाजो लगावणो है तो भी वर्तमान नैं गहरी मींट सूं देखणो पड़सी। इण बात नै दूसरै शब्दां में यूं कैय सकां कै वर्तमान री पूठ में अतीत ऊभो है अर सांमै अनागत। जको अतीत, वर्तमान अर अनागत रै इण रिस्तै नैं जाणै बो ही खराखरी इतिहास रै साच नैं मांडण रो अधिकारी। इतिहास बाबत इण समझ रै बावजूद दो-अेक बाता भळै भी जाणबाजोग।

आं माय सूं पैली बात आ कै इतिहास में तथ्यां रो प्रस्तुतीकरण ईमानदारी रै साथै हुवणो चाहीजै। तथ्यां री तोड़-मरोड़ का बांनैं अेकांगी दीठ अर अेक पक्षीय सोच रै साथै मांडणो वाजिब कोनी। सामान्य रूप सूं तथ्यां नैं सांमी ल्यांवती वेळा इतिहासकार सूं पूरी तटस्थता री अपेक्षा करीजै; पण तटस्थता री बात रै भेळै ही कई सवाल ऊभा हुवै। कांई तथ्यां नै पूरी तरह सूं नि:संग भाव सूं मांडणो ही इतिहासकार रो दायित्व है ? कांई व्यापक सामाजिक हितां का व्यापक राष्ट्रीय हितां अथवा व्यापक मानवीय हितां रै परिपेख में इतिहासकार किणी अनिष्टकारी तथ्यां नैं नजर-अंदाज कर सकै है ? कांई 'सत्यं ब्रूयात, प्रियं ब्रूयात, मा ब्रूयात अप्रियं सत्यम्' रो नीति-वाक्य इतिहासकारां खातर भी लागू नीं हुवै है ? कांई इंयां करयां सूं बांरो इतिहास खण्डित इतिहास अथवा अेक पक्षीय इतिहास रै आरोपां सूं बच्यो रैय ज्यासी ? नि:संदेह सवाल घणो मोटो है अर इण रो अेक सर्व-सम्मत पडूत्तर हुवै ओ भी लाजमी नीं है; पण म्हारी दीठ में जे व्यापक मानवीय हितां नैं ध्यान में राखतां थकां किणी अेक अमंगळकारी का अनिष्टकारी तथ्य नै नजर-अंदाज करयो जावै तो बेजा बात कोनी। क्यूंकै तथ्य सूं मोटो सत्य हुया करै है अर कई-कई बार सूक्ष्म सत्य नैं पकड़णो घणो अबखो काम हुवै। स्थूल तथ्य री ओट में खड्यै सूक्ष्म सत्य सूं साक्षात्कार करणो हर किणी रै बस री बात कोनी। इणरै खातर दृष्टि रो खुलापण, विचारां री उदारता, भावां री उदात्तता अर लोकसंग्रही वृति री अपेक्षा हुवै। वस्तुत: अै सगळी खूबियां फकत अध्ययन सूं नीं आवै वरन् आंरै खातर अध्ययन रै भेळै ही संस्कार अर साधना री भी महती जरूरत अनुभव करीजै। जद इण दीठ सूं विचार करां तो ओ तथ सामनै आवै कै संस्कार अर शिक्षा सम्पन्न डॉ. शर्मा आपरी दीर्घकालीन साधना रै पाण विषय रो तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त

करयो है। आप लगोलग तीन दसकां ताईं राजस्थान राज्य अभिलेखागार में शोध-अध्येता रै रूप में काम करयो। इण दौरान आप हजारूं-हजारूं अभिलेखां रो गहन अध्ययन करयो। साथ-ही-साथ इण अवधि में आप राष्ट्रीय अर अन्तरराष्ट्रीय स्तर री अनेक संगोष्ठियां में भाग लेय'र आपरी प्रतिभा नैं संवारी। अैड़ी पृष्ठभूमि में रैय'र आप जको ज्ञान प्राप्त करयो उणरी अेक झलक 'इतिहास रो साच' रै आलेखां में मिलै।

'इतिहास रो साच' में कुल 40 आलेख है। आं मांय सूं घणकरा आलेखां रो आधार राजस्थान राज्य अभिलेखागार में उपलब्ध सामग्री रैयी है अर आ सामग्री भी मोटामोटी अठारवीं, उन्नीसवीं अर बीसवीं सदी रै अभिलेखां पर आधारित है। अभिलेखां पर आधारित हुवण सूं आंरी प्रामाणिकता नैं लेय'र विवाद री गुंजाइश घोत थोड़ी है। हां, विषय रै विस्तार अथवा गहराई नैं लेय'र तो भळै भी कीं सवाल खड़्या करया जा सकै है, पण इण विषय में भी इतरो तो मानणो ही पड़सी कै डॉ. शर्मा आं अभिलेखां नैं लेय'र कठै परिपूर्णता रो दावो भी तो नीं करयो है। इणरै विपरीत वै तो खुद ही विनम्र शब्दां में आ कैय रैया है कै औ तो अेक छोटो-सो प्रयास भर है। अब कोई भी अध्येता आं मांय सूं किणी अेक या अेकाधिक विषयां रो सांगोपांग अर तलस्पर्शी अध्ययन करणो चावैलो तो निश्चय ही उणनैं इतर स्रोतां री दरकार भी पड़ैला। अैड़े में सुभाविक है उण अध्ययन रै दौरान कई अेक नूंवा तथ्य अर कई अेक नूंवीं बातां भी सांमै आवैली।

यूं आं आलेखां री अेक उपलब्धि आ भी मानी जा सकै है कै आं मांय सूं मोकळा आलेख अैड़ा भी है जका कै गंभीर प्रवृत्ति रा पाठकां अर शोधार्थियां में विविध विषयां रै गहन अध्ययन री चाह जगावै। साची बात तो आ है कै डॉ. गिरिजा शंकरजी जिण व्यापक फलक माथै विविध विषयां नैं उठाया है वां मांय सूं अनेक विषयां माथै न्यारी-न्यारी पोथ्यां लिखी जा सकै है। उदाहरण रूप में राजस्थान रै स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रान्तिकारियां री भूमिका नैं लेयल्यो का मारवाड़ी समाज अर स्वतंत्रता आन्दोलन री बात नैं लेयल्यो अथवा राजस्थान अर गुजरात में दिरीजण आळा धरणा, सत्याग्रहां अर उछाळां री बात नैं लेयल्यो या कि राजस्थान रै आर्थिक इतिहास री बात नैं लेयल्यो। आं मांय सूं हरेक विषय विपुल संभावनावां सूं युक्त है। अठै इण बात री चरचा रो प्रयोजन इतरो ही है कै आ पोथी अध्येतावां रै सांमै मोकळा नै मोकळा अध्ययन क्षेत्र खोलै।

इण पोथी रा घणकरा आलेख जठै राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक अर सांस्कृतिक सन्दर्भां री दीठ सूं महताऊ बण पड़्या है बठै ही कीं अेक आलेख राजस्थानी-साहित्य रै अध्ययन री दीठ सूं भी घणा उपयोगी है। इणरै भेळै ही कीं अेक आलेख तो अैड़ा है जका कै लगभग अछूता विषयां नैं उठाया है। बानगी सरूप पुरालेखागारां अर पाण्डुलिपियां सूं जुड़्या आलेखां नैं लेय सकां हां। आं मांय भी 'पाण्डुलिपियां रो महत्त्व अर उणांरी सार-संभाळ' शीर्षक आलेख तो घणो उपयोगी है। इण आलेख में जकी महताऊ जाणकारी दिरीजी है, उण रो उपयोग राजकीय अर निजी

ग्रंथ-भण्डार दोनूं ही समान रूप सूं कर सकै है। यूं तो इण पोथी रो हरेक आलेख अपणै आप खास; पण अठै अेक-अेक रो अलग-अलग विवेचन संभव नीं, फेर भी म्हैं इण पोथी रा टैस्सीटोरी विषयक आलेखां री चरचा अलग सूं करणी चाहस्यूं। इटली रै इण मूक शोधार्थी री ज्ञानाराधना सूं जुड़्या कई अेक अछूता प्रसंगा नै पैलो बार आं आलेखां रै माध्यम सूं जन-सामान्य रै सामै लाइज्या है। इणीं भान्त जैन धर्म अर उणां री कला-साधना सांमी संकेत करण आळा आलेख भी उल्लेख करबा जोग है।

ऊपर रै विवेचन मे आपां देख्यो कै इण पोथी रा घणकरा आलेख गंभीर शोध-अध्येतावां रै काम रा है पण आम पाठकां खातर भी इणमें खासी उपयोगी अर रोचक सामग्री है। उदाहरण सरूप 'राजस्थान में चिलका डाक व्यवस्था', 'बिरछ अर पर्यावरण', 'चामचोरी', 'तीरथां रो तीरथ : कोलायत धाम', 'अेक पासवान रो प्रेम-पत्र' अर 'सांकेतिक लिपि में राजस्थानी रा दो कागद' आदि आलेखां रा नांव गिणाया जा सकै है।

संक्षेप में इतरो ही कै आ पोथी अनेक दृष्टियां सूं घणी उपयोगी है। जिंयां कै आपां जाणां, आज भी राजस्थानी भाषा में साहित्येतर विधावां में लिख्योड़ी सामग्री रो नितान्त अभाव है। जद ताईं ज्ञान-विज्ञान री आखी बातां नैं मांडण अर परोटण री खिमता किणी भाषा में नीं आवै तद ताईं बा भाषा दुनियां री दूजी-दूजी सिमरध भाषावां री पांत में ऊभी रैवण री अधिकारिणी नीं मानीजै। आज राजस्थानी भाषा-भाषियां खातर आ अेक मोटी चुनौती है अर इण चुनौती रो पडूत्तर देवण नैं धर्म, अर्थ, ज्ञान-विज्ञान आद सगळा ही क्षेत्रां रै विद्वानां नैं आगै आवणो पड़सी। राजस्थानी में इतिहास जैड़ै अछूतै विषय में लिखण री सरूआत कर'र डॉ. शर्मा इण चुनौती नैं स्वीकारी है। अन्त में इणीं विश्वास रै साथै खुद री बात नैं समाप्त करूं कै डॉ. शर्मा आगै भी बरोबर समर्पित भाव सूं राजस्थानी साहित्य भण्डार री अभिवृद्धि करता रैवैला।

वस्तुत: आ पोथी इतिहास, साहित्य, संस्कृति अर कला-प्रेमियां खातर समान रूप सूं प्रेरक अर उपादेय है।

7 ग 15, पवनपुरी (दक्षिण विस्तार)
बीकानेर-334003

-डॉ. किरण नाहटा

अनुक्रमणिका

राजस्थान रो क्रान्तिकारी आन्दोलन : महताऊ प्रसंग

भारतीय सन्दर्भ में जद राजस्थान रै क्रान्तिकारी आन्दोलन कानी निजर पसारां तो उणनैं गति देवण आळा मांय केसरीसिंह बारठ, अर्जुनलाल सेठी, गोपाळसिंह खरवा रै साथै केसरीसिंह बारठ रै छोटै भाई जोरावर सिंह अर बेटै प्रतापसिंह बारठ रो नांव ई हरावळ में निंगै आवै। लारलै पांच दसकां मांय राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर री अभिलेख सामग्री रै साथै निजु पत्र-बेवार अर संस्मरण नैं आधार बणायनै इण क्रान्तिकारियां माथै खासी सामग्री छपी है। इणरै अलावा मोकळा शोध-प्रबन्ध भी प्रकाश में आया है। इण भान्त रै घणकरै लेखन में आं क्रान्तिकारियां रै बारै में खासी बातां तथ्यां सूं हटनै लिखणै सूं आज रो शोध-अध्येता राजस्थान रै क्रान्तिकारी आन्दोलन रो सही मूल्यांकन नीं कर पा रह्यो है। इण आलेख मे अभिलेखागारीय सामग्री रै आधार माथै इण क्रान्तिकारियां माथै कीं तथ्यपरक बातां कैवण रो प्रयास करीज्यो है। इण रो आधार राजपूताना षड्यन्त्र केस री पत्रावलियां नैं बणायो गयो है।

राजस्थान मांय क्रान्तिकारी गतिविधियां री पृष्ठभूमि में राजस्थान रा सामन्तां री अंग्रेज सरकार री नीतियां सूं नाराजगी अर उणां मांय सूं कीं असन्तुष्ट बुद्धिजीवियां रो बंगाल रै क्रान्तिकारियां अर कांग्रेस रा नेतावां सूं सम्पर्क हुय जावणो भी अेक महताऊ कारण हो। ब्यावर रो सेठ दामोदरदास राठी, जिको सन् 1893 मांय मारवाड़ सूं आपरै धन्धै सारू ब्यावर आयनै बसग्यो हो, उणरा बंगाल रा अरविन्द घोष अर महाराष्ट्र रा बाल गंगाधर तिलक सूं नजदीक रा सम्बन्ध हा। खरवा रै ठाकुर गोपाळसिंह रा भी सेठ दामोदरदास राठी सूं आछो मेळ-मिलाप हो। सन् 1907 मांय सेठ दामोदरदास राठी रै माध्यम सूं गोपाळसिंह खरवा रो सम्पर्क भी अरविन्द घोष अर बाल गंगाधर तिलक सू होयग्यो हो। सन् 1908 में गोपाळसिंह खरवा नैं भारत धर्म-मण्डळ रै अेक प्रतिनिधि-मण्डळ में ज्ञानानन्द रै साथै कलकत्तै में वाईसराय सूं मिलण नैं जावण रो मौको मिल्यौ। कलकत्ता प्रवास में उणनैं कांग्रेस रा नेता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, विरेन्द्र पाल, वारिन्द्र घोष अर देवेन्द्र सूं भी मिलण रो मौको हाथ लागग्यो। साथै ई उणां उठै युगान्तर, वन्देमातरम्, सांध्य अर अमृतबाजार पत्रिका आद समाचार पत्रां रै सम्पादकां सूं भी सम्पर्क करयो। कलकत्ता प्रवास में ईज गोपाळसिंह खरवा अरविन्द घोष री मौजूदगी में नेशनल कॉलेज में अेक प्रभावी भाषण दियो। कलकत्ता प्रवास सूं पूठा आयनै गोपाळसिंह खरवा अंग्रेजां रै खिलाफ सशस्त्र-क्रान्ति री बात करणी सरू करदी ही।

इणीं तथ्य नैं ओरूं पुष्ट करण मांय अर्जुनलाल सेठी रो सरुआती जीवणक्रम भी सहायक है। सन् 1905 में बंगाल रै स्वदेसी आन्दोलन में भाग लेवण सूं उणां रो बठै रा क्रान्तिकारियां सूं भी सम्पर्क हुयग्यो। पछै‌स तो उणां सन् 1907 में सूरत मांय हुयै

कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेयनै इण सम्पर्क नैं ओरूं मजबूती दी। इण सब रै परिणाम सरूप अर्जुनलाल सेठी आपरी जैन शिक्षण संस्था रो राजनीतिकरण करणो सरू कर दियो। अर्जुनलाल सेठी री भान्त ही केसरीसिंह बारठ सन् 1905 में पंजाब में लाहोर रा लाला हंसराज सूं सम्पर्क वणाय लियो हो। इणरै साथै उण बगत तांई केसरीसिंह बारठ, राव गोपाळसिंह खरवा अर अर्जुनलाल सेठी रै विचाळै ई सम्पर्क-सूत्र खासा बणग्या।

इणरै बावजूद औ तथ्य घणो महताऊ है कै अै तीनूं ही क्रान्तिकारी भारत रो भावी सरूप अलग-अलग चांवता हा। अर्जुनलाल सेठी भारत में 'स्वराज' रो सुपनो संजोय राख्यो हो। केसरीसिंह बारठ भारत में गणराज्य री थरपणा चांवता। अठीनै गोपाळसिंह खरवा भारत में अेक राठौड़-राज्य थरपित करण में रुचि लेय रैया हा। इण तीनां में साम्यता ही तो फगत आ कै अै तीनूं ही आप आपरी जाति रै लोगां रै उत्थान मांय रुचि राखता हा। इण उद्देश्य रै ओळावै केसरीसिंह बारठ उण बगत राजपूत अर चारणां री सामाजिक पतनावस्था सूं खासा चिन्तित हा। उणां नैं इण स्थिति सूं उबारण सारू बारठजी उणां में शिक्षा री अलख जगावण रो मानस बणायो। इण सारू बां कोटा अर जोधपुर में राजपूत अर चारण जाति रै युवकां सारू दो छात्रावास स्थापित कर्या। गोपाळसिंह खरवा भी आपरै खरचै सूं जरूरतमन्द राजपूत युवकां नैं पढावण री व्यवस्था करता हा। इणीं भान्त अर्जुनलाल सेठी जैन धर्म रै प्रचार-प्रसार सारू वर्द्धमान जैन स्कूल री थापना करली ही। पण सन् 1907-8 रै अेड़ै-गेड़ै इणां तीनूं जणां आपरी शैक्षणिक गतिविधियां में राजनीति नैं भी स्थान देवणो सरू कर दियो हो। गोपाळसिंह खरवा अर केसरीसिंह बारठ तो अंग्रेजां रै खिलाफ सशस्त्र-क्रान्ति री योजना बणावणी भी सरू करदी ही। इण उद्देश्य नैं पूरण सारू अै तीनूं जिण भान्त आपरी गतिविधियां बधायी उण रो विस्तार सूं अध्ययन जरूरी है।

राजस्थान मांय चारण जाति रै लोगां मैं शाहपुरै रै केसरीसिंह बारठ रो घराणो चोखळै में चावो हो। इणरै साथै ही संस्कृत भाषा रै ज्ञाता केसरीसिंह नैं कोटा, जोधपुर, जयपुर अर शाहपुरा री रियासतां रा शासकां रो खासो सहयोग हो। सन् 1902 तांई तो अै कोटा राज्य री तरफ सूं अजमेर में वाल्टर हितकारिणी सभा में भाग लेवण सारू आता-जाता हा। अठै उणां रो अंग्रेज अधिकारियां रै साथै दूजां लोगां सूं भी सम्पर्क हुवणो लाजमी हो। खरवा रै ठाकुर गोपाळसिंह सूं भी आपरा गैरा सम्बन्ध हा। अर्जुनलाल सेठी भी उणां रै सम्पर्क में हा। सन् 1907 में उणां चारण अर राजपूतां में शिक्षा अर समाज-सुधार रै नांव माथै जोधपुर अर कोटा में चारण-राजपूत छात्रावास स्थापित कर्या। कैवण नै तो अै दोनूं छात्रावास चारण अर राजपूत छात्रां नैं शिक्षा सम्बन्धी सुविधा सारू खोल्या गया हा पण हकीकत थोड़ी दूजी जाण पड़ती ही। इणरी जानकारी इण छात्रावासां में नियुक्त अधीक्षकां री शिक्षा-दीक्षा सूं हुवै। आं दोनां अधीक्षकां नै गोपाळसिंह खरवा आपरै खरचै सूं अजमेर में शिक्षा दिराई ही। इणां में गोळिया गांव रै नारायण सिंह नैं तो कोटा रै छात्रावास अर लाहडी उर्फ त्रिवेणीदास नैं

जोधपुर छात्रावास रो अधीक्षक बणायो गयो। अै दोनूं ही युवक क्रान्तिकारी विचारां रा हा। इणसूं लागै कै केसरीसिंह बारठ सन् 1907 में ही क्रान्तिकारियां नैं संरक्षण देवणो सरू कर दियो हो।

केसरीसिंह बारठ रै मन मांय उण बगत क्रान्तिकारी विचार इण हद तांईं पूगग्या हा कै उणां आपरै बेटै प्रतापसिंह बारठ नैं सन् 1908 में अजमेर रै डी. अे. वी. स्कूल सूं मैट्रिक करायनै उणनैं आपरै जंवाई ईश्वरदास आसिया रै साथै प्रमुख क्रान्तिकारी विचारक अर्जुनलाल सेठी रै वर्द्धमान जैन विद्यालय मांय भरती करवाय दियो। अर्जुनलाल सेठी सूं राजनैतिक शिक्षा लियां पछै आं दोनूं नैं उठै सूं ही छोटेलाल जैन रे साथै दिल्ली रा प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अमीरचन्द अर अवधबिहारी रै कनै हथियार चलावण री ट्रेनिंग सारू भेज दिया। सन् 1910 में मिर्जापुर रै अेक क्रान्तिकारी विचारां रै व्यक्ति विष्णुदत्त री सलाह पर केसरीसिंह बारठ राजस्थान रा सामन्तां अर युवकां मांय क्रान्तिकारी विचारां नै पनपावण सारू 'वीर भारत सभा' नांव री गुप्त-सभा री थरपणा करली। केसरीसिंह बारठ रै प्रभाव सूं राजस्थान रा मोकळा सामन्त, शासक अर मातबर लोग इण सभा रा सदस्य बणग्या। इण सभा री थापना सूं अैड़ो लागै कै केसरीसिंह बारठ आपरै मूळ क्रान्तिकारी उद्देश्यां माथै पड़दो राखणो चावता हा। इण गुप्त-सभा रा सदस्य गाहड़सिंह, गोपाळसिंह खरवा री क्रान्तिकारी गतिविधियां सूं जुड़्योड़ा हा। सन् 1912 आतां-आतां केसरीसिंह बारठ रो बेटा प्रतापसिंह अर केसरीसिंह रो छोटो भाई जोरावरसिंह तो बंगाल रै क्रान्तिकारियां रासबिहारी बोस अर सचीन्द्र नाथ सन्याल रै सीधै सम्पर्क मे आयग्या हा। इणां दोनूं ही सन् 1912 रै 'दिल्ली षडयन्त्र केस' मांय महताऊ भूमिका निभाई। इण भान्त केसरीसिंह बारठ रो पूरो परिवार प्रत्यक्ष अर अप्रत्यक्ष रूप सूं क्रान्तिकारी गतिविधियां सूं जुड़ चुक्यो हो। जद्यपि केसरीसिंह बारठ रै व्यक्तिगत रूप सूं सशस्त्र-क्रान्ति रै प्रयासां में योगदान देवण री जाणकारी नीं मिलै पण जे सरकारी दस्तावेजां नैं सही मानां तो धन प्राप्त करण सारू अेक साधु री हत्या करण रो उल्लेख जरूर मिलै। पाठकां री जाणकारी सारू इण री विगत इण भान्त है--

आ बात सही है कै केसरीसिंह बारठ रा राजस्थान रै कई शासकां साथै सम्बन्ध हा। इणरै बावजूद राजपूत अर चारण युवकां सारू उणां द्वारा चलाई जाय रैयी शैक्षणिक गतिविधियां अर उणां रै माध्यम सूं क्रान्तिकारी विचारां रै प्रचार-प्रसार सारू धन री कमी आडी आय रैयी ही। उण बगत भारत रो क्रान्तिकारी वर्ग धन हासल करण सारू धाड़ो पाड़ण (डकैती) में भी संकोच नीं करतो। कोटा अर जोधपुर में केसरीसिंह बारठ रै थरप्योड़ा छात्रावासां रा कीं युवक धन हासल करण सारू धाड़ो पाड़ण रो मानस बणायो। इण सारू उणां जोधपुर रै रामस्नेही रामद्वारै रै महन्त प्यारेराम री सीध करी। इणरै कनै खासो धन हो। योजना नैं व्यवस्थित ढंग सूं अंजाम देवण सारू केसरीसिंह बारठ रा दो सहयोगी हीरालाल अर लक्ष्मीलाल कोटा सूं चालनै 20 अप्रैल, 1912 नैं

जोधपुर आय पूग्या। अठै वै कुदाल री हवेली मांय चालतै चारण-राजपूत छात्रावास में केसरीसिंह बारठ रै छोटै भाई जोरावरसिंह सूं मिल्या। अठै मिलनै सगळा सल्ला-सूत करी, जिणमें छात्रावास रो अधीक्षक लाहड़ी उर्फ त्रिवेणीदास, कोटा छात्रावास रो अधीक्षक नारायणसिंह अर अेक रामकरण ब्राह्मण भी भेळो हो। इण साधु री सम्पत्ति किण भान्त लूटी जावै, इण बात नैं लेयनै इणां में मतभेद होयग्यो। इण मतभेद रै चालतां केसरीसिंह बारठ नैं कोटा सूं जोधपुर आवणो पड़्यो। उण बगत महन्त प्यारेराम जोधपुर सूं अहमदाबाद गयोड़ो हो। इण सारू औ तै करीज्यो कै लाहड़ी, रामकरण अर नारायण सिंह, तीनूं अहमदाबाद जायनै प्यारेराम सूं किणी भान्त जोधपुर रामद्वारै री तिजोरी री चाबी प्राप्त करै।

योजना मुजब अै तीनूं जणां अहमदाबाद पूगनै महन्त प्यारेराम सूं चाबी लेवण री कोशिश करी पण पार नीं पड़ी। थक हारनै वै खाली हाथ पाछा जोधपुर आयग्या। उणां मांय सूं नारायणसिंह कोटा जायनै केसरीसिंह बारठ नैं सगळी बात बताई। इण पर फेर निरणै लिरीज्यो कै साधु प्यारेराम नैं किणीं भान्त कोटा लायो जावै अर अठै उणसूं तिजोरी चाबी लिरीजै। औ काम रामकरण नैं सूंपीज्यो। साधु प्यारेराम राजपूत सामन्ता मांय आपसी रिश्ता करावण सारू खासो चर्चित हो। इणसूं उणनैं खासो आर्थिक लाभ भी मिलतो। रामकरण साधु प्यारेराम नैं कह्यौ कै कोटा राज्य रै कुण्डी ठिकाणै रो सामन्त आहवा ठिकाणै री लड़की सूं रिश्तो करणो चावै है। इण खातर कुण्डी ठिकाणैदार उणसूं कोटा मांय मिलणो चावै। साधु धन रै लोभ में इण सारू झट त्यार हुयग्यो। कोटा रै मारग सवाई माधोपुर में नारायण सिंह भी उणां दोनां रै साथै हुयग्यो। कोटा पूगतां ही योजना मुजब हीरालाल उणां नैं राजपूत छात्रावास में लेजायनै ठैहरा दिया। लाहड़ी उर्फ त्रिवेणीदास उठै पैली सूं ही हाजर हो। दूजै दिन 24 जून, 1912 नैं कसरीसिंह बारठ, हीरालाल रै साथै छात्रावास में आया। इण पछै साधु प्यारेराम नैं दूध पीवण सारू पूछ्यो। इण सारू साधु री स्वीकृति पर छात्रावास रै दूजै कमरै मांय लाहड़ी अर हीरालाल री मौजूदगी में केसरीसिंह बारठ डॉ. गुरुदत्त कनै सूं लायोड़ो अेक तरै रो ज्हैर दूध रै गिलास में न्हांख दियो अर औ दूध लाहड़ी साधु नै पाय आयो। इण पछै साधु नैं केसरीसिंह बारठ रै घरां बण्योड़ो भोजन कराइज्यो। संजोग री बात कै साधु माथै उण ज्हैर रो कीं असर नीं हुयो। दूजै दिन बजार सूं व्हाइट आर्सनिक खरीद्यो अर प्यारेराम नैं दोफारां रै भोजन में व्हाइट आर्सनिक घालनै खवाय दियो। 25 जून, 1912 नैं दोफारां साधु री तबियत बिगड़गी अर उणनैं उलट्यां हुवण लागी। डॉ. गुरुदत्त नैं छात्रावास बुलायो गयो पण उणरै पूग्यां पैली ई साधु रा प्राण-पंखेरू उडग्या। इणरै विपरीत रामकरण इण हत्याकाण्ड रै मुकदमै में जका बयान दिया उण मुजब लाहड़ी उर्फ त्रिवेणीदास छूरी घोंपनै साधु री हत्या कर दीवी।

हत्या पछै छात्रावास रै ताळो लगायनै सगळा लोग केसरीसिंह बारठ रै अठै भेळा हुया। अठै केसरीसिंह बारठ सगळां नैं जाणकारी दीवी कै लाहड़ी अचानक गायब

हुयग्यो है, आ चिन्ता री बात है। सिंझ्या पड़्यै लक्ष्मीलाल, हीरालाल, नारायण सिंह अर केसरीसिंह बारठ पाछा छात्रावास में आयनै साधु रै शव नैं ऊपर रै कमरै सूं हेठै लाया। हेठै बण्योड़ै छोटै कमरै में अेक खाडो खोदनै उणमें शव बूर दियो। कीं दिनां पछै उण कमरै नैं चूनै सूं भर दियो। चार-पांच महीनां तांई साधु प्यारेराम रै शव री आ गत बणी रैयी पण जोधपुर सूं इसा समाचार आवण लागा कै अवै जल्दी ही जोधपुर में रामकरण माथै साधु प्यारेराम नैं अगवा करण रो मामलो चाल सकै है। इण संभावना नैं देखनै कोटा रै छात्रावास सूं साधु प्यारेराम रो शव हटाणो जरूरी हुयग्यो पण स्कूलां खुल जावणै सूं छात्रावास में विद्यार्थियां री खासी अड़ा-भीड़ ही। इण पर केसरीसिंह बारठ आपरो बेटी रो ब्यांव हुवणै रै नांव पर छात्रावास रा सगळा युवकां अर पदाधिकारियां नैं छात्रावास सूं खासी दूर भोजन माथै बुला लिया। लारै सूं 8 दिसम्बर, 1912 रै दिन विष्णुदत्त, हीरालाल अर प्रतापसिंह बारठ छात्रावास पूगनै साधु रै शव नैं खाडै सूं बारै काढ्यो। शव रा बोटा-बोटा करनै उणां नैं चूनै री बोरीयां मांय भर दिया। पछै अै चूनै री बोरीयां किणीं दूजी जगां भिजवाय दी। कह्यौ जावै कै बाद में शव री हड्डियां नैं बोरीयां समेत बाळदी।

इण सगळै प्रकरण री खासियत आ रैयो कै अवार तांई साधु प्यारेराम री हत्या री जाणकारी फगत केसरीसिंह बारठ अर उणरै सहयोगियां तक ही सीमित ही। कह्यो जावै कै पुलिस नैं जून, 1914 तांई इण हत्याकाण्ड री भणक तक नीं लागी। पण सन् 1912 में दिल्ली में लॉर्ड हार्डिंग माथै जिको बम फेंकीज्यो हो, उण सारू केसरीसिंह बारठ रै छोटै भाई जोरावर सिंह पर पुलिस नैं पूरो शक हो। इणीं अंदेसै में पुलिस केसरीसिंह बारठ री गतिविधियां पर चौकसी राखणै लागगी ही।

इण बीच जोरावर सिंह बारठ सन् 1912 सूं फरार हा। दिल्ली में हार्डिंग पर बम फेंकीजण रै बाद सूं ही फरार जोरावर सिंह अर्जुनलाल सेठी री वर्द्धमान जैन स्कूल सूं जुड़्योड़ा क्रान्तिकारी युवकां साथै धन प्राप्ति सारू निमाज रै महन्त री हत्या मांय भी शामिल हा। इण कारण भारत सरकार रै क्रिमिनल इन्वेस्टीगेशन डिपार्टमेंट रै अधिकारियां सूं छिपतो फिर रह्यो हा। उणां री तहकीकात करतो-करतो डिपार्टमेंट रो पुलिस अधीक्षक आर्मस्ट्रांग जोधपुर पूग्यो। अठै लोगां सूं बातचीत में लारलै दो सालां सूं साधु प्यारेराम रै गायब हुवण री जाणकारी उणनैं मिली। लोगां बतायो कै पुलिस साधु प्यारेराम रै गायब हुयां पछै किणी रामकरण नांव रै आदमी सूं बातचीत करी ही। इणीं नैं आधार बणायनै आर्मस्ट्रांग रामकरण रो पतो लगवायो। उणनैं जाणकारी मिली कै बो जयपुर में रैय रह्यो है। इण पर बो जयपुर आपरै उप अधीक्षक नैं रामकरण रो पतो लगावण सारू सूचना करी। बो रामकरण नैं जयपुर रै रामनिवास बाग में बैठ्योड़ै नैं धर दबोच्यो। पुलिस री गैरी पूछताछ अर यातनावां रै डर सूं रामकरण साधु प्यारेराम री हत्या रो पूरो खुलासो करनै इण हत्याकाण्ड नैं उजागर कर दियो। इण भान्त दो बरसां सूं ठंडै बस्तै में पड़्यो प्यारेराम री हत्या रो मामलो पाछो पुलिस रै सिरै चढग्यो। 3 मई,

1914 नैं साधु प्यारेराम री हत्या मूं जुड़ग्योड़ा लोगां रामकरण, लाहड़ी, हीरालाल, लक्ष्मीलाल अर केसरीसिंह बारठ नैं पुलिस पकड़ लिया।

इणरै साथै केसरीसिंह बारठ रा भी माड़ा दिन सरू हुयग्या। 24 जून, 1914 नैं चालाण पेश हुवण रै साथै ही पुलिस उणां पर हत्या में शामिल हुवण अर राजद्रोह रो मुकदमा चलावणै रो मानस बणायो हो। इण वास्तै शाहपुरा स्थित उणां रै पुस्तकालय अर वीर भारत सभा, दोनां री गहन छानबीन करीजी पण पुलिस नैं राजद्रोह सूं सम्बन्धित कोई सबूत हाथ नीं लागो। सगळा अभियुक्तां माथै कोटा री अेक खास अदालत में मुकदमो सरू करीज्यो। इण मुकदमै में अंग्रेजी सरकार कानी सूं सेंट्रल इंटलीजेंस ब्यूरो रै प्रमुख क्लीवलेण्ड री देखरेख में आर्मस्ट्रांग नैं छानबीन अर सहायता सारू नियुक्त करीज्यो। कोटा सरकार कानी सूं दिल्ली रो सुप्रसिद्ध वकील राय साहब मूलचन्द नै नियुक्त कर्‌यो गयो। इणीं भान्त अभियुक्तां री पैरवी करण वास्तै लखनऊ रै सुप्रसिद्ध देशभक्त बेरिस्टर हामिद अली खान नै बुलायो गयो। 24 जून, 1914 नैं सरू हुयी इण मुकदमै री कार्रवाई 88 दिन चाली। अन्त में 6 अक्टूबर, 1914 नैं ट्रायल जज मुंशी श्रीराम चौबे सगळा अभियुक्तां नै आजीवन कारावास री सजा सुणाय दी। अभियुक्तां मांय सूं नारायण सिंह पैलां ही मर गयो हो अर जोरावर सिंह पुलिस री पकड़ में हाल तांईं नीं आय सक्यो हो। रामकरण अर लक्ष्मीलाल सरकारी गवाह बणनै आम माफी लेली ही। लारै बच्या लाहड़ी, केसरीसिंह बारठ अर हीरालाल नैं ही आजीवन कारावास मिल सक्यो हो। इणां मांय सूं हीरालाल नैं कठोर कारावास री सजा दिरीजी। 10 अक्टूबर नैं इण फैसलै पर अन्तिम फैसलो देवण नै कोटा रै शासक रै सम्मुख पेश कर दियो गयो। कोटा रो शासक भी इण फैसलै नैं आपरी स्वीकृति देदी ही।

इण मुकदमै मांय आ बात बतावण जोग है कै केसरीसिंह बारठ रै खिलाफ उणां रा साथी सरकारी गवाह बण जिका बयान दिया, उणां सूं केसरीसिंह साफ इनकार कर दियो। बां भारत री अंग्रेज सरकार सूं भी किणी भान्त रो विरोध राखण सूं साफ इनकार कर्‌यो। साधु हत्याकाण्ड रै सम्बन्ध में उणां रो कैवणो हो, ''राजपूतां री शिक्षा रो प्रबन्ध करण सूं मोकळा लोग म्हासूं नाराज हुयग्या अर हत्याकाण्ड रो झूठो मामलो बणवाय दियो। साधु खुद चरित्रहीन हो, इण वास्तां किणी उणरी हत्या करवाय दीनी हुवैला।''

अभियुक्तां रै कानीं सूं इण पूरै मामलै नै राजनैतिक रंग देवण री घणी ही कोशिश करीजी पण जज रै फैसलै मुजब कोटा रो शासक भी इण तथ्य नै माननै सूं इनकार कर दियो। पण दूजी कानी भारत री खुफिया एजेंसी रो अधिकारी आर्मस्ट्रांग आपरी रिपोर्ट में लिख्यो, ''राजपुताना में राजद्रोह फैलावण में दो आदम्यां केसरीसिंह बारठ अर अर्जुनलाल सेठी रो हरावळ हाथ हो। बै शैक्षणिक प्रवृत्तियां री आड में नवयुवका मांय विद्रोहात्मक विचार भरता हा। उणां राजपुताना में राजनैतिक अपराध

कर्म करणै सारू दिल्ली में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अमीरचन्द कनै कई नवयुवक भेज्या हा। वस्तुत: राजपुताना रै राजद्रोहियां मांय सबसूं प्रमुख केसरीसिंह बारठ ही हो।"

सजा सुणायां रै पछै केसरीसिंह बारठ रो सगळो परिवार छिन्न-भिन्न हुयग्यो। सगळां परिजनां पर दुख रो भाखर टूट पड़्यो। केसरीसिंह बारठ नै सजा सुणावण रै साथै ई हजारीबाग जेळ में बदळ दियो गयो। उणां री पारिवारिक हवेली अर जागीर जब्त करली। इण स्थिति में उणां री घरआळी नैं कोटड़ी गांव में दुखमय अर मुखलसी जीवण बितावणो पड़्यो। केसरीसिंह बारठ रो बेटो प्रतापसिंह बारठ अर उण रो काको जोरावर सिंह बारठ भी संकट रै दौर सूं गुजर रह्या हा। आं दोनूंआं री गिणती वां दिनां में भारतभर में नामी-गिरामी क्रान्तिकारियां में हुंवती ही अर सचिन्द्रनाथ सन्याल री दीठ में तो इणां दोनूं री जोड़ रो राजस्थान में कोई क्रान्तिकारी नीं हो। अै दानूं सन् 1912 में हुयै दिल्ली बम-काण्ड में खास भूमिका निभाई ही। जोरावर सिंह तो उण बगत सूं ही पुलिस री निजरां सूं बचता-बचावता माळवै अर मेवाड़ रै पहाड़ां में लुकता-छिपता रह्या। प्रतापसिंह नैं तो बनारस षड्यन्त्र केस रो अेक प्रमुख अभियुक्त मान सरकार उणनैं पांच बरस सारू जेळ री सजा देदी ही। बो बरेली जेळ में बन्द हो। सन् 1918 में उण रो बरेली जेळ में ईज निधन हुयग्यो। कैवण रो मतलब औ कै केसरीसिंह घरबार सू पूरी तरयां टूट चुक्या हा। इण हालात में संस्कृत भाषा रै इण विद्वान री जेळ-जिंदगी हजारीबाग जेळ रै अधीक्षक अर उणरी घरआळी सूं देखी नीं जाय रह्यी ही। बै केसरीसिंह बारठ माथै बराबर इण बात रो दबाव देय रह्या हा कै बै आपरी जेळ सूं रिहाई सारू भारत रै वाईसरॉय सूं अपील करै। आखिर जांवता केसरीसिंह बारठ इण आग्रह नैं स्वीकार कर उणां इसो प्रार्थना-पत्र लिख दियो जिणनैं जेळ अधीक्षक आपरी सिफारिस साथै वाईसरॉय नैं भिजवा दियो। वाईसरॉय उणां री प्रार्थना स्वीकार करली अर इण भान्त पांच बरसां लग जेळ भुगतनै 19 जुलाई, 1919 नैं केसरीसिंह बारठ जेळ सूं रिहा करीज्या।

केसरीसिंह बारठ री भान्त अर्जुनलाल सेठी रै व्यक्तिगत जीवण नैं जाणण सारू भी शोध-जगत आज भी खासी जिज्ञासा लियोड़ो है। सन् 1902 में जयपुर सूं पढाई पूरी करनै अर्जुनलाल सेठी जयपुर स्टेट कौंसिल में नौकरी लाग्या हा। बाप री मौत रै पछै बडै ठिकाणैदार गोविन्दसिंह रो सचिव पद संभाळ लियो पण औ काम उणां नैं रास नीं आयो, इण वास्तै बै 1905 में मथुरा जायनै जैन विद्यालय में अध्यापन रो काम सरू कर दियो। उठै ई घणा दिन उणां रो मन नीं लाग्यो, सो पाछा जयपुर आयनै आप खुद वर्द्धमान जैन विद्यालय स्थापित कर लियो। इण विद्यालय रै साथै अेक छात्रावास भी स्थापित कर्यो। इण दोनूं शैक्षणिक संस्थावां रो आर्थिक बोझ सेठ कल्याणमल उठाया करतो हो। सन् 1907 में स्थापित इण संस्थावां रै साथै ही अर्जुनलाल सेठी री राजनैतिक आकांक्षावां रो आभास हुवण लागग्यो हो। वर्द्धमान जैन विद्यालय में जैन धर्म री शिक्षा रै साथै-साथै युवकां नैं अंग्रेज सरकार रै खिलाफ राजद्रोहात्मक शिक्षा

भी देवणी सरू करदी ही।

अर्जुनलाल सेठी रा विचार सरू सूं ई भारत में स्वराज देखण रा हा। धीरै-धीरै उणरै संरक्षण में वर्द्धमान जैन विद्यालय में महाराष्ट्र अर काश्मीर तक रा युवकां नैं आकर्पित करनै प्रवेश दिरीजण लाग्यो। इणमें शोलापुर रा मोतीचन्द, माणकचन्द अर पुछ रो जयचन्द उल्लेखजोग नाम हा। बनारस रो अेक पुराणो आर्य समाजी प्रचारक विष्णुदत्त त्रिवेदी क्रान्तिकारी गतिविधियां में लिप्त होयग्यो। वो भी वर्द्धमान जैन विद्यालय में अध्यापक लागग्यो। वो उण बगत सूं ई दिल्ली, बंगाल, राजपूताना अर उत्तर-प्रदेश रै क्रान्तिकारियां रै बिचाळै समन्वय रो काम कर्‌या करतो हो। जद वो राजपुतानै में आयो तो आपरै छोटै भाई कृष्णदत्त अर दूसरा सहायक वासुदेव, सूरजसिंह अर रामप्रसाद नैं भी आपरै साथै लायो। अै लोग मारवाड़ अर अजमेर क्षेत्र रा जागीरदारां मैं धार्मिक संस्कार, विशेष रूप सूं जनेऊ संस्कार करावणो सरू कर्‌यो। इण छदम काम रै साथै ब्रै उणां रै बीच अंग्रेज विरोधी भावना रो प्रचार करण में भी लारै नीं रैवता। विष्णुदत्त खुद वर्द्धमान जैन विद्यालय रै युवकां में क्रान्तिकारी भावनां भरण रै साथै आपरी क्रान्तिकारी योजनावां री क्रियान्विति वास्तै डकैती जिसो जघन्य काम करण सूं संकोच नहीं करण री शिक्षा भी देवतो हो। अर्जुनलाल सेठी रा खुद रा दिल्ली रा प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अमीरचन्द, अवधविहारी अर बालमुकुन्द सूं गैरा सम्बन्ध हो चुक्या हा। उण बगत केसरीसिंह बारठ री भान्त अर्जुनलाल सेठी नैं भी आपरी क्रान्तिकारी गतिविधियां चलावण सारू धन री कमी आडी आय रह्यी ही। इण सारू बै आ टोह लेवता फिरता हा कै धन कठै-कठै सूं मिल सकै है। इण उद्देश्य सारू विष्णुदत्त त्रिवेदी इण बात रो पतो लगायो कै विहार में आरा जिलै रै निमेज मन्दिर रै महन्त भगवानदास रै कनै मोकळी माया है। इण सम्पत्ति नैं हासल करण सारू अेक योजना बणाईजी।

इण योजना मुजब सन् 1913 री सरुआत में वर्द्धमान जैन विद्यालय रो अध्यापक विष्णुदत्त अर छात्रावास में रैय रह्या मोतीचन्द, मानिकचन्द अर जयचन्द लोगां नैं औ कैयनै जयपुर सूं रवाना हुया कै बै तीर्थयात्रा पर जाय रह्या है। अै सगळा ही लोग आगरा होयनै मुगलसराय पूगग्या। बठै अेक धर्मशाळा में रातवासो करनै दूजै दिन बनारस गया। बठै जोरावरसिंह बारठ भी उणां नैं मिलग्यो। मोतीचन्द, मानिकचन्द अर जयचन्द तो जैन संस्था स्यादवाद विद्यालय में ठैरग्या अर विष्णुदत्त त्रिवेदी जोरावरसिंह नैं आपरै अठै ठहरा लियो। अठै विष्णुदत्त पैली बार आपरै साथै लायोड़ा तीनूं युवकां नैं नेमाज मन्दिर रै महन्त माथै डाको पाड़ण री जाणकारी दी। इणरै साथै ही मोतीचन्द अर जोरावरसिंह नेमाज रै आसै-पासै रा गांवां री स्थिति सूं वाकिफ हुयां पछै कोई मेळो लाग्योड़ो हुवणै सूं थोड़ा दिन इण काम सारू रुकण री सलाह दी। कीं दिनां पछै विष्णुदत्त सगळां नैं पईसा-टक्का अर सुरक्षा सारू लाठियां सूंपी। विष्णुदत्त तो बनारस में ई रह्यो अर दूजा सगळा रघुनाथपुर, सपाटी हुंवता मिर्जापुर अर उठै सूं रात री

आठ-नव बज्यां नेमाज पूगग्या। महन्त सूं अभिवादन करयां पछै रात रां बठै ई सूयग्या। इण बीच जयचन्द आ जाणकारी हासल करली ही कै महन्त तिजोरी री चाबी आपरै बालां रै जूड़ै बिचाळै राखै है। दूजै दिन महन्त आपरै किणी मुकदमै सारू बक्सर चल्यो गयो। आगलै दिन महन्त पाछो आपरै मठ में आयो। सिंझ्या री बगत आपरी योजना मुजब बै तीनूं जणां पैली महन्त रै नौकर नैं अेक कमरै में बान्ध दियो। साथै ही उणरै चीखण रै डर सूं मानिकचन्द उण री जीभ काट न्हांखी। इणसूं बो मरग्यो। उणरै बाद बै सगळा महन्त रै कमरै में पूग्या तो देख्यो कै महन्त री जीभ ई कट्योड़ी ही अर बो भी मर चुक्यो हो। इण पछै महन्त रै जूड़ै सूं चाबी निकाळली पण बा चाबी तिजोरी नीं होयनै किणीं दूजै ताळै री ही। तिजोरी चाबी नैं घणी ई जोयी पण बा नीं लाधी। तापछै महन्त री लाश नैं मांचै पर न्हांखनै कमरै रै बारै ताळो लगा दियो। कनै ई अेक कूओ हो, सो सगळा जणां बठै जायनै आपरा कपड़ा बदळ्या, खून रा कपड़ा अर छूरी कुअै में फेंक दिया। मोतीचन्द, मानिकचन्द अर जयचन्द बनारस जायनै विष्णुदत्त नैं सगळी बात बताई। इणसूं विष्णुदत्त खासो नाराज हुयो। अै तीनूं पाछा जयपुर आयनै विद्यालय रै छात्रावास में रैवणो सरू कर दियो। अेक दिन शाम री बगत अर्जुनलाल सेठी अर उणां रै सहयोगियां नैं इणां नेमाज महन्त री हत्या रो किस्सो सुणाय दियो।

सितम्बर 1913 तांईं तो अै तीनूं जयपुर ही रह्या। इण पछै पूना अर इन्दौर में रैय'र बठै पढाई करण लागा। अर्जुनलाल सेठी भी जयपुर रो कारोबार बृजमोहन माथुर नैं सूंपनै इन्दौर चल्या गया अर उठै भी अेक जैन विद्यालय खोल दियो। मार्च, 1914 तांईं पुलिस नैं नेमाज मन्दिर रै महन्त री हत्या रो कोई सुराग हाथ नीं लाग्यो। पछै अचाणचक ही पुलिस दिल्ली षड्‌यन्त्र रै मामलै में इन्दौर में अर्जुनलाल सेठी नैं पकड़ लिया। इण रो कारण फरवरी, 1914 रो दिल्ली रै प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नैं इन्दौर सूं लिख्योड़ै अेक रहस्यमय कागज दिल्ली पुलिस रै हाथ लागणो हो। इण सम्बन्ध मे पुलिस अर्जुनलाल सेठी रै अेक छात्र शिवनारायण नैं मुम्बई में पकड़ लियो। पुलिस री कड़ी पूछताछ सूं घबरायनै उण नेमाज महन्त री हत्या रो सारो खुलासो कर दियो। शिवनारायण रै बतायां पुलिस नेमाज हत्याकाण्ड सूं जुड़्योड़ा लोगां नैं अेक-अेक करनै पकड़ लिया। जोरावरसिंह फरार हुवण सूं पुलिस रै हाथ नीं आयो।

इण हत्याकाण्ड रो मामलो न्यायालय में खासो लंबो चाल्यो। अर्जुनलाल सेठी रा मोकळा छात्र मुखबिर बणग्या हा। न्यायालय मोतीचन्द नैं फांसी अर विष्णुदत्त नैं दस साल जेळ री सजा सुणाई। अर्जुनलाल सेठी रै खिलाफ पुलिस कोई सबूत नीं जुटा सकी पण न्यायालय आ बात जरूर कैयी कै अर्जुनलाल सेठी आपरै छात्रां री तीर्थयात्रा रो असली मतलब जाणता हा। इणरै बावजूद अर्जुनलाल सेठी नै पैली इन्दौर जेळ अर पछै जयपुर री जेळ में राखीज्यो। अठै उणां रै खिलाफ प्रोसीडिंग चलाई गई अर 5 दिसम्बर, 1914 नैं जयपुर रो शासक बिना मुकदमै चलायै उणां नैं पांच सालां री सजा देयदी। सेठी माथै राजनैतिक षड्‌यन्त्रां में मिलीभगत रो आरोप लगायो गयो। नौ महीनां

पछै जयपुर रै शासक अंग्रेज सरकार सूं आग्रह कर्‌यो कै अर्जुनलाल सेठी नैं जयपुर जेळ सूं हटायनै दूजी जाग्यां भेज दियो जावै। तद अंग्रेज सरकार 1818 ई. रै रैग्यूलेशन (तृतीय) रै त्हैत वारण्ट जारी करनै अर्जुनलाल सेठी नैं मद्रास प्रेसीडेंसी री वेल्लोर जेळ में भेज दियो। मोकळा राष्ट्रीय नेतावां, सगठनां अर अखबारां जयपुर शासक री इण कार्यवाही रो घोर विरोध कर्‌यो। मार्डन रिव्यू अर अमृतबाजार पत्रिका तो अर्जुनलाल सेठी री तुरन्त रिहाई री मांग करी। सन् 1917 में कलकत्ता में इण्डियन नेशनल कांग्रेस भी श्री सेठी नैं जेळ भेजण री कार्यवाही री आलोचना करी। अर्जुनलाल सेठी आपनैं अंग्रेज सरकार रो समर्थक बतावतां थकां जेळ सूं मुगत करण री अरजी दी। आपरै जैन समाज नैं प्रभावित करण सारू उणां जैन धर्म रै मसलै नैं लेयनै जेळ में 70 दिन भूख हड़ताळ भी करी। अंत में सन् 1920 में छह बरसां री जेळ भुगत्यां पछै अर्जुनलाल सेठी नैं अंग्रेज सरकार इण शर्त माथै रिहा कर्‌या कै बै जयपुर शासक री स्वीकृति बगैर जयपुर में प्रवेश नीं कर सकैला।

इणीं भान्त दिल्ली बम-काण्ड, कोटा साधु हत्याकाण्ड अर नेमाज महन्त हत्याकाण्ड रो प्रमुख अभियुक्त अर प्रसिद्ध क्रान्तिकारी जोरावरसिंह अबार तांईं फरार ई हो। जद्यपि सन् 1939 में बिहार में कांग्रेस रो मंत्रिमंडळ बणनै पर उणां रै खिलाफ पुलिस वारण्ट पाछा लिरीजग्या हा। पण वारण्ट वापसी रै अेक दिन पैलां ई उणां रो निधन हुयग्यो।

आलेख रै आरम्भ में केसरीसिंह बारठ, अर्जुनलाल सेठी अर राव गोपाळसिंह खरवा री भी अंग्रेज विरोधी सरुआती सम्पर्क-सूत्र यात्रा पर चरचा करी ही। सन् 1908 रै पछै राव गोपाळसिंह खरवा आपरी इण अंग्रेज विरोधी भावना नै आगै बधावण रै वास्तै थोड़ा सक्रिय कार्यकर्ता त्यार करण रो निश्चय कर्‌यो। इण काम नैं अंजाम देवणै सारू लाहडी उर्फ त्रिवेणीदास अर गोळिया गांव रै नारायण सिंह नैं आपरै खरचै सूं अजमेर में पढाई करवाई। इण पछै उणां नैं शिक्षक नियुक्त करवाया। इण समय तक मचिन्द्रनाथ सन्याल री अनुशीलन समिति जिसी क्रान्तिकारी संस्था सूं उणां रा गैरा सम्बन्ध हुयग्या हा। उण समिति रा दो सदस्य मनीलाल अर दामोदर तो खरवा ठाकुर रै कनै बम बणावण री विद्या सीखण सारू आवता-जावता हा। दो दूजा बंगाली युवक जिका न्यूलाईट समाचार-पत्र सूं जुड़्योड़ा हा, उणां नै खरवा ठाकुर आपरी सिफारिस माथै कुचामण रै ठाकुर कनै अंग्रेजा सूं छिपण खातर छोड राख्या हा। बैं बठै सन् 1911 तक रह्या। आपरी क्रान्तिकारी गतिविधियां नैं ओरूं सक्रियता सूं चलावण सारू सन् 1911 में ही भूपसिंह (विजयसिंह पथिक) नैं आपरो सचिव नियुक्त कर लियो हो। आ बात पैलां ई बताई जाय चुकी है कै राव गोपाळसिंह खरवा रो मारवाड़ अर अजमेर संभाग रैं ठाकुरां माथै पूरो प्रभाव हो। अै ठाकुर लोग ग्रामीण अंचळां में राव गोपाळसिंह रा विचार फैलावण में खास भूमिका अदा करी। गाहड़सिंह तो इण काम नैं घणी सावचेती सूं कर रह्यो हो। ओ ही नीं, खरवा ठाकुर हथियार आदि प्राप्त करण सारू

नसीराबाद छावनी में राजपुताना राइफल्स रै सम्पर्क में भी हा। इणरै साथै ही राव गोपाळसिंह खरवा, अर्जुनलाल सेठी अर केसरीसिंह बारठ अर उणां रा सहयोगियां रै बिचाळै बराबर सम्पर्क बण्योड़ो हो। वै अेक-दूजै री संस्थावां सूं जुड़्योड़ा लोगां रो क्रान्तिकारी गतिविधियां में भरपूर उपयोग लेय रह्या हा। विष्णुदत्त, लाहड़ी अर गाहड़सिंह रा नांव इण दीठ सूं उल्लेख जोग है।

सन् 1914 रै मध्य तांई राव गोपाळसिंह खरवा री क्रान्तिकारी गतिविधियां इतरी गुप्त रूप सूं चाल रह्यी ही कै पुलिस रो ध्यान उणां कानी गयो ही कोनीं। पण अक्टूबर 1914 में नेमाज मन्दिर रै महन्त री हत्या रो भण्डाफोड़ हुंवतां ही उणरै अभियुक्तां रा सम्पर्क-सूत्र पुलिस नैं गोपाळसिंह खरवा सूं जुड़ता निजर आया। इण पर पुलिस उणां रै विरुद्ध भी सक्रिय हुयगी। उणां रै निकट सहयोगी लाहड़ी रै पकड़ीज्यां पछै उण गोपाळसिंह खरवा रै विरोध में पांच आरोप लगाया। औ आरोप इण भान्त हा– 1. राव गोपाळसिंह खरवा ही म्हनैं (लाहड़ी नैं) राजद्रोहात्मक गतिविधियां सारू सक्रिय कर्‌यो, 2. खरवा ठाकुर रा केसरीसिंह बारठ अर विष्णुदत्त सूं गैरा सम्बन्ध हा जिका अंग्रेज सरकार नैं उखाड़ फेंकणा चावता हा, 3. खरवा ठाकुर ही विष्णुदत्त नैं अजमेर अर जोधपुर में लेक्चरर बणवायो हो, 4. म्हनैं (लाहड़ी) अर नारायण सिंह नैं आपरै खरचै सूं अजमेर में शिक्षा दिरवाई, 5. खरवा ठाकुर ही गाहड़सिंह नैं विष्णुदत्त री मदद वास्तै उणरै कनै नियुक्त कर्‌यो हो।

अजमेर रो कमिश्नर ए. टी. होम्स लाहड़ी रा लगायोड़ा ऊपरड़ा पांचूं आरोपां रो गोपाळसिंह खरवा नैं लिखित स्पष्टीकरण देवण सारू कह्यो। 30 नवम्बर, 1914 नैं गोपाळसिंह खरवा कमिश्नर सूं इण सम्बन्ध में सैमूंडै मिलण रो समय मांग्यो पण कमिश्नर समय देवण सूं इनकार कर दियो। राव गोपाळसिंह आ बात समझग्या हा कै अबै कदैई भी खरवो ठिकाणो उणां रै हाथ सूं निकळ सकै है। इण बात नैं ध्यान में राखनै उणां अेक समझौतावादी स्पष्टीकरण त्यार करनै कमिश्नर नैं सूंप्यो। इण स्पष्टीकरण में दूजी बातां रै अलावा उणां आपरै साथी केसरीसिंह बारठ रै खिलाफ तक टिप्पणी कर दी। पण कमिश्नर गोपाळसिंह खरवा रै इण स्पष्टीकरण सूं संतुष्ट कोनीं हुयो अर 25 जून, 1915 नैं भारत सरकार खरवा ठाकुर नैं डिफेंस इण्डिया अेक्ट रै त्हैत खरवा रै गढ मांय नजरबन्द कर दियो। इण पछै 24 घण्टां रै नोटिस पर टॉडगढ जायनै उठै रै तहसीलदार नैं आपरी उपस्थिति दर्ज करावण रो आदेश दियो। इण पर खरवा ठाकुर आपरै सहायक मोडसिंह रै साथै 28 जून, 1915 नैं टॉडगढ गया। उठै उणां नैं तहसीलदार री बिना इजाजत किणी सूं भी मिलण सूं रोक दियो गयो। अंग्रेज सरकार नैं बनारस षड्यन्त्र केस में मुखबिर रै बयान सूं जाणकारी मिली ही कै गोपाळसिंह सैनिक विद्रोह भी करवा सकै है। इणरै साथै सरकार नैं आ जाणकारी भी हुयगी ही कै खरवा ठाकुर क्रान्तिकारियां नैं हथियार देवता रह्या है, मनीलाल अर प्रतापसिंह बारठ नैं खुद हथियार दिया हा। औ सगळो खुलासो खुद मनीलाल अर

दामोदर मुखबिर बणनै करयो हो। आं सगळी बातां नैं ध्यान में राखनै सरकार टॉडगढ में उणां नैं हथियार राखणै री छूट भी कोनीं दी। इण बीच 30 जून, 1915 नैं पुलिस अधीक्षक खरवा रै गढ री तलाशी ली। इण मौकै गोपाळसिंह खरवा रो सचिव भूपसिंह उठै सूं फरार हुयग्यो। जद आ बात खरवा ठाकुर नैं ठा पड़ी तो वै आपरै परिजनां अर हथियारां नै लेयनै खासा चिन्तित हो उठ्या। इण विचलन री अवस्था में 10 जुलाई, 1915 नैं खरवा ठाकुर मोडसिंह नैं साथै लेयनै पुलिस नैं धत्तो बतायनै टॉडगढ सूं फरार हुयग्या अर ब्यावर हुंवता किसनगढ रै सलेमाबाद मन्दिर मांय जाय छिप्या।

अंग्रेज सरकार किसनगढ रै शासक री मदद सूं उणां रै छिपण री ठौड़ रो पतो लगाय लियो पण उण सगळै इलाकै मांय आ अफवा फैलगी ही कै गोपाळसिंह खरवा गिरफ्तार हुवण सूं पैलां मरण-मारण नैं त्यार है। इणरै साथै ही उणां रा रिस्तेदार भी हथियारां सूं पुलिस रो मुकाबलो करण नैं त्यार है। पुलिस इण रा भयंकर परिणाम नैं समझती ही। इण वास्तै आईजीपी पुलिस मिस्टर काई, खरवा ठाकुर नैं अेक मित्रवत पत्र लिखनै उणसूं वस्तुस्थिति बतावण रो अनुरोध करयो। खरवा ठाकुर भी आपरै उथळै में उणसूं आपरै आरोपां पर और स्पष्टीकरण मांग्या। मिस्टर काई अन्य स्पष्टीकरणां रै साथै खरवा ठाकुर नैं बतायो कै दिल्ली षड्यन्त्र केस में उणां रै खिलाफ कोई मामलो नीं बणै है। इण पर गोपाळसिंह खुदोखुद नैं पुलिस रै हवालै कर दियो अर पुलिस इणां नैं अेक राजनैतिक कैदी मान'र अजमेर रै किलै में राख दिया। 12 अक्टूबर, 1915 नैं अजमेर रो डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट उणां नैं आपरै फैसलै में दो साल री साधारण कैद री सजा सुणाई। बनारस षड्यन्त्र रै केस में अेक बार बीच में उणां नैं बनारस भी लेयग्या पण उणमें कोई आरोप सिद्ध नीं हुयो। 14 सितम्बर, 1917 नै अजमेर सूं रिहा कर दिया पण उणीं दिन डिफेंस ऑफ इण्डिया अेक्ट रै तैत पाछा गिरफ्तार करनै तिलहर जेळ में दो साल तांई पुलिस री सुरक्षा में राख दिया। इण बीच अजमेर-मेरवाडा रा खालसा गांवां रा हजारूं निवासियां ठाकुर गोपाळसिंह खरवा नैं रिहा करण सारू आपरा हस्ताक्षर करनै अेक ज्ञापन वाईसरॉय नैं दियो। इण भान्त दूसरै राजनैतिक कैदियां रै साथै सन् 1922 में उणां नैं भी रिहा करणा पड़्या।

राजस्थान रा इण तीनूं क्रान्तिकारियां री जिकी गतिविधियां रह्यी, उण रो मूल्यांकन अध्येता वर्ग आप आपरै तरीकै सूं करयो है। इण आलेख मांय ऊपर जिका तथ्य दिया गया है वै ज्यादातर सरकारी दस्तावेजां पर आधारित है। पुलिस आंनै आपरै पख मांय प्रस्तुत करया हा। इण कारण सूं अध्येता-वर्ग नैं खालस इण माथै निर्भर नीं रैयनै दूजा स्रोतां रो अवगाहन भी करणो चाहीजै।

स्वतंत्रता आन्दोलन अर मारवाड़ी व्यापारी

राजस्थान रै स्वतंत्रता आन्दोलन मांय व्यापारी वर्ग री महताऊ भूमिका रह्यी है। इण नैं समझण सारू अौ जाणणो जरूरी है कै भारत रै राष्ट्रीय आन्दोलन मांय इण वर्ग री कांई भूमिका रह्यी। म्हैं सन् 1970 में इण मारवाड़ी व्यापारियां माथै आपरो पीअेच. डी. उपाधि सारू अेक शोध-प्रवन्ध लिख्यो हो। उणमें मारवाड़ियां री राष्ट्रीय स्तर अर राजस्थान स्तर माथै स्वतंत्रता आन्दोलन में जिकी पृष्ठभूमि रह्यी, उण री विगतवार चर्चा करी ही। इण आलेख में मारवाड़ियां माथै म्हारै सूं वाद में लिख्योड़ी पोथ्यां रा संदर्भा नैं भी काम में लिरीज्या है। इणमें डी. के. टकणेत री 'मारवाड़ी समाज' अर हरिभाऊ उपाध्याय री 'श्रेयार्थी जमनालालजी' नांव सूं छप्योड़ी पोथ्यां उल्लेख जोग है। अठै आ बात बतावण जोग है कै मारवाड़ी व्यापारी वर्ग री भारत रै स्वतंत्रता आन्दोलन में जिकी भूमिका रह्यी ही, उणनैं अेक आलेख तांई सीमित राखणो घणो ओखो काम है। इण वास्तै इण आलेख में स्वतंत्रता आन्दोलन रा मोटामोट संदर्भ ही आय सक्या है।

19वीं सदी मांय राजस्थान रा मारवाड़ी व्यापारी आपरै मूळ राज्यां सूं जीवन-यापन सारू सगळै अंग्रेजी भारत, दक्षिण अर मध्य भारत री देसी रियासतां मांय आपरो कारोबार सरू कर चुक्या हा। इण वगत तांई इण वर्ग रो अंग्रेज सरकार अर अंग्रेज व्यापारियां री रीति-नीति सूं कोई विरोध नीं हो पण कीं मारवाड़ी व्यापारी जिका अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह अर मध्य-भारत री देसी रियासतां रै शासकां रै सम्पर्क में आयग्या हा, उणां रो अंग्रेज सरकार सूं थोड़ो मोह भंग हुयग्यो हो। सन् 1857 आवण रै उणां रो अंग्रेजां रै प्रति रोस ओर बधग्यो। सन् 1857 में जद देश रो प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन लड़्यो गयो, उण वगत इण वर्ग रा लोगां आपरी जान-माल री परवा नीं करी अर अंग्रेज विरोधी स्वतंत्रता सेनाणियां री मदत करी। आ मदत मुख्य रूप सूं धन देयनै करीजी ही। पण अंग्रेज सरकार इण आर्थिक सहायता सूं इत्ती घबरायगी कै वा इसा मारवाड़ी व्यापारियां नैं मौत रै घाट उतारणो सरू कर दियो। सन् 1857 में ग्वालियर राज्य रो खजानो, उठै रै बडै व्यापारी सेठ अमरचन्द बाठियै रै सुपुर्द हो। सेठ बाठियो मूळ में बीकानेर राज्य रो मारवाड़ी व्यापारी हो। जद राणी लक्ष्मीबाई, नाना साहब अर तांत्या टोपे ग्वालियर राज्य माथै हमलो करयो, उण वगत सेठ बाठियो ग्वालियर रो खजानो उणां री सेना रै खर्च सारू उणां नैं ही भेंट कर दियो। अंग्रेज सरकार इण घटनां नैं राजद्रोह मान अर सेठ अमरचन्द नैं फांसी पर लटका दियो। दिल्ली में मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर नैं मोकळा मारवाड़ी व्यापारी धन सूं मदत करया करता हा पण मारवाड़ी व्यापारी सेठ रामजीदास गुड़आळो तो बादशाह नैं खुल्लमखुल्ला मदत करतो हो। इण बात सूं नाराज होयनै अंग्रेज सरकार फगत उणरै खजानै नैं ईज जब्त नीं करयो बल्कै उणनैं भी फांसी माथै लटका दियो। इणीं भान्त जद तांत्या टोपे भाजतो-भाजतो राजस्थान मांय जयपुर सूं लालसोट अर उणरै बाद सीकर पूग्यो तो मारवाड़ी व्यापारियां उणनैं गैणा-गांठा देयनै मदत करी। सेठ रामप्रकाश

अग्रवाळ इण ओळ में हरावळ हो। शोलापुर रा कृष्णदास मारड़ो अर मतारा रा सेठ सेवाराम मोर भी आपरी उग्र कार्रवाइयां रै कारण सूं फांसी माथै झूलग्या। औ मारवाड़ी व्यापारी उण वगत 1857 रै क्रान्तिकारियां रै विचाळै मेळ रो मारग बणावण में भी लारै नीं रह्या। वै क्रान्तिकारियां रा कागद-पत्र अर संदेसा अेक ठौड़ सूं दूजी ठौड़ घणी चतुराई सूं भिजवाय दंता हा। इत्तो ई नीं, वै संदेसवाहकां नैं आपरै घरै ठहरावणै मांय भी संकोच नीं करता हा। सन् 1857 री क्रान्ति असफळ हुयां पछै ई क्रान्तिकारियां रा रिस्तेदार मारवाड़ियां रै अठै शरण लेय रह्या हा। नाना साहब पेशवा रो भतीजो मार्च 1862 दक्षिण में हैदराबाद में सेठ मोहनलाल पिती अर शरणमल रै अठै गुप्त रूप सूं रैय रह्यो हो। अंग्रेज सरकार नैं जद इण बात री जाणकारी मिली तो उण दोनूं सेठां माथै भारी जुर्मानो करनै सजा दी।

अठै आ बात बतावणी भी जरूरी है कै 1857 री क्रान्ति पछै सन् 1900 तांई मारवाड़ी व्यापारी, अंग्रेज सरकार अर उणरै व्यापारियां सूं अंग्रेजी भारत मांय सीधो टकराव नीं लियो। इणरै लारै अेक कारण आपरी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करणो भी रह्यो। पण इण बगत तांई अंग्रेज सरकार भारत रै लगैटगै सगळा रजवाड़ां मांय परम्परागत कानून-कायदां री जगां प्रशासनिक सुधारां रै नांव माथै अंग्रेजी कानून कायदा लागू करवाय रैया हा। इण रो प्रभाव दूजा वर्गां रै साथै राज्यां रा व्यापारी वर्ग रै परम्परागत विशेषाधिकारी माथै भी पड़्यो। इण कारण सूं रियासतां मांय निवास करणियां अर उणां रा ही भाईबन्ध जिका प्रवासी हुयग्या हा, दोनूं में अंग्रेजां रै प्रति कटुता बधती गई। कठै-कठैई व्यापारियां रो औ रोस विस्फोटक स्थिति मांय पूगग्यो। राजस्थान रै उदयपुर राज्य रा लगैटगै 2000 व्यापारी 30 मार्च, 1864 नैं नगरसेठ चम्पालाल रै नेतृत्व में कर्नल ईडन रै निवास माथै आपरो विरोध जतावण'सारू पूग्या पण अंग्रेज अधिकारी उणां री मांग माथै विचार करण सूं इनकार कर दियो। औ व्यापारी सात दिनां तांई हड़ताल राखनै आपरो कामकाज बन्द राख्यो। इण पछै अंग्रेज सरकार अर राज्य रै शासक रै बीच-बचाव सूं मामलो सलट्यो। व्यापारियां रा इण भान्त रा विरोधी स्वर दूजा राज्यां मांय भी देखण नैं मिलै।

उगणीसवीं सदी रै अन्तिम दसकां मांय जद अंग्रेज भारत रै बडा शहरां, खास करनै बन्दरगाह आळा शहरां मांय आपरी आर्थिक स्थिति मजबूत करण में व्यस्त हा, उण बगत उणां रो अंग्रेज व्यापारियां सूं टकराव सरू हुवणो सरू हुयग्यो। इण रो मुख्य कारण मारवाड़ी व्यापारियां द्वारा अंग्रेजी व्यापारियां रै व्यापारिक अेकाधिकार नैं चुनौती देवणो हो। इण सूं इण दोनूं व्यापारी वर्गां रा व्यापारिक-हित टकरावण लागग्या हा। मारवाड़ी व्यापारियां नै आ बात समझण मांय देर नीं लागी कै केन्द्रीय सत्ता सूं जुड़्योड़ा अंग्रेज व्यापारियां सूं व्यावसायिक टक्कर राजनैतिक दबाव अर समर्थन रै अभाव में लेवणी दोरी है। इण बात नैं ध्यान में राखनै सन् 1898 में बंगाल में रैवणिया अठै रा व्यापारी 'मारवाड़ी असोसियेशन' नांव सूं अेक संस्था थरप् ली। इण संस्था री थापना रै साथै उणां घोषणा करी कै राजनीति रो सम्बन्ध व्यापार सूं रेवै है अर बा प्रत्यक्ष रूप सूं

व्यापार नैं प्रभावित करै है। इण वास्तै 'मारवाड़ी असोसियेशन' भारत री राजनीति सूं लगाव राखण में परहेज नीं करैली। इण बात रो ओर खुलासो करता थकां मारवाड़ी व्यापारियां सूं सम्बन्धित पत्र-पत्रिकावां, जिणां में 'मारवाड़ी' अर 'अग्रवाल' नांव री पत्रिकावां उल्लेख जोग है, आपरै सम्पादकीय मांय मारवाड़ी व्यापारियां सूं राजनीति में सक्रियता सूं हिस्सो लेवण रौ आह्वान कर्‌यो। देखतां-देखतां मोकळा प्रगतिशील मारवाड़ी युवक 'मारवाड़ी असोसियेशन', 'वैश्य सभा' अर 'बुद्धिवर्द्धिनी सभा' रै माध्यम सूं भारतीय राजनीति में रुचि लेवण लागग्या।

सन् 1905 रै आवतां-आवतां मारवाड़ी युवक देश री मुख्य राष्ट्रीय धारा सूं जुड़णा सरू हुयग्या हा। जद बंग-भंग रै विरोध में बंगाल में जन आन्दोलन सरू हुयो, उण बगत अै मारवाड़ी युवक विरोध सभावां में सक्रिय भूमिका निभावता निजर आया। बंगाल रै विभाजन नैं रुकावण सारू अंग्रेज सरकार माथै दबाव बणावानै मारवाड़ी व्यापारियां इंग्लैण्ड सूं विदेसी समान मंगावणो बन्द कर दियो अर बहिष्कार आन्दोलन भी सरू कर दियो। उणां इंग्लैण्ड स्थित मेनचेस्टर रै चैम्बर ऑफ कॉमर्स सूं अनुरोध कर्‌यो कै बो ब्रिटिश सरकार माथै बंगाल नैं विभाजित नीं करण सारू दबाव देवै। बंगाल रै विदेसी माल रै बहिष्कार आन्दोलन नैं मारवाड़ी व्यापारियां रै सहयोग सूं सांतरो बल मिल्यो। आ बतावण जोग बात है कै बंगाल मांय विदेसी कपड़ै रो आयात करण रो घणकरो व्यापार मारवाड़ियां रै हाथां मांय ई हो। उणां रै सहयोग रो अनुमान इण बात सूं लागै है कै सन् 1904 रै सितम्बर माह में बंगाल मांय जठै 77,000 रुपियां रो कपड़ो बिक्यो बठै ही सन् 1905 रै सितम्बर माह में फगत 10,000 रुपियां रो कपड़ो ही बिक्यो। बंग-भंग री घोषणा सूं बंगाली युवक क्रान्तिकारी गतिविधियां मांय लिप्त हुवण लागग्या हा। इण क्रान्तिकारी गतिविधियां में बंगाल रा मारवाड़ी युवकां भी कंधै सूं कंधो मिलायनै उण क्रान्तिकारियां रो साथ दियो। हनुमानप्रसाद पोद्दार तो 'स्वदेश बांधव' अर 'अनुशीलन समिति' जिसी क्रान्तिकारी संस्थावां रो सक्रिय सदस्य बणग्यो हो। रामगोपाळ नेवटियो 'देशपरक' नांव सूं अेक मासिक पत्रिका निकाळणी सरू करनै उणरै माध्यम सूं बंगाल रै क्रान्तिकारियां री गतिविधियां नै प्रोत्साहित कर रह्यो हो। बसन्तलाल मुरारको शरत्‌चन्द्र बोस नैं अेक लाख इग्यारै हजार रुपियां देयनै मदत करी। ओंकारलाल सर्राफ रा क्रान्तिकारी आशुतोष लाहिड़ी अर प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका रा अतुलनाथ सूं गैरा सम्बन्ध बण्योड़ा हा। विजयसिंह नाहर तो बंगाल मांय आपरी उग्र राजनीति रै कारण खासो नांव कमायो हो। सन् 1913 में मारवाड़ी युवकां नैं प्रेरणा देवण आळी साहित्यिक संस्था 'साहित्य-संवर्धनी' माथै अंग्रेज सरकार प्रतिबन्ध लगाय दियो। सन् 1914 में प्रसिद्ध रोड़ा काण्ड में अनुशीलन समिति सूं जुड़्योड़ा फूलचन्द चौधरी, ज्वालाप्रसाद कानोड़िया, प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, घनश्यामदास बिड़ला, कन्हैयालाल चितलांगिया, ओंकारमल सर्राफ अर हनुमानप्रसाद पोद्दार री गिरफ्तारी रा वारण्ट जारी कर्‌या गया। बाद में घनश्यामदास बिड़ला नै छोड उण सगळां नैं खासै लंबै समै तक जेळां मांय राख्या। ब्यावर रो सेठ दामोदरदास राठी बंगाल रा

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी अरविन्द घोष, रासविहारी बोस अर संचेतन गांगुली आद सूं गैरा सम्बन्ध बणाय राख्या हा। इणरै साथै ई उण रा श्यामजीकृष्ण वर्मा, राजा महेन्द्रप्रताप अर राजस्थान रा दूजा क्रान्तिकारियां सूं भी सम्बन्ध हा। बो इण सगळा क्रान्तिकारियां नै धन सूं भी मदत कर्‌या करतो हो। बंगाल अर बनारस रै क्रान्तिकारियां रै सहयोग सूं राजस्थान मांय भी क्रान्तिकारियां आपरी गतिविधियां वधायदी ही। उणां नैं भी जयपुर रा सेठ छोटेलाल अर मोतीचन्द मोकळो आर्थिक सहयोग देय रह्या हा। सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी अर्जुनलाल सेठी नैं जयपुर रा सेठां आर्थिक रूप सूं भरपूर सहयोग दियो। इणीं भान्त देश रै दूजां भागां मांय भी मारवाड़ी व्यापारी व्यक्तिगत रूप सूं क्रान्तिकारी गतिविधियां में संलग्न हा।

क्रान्तिकारी आन्दोलन सूं ऊब्योड़ा मारवाड़ी युवक सन् 1915 माय भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी रै पदार्पण रै साथै ई उणां कानी रुख कर लियो। सेठ जमनालाल बजाज महात्मा गांधी रै कार्यक्रमां सूं इत्ता प्रभावित हुया कै बै बापू रा पट्ट-शिष्यां में आपरो स्थान बणा लियो। सन् 1917 में बां मारवाड़ी युवकां सूं सक्रिय राजनीति में आवण रो आह्वान कर्‌यो। इण रो मारवाड़ी युवकां माथै सांतरो प्रभाव पड़्यो अर एनीबिसेंट रै होमरूल आन्दोलन मांय सेठ फूलचन्द चौधरी अर कन्हैयालाल चितलांगिया सक्रिय रूप सूं भाग लेयनै गिरफ्तार हुया। जलियांवाला बाग री घटना में मारवाड़ी युवक भी मार्‌या गया हा। उण बगत तक कांग्रेस मारवाड़ियां री महत्ता नैं समझ चुकी ही। उण सन् 1920 में जमनालाल बजाज नैं कांग्रेस पार्टी रो कोषाध्यक्ष बणा दियो। इणीं बगत नागपुर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गांधी 'तिलक स्वराज फण्ड' में ज्यादा सूं ज्यादा धन जमा करावण रो आह्वान कर्‌यो। इण आह्वान रै जवाब में सेठ जमनालाल बजाज, सेठ आनन्दीलाल पोद्दार, रामकृष्ण मेहता, घनश्यामदास बिड़ला, केशोराम पोद्दार अर सुखलाल करनाणी लाखां रुपिया स्वराज फण्ड में जमा करवा दिया। अकेलै बडै बजार सूं दस लाख रुपिया भेळा करनै जमा कराईज्या। सेठ रामकृष्ण डालमियो ई लारै नीं रह्यो।

महात्मा गांधी जद विदेसी वस्तुआं रो बहिष्कार करण रो आह्वान कर्‌यो तो विदेसी कपड़ै रै बहिष्कार में सगळै अंग्रेजी भारत रा मारवाड़ी विदेसी कपड़ां री होळी जगावण में आगीवाण रह्या। सेठ जमनालाल बजाज अर सेठ कृष्णदास जाजू इण आन्दोलन रो नेतृत्व कर्‌यो। इणीं रै साथै महात्मा गांधी रो रचनात्मक कार्यक्रम चलावण में मारवाड़ी धनपति आगली पंगत में हा। सेठ जमनालाल बजाज, घनश्यामदास बिड़ला, कृष्णदास जाजू, सिद्धराज ढढ्ढा, ब्रजलाल बियाणी अर दूजा मारवाड़ी सेठ-साहूकार खादी प्रचार-प्रसार, हरिजन उद्धार जिसा कार्यक्रम अपणायनै इणां रो देशभर में प्रचार-प्रसार कर्‌यो। इण लोगां स्वदेसी रै प्रचार-प्रसार सारू अंग्रेजी भारत रै साथै राजस्थान री रियासतां मांय भी आपरो जाळ बिछायो। शेखावाटी मांय सेठ घनश्यामदास बिड़ला हर बडै कस्बै मांय खादी भण्डार खुलवा दिया हा। सेठ जमनालाल बजाज, सिद्धराज ढढ्ढा तो राजस्थान रै रजवाड़ां मांय घूम-घूमनै खादी अर

हरिजन उद्धार रो मोकळो प्रचार करयो। सेठ घनश्यामदास बिड़ला तो हरिजन-सेवक संघ रा अध्यक्ष भी हा।

महात्मा गांधी रै असहयोग आन्दोलन में तो मारवाड़ी व्यापारी रीढ री हड्डी रै रूप में काम कर रह्या हा। इण वात नैं महात्मा गांधी खुद आपरै इण आन्दोलन में मारवाड़ियां री भूमिका री प्रशंसा करता थकां कही ही। मारवाड़ियां फगत इण आन्दोलन नैं आर्थिक सहायता ईज नीं दी बल्कै व्यक्तिगत रूप सूं भी इण आन्दोलन मे भाग लेयनैं आखै भारत में गिरफ्तारियां दी। अै लोग सन् 1930 रै नमक-सत्याग्रह में भी खुलनैं भाग लियो। इण सत्याग्रह में सैंकड़ां मारवाड़ी युवकां आपरी गिरफ्तारी दी। अठै आ वात भी उल्लेखबा जोग है कै बंगाल मांय सबसूं ज्यादा मारवाड़ी व्यापारी करोवार करया करता हा। बंगाल मांय महात्मा गांधी रै असहयोग आन्दोलन रो सफळ संचालन मारवाड़ियां ही करयो हो। इणरी पुष्टि तत्कालीन बंगाल सरकार रै अेक बडै अधिकारी अे. अेच. गजनवी दिनांक 27 अगस्त, 1930 नैं भारत रै वायसराय रै प्रतिनिधि कनिंघम नैं लिख्योड़ै गुपताऊ कागद में करी ही। इण कागद में उण लिख्यो हो कै जे बंगाल मांय महात्मा गांधी रै असहयोग आन्दोलन सूं मारवाड़ियां नैं अलग कर दियो जावै तो 90 फीसदी आन्दोलन अपणै आप ई फिस जावैलो। अे. अेच. गजनवी बंगाल रा उण मारवाड़ी व्यापारियां री लाम्बी सूची भी उठै भेजी ही, जिका महात्मा गांधी रै आन्दोलन रो संचालन आपरै घरां अर बारै सूं कर रह्या हा। साथै ही जिका मारवाड़ियां नैं बंगाल मांय गिरफ्तार करीज्या, उणां रा नांव भी उण कागद मांय लिख्या गया हा। इण पर अंग्रेज सरकार राजस्थान रै रजवाड़ां रै शासकां माथै दबाव दियो कै बै बंगाल में व्यापार करण आळा आप-आपरी रियासतां रा मारवाड़ी व्यापारियां नैं आन्दोलन सूं अळघो रैवण सारू चेतावै। लगटगै सगळी रियासतां रा शासक इण सारू आपरी असमर्थता जतायदी। उण वगत तक मारवाड़ियां री जातीय सस्थावां आप-आपरै घड़ै रै लोगां नैं भारतीय राजनीति में और ज्यादा सक्रिय हुवण रो आह्वान करण लागगी ही। अखिल भारतीय माहेश्वरी सभा रै सन् 1931 मे हुयै दसवै अधिवेशन में अध्यक्षता करता थकां सेठ ब्रजलाल बियाणी कह्यो, "माहेश्वरी समाज अबार तांई महात्मा गांधी रै आन्दोलनां मांय मोकळो धन दियो है अर जेळ री यातनावां भी भोगी है पण अबै समै आयग्यो है कै माहेश्वरी समाज रै बच्चै-बच्चै नैं देश री बलिवेदी माथै चढण सारू त्यार रैवणो चाइजै।" इणीं भान्त अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन आपरै भागलपुर में हुवण आळै चौथै सम्मेलन मांय भारत रै स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेवण आळा समाजू लोगां री प्रशंसा में प्रस्ताव पास करनै बधाई दी।

महात्मा गांधी रै सन् 1942 में 'करो-मरो आन्दोलन' रो प्रस्ताव बम्बई रै बिड़ला हाऊस में पास हुयो हो। इण आन्दोलन मांय भारत भर मांय मारवाड़ियां यथाशक्ति आपरो योगदान दियो। इण आन्दोलन री आ खासियत ही कै मारवाड़ी युवक, लुगायां अर बूढा-बडेरा सगळा इण सूं प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप सूं जुड्योड़ा हा। सैकड़ां मारवाड़ी लोग सत्याग्रह में भाग लेयनैं गिरफ्तारी दी। सेठ जमनालाल बजाज रो

तो पूरो परिवार ही इण आन्दोलन में कूद पड़्यो। डॉ राममनोहर लोहिया अर मगनलाल बागड़ी री तो इण आन्दोलन माय अविस्मरणीय अर महताऊ भूमिका रह्यी। अेक मोटै अनुमान मुजब 'भारत छोड़ो' नांव रै इण आन्दोलन रै दौरान 483 मारवाड़ियां नै गिरफ्तार करनै सजा सुणाईजी।

मारवाड़ी व्यापारियां री 1942-44 बाद भी भारतीय राजनीति में कोई कमी नीं ही। सुभाषचन्द्र बोस री 'आजाद हिन्द फौज' रै गठन में भी मारवाड़ी व्यापारियां आर्थिक मदत देयनै आपरो फरज निभायो। सेठ भगवानदास बागलो, जिणनैं मारवाड़ियां में पैलो करोड़पति हुवण रो गौरव प्राप्त हो, बर्मा में रंगून स्थित आपरी 'नेशनल बैंक ऑफ इण्डिया' नैं सुभाष बाबू नैं आजाद हिन्द फौज सारू सूंप दी। सन् 1945 रै पछै कांग्रेस में समाजवादी विचारां रा लोग अलग हुयग्या तो उण बगत राममनोहरलाल लोहिया जिसा लोग समाजवादी खेमै में रैयनै देश री मोकळी सेवा करी। मारवाड़ियां री भारतीय राजनीति में स्वतंत्रता प्राप्ति ताईं बरोबर भागीदारी बणी रह्यी।

अठै मारवाड़ी व्यापारियां री वैचारिक क्रान्ति में जिकी भूमिका रह्यी, बीं री चरचा हुयां बिना भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन मांय उणां रै अवदान री सूचना अधूरी मानीजैली। आ बतावण जोग बात है कै राष्ट्रीय आन्दोलन रै दौरान विचारां री क्रान्ति लावण मांय जिका अखबार आपरो योगदान देय रह्या हा बै प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप सूं आं मारवाड़ी व्यापारियां रै आर्थिक सहयोग सूं ही छपता हा। आं अखबारां मांय हिन्द केसरी, हरिजन, कर्मवीर, प्रताप, त्याग-भूमि, लीडर, भारत-मित्र आद इसा नांव हा जिका नैं सेठ जमनालाल बजाज, घनश्यामदास बिडला अर सेठ भागीरथ कानोडिया आद अर्थ-सहयोग कर रह्या हा।

ऊपर मारवाडियां री राष्ट्रीय स्तर पर स्वतंत्रता आन्दोलन मांय जिकी भूमिका रह्यी उण रो संक्षेप मांय वर्णन हो पण औ वर्ग राजस्थान में आपरै मूळ निवास री राजनैतिक स्थिति सूं खुश नीं हो। जद्यपि आपरै मूळ निवास स्थान में आपरी सम्पन्नता रै कारण सूं औ वर्ग खासो सुविधाभोगी अर प्रभावशाली हो पण इणरै बावजूद इण वर्ग नैं जिकी नागरिक सुविधावां अंग्रेजी भारत मांय मिल रह्यी ही, बै उणां नैं आपरै मूळ निवास रै राज्य में नी मिल सकती ही। कैवण रो मतलब है कै अंग्रेजी भारत में जिण भान्त रो उन्मुक्त वातावरण उण लोगां नैं परदेश में मिल रह्यो हो, बो उणां रै आपरै खुदरै राज्य में नीं मिल पा रह्यो हो, क्यूंकै उठै सामन्त अर शासक राज चलावता हा। यूं तो मारवाड़ियां रो ध्यान आपरै मूळ राज्यां री राजनैतिक स्थिति माथै सन् 1919 में ही चल्यो गयो हो। इण खातर बै राजस्थान अर मध्य-भारत री रियासतां मांय निवास करण आळा लोगां नैं भी राष्ट्रीय कांग्रेस री गतिविधियां सूं परिचित करावण सारू सन् 1919 में ही सेठ जमनालाल बजाज री अध्यक्षता में दिल्ली रै मारवाड़ी पुस्तकालय मे अेक सभा करनै 'राजपुताना मध्यभारत सभा' नांव री संस्था थरप दी ही। इण सभा रो मुख्यालय अजमेर में राखीज्यो। इण सभा रा अधिवेशन राजस्थान री रियासतां में हुया करता हा। इणसूं बठै रै लोगां मांय भी जनजागृति फैलण में मदत मिली। लोगां नै

अेकठ करण अर मिलजुळनै विचार करावण में आ सभा खासी कारगर साबित हुयी। इणीं रै परिणाम सरूप सन् 1927 में मारवाड़ी व्यापारियां रै साथै मिलनै रियासतां रा प्रमुख लोगां राज्य री जनता नैं राजनैतिक अधिकार दिरावण सारू अखिल भारतीय राज्य प्रजा परिषद री थरपणा करी। बाद में इणीं संस्था रै प्रयास सूं रियासतां में प्रजामण्डळ अर प्रजा-परिषदां रा गठन हुया।

जिण बगत अै प्रजामण्डळ अर प्रजा परिषद आप-आपरै राज्यां मांय उत्तरदायी शासन सारू जन-आन्दोलन चलायो, उण बगत अै मारवाड़ी व्यापारी भी इण आन्दोलन में आपरो योग दियो। वै लोग स्वाधीनता रै सम्बन्ध में राष्ट्रीय नेतावां रै विचारां सूं पैलां ई परिचित हा। इण कारण सूं राज्यां में निरंकुश शासन अर उणां रै शासकां रै विचारां रै खोखलैपण माथै उणां रा आपरा विचार हा। वै राज्यां मांय बध्योड़ा टैक्स अर प्रशासनिक सुधारां रै नांव पर शासकां कानी सूं कीं नीं करीजण रो सांगोपांग विरोध कर्यो। बीकानेर, जोधपुर, जयपुर अर उदयपुर जिसा राज्या मांय जिका आन्दोलन हुया उणमें वां खासो सहयोग दियो हो। अठै उल्लेख जोग बात आ है कै राज्यां मांय उत्तरदायी शासन हासल करण सारू जिका आन्दोलन हुया, उणांमें स्थानीय व्यापारियां ही खुलनै भाग लियो हो; पण जद उणां नैं किणीं भान्त रै नेतृत्व री जरुरत पड़ती तो अंग्रेजी भारत मांय रैवण आळा व्यापारी मदत सारू आवता-जावता रैवता हा।

बीकानेर में सन् 1907 सूं मारवाड़ी व्यापारी स्वामी गोपालदास स्वामी रै माध्यम सूं राज्य में जनजागृति फैलावणी सरू करदी ही। औ क्रम लगोलग सन् 1930 तांई चालतो रह्यो। सन् 1930 रै बीकानेर षड्यन्त्र केस में लाला खूबराम सर्राफ अर सत्यनारायण सर्राफ नें लाम्बी सजा हुयी ही। सन् 1942 रै 'करो-मरो आन्दोलन' में मारवाड़ी सेठ-साहूकार पूरी मदत करी। उणां इण आन्दोलन नैं जगां-जगां गति दी। मालचन्द हिसारिया अर नेमीचन्द आंचलिया तो गिरफ्तार हुया हा। राजनैतिक सम्मेलनां में व्यापारी-वर्ग रा लोग बढ-चढनै भाग लेवता हा। सन् 1945 में व्यापारियां आयकर विरोधी आन्दोलन चलायनै राज्य में उत्तरदायी शासन थापित करण री मांग करदी ही। कन्हैयालाल सेठिया 'आगीवाण' नांव री पत्रिका निकाळनै राज्य प्रशासन नैं झकझोर दियो। उदयपुर राज्य मांय तो सन् 1938 में मेवाड़ प्रजामण्डळ माथै राज्य सरकार जद प्रतिबन्ध लगा दियो तो उणरै विरोध में जिको आन्दोलन हुयो, उणमें व्यापारी वर्ग रा लोग भी भेळा हा अर इणां मांय सूं कई गिरफ्तार हुया हा। बलवन्तसिंह मेहता तो प्रजामण्डळ रा संस्थापकां में हा। सेठ छगनलाल ने तो राज्य सूं निर्वासित कर दियो गयो हो। सन् 1940 में सेठ भंवरलाल ढढ्ढा, रूपलाल सोमानी, प्रतापसिंह सुराणा आद उदयपुर में गांधी जयंती मनावण सारू सेठ जमनालाल बजाज अर सीताराम सेक्सरिया नैं बुलाया। मेवाड़ प्रजामण्डळ री शाखावां में सैकड़ां व्यापारी सदस्य बण्योड़ा हा। बाद रा आन्दोलनां में हीरालाल कोठारी, शोभालाल गेलड़ा, परसराम आद भी सक्रिय राजनीति में रह्या हा। सन् 1941 मांय बम्बई में मेवाड़ प्रजामण्डळ री शाखा खोली। उण रा सदस्यां में श्रीकृष्ण मूंधड़ा, प्रतापमल सेठिया, रामचन्द्र खण्डेलवाल अर

मोहनलाल सेठ आद हा। जयपुर राज्य रै प्रजामण्डळ रो नेतृत्व तो सेठ जमनालाल बजाज रै हाथां में ई हो। सन् 1939 में जद जयपुर प्रजामण्डळ नैं गैरकानूनी संस्था घोषित करीजी तो सेठ जमनालाल बजाज माथै भी जयपुर प्रवेश रो प्रतिबन्ध लगाय दियो हो। जमनालाल इण प्रतिबन्ध रो उल्लंघन करनै 12 फरवरी, 1939 में जयपुर मांय गिरफ्तारी दी। इण पर विरोध सरूप जिको सत्याग्रह हुयो, उणमें दूजा लोगां रै साथै केवलचन्द मेहता, स्वरूपचन्द सोमानी, सरदारमल गोलछा आद भी गिरफ्तारी दी। इण सत्याग्रह नैं सिद्धराज ढढ्ढा अर सीताराम सेक्सरिया बारै सूं संचालित कर रह्या हा। इण सत्याग्रह में श्रीमती सुमतिदेवी खेतान भी सक्रिय रूप सूं भाग लियो हो। जोधपुर मारवाड़ मांय सन् 1920 में भंवरलाल सर्राफ 'मारवाड़ सेवा-संघ' अर सन् 1922 में चांदमल सुराणा 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' थापित करनै मारवाड़ में जनजागृति रो काम करयो। सन् 1928 में मारवाड़ स्टेट पीपुल्स कांफ्रेंस रो अधिवेशन मारवाड़ मांय करावण रा प्रयास में स्वागत समिति रा सचिव अर सहायक सचिव आनन्दराज सुराणा अर भंवरलाल सर्राफ नै राज्य सरकार गिरफ्तार कर लिया हा। इणरै विरोध में नृसिंहदास लूंकड़, जयनारायण गज्जा अर कन्हैयालाल माहेश्वरी आपरी गिरफ्तारी दी। सन् 1942 में मारवाड़ लोक परिषद रै नेतावां री गिरफ्तारी रै विरोध में कलकत्तै मे मालचन्द अग्रवाळ री अध्यक्षता में अेक विरोध-सभा हुयी। इणमें सीताराम सेक्सरिया, बसन्तलाल मुरारका, मंगतूराम जयपुरिया, ईश्वरप्रसाद जालान, रामेश्वरलाल नेपानी, रामकुमार भुवालका, भंवरलाल सिंघी, गंगाप्रसाद मोतिका, मातादीन खेतान आद भाग लियां हो।

अठै अेक उल्लेखबा जोग बात आ है कै राजस्थान री रियासतां मांय जिका भी किसान आन्दोलन हुया उणरी पृष्ठभूमि में ई मारवाड़ी व्यापारी हा। सीकर रै जाट किसान आन्दोलन में पिलाणी रो बिडला परिवार खासो सक्रिय हो। सन् 1933 में औ बिड़ला परिवार सीकर री 'जाट महायज्ञ' नांव री संस्था रै अध्यक्ष नैं चढण वास्तै अेक हाथी दियो। औ अेक सीकर रै ठिकाणैदार नैं चुनौती देवण रो काम हो। सीकर रै किसानां री समस्या रो समाधान करावण में सेठ जमनालाल बजाज अर सीताराम सेक्सरिया जाझा जतन करया। ऑल इण्डिया मारवाड़ी फैडरेशन अेक प्रस्ताव पास करनै सीकर रै किसानां नैं दियोड़ा आश्वासन पूरा नी करण सारू जयपुर रै प्रधानमंत्री अर जयपुर रै पोलिटिकिल अेजेण्ट रै प्रति नाराजगी जाहिर करी। झुंझुनूं, चिड़ावा अर मण्डावा में भी किसानां री समस्या सामाधान सारू मारवाड़ी व्यापारियां कई प्रयास करया। इण लोगां में चिड़ावा रो ताराचन्द डालमियो अर मण्डावै रो सेठ देवकिसन सर्राफ प्रमुख हा। दूजा राज्यां रै किसान आन्दोलन नैं आर्थिक सहायता देवण में भी मारवाड़ी लारै नीं रह्या। कुल मिलायनै देश रो स्वतंत्रता [illegible] रा सगळै वर्गां रा लोग तन-मन सूं लड़्यो अर इणमें [illegible] भूमिका भी हरावळ में रह्यी।

1857 री क्रान्ति : बीकानेर री भूमिका

सन् सतावन (1857) री क्रान्ति री हलचल सू राजस्थान अपणै आपनैं अलग नीं राख सक्यो हो। 28 मई, 1857 रै दिन सिंझ्या चार बज्या नसीराबाद छावनी में 15वीं रेजीमेंट रा सिपाई विद्रोह रो झण्डो उठायनैं क्रान्ति री सरुआत करदी। उणां उठै रा बंगलां अर सार्वजनिक इमारतां मांय आग लगायदी अर तोपखानै माथै कब्जो कर लियो। साथै ई न्यूबटी, के. पैनी अर के. स्पार्हिश वुड जिसा अंग्रेज अफसरां नैं मार न्हांख्या। इणरै बाद अै सिपाई दिल्ली कूच करग्या। 3 जून नैं नसीराबाद री प्रतिक्रिया नीमच छावनी में ई हुयी। बठै भी बागी सिपाइयां कई घर अर बंगला बाळ दिया, कैद्यां नैं छुडवा लिया अर अेक लाख, 77 हजार रुपिया लूटनै दिल्ली कानी कूच करग्या। इण सूं पैली 31 मई नैं भरतपुर रा सिपाई भी होडल में विद्रोह रो बिगुल बजा दियो हो। धोळपुर भी इण प्रतिक्रिया सूं बच नीं सक्यो। सलूम्बर रो ठाकुर तो खुद ही क्रान्तिकारियां सूं सहानुभूमि राख रह्यो हो। जयपुर में उठै रै शासक री चौकसी रै बावजूद क्रान्तिकारियां रै साथै सम्पर्क राखण रै कारण सूं नवाब विलायत अली खां, मियां उस्मान खां अर सादुल्ला खां नै तो सजा तक दी गयी। शिवदान सिंह जिको अेक पुराणो मंत्री हो, बो भी सरकार री निजरां में हो। टोंक भी इण हलचल सूं अछूतो नी रह्यो। उठै 200 सिपाई विद्रोह में भाग लियो हो। आबू में जोधपुर बैगन रा सैनिक विद्रोह रो झण्डो गाडनै आऊवा गांव में पूगग्या। आऊवै रो ठाकुर कुशालसिंह चाम्पावत तो अंग्रेजां रै खिलाफ सागीड़ो मोरचो खोल लियो हो। ठाकुर कुशालसिंह नैं अेरनपुरा अर डीसा छावनियां रै विद्रोही सैनिकां रै साथै आसोप, आलणियावास, बैजवास, लाम्बिया, बंता, भिंवाळिया, रूपवास, रूपनगर, सलूम्बर अर लासबी आद ठिकाणां री सेना रो भी सहयोग मिल्यो हो। जोधपुर अर अंग्रेजां री सिरोळी सेना रै साथै जुध में कुशालसिंह री आऊवा (पाली) रै कनै बिठोड़ा में विजय इण क्रान्ति री महताऊ घटना मानीजै। जोधपुर रो पोलीटिकल अेजण्ट इण जुध में मार्‌यो गयो हो। 20 जनवरी, 1858 में 30 हजार सैनिकां साथै आऊवा नैं घेर लियो गयो हो पण कुशालसिंह उठै सूं खिसक गयो। उणरै बाद उण रो भाई लाम्बिया रो ठाकुर पृथ्वीसिंह 6 दिनां बाद किलो खाली कर दियो। लारै सूं फिरंगी फौजां आऊवा में लूटपाट करी अर मन्दिर तक तोड़ न्हांख्या। 8 अगस्त, 1860 में कुशालसिंह आत्मसमर्पण कर दियो पण गवाह रै अभाव में कुशालसिंह नैं सरकार छोड़ दियो। कोटा में तो क्रान्तिकारियां रो 4 अप्रैल, 1858 तक कब्जो कायम रह्यो। विद्रोहियां मांय सूं लाला हरदयाल अर मेहराब खां नैं कोटा में फांसी दिरीजी।

तांत्या टोपे ई राजस्थान में अेक जगां सूं दूजी जगां लड़तो-भिड़तो रह्यो। सीकर में भारी हार बाद बो टूट गयो। 7 अप्रैल, 1859 में शिवपुरी में पकड़ीज्यां पछै उणनैं फांसी देयदी। 1857 में राजस्थान में आ सगळी हलचल सरकारी दस्तावेजां मांय

दरज है।

इण दौरान बीकानेर अर उणरै आसै-पासै जिकी गतिविधियां हुयी, उण रो मूल्याकन उणी सरकारी दस्तावेजां सूं हुवणो हाल बाकी है। इण सारू शोध अध्येतावां खातर उण सम्बन्ध रा कीं तथ्य प्रस्तुत करया जाय रह्या है–

औ अेक अैतिहासिक साच है कै जिण बगत सन् 1857 रै विद्रोह री लपटां भारतभर मे उठ रह्यी ही, उण टेम बीकानेर रियासत री उतराधी सींवां माथै सिरसा, हांसी, हिसार में विद्रोहियां रो कब्जो हुय चुक्यो हो। उण बगत समूचै राजस्थान में बीकानेर राज्य ही इसो हो जिण रो शासक व्यक्तिगत रूप सूं विद्रोह दबावण रै वास्तै बठै गयो हो। उण री फौज री विद्रोहियां सूं अेकाध बार नीं, छह बार भिडंत हुयी ही अर हर बार विद्रोहियां नैं भागणो पड़्यो। इणरै अेवज में गर्वनर जनरल रै अेजेण्ट जयपुर रै साथै राजस्थान रै सगळा शासकां में बीकानेर महाराजा री स्वामीभक्ति री तारीफ करता थकां उणरी सेवा सिरै मानी। इण स्वामीभक्ति रै पेटै उणनैं खिल्लत, जागीर मांय हिसार जिलै रा 45 गांव मिल्या हा। पण इणरै साथै कीं तथ्य इसा भी है जिका नैं अध्येतावां अजै तांई नजरअंदाज ई कर राख्या है। इण रो खुलासो इण भान्त है–

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली में अेक पत्र है। औ पत्र राजपूताना में गवर्नर जनरल रै अेजेण्ट सेण्ट पी. लारेंस इंग्लैण्ड स्थित भारत रै सचिव नैं लिख्यो हो। आपरै पत्र में उण लिख्यो हो कै बीकानेर रा महाराजा सरदारसिंह नाना साहब नैं दस सवार देयनै उणरी मदत करी। इण पत्र रो महत्त्व इण वास्तै भी है कै औ बीकानेर स्थित अंग्रेज रेजीडेण्ट री खबर जिकी उण अजमेर में सेण्ट पी. लारेंस नैं भेजी ही, उण माथै आधारित है। भारत सरकार सरदारसिंह सूं इण मामलै नैं लेयनै जवाब-तलब भी करयो। महाराजा इण बात रो खण्डन करण रै साथै भारत सरकार सूं बीकानेर स्थित रेजीडेण्ट नैं हटावण रो आग्रह भी करयो हो।

इण सन्दर्भ में अेक पत्र (खरीतो) महाराजा सरदारसिंह स्वयं (दिनांक पोष सुदी 5, संवत् 1920) नै जनरल जार्ज लारेंस नैं लिख्यो हो, बो भी उल्लेख जोग है। इण पत्र नै महाराजा आपरै खास मुसद्दी बैद घराणै रै सदस्यां रै खिलाफ विद्रोह नै दबावणै में आडी लगावण री शिकायत करी ही। इणमें लिख्यो कै बैद हरीसिंह मेहता अर बैद गुमानसिंह मेहता जिको फौज नैं बीकानेर हांसी, हिसार अर सिरसा रै अंग्रेज नागरिकां नै सुरक्षा प्रदान करण सारू उठै भेज्या जाय रह्या हा, उणरै अफसरां नैं इण बात वास्तै भड़कायो कै वै आपरै अधीन सैनिकां नैं आगै बधण सूं रोकै। साथ ही बन्दूकच्यां नैं आप आपरी मेगजिनां पैली ई खाली करण वास्तै प्रेरित करयो। इणरै साथै बैद मेहता गुमानसिंह खुद बीकानेरी सेना री अेक टुकड़ी रो नेतृत्व कर रह्यो हो, उणनैं जद अंग्रेज जनरल वॉन कोर्टलैण्ड दिल्ली कानी कूच करण रो कह्यो तो बो साफ नटग्यो। इण पर अंग्रेज सैनिक अधिकारी मिस्टर माईल्ड जिको आ बात सुण रह्यो हो

इणरी शिकायत राजपुताने रै अंग्रेज अजेण्ट नैं खुद करी।

इण दो तथ्यां रै टाळ अेक तथ्य ओरूं ध्यान देवणजोग है। जद तांत्या टोपे आपरै आखरी दिनां में राजस्थान में नीमकाथाणा हुंवतो सीकर जाय पूग्यो तद थोड़ै-सै वगत सारू बीकानेर राज्य रै अेक गांव में भी ठैर्‌यो हो। जद्यपि सीकर में तांत्या टोपे नैं अंग्रेजी फौज रै सांमै हार रो सामनो करणो पड़्‌यो अर उण रा लगैटगै छह सौ सैनिक भाजनै बीकानेर आयग्या। अठै पूगनै महाराजा सूं आपरै अठै शरण देवण री अरज करी। अंग्रेज सरकार इण सैनिकां नैं सूंपण सारू महाराजा सूं निवेदन कर्‌यो पण महाराजा उणां नैं अंग्रेज सरकार नैं सूंपण री बजाय माफी दिरवादी।

अै तीनूं तथ्य 1857 रै विद्रोह रा इतिहास मे उपेक्षित क्यूं करीज्या ? औ अध्येता वर्ग सारू निस्चै ई शोध रो विषय है। आ बात सही है कै इण सरकारी दस्तावेजां रो पूरो मूल्यांकन तो दूजै स्रोतां सूं पूरो मिलाण कर्‌यां पछै ही हुसी पण बीकानेर रै सम्बन्ध में अै तथ्य हूं 1857 रै शोध अध्येतावां रै सांमै पंदरै-बीस बरस पैलां ई राख दिया हा। फेरूं ई इण दिसा में कोई खास प्रगति नीं हुयी। अेक बात इण तीनूं तथ्यां सूं निकाळी जाय सकै है कै राजस्थान में दूजी जगां जिण भांत अंग्रेज विरोधी वातावरण बण रह्यो हो उण रो असर बीकानेर रै जागीरदारां, मुत्सद्दिया अर आमजन में थोड़ो-घणां जरूर पड़्‌यो हो। इण समय राज्य रो शासक आपरै जागीरदारा सूं उळझ्योड़ो हो, इण वास्तै विद्रोहियां सूं थोड़ी-घणी सहानुभूति राखण रै बावजूद अंग्रेजां सूं जागीरदारां रै खिलाफ मदत लेवण रै अेवज में अग्रेज सरकार रो किणीं बात नै लेयनै विरोध नीं लेवणो चावतो हो। इणरै साथै बीकानेर रै इतिहास में इण घटना रो उल्लेख नीं करण रो कारण भी समझ्यो जाय सकै है। भारत में अंग्रेजी हकूमत रै चालतां इण तथ्यां माथै पड़दो राखणो ही श्रेयस्कर समझ्यो गयो हुवैला।

बंगाल रो स्वतंत्रता आन्दोलन अर मारवाड़ी

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन रै इतिहास री जांच पड़ताळ करां तो आ बात उजागर होवै कै भारत नैं स्वतंत्र करायण में तो समूचै भारतीय समाज रो योगदान रह्यो है, पण राजस्थान रो व्यापारी वर्ग जिको पूरै देस में मारवाड़ी समाज रै नांव सूं ओळखीजै, उण रो स्वाधीनता संग्राम में कितरो जबरदस्त योगदान रह्यो, औ फगत अेकलै बंगाल रै उदाहरण सूं ई स्पष्ट हुय जावै। बंगाल, आसाम में उण बगत घणकरो मारवाड़ी समाज विणज-व्यापार में लाग्योड़ो हो अर वीं रै बाबत आ आम धारणा ही कै इण समाज नैं आपरै धंधै सूं मतलब है ओर कोई दूजै पड़पंच में नीं पड़ै। पण मारवाड़ी समाज खतरो झेलतां थकां स्वाधीनता आन्दोलन में कितरो योगदान दियो, आ खोजबीण सूं ठा पड़ै।

बंगाल ठेट सूं ई स्वाधीनता आन्दोलन रो गढ रह्यो। लार्ड कर्जन री बंग-भंग री घोषण रै पछै 1906 में कलकत्तै में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस रो अधिवेशन हुयो। इणमें पैलड़ी वार स्वराज्य प्राप्ति रै लक्ष्य री घोषणा करीजी। राष्ट्रीय भावनावां सूं प्रेरित हुयनै बंगाल रा निराही राजस्थानी प्रवासियां इण सम्मेलन रै सदस्य रै रूप में भाग लियो। इण अधिवेशन मे गरम-दळ रा नेतावां जिको उग्र विचार पेस कर्‌यो अर राष्ट्रीय आन्दोलन रो सरूप निर्धारित कर्‌यो, कैयी राजस्थानी व्यापारियां नैं बांरा वै विचार समयोचित लाग्या। इसै मारवाड़ियां में श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, हनुमान प्रसाद पोद्दार, ज्वालाप्रसाद कानोड़िया, ओंकारमल सर्राफ अर कन्हैयालाल चितलांगिया इत्याद खास हा।

सन् 1921 रै अड़ै-गड़ै गांधी युग आवण रै साथै आन्दोलन सत्याग्रह अर असहयोग रो मारग पकड़्यो। बंगाल में ई असहयोग अर सविनय अवज्ञा आन्दोलन जोर पकड़ण लाग्यो। बंगालियां रै सागै राजस्थानी प्रवासियां खासकर शेखावाटी, बीकानेर, जोधपुर अर उदयपुर रियासतां रा लाडेसरां आन्दोलन में दिल खोलनै भाग लियो। इण काम में उणां भरपूर आर्थिक सहयोग तो दियो ई, इणरै अलावा आन्दोलनां में सक्रिय रूप सूं भाग लेयनै जेळ यातनावां अर भान्त-भान्त रा फोड़ा ई भुगत्या।

बंगाल सरकार रै अेक सुरक्षा अधिकारी मि अे. अेच. गजनवी सन् 1930 में आपरै अेक गोपनीय कागद में भारत रै वायसराय रा प्रतिनिधि मि. कनिंघम नैं शिमला लिख्यो कै बंगाल में चालतै गांधी आन्दोलन नै जे मारवाड़ी समाज री मदत बन्द हुय जावै तो औ आन्दोलन मतै ई खतम हुय जावै। मि. गजनवी वायसराय नैं दो सूचियां भेजी जिणमें उण राजस्थानी प्रवासियां रा नांव हा जिका स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय हा। इण शिकायत माथै कई लोग गिरफ्तार हुया अर बांरा बहीखाता जबत करीज्या। इसै लोगां में शेखावाटी छेत्र रा सेठ श्रीकृष्ण सीताराम, बिहारीलाल गोपीराम,

पदमचन्द पन्नालाल, रामवल्लभ, रामेश्वर, रामकुमार शिवचन्दराम (बिसाऊ), राधाकृष्ण नेवटिया (नवलगढ), मंगतुराम जैपुरिया (नवलगढ), गिरधारीलाल जवाहरमल, वल्लभदास भट्टड़, शिवदयाल मदनगोपाल, श्रीनिवास पोद्दार, बालकिशन (रामगढ) अर सेठ गोविन्दराम परसराम बजाज इत्याद खास हा।

आं में सेठ राधाकृष्ण नेवटिया, मंगतुराम जैपुरिया अर गोविन्दराम परसराम बजाज माथै तो क्रान्तिकारी आन्दोलन सूं सम्बन्धित हुवण रो आरोप हो अर सेठ श्रीनिवास बालकिशन पोद्दार (रामगढ) माथै 1921 सूं ई स्वाधीनता आन्दोलन में आर्थिक मदद देवण रो अर आपरै घर में उणरो दफतर चलावण रो आरोप हो।

दूजोड़ी सूची में जिण राजस्थानी लाडेसरां रा नांव हा, बांनै गिरफ्तार तो कोनी करया पण वां माथै ई औ खुल्लो आरोप हो कै वै गांधीजी रै आन्दोलनां में सक्रिय रूप सूं भाग लेवै। इणमें घनश्यामदास बिड़ला (पिलानी), देवीप्रसाद दुरगाप्रसाद खेतान, सीताराम सेक्सरिया, रामकुमार जालान, हनुमान प्रसाद बगड़िया, भागीरथ कानोड़िया (सगळा रामगढ), लक्ष्मीनारायण खेमाणी (मंडावा), बैजनाथ प्रसाद, मोतीलाल देवड़ा (फतेहपुर), राधाकृष्ण चावसरिया (नवलगढ), बालचन्द मोदी (चूरू), रामगोपाल सर्राफ (फतेहपुर), रामकुमार कंजड़ीवाल (चिड़ावा), गंगाबक्श शाह (सूरजगढ), गंगाप्रसाद भौतिका (फतेहपुर), ज्वालाप्रसाद मोदी (नवलगढ), रामकृष्ण डालमिया (चिड़ावा), आनन्दीलाल पोद्दार (नवलगढ), दुरगाप्रसाद सावसका (नवलगढ), सागरमल नाथानी (दूधावास, चूरू), मुन्नालाल मसूदी (मंडावा), मगनीराम रामकुमार बांगड़ (डीडवाना), हीरालाल, नथमल भंवरलाल रामपुरिया (बीकानेर), भंवरीमल जौहरीमल वैद (चूरू) अर सागरमल वैद (चूरू) इत्याद रा नांव प्रमुख रूप सूं हा।

आं में सेठ रामचन्द्र गुरुप्रताप पोद्दार माथै क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेवण रै साथै सविनय अवज्ञा आन्दोलन मे खुलमखुल्ला आर्थिक मदत देवण रो आरोप हो। सेठ रामकृष्ण डालमिया माथै आन्दोलन सारू अेक लाख रुपिया री इमदाद देवण रो आरोप हो। दूधावास रा सेठ सागरमल नाथानी माथै तो कई आरोप हा। आर्थिक मदत अर घर में दफतर चलावण रै अलावा उणां माथै औ ई आरोप हो कै वै हड़ताळां रा समर्थक हा अर खुद स्टाक अेक्सचेंज रा सदस्य हुवण रै नातै वै हड़ताळ रो विरोध करणिया अंग्रेज व्यापारियां नैं वांरै सागै व्यापार नीं करण री धमकी देंवता हा।

अंग्रेज सरकार री निजरां में कीं व्यापारी खास दोषी अर घणा खतरनाक हा। वांरी सूची न्यारी बण्योड़ी ही। इण लोगां में सेठ घनश्यामदास बिड़ला, रामकृष्ण डालमिया, मुन्नालाल मसूदी, राधाकृष्ण नेवटिया, मंगतुराम जैपुरिया, श्रीनिवास बालकृष्ण पोद्दार, गोविन्दराम परसराम बजाज, देवीप्रसाद दुर्गाप्रसाद खेतान, रामकुमार जालान, हनुमानप्रसाद बगड़िया, भागीरथ कानोड़िया अर बालचन्द मोदी इत्याद रा नांव प्रमुख रूप सूं हा। अै सगळा गांधीजी रा खास सहयोगी गिणीजता।

राजस्थान रा आं प्रवासी लाडेसरां रै स्वाधीनता आन्दोलन सूं विरत करण तांईं

नै इण आन्दोलन नैं चलावण अर विदेसी सरकार नै पंगु बणावण सारू जिका तौर-तरीका बताया उणरै मुजब औ आन्दोलन छह चरणां में चालणो हो। पैलै चरण में आन्दोलन नैं रोकण आळै सगळै आदेसां रो उल्लंघन करणो; नमक बणाणो, गैर कानूनी सभावां री खुलम-खुल्ली सदस्यता लेवणी। दूजै चरण मे वकील आपरो काम छोडैला, विद्यार्थी विद्यालय अर महाविद्यालय छोड़ देला, जज अदालती तलबी छोडसी, सरकारी नौकर आपरा पद त्याग देसी। तीजै चरण मे मजदूर हड़ताल कर देसी। चौथै चरण में विदेसी कपड़ां रो बहिष्कार, दारू री दुकानां रो बहिष्कार, विदेसी मुद्रा रो व्यापार में बहिष्कार अर पांचवै चरण में कीं विषयां पर ना तो रोक लगाई अर ना उणां नैं बढावो दियो गयो। इणमें रेलगाड़ी रोकणी, बिना टिकट जात्रा करणी, टैलीफोन अर टेलीग्राम रा तार काटणा। छठै अर आखरी चरण में टैक्स नीं देवणा, फौजां नैं रोकणी अर आन्दोलनकारियां नै बन्दी बणावै तो ई आन्दोलन नैं स्थगित नीं करणो हो।

गांधीजी 8 अगस्त, 1942 नैं अखिल भारतीय कांग्रेस समिति रै सम्मेलन में कह्यो कै अबै म्हैं वायसराय सूं भेंट करनै उणरै द्वारा कांग्रेस री मांग मंजूर करण रो इंतजार करूंला। इण सम्मेलन में राजस्थान री रियासतां रै प्रजामण्डळां रा खासा नेता भी मौजूद हा। बै सम्मेलन हुवतां ही आपरै राज्यां कानीं कूच करग्या। 9 अगस्त, 1942 नै गांधीजी अर दूजा नेतावां नैं सरकार गिरफ्तार कर लिया। ब्रिटिश सरकार री इण कार्रवाई रो समाचार फैलतां ई देस री जनता भड़क उठी अर आन्दोलन सरू हुयग्यो। देखतां ई देखतां देस भर में उपद्रव सरू हुयग्या। विद्यालय अर महाविद्यालयां रा विद्यार्थी तोड़-फोड़ सरू करदी। भारत भर में लगैटगै सगळी जाग्यां अर खास करनै मुम्बई, पूना अर अहमदाबाद मे हड़ताळां, प्रदर्शन, जुलूस अर सभावां सरू हुयगी। होळै-होळै छोटी जाग्यां भी आन्दोलन फैलग्यो। जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया अर अरुणा आसफ अली भूमिगत हुयनै आन्दोलन नै जोर पकड़ायो। विद्यार्थियां, लुगायां अर मिनखां गांव-गांव में गांधीजी री जै, गांधीजी नैं छोड दो, अंग्रेजां भारत छोड़ो रा नारा देंवता थकां जुलूस काढ्या। ठेसण, डाकखाना, संचार साधनां में तोड़फोड़ हुयी। कैयी जाग्यां जेळ रा फाटक भी तोड़ीज्या। बम फोड़्या। मोकळी जाग्यां लोगां नगर निगमां रै भवनां, सरकारी इमारतां अर सम्पत्ति माथै धावा बोल दिया। कई जाग्यां सरकारी कार्यालयां अर न्यायालयां माथै प्रदर्शनकारियां कब्जो जमा लियो। अठै तांई कै उत्तरप्रदेश, बिहार अर मद्रास में तो आन्दोलनकारियां आपरी अस्थायी सरकार भी बणायली। पुलिस अर सेना री क्रान्तिकारियां सूं मोकळी बार मुठभेड़ हुयी। सरकारी सूत्रां मुजब मौकां माथै निहत्थी जनता पर पुलिस 538 गोळियां चलायीं। इण सगळै आन्दोलन में 940 लोग मरग्या। 1630 आदमी पुलिस री गोळी रा शिकार हुया। 60,229 लोग बन्दी बणाईज्या। 18,000 लोग हिरासत में लिरीज्या। 60 जाग्यां फौज री मदत लेवणी पडी अर 6 जाग्यां पुलिस वाळा बम फेंक्या।

राजस्थान इनै बडै आन्दोलन सूं अपणै आपनैं अलग कींकर राख सकतो हो।

आ बात अलग ही कै अठै हर राज्य मे शासकां रै कठार नियंत्रण रै कारण इण जन आन्दोलन रो रूप घणो व्यापक नीं हुय सक्यो। इणरै बावजूद अठै रा कई राज्यां मे तो उठै रा स्थानीय नेतावां घणी चतुराई सूं 1942 रै इण देसव्यापी भारत छोड़ो आन्दालन नैं चलायो। जिण राज्यां रा नेता पैली सूं जेळ माय हा उठै तो इण आन्दोलन रो प्रभाव थोड़ो कम रह्यो पण जठै रा नेता जेळ सूं बारै हा बठै सान्तरो आन्दोलन हुयो।

जोधपुर में मारवाड़ लोक परिषद रा नेता जयनारायण व्यास 26 मई, 1942 म गिरफ्तार हुय चुक्या हा। जून, 1942 में व्यासजी अर 41 दूजा गिरफ्तार कार्यकर्ता जेळ में आमरण अनशन सरू कर दियो। महात्मा गांधी 'हरिजन' रै 21 जून, 1942 रै अंक में जोधपुर सरकार नैं इण अनशन रै परिणामां रै पेटै चेतायो। भूख हड़ताळियां माय सू 19 जून, 1942 नैं बालमुकन्द बिस्सो जेळ में ही मरग्यो। गांधीजी रै हस्तक्षेप सूं जोधपुर सरकार सगळा कैदयां नैं राजनैतिक कैदी मान लिया। इणरै पछै अगस्त मे भारत छोड़ो आन्दोलन में मारवाड़ लोक परिषद रा 400 कार्यकर्ता उठै गिरफ्तार करीज्या। अक्टूबर, 1942 में जोधपुर में पैलो बम्ब फेंक्यो गयो। तापछै अप्रैल 1943 में दूजो बम-काण्ड हुयो अर इणमें सूरजप्रकाश पापा, जोरावरमल बोरा अर रामचन्द्र बोरा नैं दूजां युवकां साथै गिरफ्तार कर लिया गया। आं नैं दो सूं आठ साल तक री सजा दिरीजी। 28 मई, 1944 में श्री जयनारायण व्यास अर बांरा साथी अेक समझौते रै तहत जेळ सूं छोड दिया गया।

मेवाड़ मांय नवम्बर, 1941 में मेवाड़ प्रजामण्डळ रो पैलो अधिवेशन उणरै नेता माणिक्यलाल वर्मा री अध्यक्षता में हुयो। पछै अगस्त घोषणा रै साथै ई 20 अगस्त, 1942 नैं प्रजामण्डळ मेवाड़ महाराणा नैं अंग्रेज सरकार सूं आपरा सम्बन्ध तोड़ण सारू कह्यो। तद 21 अगस्त, 1942 नैं माणिक्यलाल वर्मा नैं गिरफ्तार कर्या। इण कार्रवाई सू उदयपुर शहर में हड़ताल हुयगी। उठै खासा विद्यार्थियां नै ई गिरफ्तार कर्या गया। इण सगळै आन्दोलन में मेवाड़ प्रजामण्डळ रा लगटगै 500 कार्यकर्ता पकड़ीज्या। बांनैं अेक साल री जेळ रै पछै सन् 1943-44 में छोड दिया।

जयपुर मांय जद्यपि हीरालाल शास्त्री रै नेतृत्व में प्रजामण्डळ 1942 रै भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेवण सूं इनकार कर दियो हो पण बाबा हरिश्चन्द्र रै नेतृत्व मे आजाद मोर्चा रै नांव सूं आन्दोलन चलायो गयो। सैकड़ू कार्यकर्ता गिरफ्तार हुया अर शैक्षणिक संस्थावां कई दिनां तक बन्द रह्यी। कई महीनां पछै गिरफ्तार कार्यकर्तावां नैं छोड्या गया। हकीकत में जयपुर प्रजामण्डळ में इण आन्दोलन नैं लेयनै मतभेद हुयग्या हा।

भरतपुर मे 10 अगस्त नैं सरू कर्योड़ै आन्दोलन नैं बाढ रै कारण स्थगित करणो पड़्यो। शाहपुरा में भी कई कार्यकर्ता गिरफ्तार हुया। अलवर में जुलूस काढीज्यो अर हड़ताळ करीजी। वकीलां ई हड़ताळ राखी। अजमेर अर कोटा में भारत छोड़ो आन्दोलन रो जोर रह्यो। कोटा में हरबर्ट कॉलेज रा छात्र बडो जुलूस काढनै सभा करी।

कई नेता गिरफ्तार हुया। अभिन्नहरि नैं जेळ में बन्द कर दियो गयो। कोटवाळी माथै तिरंगो फैरावण री कोसिस मे 14 अर 15 अगस्त नै पुलिस लोगां री भीड़ माथै फायरिंग भी करी। राजस्थान री दूजी रियासतां मांय भी भारत छोड़ो आन्दोलन री गतिविधियां कठै ई व्यापक तो कठै औपचारिक बणनै ई चाली।

10 फरवरी, 1943 नैं गांधीजी इण अत्याचार रै खिलाफ 21 दिनां रो उपवास राख्यो अर सफळता रै साथै 7 मार्च, 1943 नैं इण उपवास नैं पूरो करयो। इण उपवास रै कारण बांरो स्वास्थ्य अणूंतो गिरग्यो। गांधीजी री बिगड़ती दसा नैं देखनै सरकार उणां नैं 6 मई, 1944 नैं रिहा कर दिया। औ बो समै हो जद मित्र देसां री फौज रा जरमनी, जापान अर इटली पर जीत रा आसार बध रह्या हा। आं परिस्थितियां में गांधीजी सरकार रै साथै 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव नैं विनां छोडै ई समझोतौ करणो ठीक मान्यो।

राजस्थान भर मे अठै रा राज्यां रै प्रजामण्डळां रा नेतावां महात्मा गांधी रो अनुसरण करनै आपरी सरकारां रै साथै समझौतो करनै रिहा हुवणो ही उचित मान्यो। पण इण आन्दोलन मांय प्रजामण्डळ रा नेतावां जिको अनुभव प्राप्त करयो, उण रो सीधो लाभ वांनैं आप-आपरै राज्यां मांय उत्तरदायी शासन प्राप्त करण वास्तै करीज्यै आन्दोलन मांय मिल्यो। इणरै फळसरूप ही सन् 1949 मांय वृहद् राजस्थान रो निर्माण संभव हुयो।

सुभाषचन्द्र बोस री जोधपुर जात्रा

जोधपुर नगर रै इतिहास में 23 जनवरी 1938 रो दिन खासो महताऊ रह्यो। इण दिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस रा नूंवा अध्यक्ष सुभाष बाबू आपरी इंग्लैण्ड जात्रा सूं पाछा कलकतै जावतां जोधपुर में पूरा नव घंटा ठैरया। इण नव घंटां रै प्रवास में वै अठै रा कांग्रेसी कार्यकर्तावां (जिणां वांनै जोधपुर रुकण रो न्यूंतो दियो) सूं मिल्या। कॉलेज रा विद्यार्थियां सूं बात बतळावण करी अर गिरदीकोट री आमसभा में भाषण ई दियो। इण विशाल जनसभा में उणां अेक खादी रै कपड़ै री नीलामी ई करी। इण सगळी घटना री सी.आई.डी. रपट रा की उद्धरण जाणकारी सारू इण भान्त है–

23 जनवरी 1938 री रात रा आठ बज्यां श्री सुभाषचन्द्र बोस डच अेयर लाईन रै विमान सूं जोधपुर रै हवाई अड्डै माथै उतरया। वांरी अगवाणी में उण बगत रा कांग्रेसी कार्यकर्ता सर्वश्री पुरुषोत्तम प्रसाद नैयर, अभयमल जैन, मानमल जैन, भंवरलाल सर्राफ, नारायणदास लूंकड़, प्रयागराज भंडारी, मनोहरलाल गोलिया, छगन राजपुरोहित, तुलसीदास राठी, तुलसीराम गांधी, मोहनलाल गुप्ता, दाऊदास जैसलमेरिया, विजयकिशन गट्टाणी, लालदास ब्रह्मचारी, इन्द्रनारायण पाण्डे, मोतीलाल गुरढ़, मेहरचन्द, रामदयाल मोदी, रामचन्द्र सुनार, रतनलाल (कॉलेज छात्र), निजाम कूंजड़ो अर अब्दुल रहमान हवाई अड्डै माथै हाजर हा। सुभाष बाबू नै हवाई अड्डै सूं कार में बिठायनै सोजती गेट रै मारग गिरदीकोट लेयग्या।

उठै ज्यूं ई सुभाषचन्द्र बोस मंच माथै चढ्या, आठ हजार सूं बेसी मिनखां करतल ध्वनि सूं वांरो स्वागत करतां जै-जै कार करी। साढी आठ बज्यां सभा री कार्रवाई वंदे मातरम् रा राष्ट्रीय गीत साथै सरू हुई। राष्ट्रगान कुमारी राजेश्वरी देवी करयो। इणरै पछै पुरुषोत्तम दास नैयर कांग्रेस कमेटी कानीं सूं, मानमल जैन मारवाड़ उद्योग मिंदर कानीं सूं अर जुगराज बोड़ै जोधपुर नगर रा मोट्यारां कानीं सूं सुभाष बाबू री स्वागत करयो। इण स्वागत समारोह में पुरुषोत्तम दास नैयर सुभाष बाबू नैं तिरंगी सूत री माळा पैराई अर मानमल जैन खादी रो कपड़ो भेंट करयो।

इणरै पछै ताळियां री गड़गड़ाट बिचाळै सुभाष बाबू भाषण सरू करयो जिको खासो देर चाल्यो। इण भाषण में उणां राष्ट्रीय अर अंतरराष्ट्रीय समस्यावां माथै आपरा विचार उजागर करया। भाषण राष्ट्रीय भावनावां सूं ओतप्रोत अर जोसीलो हो, सो श्रोतावां माथै आछो असर निजर आयो।

भाषण में ई सुभाष बाबू कह्यो कै जिको खादी रो कपड़ो म्हनैं अठै भेंट हुयो है उणरी नीलामी अठै ई हुवणी चाहीजै। इणसूं जिको धन मिलसी बो उद्योग मिंदर पाली रै विकास सारू दे दियो जासी। इणरै पछै उण कपड़ै री नीलामी बोली सरू हुई। सै सूं पैली श्री मनोहरलाल जैन इण कपड़ै सारू पचास रुपियां री बोली लगाई अर इणरै पछै श्री लक्ष्मीनारायण भालाणी अेक सौ अेक रुपिया बोल्या।

इण माथै सुभाप वावू कह्यो कै दोनूं वोलियां थोड़ी हैं अर कम सूं कम पांच सौ अेक रुपियां री वोली लागणी चाहीजै। सुभाप वावू री वात रो श्रोतावां माथै जवरो असर पड़्यो। श्री गणेशमल रै वेटै सरदारमल वोली नैं अेक सौ पच्चीस रुपियां तांईं वधायी। मानमल जैन इणनैं ओरूं आगै वधावण री अपील करी। कपड़ै रै व्यापारी माघोमल सिंधी वोली नैं दोय सौ इक्यावन तांईं वधायी। जद ओरूं कोई नीं वोल्यो तो माघोमल ई इण वोली नैं 501 रुपियां री करनै खतम करदी।

गिरदीकोट री आ जनसभा नव वज'र सात मिनट माथै खतम हुई। सुभाप अठै सूं सीधा स्टेट होटल गया जठै उणां कांग्रेसी कार्यकर्तावां अर विद्यार्थियां सूं खासी ताळ वंतळ करी। दूजै दिन दिनूगै सुभाप वावू विमान सेवा सूं कलकत्तै वास्तै रवानै हुयग्या।

आ अेक विडम्बना ई है कै जिण भान्त राजस्थान री भरतपुर रियासत में कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर री दो जात्रावां नैं अठै रा इतिहासकारां महत्त्व नीं दियो, ठीक उणीज भान्त सुभाप वावू री जोधपुर जात्रा नैं भी इतिहास मांय जिको स्थान मिलणो चाहीजै हो, वो नीं मिल सक्यो।

घाव तो बैरी रो ई बखाणीजै

बीकानेर महाराजा गंगासिंहजी 21 फरवरी, 1937 नैं जोधपुर रियासत रै तत्कालीन अंग्रेज दीवान सर डोनाल्ड एम. फील्ड नैं अेक गोपनीय कागद लिख्यो। इणमें उणां श्री जयनारायण व्यास (आगै चालनै मुख्यमंत्री, राजस्थान) बावत आपरै मन री जिकी भावनावां प्रगट करी उणसूं व्यासजी रो विराट व्यक्तित्व उजागर हुवै अर गंगासिंहजी री गुण ग्राहकता भी सांमी आवै। अंग्रेजी में लिख्यो औ कागद खासो लाम्बो है। इण रो सार रूप इण भान्त है –

''.....अेक निरंकुश मानीजण वाळै राजा री तरफ सूं भेज्योड़ै इण कागद सूं आपनैं कीं अचूंभो जरूर होसी पण ईं कागद रै मार्फत म्हैं आपनैं देसी रजवाड़ां रै खिलाफ जनमत त्यार करण वाळै अेक इसै आदमी रै बावत कीं बातां लिखणी चावूं जिण रो चरित्र आग रै उनमान ज्वळंत अर प्रभावशाली है।

औ आपणो दुरभाग है कै आपणै अठै रा जनजीवण में असहिष्णुता पराकाष्ठा तांईं पूग्योड़ी है। अैड़ी हालत में श्री जयनारायण व्यास सायत ई इण बात नैं मानै कै वांरै विरोधियां में ई वांरै जिसी देसभक्ति अर राष्ट्रीय भावना री लगन हुय सकै। श्री व्यास अर वांरा साथियां राजा महाराजावां रै विरुद्ध अर खास करनै म्हारै खिलाफ भावावेश में निरी ई खरी-खोटी बातां कही। छतां पण व्यासजी रै वास्तै म्हारै मन में घणी इज्जत है। आं लोगां राजावां नैं बार-बार निरंकुश, अत्याचारी, प्रजा रो खून चूसणिया अर संसार रा सै सूं मोटा अपराधी कैयनै भांडिया है; पण जिणां नैं रियासतां री थोड़ी-घणी ई अंदरूणी जाणकारी है, वै इण बातां माथै विस्वास नीं करै।

देस रै उजळै भविस री कामना करण वाळा इण बात नैं आछी तरयां जाणै कै देसी रियासतां रै भविस रो दारोमदार इण राजनैतिक कार्यकर्तावां रै चरित्र माथै ई निर्भर करै। अै लोग आज रै जनजीवण रा करणधार है। म्हैं आपनैं कैवणो चावूं कै रजवाड़ा अर अंग्रेजी सरकार मिलनै ई आं लोगां नैं खतम नीं कर सकै। बै दिन अबै दूर कोनीं कै राज-काज आं लोगां रै हाथ में आय जासी अर सैकड़ां हजारां बरस पुराणी सरकारां आंरै सांमी इंसाफ री भीख मांगती निगै आसी। संसार में साम्यवादी सरकारां री थरपणा म्हारी इण बात री पुष्टि करै।

इण वास्तै आप ई इण बात नैं जरूर महसूस करोला कै देसी रजवाड़ां रा राजनैतिक कार्यकर्ता चरित्रवान, देसभक्त अर समझदार हुवणा जरूरी है। जिणसूं आगै चालनै राजनैतिक वातावरण पवित्र बण्यो रैवै अर प्रजा माथै इण रो आछो असर पड़ै। इसा लोगां नैं राज-काज में सहयोग सारू आगै लावणा जरूरी है, पण इण राजनैतिक भीड़ में घणकरा स्वारथी, अवसरवादी अर लालची किस्म रा लोग ई नेतागिरी में आगै आयग्या है। वांनैं ओळखणा जरूरी है। नीं तो बै सगळै राजनैतिक जीवण रो कबाड़ो कर नांखसी। इसां लोग बिना कीं विचारयां रजवाड़ां रै प्रति अणूंती द्वेष री भावना राखै।

इण भांत आज सैकड़ां जागीरदार, भोमियान, पटेलान अर रियायां रा टट्ट बण्या फिरै अर रियासतां री भोळी जनता नै बगलावै। यां में श्री व्यासजी जिसी पवित्रता अर ईमानदारी कठै ! इण देस दुरलभ गुण तो कोई बिरलां में ई सांपै।

आप म्हारी इण बात सूं सहमत हुवोला कै रियासतां री राजनीति जिसी आज आपां देखभाळ करां, बेगट आपणा आं दुस्मणां रै हाथां में जावणी है। इणी हालत में आपणो औ फरज है कै आपां इण बात रो पूरो ध्यान राखां कै रियासती संघां सूं भला आदमी आगै आवै। म्हनै साफ दीसै कै आज रियासती राजनैतिक कार्यकर्तावां में फगत श्री जयनारायण व्यास अेक इसा आदमी है ज्यांरै पावन चरित्र री असर वांरै हजारूं साथियां माथै पड़ सकै। आप म्हारी बात सूं भलाईं सहमत हुवो कै नीं हुवो पण यां में जिम्मेवारी ओढण रो माद्दो है अर वांरी न्यायप्रियता माथै विस्वास करयो जाय सकै।

मारवाड़ रो राज जद आपरै हाथ में नीं रहसी तो श्री जयनारायण व्यास जिसै आदमियां री घणी जरूरत पड़सी। इसा मिनख ई प्रजा नैं आछी तरयां संभाळसी। इण वास्तै आपनैं म्हारो लिखणो है कै दुस्मणां रै प्रति ई मन में न्याव री भावना रैवणी चाहीजै।श्री व्यासजी रो जनम अेक गरीब घर में हुयो, इण कारण छेट सूं आर्थिक तंगी में रह्या पण दूजां रै ज्यूं आं कदेई अनीति कै 'ब्लैक मेलिंग' करनै पईसो नीं कमायो। अेकर म्हैं ई वांरी आर्थिक मदत करण रो प्रस्ताव भेज्यो पण वां नामंजूर कर दियो। वै प्रकृति सूं अेक विस्वासू आदमी है, इण वास्तै आपरै संगी-साथियां माथै अणूंतो विस्वास करै अर वै संगी-साथी वांनैं अवसर आयां धोखो देय जावै। आं कारणां सूं ई वांनैं 'अखण्ड भारत' (अखबार) बन्द करणो पड़्यो अर अबै तो अठा तांई सुणवा में आई है कै वै आपरै गुजारै वास्तै सिनेमा लाईन में जाय रह्या है।

आ बात सुणनै म्हारो जीव घणो दुख पावै कै व्यासजी जिसो व्यक्तित्व आपरै गुजारै वास्तै सिनेमा लाईन में जावणो चावै। भलांई म्हारै साथै वांरी दुस्मणी है पण साच तो वैरी रो ई वखाणीजै। वै अेक पवित्र आतमा है। वांरै साथ ई भविस में इण इलाकै रै राजनैतिक छेत्र में पवित्रता रहसी।

म्हैं म्हारी तरफ सूं फळोदी वाळा राय सा'ब री मारफत वांनै सिनेमा लाईन में जावण रो ना दियो है अर उम्मीद करूं कै म्हारै इण आग्रह नैं वै जरूर मानसी। म्हारी तो आ अंदरूणी इच्छा है कै म्है अर व्यासजी मरुधरा रै धोरां माथै बैठनै इण धरती रै कल्याण वास्तै कीं आछी योजनावां बणावां जिणसूं अठै खुशहाली आवै अर प्रजा रो कल्याण हुवै।इण वास्तै आपनैं ई म्हारो औ लिखणो है कै व्यासजी नैं जोधपुर आवण दिया जावै अर प्रशासकीय समस्यावां में वांरो सहयोग लियो जावै। इणमें आपणो अर प्रजा रो, सगळां रो ई हित है।....

श्री जयनारायण व्यास जद राजस्थान में सत्ता री बागडोर संभाळी, तद वांनैं स्व महाराजा गंगासिंहजी रो औ कागद पढायो गयो तो वांरी आंख्यां में पाणी आयग्यो अर वांरै मूंडै सूं निकळ्यो, 'वाह गंगासिंहजी, थांरी माया थे ही जाणो।'

पथिकजी री चौवीस बरसां पछै विजोलिया ठिकाणै वापसी

सन् 1922 में विजोलिया किसान आन्दोलन रो सफल संचालन करयो पछै पथिकजी बेंगू आन्दोलन सूं जुड़ग्या। इण दौरान उणां नैं अेक लम्बी जेळ जात्रा काटणी पड़ी जिको सन् 1927 में पूरी हुयी हो। उण बगत तक उणां रो मेवाड़ मांय प्रवेश ई वर्जित कर दियो गयो हो। इण कारण सूं उणां नैं आपरी सारी गतिविधियां मेवाड़ सूं बारै ई सीमित राखणी पड़ी। चौवीस बरसां रो निर्वासन कोई हंसी-खेल नीं हो। इण कारण सूं जद 2 मार्च, 1947 नैं वै पाछा आपरै करम छेत्र विजोलिया मांय प्रवेश करयो तो पूरी अेक नूंवी पीढी उणांरै स्वागत में पलक पावडा बिछायां खड़ी ही। आ घटना मेवाड़ रै प्रजामण्डळ आन्दोलन री अेक रोमांचकारी घटना बणगी ही।

फरवरी 1947 में मेवाड़ प्रजामण्डळ आपरै जन-आन्दोलन नैं खासो तेज कर दियो हो। राज्य रो शासक ई भारत मांय राजनैतिक घटनाक्रम नैं भांप'र मेवाड़ री जनता नैं अेक धारा-सभा देवण रो मन बणाय लियो हो। उण बगत मेवाड़ प्रजामण्डळ ई उत्साहित हुयनै 1 सूं 3 मार्च, 1947 तक मेवाड़ प्रजामण्डळ रो आठवां अधिवेशन मेवाड़ रै चर्चित ठिकाणै विजोलिया में करण रो मानस बणाय लियो। इण उद्देश्य सारू मेवाड़ प्रजामण्डळ कानी सूं अेक परचो जारी करीज्यो जिणमें दूजी बातां रै साथै इण अधिवेशन में राष्ट्रीय स्तर रा कांग्रेस रा नेता विशेष रूप सूं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद रै शामिल हुवणै रो उल्लेख करयो। इणरै साथै ई विजोलिया में लक्ष्मी-विलास में इण अधिवेशन री व्यापक त्यारयां सरू करदी। अधिवेशन रो मुख्यद्वार प्रजामण्डळ आपरै प्रिय नेता विजयसिंह पथिक, जिका सन् 1928 सूं ई मेवाड़ सूं बारै निर्वासित जीवण बिता रह्या हा, रै नांव माथै बणायो। उण मुख्यद्वार रै आसै-पासै रा दो द्वार सन् 1923 मांय बेंगू किसान आन्दोलन में शहीद रूपाजी अर करमाजी रै नांवां माथै बणाया।

इण अधिवेशन रै प्रति लोगां रो खासो उत्साह हो। अधिवेशन सरू हुवणै सूं दो दिन पैली सूं ई प्रतिनिधि, दर्शक अर स्वयंसेवक अधिवेशन में पूगण लाग्या। अधिवेशन आळै दिन 1 मार्च नैं विजोलिया ठिकाणै रै कनलै 'ऊपर माळ' छेत्र रा हजारूं लोग उठै पूगग्या। आंमें बडी संख्या में लुगायां भी भेळी ही। कुल मिलायनै अधिवेशन मांय पंदरै हजार रै अड़ै-गड़ै लोग भेळा हुया। मेवाड़ प्रजामण्डळ रै अध्यक्ष भूरेलाल बया री अध्यक्षता मांय अधिवेशन सरू हुयो। भूरेलाल बया आपरै अध्यक्षीय भाषण में भारत मांय तत्कालीन राजनैतिक स्थिति अर प्रजामण्डळ रै दायित्व रै साथै मेवाड़ राज्य री गैर जिम्मेदाराना हकूमत री विस्तार सूं चरचा करी। दूजी बातां रै साथै उणां मेवाड़ राज्य रा विद्यार्थियां, लुगायां अर बनवासियां द्वारा राज्य मांय जनजागृति लावण में जिको योगदान दियो उणरी जाणकारी ई दी। इण अधिवेशन में कुल नौ प्रस्ताव पास हुया जिण मांय अेक शोक-प्रस्ताव नैं छोडनै बाकी सगळा मेवाड़ राज्य में उत्तरदायी शासन प्राप्त करण अर उणसूं सम्बन्धित बातां नैं लेयनै पास करया गया। आं प्रस्तावां सूं ओ

लागवा लाग्यो हो कै मेवाड़ प्रजामण्डळ अबै राज्य मांय वैधानिक सुधारां रै साथै उत्तरदायी शासन प्राप्त करण नै टाळ किणी दूजी बात माथै राजी हुवण नैं त्यार नीं है।

सम्मेलन रो पैलड़ो दिन तो मेवाड़ राज्य रा सगळा छोटा-बडा नेतावां री मौजूदगी मांय चरचा करतां ई बीतग्यो हो पण दूजो दिन बडो बेचैनी आळो हो। अधिवेशन में दोफारां कार्यकर्तावां मांय अेक सुगबुगाहट फैलगी कै मेवाड़ सरकार विजयसिंह पथिक माथै सूं मेवाड़ प्रवेश पर लगायोड़ी पाबन्दी हटा ली है। लारलै लंबै बगत सूं मेवाड़ रा युवा कार्यकर्ता आपरै इण नेता री अेक झलक पावण खातर उंतावळा हा। पथिकजी उण बगत तक आपरै लारलै क्रियाकळापां रै कारण सूं अेक जननेता बणग्या हा।

थोड़ी देर पछै ई अधिवेशन में अेक मिनख आ खबर लायो कै पथिकजी अधिवेशन स्थल कानी ई आय रह्या है। लोगां री निजरां अधिवेशन स्थल कानी आवण आळै मारग पर टिकगी। मंच माथै वक्ता आपरी बात कैवता जाय रह्या हा, पण श्रोता उणां नैं सुणण सारू त्यार नीं हा। बां खातर तो औ अेक रोमांचकारी क्षण हो। की ताळ पछै ई सैकड़ां ग्रामीण अेक अधबूढ आदमी री जै जैकार करता सम्मेलन कानी आवता निंगै आया। पूरी सभा रो पंडाळ पथिकजी रै स्वागत में जैकारां सूं गूंज उठ्यो। 'वंदेमातरम्' अर 'सर पर बांधें कफनवा' आद गीत गाईजण लागग्या। युवा लोग मेवाड़ रै किसानां री काया-पलट करण अर महात्मा गांधी नै सत्याग्रह री सीख देवण आळै बांरै इण बदहाल गुरु रा दरसण करनै गद्‌गद् हुय रह्या हा। सम्मेलन री सगळी कार्यवाही निपटावणी ही, इण खातर सम्मेलन रात री दो बज्यां तांईं चाल्यो। उणरै पछै सम्मेलन री समाप्ति री घोषणा करीजी।

अहिंसक सत्याग्रह रा पुजारी : मारवाड़ी व्यापारी

आपणै देस में महात्मा गांधी रै बगत में स्वतंत्रता आन्दोलन रै दरम्यान 'सत्याग्रह' शब्द घणो चरचित रह्यो, पण राजस्थान मे सत्याग्रह री परम्परा घणी जूनी है। राणियां-महाराणियां रै कोप भवन प्रवेश सूं लगायनै जनता रा धरणा रा उछाळा अर अन्न-जळ त्याग तांई इण रा कई-कई रूप चावा रह्या है।

सामंती सत्ता नैं सही मारग माथै लावण तांई अर कोई आछै काम री पूर्ति वास्तै खास करनै चारण अर पुरोहित सामूहिक रूप सूं धरणै पर बैठता, अन्न-जळ रो त्याग करता अर इण उपरांत ई सत्ता नीं मानती तो जापानी हाराकारी रै ज्यूं सत्याग्रही खुद रै हाथां पेट में कटार खायनै प्राणांत कर लेवता। राजस्थान रै इतिहास में इसा कई 'धरणा' प्रसिद्ध रह्या है जिणां में सत्याग्रहियां आतमघात करनै आपरो प्राणांत करयो। अै सगळी घटनावां इतिहास में चावी हुवण सूं इणां नैं छोड'र अठै उण बातां री चरचा करां जिणरै मुजब जन साधारण सत्ता रो विरोध अहिंसक तरीकै सूं करयो।

मध्यकालीन सामंती युग में किसानां रै सागै तो अन्याव अर ज्यादती हुंवती ई ही पण कई बार अठै रो व्यापारी वर्ग ई इणरो शिकार हुय जावतो। अठारवीं सदी में राजस्थान में मराठां रै उत्पात अर आपसी लड़ाई टंटा री वजह सूं रजवाड़ां री माली हालत खराब ही। इण हालत में उणां व्यापारी वर्ग नैं तंग करणो सरू करयो अर उणसूं जबरन धन वसूली करण लाग्या। बीकानेर, जोधपुर अर जयपुर रै तत्कालीन राजकीय अभिलेखां सूं व्यापारियां रै उत्पीड़न री मोकळी जाणकारी मिलै। ई. सन् 1855 में चूरू रै सामन्त ईश्वरीसिंह नैं धन री जरूरत हुई तो उणै सेठ गजराज पारख अर करमचंद लोहिया नैं तंग करणा सरू करया। इण उपरांत ई काम नीं बण्यो तो बांनै रूंख सूं बांधनै उणां साथै मारपीट तकात करी।

इसा मौकां माथै पीड़ित जनता दूजो कोई मारग नीं देखनै सत्ता रो अहिंसक विरोध करती। लोगबाग कोई मिंदर देवरा कै धार्मिक स्थान में जायनै अन्न-जळ त्यागनै बैठ जावता। इसी हालत में कई आपरा प्राण ई त्याग देवता। इणसूं सामन्ती वर्ग री घणी बदनामी हुंवती। धार्मिक अर नैतिक भावना सूं ई बै खुद नैं अपराधी महसूस करता। इण कारण बै पीड़ितां साथै न्याव करनै बांनैं राजी करण री कोशिश करता। इण भान्त अहिंसक तरीकै सूं सत्यग्रहियां री जीत हुय जावती। अठै आ बात ई उल्लेखबा जोग है कै महात्मा गांधी भारत नैं आजादी दिरावण सारू जिण अहिंसक सत्याग्रह रो सहारो लियो उणनैं राजस्थान रा मारवाड़ी व्यापारी बापू रै पदार्पण सूं सैकड़ां बरसां पैलां ई अपणाय चुक्या हा।

बीकानेर राज रै कागदां में कई सेठ-साहूकारां कनै सूं लाखूं रुपिया भाछ (टैक्स) रै रूप में लेवण रो उल्लेख मिलै। ई. सन् 1820 में राजा कानीं सूं सेठ जेता बिहाणी नै साठ हजार रुपिया भाछ रै रूप में भरण रो हुकम दिरीज्यो। सेठ इण सारू

आपरी असमर्थता प्रगट करी। पण राजा मान्यो कोनीं तो सेठ आपरै बाल-बच्चा साथै राज री कुळदेवी करणी माता (देशनोक) रै मिंदर में जायनै बैठग्यो। छेवट राजा उण नैं जायनै मनायो अर भाछ री छूट करी। ई. सन् 1829-30 में सागण इसीज घटनावां बीकानेर रै रूपचन्द कोठारी, सोना सिपाणी, जीतमल सुराणा, उत्तमचन्द डागा अर जोरावरमल गुलेच्छा साथै ई हुयी। अै सगळा ई करणी माता रै मिंदर में जायनै भूखा-तिस्या बैठग्या तो राजा नैं निवणो पड़्यो। बीकानेर राज री सरकारी बहियां में इसी मोकळी घटनावां रो वर्णन मिलै। अेक दूजै प्रकरण मुजब 1840 ई. में गंभीरचन्द दम्माणी भी साहूकारा भाछ नैं लेयनै करणी माता रै मिंदर में सत्याग्रह कर्‌यो अर आपरै उद्देश्य में सफळ रह्यो। कई बार सामंती अत्याचारां सूं धापनै प्रजा 'उछाळो' करती। उछाळै रो मतलब औ के बै उण रियासत कै जागीर नैं छोडनै दूजी रियासत या जागीर में परा जावता। जे राजा बांनैं मनायनै पाछो लिजावतो तो बै मान-सम्मान साथै पाछा जावता नीं तो बांरी आल-औलाद ई उठीनै मूंडो नीं करती। जोधपुर अर बीकानेर राज रै राजकीय अभिलेखां में इसा कई उदाहरण मिलै। बीकानेर रियासत रै चूरू ठिकाणै रा सामत शिवजीसिह (1783 सू 1814 ई.) आपरै नगर रा पोद्दार घराणै सूं नाजायज जकात वसूल करणो चावता। इण सारू ठाकर सेठ नैं फोड़ा घालणा सरू कर्‌या तो बो परिवार चूरू छोडनै खुद सीकर ठिकाणै रै रामगढ नगर में जायनै बसग्यो। छेवट चूरू ठाकर नैं रामगढ जायनै सेठ नैं मनावणो पड़्यो अर सगळी छूट करनै आदर अर मान साथै पाछो लावणो पड़्यो। चूरू रै ईज सुराणा घराणै रा सेठ रुकमानन्द, तेजपाल, वृद्धिचन्द सुराणा आद क्रमशः 1865 अर 1868 ई. में महाराजा सरदारसिंह रै शासनकाल में ज्यादा जकात अर धूंवा भाछ वसुलण रै विरोध में बीकानेर छोडनै रामगढ अर महणसर में जायनै बसग्या। छेवट शासक नैं उणां आगै झुकणो पड़्यो अर बांरी इच्छा मुजब शुल्क मे राहत देयनै उणानैं पाछा बुलाया।

इणी'ज भान्त बीदासर रा सेठ नाराज होयनै जोधपुर जायनै बसग्या हा। बांनैं ई उठै रा सामंत थोरा-नोहरा करनै पाछा लेयग्या। जोधपुर राज्य री जालोर हकूमत में 1857 ई में उठै रा व्यापारियां आपरै हाकम रै विरोध मे जबरदस्त सत्याग्रह कर्‌यो। कैयी व्यापारियां नैं चामचोरी रै झूठै मामला में पजाया तो बै संगठित होयनै जालौर छोड दूजी जाग्यां जाय बस्या। जद राज रै शासक नैं इण बात री जाणकारी मिली तो उण तख्तगढ, जनानी ड्योढी अर दीवान कानी सूं भविस मे किणी भान्त री तकलीफ नीं देवण रै आश्वासण रा परवाना भेजनै बां व्यापारियां नैं पाछा जालौर में बुलायनै बसाया।

19वी सदी में राजस्थान री रियासतां में करीजण आळै इण अहिंसक सत्याग्रह रो क्रम राजस्थान रै दूजै भागां मांय भी प्रचलन में हो। इण सत्याग्रह रो असर राजस्थान रै दूजां आन्दोलनां माथै पड़्यो या नीं, ठीक सूं नीं कह्यो जाय सकै। पण बिजोलिया किसान आन्दोलन में इणरी थोड़ी झलक जरूर मिलै है।

राजस्थान में धरणा देवण री रोमांचक परम्परा

राजस्थान में धरणा देवण री परम्परा घणी पुराणी है। सोळवीं अर सतरवीं सदी रा राजस्थान रै इतिहास में धरणां री सांगोपांग जाणकारी मिलै। उण बगत रै चारण जाति रै लोगां रा दियोड़ा धरणा घणा नांमी हा। जद राजपूत लोग किणी बात नैं लेयनै आपस में लड़ण लागता तो उण बगत चारण जाति रा लोग जामिन बणनै बीच-बचाव कर दिया करता हा। चारणां री जामनी राजपूतां में पकी समझी जावती। जे कोई राजपूत चारणां री जामनी लेवण रै बाद बदळ जावतो तो चारण उणरै घर आगै धरणो दे देंता अर कदै कदैई तो धरणै रै दरम्यान मर भी जावता हा।

मारवाड़ में तो चारणां खासा धरणा दिया हा। औ धरणा घणकराक तो जागीरदार या राजा कानीं सूं उणां री जमीन अटकावणै या जबत करणै रै कारण दिया जावता। जद कदैई किणी गांव रो जागीरदार या हवालदार चारणां री जमीन अटकाय लेवतो या जबत कर लेवतो तो चारण आपरै भाई-बंधां नैं भेळा करनै जागीरदार री कोटड़ी आगै, अर जे गांव खालसो हुयोड़ो हुंवतो तो जोधपुर जायनै धरणो देवता। उण समै रै धरणां रै अध्ययन सूं ठा पड़ै कै घणकरा धरणा हिंसक रूप ले लिया करता हा। जिण भान्त जापान में बठै रा लोग हाराकारो (पेट काटनै मर जावणो) कर लिया करता हा, उणीं भान्त चारण अर पुरोहित भी धरणां में आपरा अंग तोड़-भांगनै जान दे दिया करता हा। आं हिंसक धरणां रो दस्तूर इण भान्त हुंवतो—

सगळां सूं पैली अेक आदमी आपरो डील चीरनै जाजम माथै लोही छिड़कतो अर पछै धरणो देवण आळा सगळा लोग उण जाजम पर बैठ जावता। बै तीन दिनां तांई भूखा-तिसा रैयनै जोगमाया रै धूप खेंवता अर स्तुति गावता। जे इण तीन दिनां में बांनैं नीं मनायो जावतो तो चौथै दिन धरणै माथै बैठा सगळा लोग पैलां तो खूब खावता-पीवता अर पछै आप मांयलै अेक बूढै आदमी या लुगाई नैं रूई रा कपडा तेल में भिंजोयनै पैराय देवता अर उणनैं जीवतो ई जळाय देवता। बाकी बच्योड़ा लोगां में कोई आपरो हाथ चीरतो, कोई जांघ फाड़तो, कोई गळै माथै छूरी चलावतो तो कोई पेट में कटारी मारतो। इण भान्त उणां मांय सूं कई लोग तो बठै ई जान दे देवता अर बाकी बच्योड़ा उणरै (जिणरै खिलाफ धरणो देवता हा) इलाकै नैं छोडनै दूजै इलाकै में जाय बस जावता। धरणै री इण प्रथा नैं 'चांदी' रै नांव सूं जाण्यो जावतो हो। पुरोहित लोग तो कदैई-कदैई धरणै माथै गाय अर टोगड़ी नैं ई सागै लेयनै बळ जावता।

मारवाड़ रै इतिहास में आऊवै रो धरणो घणो नांमी है। औ धरणो सं 1643 वि.

में मोटै राजा उदयसिंह रै ऊपर दियो गयो। वात आ ही कै बीस बरसां पैली जद राय चन्द्रसेन जोधपुर रो किलो मुगलां नैं सूंप्यो हो तो किलै री सगळी लुगायां, जिणां में उणरी खुद री जनानियां भी ही, सिवाणै रै पहाड़ां में भेज दी ही। जद जनानियां रा रथ पहाड़ां कानीं जाय रह्या हा उण बगत मोटै राजा उदयसिंह री मां रै रथ रो अेक बैल घणो थकग्यो। मारग में कनै ई अेक चारण बळध सूं कूओ वावै हो। राजा रा आदमी उण चारण रो बळध खोल लाया अर रथ में जोड़ लियो। चारण आपरै गांव सूं थोड़ा आदम्यां नैं भेळा करनै बठै लायो अर आपरो बळध पाछो खोल लियो अर रथ नैं उलट दियो। रथ उलटणै सूं मोटै राजा उदयसिंह री मां रो हाथ टूटग्यो। उण बगत तो सगळा नैं जान री पड़ी ही, इण खातर उण घटना माथै कोई ध्यान नीं दियो। सं. 1640 वि. में जद जोधपुर रो किलो पाछो मोटै राजा उदयसिंह नैं मिल्यो तो उणरा जनाना भी पाछा जोधपुर आयग्या। आयां पछै मोटै राजा उदयसिंह री मां आपरो टूट्योड़ो हाथ उदयसिंह नैं दिखायनै कह्यो कै ओर तो थूं थारी समझ में आवै ज्यूं करजै पण जिकै चारण म्हारै रथ नैं उलटाय म्हारो हाथ तोड़्यो हो वो माफी रै लायक नीं है। इण कारण मोटै राजा उण चारण री जमीन जबत करली। चारण री जमीन जबत नीं करण वास्तै जिका दूजा चारण सिफारिस मे आया उणां रा सासण भी जबत कर लिया। इणसूं चारणां में हलचल माचगी, अर 1100 चारणां आऊवै गांव में महादेवजी रै मिंदर आगै धरणो दे दियो। आऊवै में धरणो देवण रो कारण उठै रा ठाकर चांपावत गोपाळदास रो चारणां नैं चादी करण में सहयोग देवणो हो। आ खबर सुणनै मोटै राजा चारणां नैं समझावण वास्तै सोजत सूं आखैजी बारठ नैं भेज्यो। पण आऊवै में जायनै वो ई आपरी बिरादरी रै भेळो भिळग्यो। इण कारण मोटै राजा अेक बडी कटार आखोजी बारठ कनै आ कैयनै भेजी कै दूजा चारण तो गळै में छूरी खायनै मरसी पण थूं इणनैं गुदा में घालनै मरी। इणरै साथै ई फौज नैं चारणां नैं सजा देवण रो हुकम दियो।

अबै आऊवै रो ठाकुर चांपावत गोपाळदास चारणां नैं कह्यो कै फौज सूं तो म्हैं लड़सूं, थे थांरो काम करो। चारणां पैलां तो सीरो करनै खूब खायो अर रातभर जोगमाया रा गीत गाया। तड़को हुंवतां ई आखैजी गोविंद ढोली नैं मिंदर रै सिखर माथै चाढ'र कह्यो कै जद सूरज री पैली किरण फूटै तो उणरी खबर देवण वास्तै ढोल बजा दीजै। पण गोविंद इसी वात नैं, जिणसूं के 1100 चारणां री जानां जावती ही, नीं मान'र ढोल कोनीं बजायो अर सूरज री किरण फूटतां ई आपरै गळै माथै छूरां चलायनै ढह पड़्यो। इण पर सगळा चारण मिंदर रै मांय गया, अर किणी आपरो गळो काट'र उण रो लोही महादेवजी माथै छिड़क्यो तो किणी आपरो सीस चढ़ायो। कोई आपरो पेट बाढ़नै

मरग्यो तो कोई जखमी हुयनै पड़ग्यो। सगळो मिंदर लोही सूं भरीजग्यो। इण चांदी (धरणै) में सात जणां मरया, जिणां में आखोजी बारठ भी हा। जद तांई आ चांदी हुयी, चांपावत गोपाळदास जोधपुर री फौज नैं मारग में ई रोक्यै राखी। इण पछै चांपावत गोपाळदास अर बच्योड़ा चारण बीकानेर भागग्या। पण बाद में बीकानेर रै राजा रायसिंह रै भाई पृथ्वीराज री सिफारिस सूं बादशाह अकबर चारणां रै सासण री जमीन उणां नै पाछी दिराय दी।

सन् 1614 में बीकानेर रै महाराजा सूरसिंह रै समै में गांव तोळियासर रै पुरोहित मान महेश अर गांव खूंडियै रै चौहथ बारठ बीकानेर रै किलै सांमी धरणो दियो पण उणां नैं इण धरणै में सफळता कोनीं मिली। इण खातर अै दोनूं किलै रै सांमी ई चिता जळायनै मरग्या। सन् 1815 ई. में बीकानेर रै ही बीदासर ठिकाणै रा पुरोहितां बीकानेर रै दूजै ठिकाणै भादरा में जायनै धरणो दियो। सन् 1837 ई. में बीकानेर रो महाराजा चूरू गयो। उणरै साथै उण रो दीवान हिंदूमल मेहता ई हो। इण मौकै माथै बिसाऊ रै अेक ब्राह्मण रो ऊंठ वेगार वास्तै हिंदूमल रै डेरै भेज्यो गयो हो जिको चोरी हुयग्यो। ब्राह्मण नैं जद ऊंठ पाछो नीं मिल्यो तो उण हिंदूमल रै डेरै माथै च्यार दिनां तांई धरणो दियो। ब्राह्मण धरणै सूं जद ई उठ्यो जद कै उणनैं 59 रुपिया रो दूजो ऊंठ खरीदनै पाछो देय दियो। सन् 1854 ई. में बीकानेर रै गांव बोबासर रो चारण शंकरदान सामौर तो धरणा देवण में नांमी हुयग्यो हो। उण राज सूं बारै अलवर मे चारभुजा नाथ रै मिंदर में अर दूजी ठौड़ां ई धरणा दिया हा।

राजस्थान मांय इसा हिंसक धरणा देवण रा सैकड़ां दूजा उदाहरण मिलै है। इण भान्त रा सगळा धरणां रै विवरण सूं तो अेक अलग पोथी त्यार हुय सकै। इण आलेख मांय तो इण आं धरणां री वानगी ही राखीजी है। राजस्थान रै रजवाड़ां में धरणां रो औ रूप जापान में प्रचलित हाराकारी सूं मिलतो-जुलतो हो। उणरै बावजूद कदै-कदैई राजा लोग आं धरणां सूं टस सूं मस ई नीं हुंवता अर ज्यादातर धरणा देवणियां नैं आपरी जान गमावणी पड़ जावती।

आं धरणां रो भारतीय संदर्भ मांय जे सामाजिक दीठ सूं अध्ययन करयो जावै तो अेक बात सफीटवीं सांमी आवै कै इत्ता रोमांचकारी हिंसक धरणां रो दूरगामी परिणाम नीं निकळ्यो। अै धरणा मुख्य रूप सूं व्यक्तिगत कै पछै आपरी जाति विशेष री बात मनावण सारू दिरीजता हा। इणसूं शासकां माथै कोई खास नैतिक दवाव नीं पड़तो अर कई वार बै इणरी अणदेखी भी कर देंवता। अंग्रेजी शासन मांय भी इण भान्त रा धरणां री आ ही गत हुयी। आज भी इण भान्त रै धरणां री परम्परा समाप्त नीं हुयी है। दक्षिण

ारत माय भाषा, राजनैतिक अर आर्थिक लाभ सारू भावुकता माय कई बार मिनख
रअाम आत्मदाह करण म ई सकोच नी करै। सयाग सूं कदै–कदैई आ धरणा रो
द्देश्य सफळ भी हुय जावै है।

शोध-जगत रो तीरथ : राजस्थान रो अभिलेखागार

देस-विदेस रो कोई विद्वान जद बीकानेर आवै तो राजस्थान राज्य अभिलेखागार नैं देखणो नीं भूलै। नगर रै बिचाळै पब्लिक पार्क-स्टेडियम रोड माथै हरियल दरखता सूं आच्छादित इण भवन में राजस्थान री अभिलेख धरोहर संग्रहीत है। इणरै साथै अभिलेख निदेशालय अर रिपोजिटरी ई अवस्थित है। राजस्थान सरकार इण निदेशालय री थरपणा सन् 1955 में करी ही, पण मौजूदा वगत में इण निदेशालय रो जिको विगसाव हुयो है, बो वैज्ञानिक दीठ सूं घणो महताऊ है।

आजादी मिल्यां पैली राजस्थान इक्कीस रजवाड़ां में बंट्योड़ो हो। आं मांय सूं 19 नैं रियासतां अर दो नैं ठीकाणा रो दरजो मिल्योड़ो हो। हरैक रियासत रो आपरो सचिवालय अर अभिलेखागार हो। आं अभिलेखागारां में सैकड़ूं बरसां रै राज-काज सूं सम्बन्धित जरूरी अभिलेख संग्रहीत हा। आजादी मिल्यां पछै आं अभिलेखागारां रो नांव बदळनै 'यूनिट रेकर्ड ऑफिस' राखीज्यो अर जिलाधीशां नैं आंरा प्रमुख नियंत्रक अधिकारी बणाय दिया। रियासतां रा दूजा सगळा अभिलेखागार ई इण यूनिट रेकर्ड ऑफिसां में मिळाय दिया। पण राजस्थान सरकार 1955 में जद राजस्थान राज्य अभिलेखागार निदेशालय री थरपणा करी तो यूनिट रेकर्ड ऑफिसां मांय सूं ई. सन् 1900 रै पैलै रा सगळा अभिलेख निदेशालय में भेजण रो हुकम देय दियो। थोड़ा दिन बीत्यां पछै आ बात अनुभव करीजी कै जे निदेशालय में फगत 1900 रै पैलै रा अभिलेख इज संग्रहीत रह्या तो राजस्थान रा अभिलेख दो भागां में बंट जासी। इणसूं कई अळूझाड़ पैदा हुय जासी। इण बात नैं ध्यान में राखनै जिलां में थापित सगळा यूनिट रेकर्ड ऑफिस ई राजस्थान राज्य अभिलेखागार रै तावै में देय दिया। इणरै साथै ई राजस्थान राज्य अभिलेखागार रो मुख्यालय जयपुर सूं बदळनै बीकानेर कर दियो अर प्रदेस रै 20 जिलां में इणरी शाखावां खोलदी। जुलाई 1962 रै पछै इण सगळै विकेन्द्रित अभिलेखां नैं अेकण ठायै भेळा करण रो तै करयो। इण भान्त मार्च 1963 तांई 1900 सूं पैलै रा सगळा अभिलेख ई बीकानेर पूगग्या। 1900 रै पछै रा अभिलेखां नैं सुरक्षित राखण वास्तै विभाग कानीं सूं सात शाखा कार्यालय थापित हुयग्या। अै कार्यालय जयपुर, अजमेर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, अलवर अर भरतपुर में है। आं शाखावां में स्थानीय महत्त्व रा अभिलेख सुरक्षित राखीजै।

बीकानेर में प्रदेस भर रा अभिलेख भेळा हुयां पछै राजस्थान राज्य अभिलेखागार में बांनैं व्यवस्थित रूप सूं राखण तांई राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली रै ढंग ढाळै माथै न्यारा-न्यारा खंड बणायनै आंनैं व्यवस्थित राखीज्या है।

अभिलेखागार रो सै सूं महताऊ भाग 'प्राविधिक खंड' है। इण खंड में राजस्थान री 21 रजवाड़ां रा अभिलेख सुरक्षित है। इणरै अलावा इण खंड में मौजूदा राजस्थान रै सचिवालय अर दूजै विभागां सूं प्राप्त जरूरी अभिलेख संग्रहीत है। आं

आयोजित करै। इण रो लाभ प्रशासक, वकील, अध्यापक, छात्र अर व्यापारी इत्याद सगळा ई उठावै। दूरदरसण अर रेडियो माथै अभिलेखां रै महत्त्व पर परिचर्चावां आयोजित करीजै। इण मौकै 'अभिलेख' नांव री अेक शोध पत्रिका ई प्रकाशित करीजै।

अभिलेखां रो महत्त्व इण बात सूं जाणीजै कै इण अभिलेखागार में 17वीं अर 18वीं सदी रा जयपुर रियासत रा जिका अभिलेख संग्रहीत है, उण राजस्व अभिलेखां में अड्‌डसट्‌ठै, याददास्ती, तकसीम, तखमीना, जमाबंदी, दस्तूर, अलअमल दस्तूर, खसरा, निरख बाजार, निरख जमाबंदी, परवाना, मुवावजना कलां, मुवावजना खुर्द, अवारिजा, रोजनामचा इत्याद प्रमुख हैं। अै सगळा आलेख राजस्थान रै तत्कालीन ग्रामीण जीवण रा आधार थंभ है। इण कारण देसी-विदेसी शोध अध्येतावां रै घणै काम रा है।

इणी'ज भान्त फारसी भाषा री अभिलेख सामग्री ई घणी महताऊ है। इणनें फरमान, निशान, मंसूर, सनद, रुक्का, अखबारात, अरजदास्त, वकील रिपोर्ट अर खतूत अेहलकारान इत्याद अभिलेख घणा काम रा है। इणां में सूं घणकरा मुगल बादशावां कानी सूं राजपूत राजावां नैं मनसबदारी देवती बगत जारी करयोड़ा है। 300 सूं बेसी फरमान सुनहरी अर रंगीन चित्रामकारी रै कारण देखण जोग है। मुगल बादशाह अकबर, जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब, दारा शिकोह अर नूरजहां कानीं सूं जारी अै अभिलेख इतिहास री दीठ सूं घणा कीमती हैं। राजस्थान राज्य अभिलेखागार में जिको अभिलेख सम्पदा संग्रहीत है वा शोध री दीठ सूं अनूठी है। आज रो शोध अध्येता इतिहास रै वैग्यानिक अध्ययन माथै विशेष जोर देवै। वो शासक रै गुण-अवगुण अर कथनी-करणी करतां तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक अर कृषि सम्बन्धी जाणकारी बेसी सोधणी चावै जूनां अभिलेख इण काम सारू घणा महताऊ है। हिन्दी, राजस्थानी, उर्दू, फारसी अर अंग्रेजी में लिख्योड़ै अभिलेखां री तादाद इण बात सूं जाणी'ज सकै कै जे इण सगळां नैं अेक रेखा में राख दिया जावै तो आंरी सम्बाई साठी कोस रस्ता पार हुय जावै।

रा अंग्रेजी भाषा में लिख्योड़ा अभिलेख ई उपलब्ध है। जयपुर रियासत रै ज्यूं रियासत री अभिलेख शृंखलावां ई घणी महताऊ है। मारवाड़ी में लिख्योड़ो रो दस्तरी रेकर्ड आपरी हकीकत बही, हथ बही, विवाह बही, पट्टा बही अभिलेख शृंखलावां इतिहासविदां वास्तै घणै काम री है। अै शृंखलावां सन् सरू हुवै। अंग्रेजी रेकर्ड अर परगना रेकर्ड, जिको सन् 1890 सूं सरू हुयनै ईं रो है, बो मारवाड़ रै सगळै परगनां अर सचिवालय रै सगळै विभागां सूं है।

बीकानेर रियासत री अभिलेख शृंखलावां ई मारवाड़ी, उर्दू, हिन्दी अर अंग्रेजी ध है। इणमें 17वीं सदी सूं सरू करयोड़ी अर सगळै विषयां सूं सम्बन्धित न्त री बहियां मौजूद है। उदाहरण सरूप पट्टा परवाणा बही, हासल बही, ी, सावा बही इत्याद प्रमुख है। उर्दू अर हिन्दी अभिलेख शृंखलावां में माल, र फौजदारी विषय रा कागद है। इणरै अलावा बीकानेर रियासत रै सचिवालय अभिलेख ई उपलब्ध है। अै अभिलेख राजस्थान रै आधुनिक इतिहास तांई ऊ स्रोत मानीजै।

पूर्वी राजस्थान री कोटा अर बूंदी इत्याद रियासतां री अभिलेख शृंखलावां, 1635 सूं मिलै, उणां में कहवा, माल, हासिल, तालीक, फौज, बराड़, पुण्याथै, तोपखाना अर कारखाना इत्याद विषयां सूं सम्बन्धित है। बाद में ा रो प्रभाव बधण सूं कोटा सचिवालय री अभिलेख शृंखलावां अंग्रेजी में ई

यपुर रियासत री अभिलेख शृंखलावां मेवाड़ी, हिन्दी अर अंग्रेजी में उपलब्ध में अभिलेख 18वीं अर 19वीं सदी रा है अर अंग्रेजी में सन् 1862 सूं 1948 अंग्रेजी में लिख्योड़ा सचिवालय अभिलेखां में सीमा विवाद, जागीरां सूं र जनगणना सम्बन्धी पत्रावलियां शोध री दीठ सूं घणा महताऊ है। आंरै यपुर रा श्यामलदास अर मेहता संग्रामसिंह अभिलेख ई मध्यकालीन इतिहास री दीठ सूं महताऊ स्रोत है।

1963 में राजस्थान री सगळी रियासतां रा अभिलेखां साथै अजमेर र चीफ कमिश्नर रै कार्यालयां रा अभिलेख ई बीकानेर मंगाय लिया हा। अर हिन्दी भाषा में लिख्योड़ा अै अभिलेख सन् 1818 सूं 1956 तांई रा है। जस्व, प्रशासन, चिकित्सा, धारमिक मामला, अजमेर ट्रेजरी, प्रोटेक्शन, ा, वित्त, मेळा, सामाजिक सुधार, सेटलमेंट, रजिस्ट्रेशन, पट्टा, नीमच, दरगाह इत्याद री पत्रावलियां है। अजमेर रा अै अभिलेख राजपूत राजावां रै सम्बन्धा री जाणकारी देवै।

मान्त राजस्थान री इण पांच प्रमुख रियासतां अर चीफ कमिश्नरी अजमेर रै अलावा अलवर, किशनगढ, सिरोही, भरतपुर, झालावाड़, कुशलगढ,

शाहपुरा, करौली, डूंगरपुर अर बांसवाड़ा इत्याद रा 19वीं अर 20वीं सदी रै रा अभिलेख ई अठै मौजूद है।

इण राजकीय अर प्रशासनिक अभिलेखां रै अलावा इण अभिले जोधपुर अर अलवर रै इतिहास कार्यालय निजू अभिलेख ई संग्रहीत है। अभिलेख राजस्थानी भाषा अर साहित्य री सांगोपांग जाणकारी देवै। इण अ पाण राजस्थान रै इतिहास री कई विवादपूर्ण बातां रो खुलासो ई हुय ज सरकारी कागदां सूं संभव नीं है।

इण भान्त सार बात आ कै अभिलेखागार अेक कानीं व्यक्तिगत अ पूर्ति करनै जन-साधारण री समस्यावां री उकेल काढै तो दूजी कानीं अभिलेखां रै रूप में प्रशासनिक समस्यावां रो उकेल ई बतावै। इणरै अैतिहासिक शोध सम्पदा रो अेक अमोलक खजानो है जिको शोध अध्येता घणै काम रो है।

उणरी बातचीत रो सजीव वर्णन करयो है। आज सूं पचास-साठ बरसां पैली इण पाण्डुलिपि रो कोई खास महत्व नीं हो पण आज दो पानां गी आ पाण्डुलिपि देस-विदेस रा शोधार्थियां रै आकर्षण रो केन्द्र है।

ठीक इणीं भान्त बीकानेर री अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में शिवाजी री अेक जन्म पत्रिका मिली। महाराजा अनूपसिंह रा शासनकाल में आ जन्मपत्री दक्षिण भारत सूं बीकानेर आई ही। इणनैं आज शिवाजी री जन्मपत्री सूं सम्बन्धित सर्वाधिक तथ्यपरक पाण्डुलिपि हुवण रो गौरव हासिल है। जद इतिहास रा शोध-जगत में शिवाजी री जन्मतिथि नैं लेयनै वाद-विवाद चाल रह्यो हो तो उण वगत बीकानेर री इण पाण्डुलिपि सूं ईज शोधार्थियां री जिज्ञासा शान्त हुयी। इण भान्त रा कई उदाहरण दिया जा सकै जिणसूं आ सिद्ध हुय सकै कै साधारण-सी दीखण आळी पाण्डुलिपि कद कित्ती महताऊ हुय जावै, कीं कह्यो नीं जाय सकै।

इण भान्त कैय सकां कै सरकारी अर गैर सरकारी छेत्र में संग्रहीत इण पाण्डुलिपियां रो शोध री दीठ सूं घणो महत्त्व है। इण पाण्डुलिपियां सूं खाली भारतीय इतिहास रा राजनैतिक दांव-पेच, आपसी अर बाहरी जुद्ध अर उणरी हार-जीत री कहाणी ई नीं मिलै, बल्कै आपणां बडेरां रै जीवण री आर्थिक बुनियाद, सामाजिक तौर-तरीका, उणरी हलचल अर पीड़ावां नै उण रा नित नूंवा बदळता न्यारा-न्यारा रूपां पर भी उजास पड़ै। इणरै अलावा आधुनिक जीवण री प्रशासनिक अर राजनैतिक गतिविधियां रै साथै विदेसी शासन अर राजतंत्रीय शोषण सूं लोहो लेवण आळा स्वतंत्रता सेनानियां री जस-गाथावां भी इण पाण्डुलिपियां में सुरक्षित है।

इण पाण्डुलिपियां रो अभिरक्षण किण भान्त करयो जावै औ अपणै आपमें विज्ञान रो अेक निरवाळो विषय है, पण अठै थोड़ै में उणरी चरचा जरूरी है। सरकार रा जिका विभाग पाण्डुलिपियां रो वैज्ञानिक ढंग सूं संरक्षण करै, उणमें बीकानेर रो राजस्थान राज्य अभिलेखागार ई अेक महताऊ विभाग है। औ विभाग आपरै अठै संग्रहीत पाण्डुलिपियां माथै वातावरण रै प्रभाव रो अध्ययन करनै सार-संभाळ री अैड़ी विधियां रो निर्माण करै जिणसूं आं पाण्डुलिपियां पर वातावरण रो प्रभाव घटायो जाय सकै। अठै उण माथै वातावरण तापक्रम, तेज हवा सूं उडण आळै धूड़ै अर बरसां री नमी आद रा प्रभाव साथै हानिकारक कीड़ा-मकोड़ां सूं इणनैं छुटकारो दिरावणो उल्लेख जोग है। इण सारू पाण्डुलिपियां नैं अेयर कंडीशनर कोठां में अेक तै तापक्रम (22 सूं 25 डिग्री सेन्टीग्रेड अर 45 सूं 55 आर्द्रता) में राखण रो प्रावधान है। साथै ई वैज्ञानिक विधि सूं उण कोठां नैं साफ-सुथरा राख्या जावै है। जीर्ण-शीर्ण पाण्डुलिपियां री वैज्ञानिक तरीकां सूं मरम्मत रो काम ई हुवै। इणमें लेमीनेशन पद्धति, टीशूरिपेयर, सीफोन रिपेयर अर विविध भान्त री मरम्मतां आयातित अर देसी सामग्री सूं करी जावै।

पाण्डुलिपियां नैं कीटाणुआं सूं मुगत राखण सारू कई तरै रा रासायनिक प्रधुमनां (थाइमल क्रिस्टल अर पेराडाईक्लोरोबेंजिन) सूं गुजारणी पड़ै।

पाण्डुलिपियां रै बार-बार हाथ लगावण सूं भी उणांरै नष्ट हुवण रो खतरो रैवै। इण खातर शोधार्थियां रै उपयोग सारू आधुनिकतम माइक्रो-फिल्म कैमरां रै माध्यम सूं 35 अेम. अेम. री फिल्म पर पाण्डुलिपियां रा अणुचित्र लेयनै माइक्रो फिल्म रीडर पर उणनै पढण री सुविधा दिरीजै है। पाण्डुलिपि रा मूळ-पाठ री सुरक्षा सारू औ जरूरी है कै उणनैं कम सूं कम काम में ली जावै। इण सारू शोधार्थी उणरी माइक्रोफिश या माइक्रो-डिस्क सूं काम चला सकै। पाण्डुलिपियां नैं उण रा मूळ आकार में राखण सारू उणीं आकार रा विशेष डिब्बा (कार्टून बॉक्स) बणायनै उणमें कीटाणुनाशक रसायनां रो प्रयोग करता थकां राखणी जरूरी है। इणसूं वै कम सूं कम हिलै खुलै अर बाहरी अम्लीय वातावरण सूं कम सूं कम प्रभावित हुवै। जठै जरूरी हुवै बठै कागद री उमर वधावण आळा रासायनिक घोळां (केल्सियम हाईड्रोआक्साइड अर केल्सियम बाइकार्बोनेट) सूं पाण्डुलिपियां नैं गुजारी जाय सकै, पण औ सगळा काम घणी सावचेती सूं करणा चाहीजै नींतर लिपि जांखी पड़ सकै है या प्रतिक्रिया हुयनै नष्ट हुय भी हुय सकै है।

शोध री नूंवी विधावां रै साथै राजस्थानी भाषा री पाण्डुलिपियां रो महत्त्व ई मोकळो बधग्यो है। हिन्दी अर राजस्थानी भाषा साहित्य शोध कार्य मांय आं पाण्डुलिपियां रो खासो उपयोग हुंवतो रह्यो है। पण आज 17वीं सदी सूं लगायनै 18वीं सदी रै राजस्थान रै सामाजिक अर आर्थिक इतिहास रो शोध कार्य राजस्थानी भाषा साहित्य री आं पाण्डुलिपियां रै अभाव में अधूरो मान्यो जाय रह्यो है। इतिहास रा अध्येता आं पाण्डुलिपियां नैं जोवता फिर रह्या है। मारवाड़ी अर राजस्थानी भाषा री दूजी बोल्यां री औ पाण्डुलिपियां आज सरकारी अर गैर सरकारी शोध-संस्थावां रै साथै निजू लोगां कनै सुरक्षित है। सरकारी अर गैर सरकारी शोध-संस्थावां तो आंरो संरक्षण वैज्ञानिक तरीकै सूं कर रह्यी है पण निजू लोग आज ई आंरो संरक्षण परम्परागत रूप सूं ई कर रह्या है। नीम रा पत्तां अर हळदी मांय राख्योड़ी पाण्डुलिपियां आज ई मोकळा घरां में देखी जाय सकै है।

इण पाण्डुलिपियां रै मांय उणरै रचनाकाल री सांस्कृतिक, खास करनै सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक अर प्रशासनिक जाणकारी भरपूर रूप में मिलै है। इण कारण सूं आं पाण्डुलिपियां री अंवरै अर सार-संभाळ जरूरी है। आ बात आपां नैं जाण लेवणी चाहीजै कै राजस्थानी भाषा री घणकरी पाण्डुलिपियां कागद माथै ई लिख्योड़ी मिलै है। औ कागद पुराणा कपड़ै रा चींथरा अर दरखतां सूं मिलण आळै पल्प सूं बणायो जावतो रह्यो है। समै रै साथै इण कागद रो अपकृष्ट हुवणो सुभाविक है। पैली रै

जमानै में आपणा पुरखा इण वात सूं परिचित हा, इण खातर संस्कृत भाषा रा पाण्डुलिपिकार तो पाण्डुलिपि रै अन्त में पाण्डुलिपि नैं सुरक्षित राखण रा तरीका भी लिख्या करता हा। पण राजस्थानी भाषा री पाण्डुलिपियां में औ नुस्खो देखण में नीं आया। लारला सौ सालां मांय कागद नैं लेयनै तरै-तरै रा अनुसंधान हुया अर होय रह्या है। वैज्ञानिकां पुराणै कागद नैं अपकृष्टता सूं बचायण सारू घणा उपाय बताया है। इणरै साथै ई अपकृष्ट हुयोड़ा कागद जद फाटण अर बड़कण लाग जावै तो उणरी किण भान्त मरम्मत करणी चाहीजै, इण पर उजास नांख्यो है। कागद री अपकृष्टता रै कारणां माथै विचार करां उणसूं पैलां औ ई जाण लेवणो जरूरी है कै कागद रा वैरी कुण-कुण हुवै है।

धूड़, सूरज रो सीधो उजास, तापक्रम, नमी, प्रदूषण, आग अर जैविक जीव-जन्तु आद कागद नैं मौको लागतां ई नुकसाण पुगावण नैं त्यार रैवै है। इण रो खुलासो इण भान्त है। धूड़ रा कण कागद नैं क्षति पुगावण मांय सक्षम हुवै। कागद रो मुख्य अवयव सेल्यूलोज फाइबर हुवै है जिकै नैं धूड़ रा कण काटणो सरू कर देवै। इणसूं कागद कमजोर हुयनै बड़कण री स्थित मांय पूग जावै। इणरै साथै ई कागद पर पड़योड़ा धूड़ रा आं कणां माथै जद नमी आपनैं केन्द्रित कर लेवै तो कागद री अपकृष्टता ओरूं बध जावै। इण भान्त आपा देखां कै धूड़ रा कण कागद नै खासा नुकसाण पुगाय सकै है। पाण्डुलिपि पर सूरज रो सीधो उजास पड़ण सूं कागद तर-तर पीळो पड़ण लाग जावै। साथै ई उणमें नमी री मात्रा भी सूखण लागै। इणसूं कागद बड़कणो सरू हुय जावै। सूरज री रोशनी सूं कागद माथै स्याही सूं लिख्योड़ा आखरां रो भी फोटो केमीकल ओक्साइडेशन हुय जावै, जिणसूं आखरां नैं पढणो मुश्किल हुय जावै। कागद माथै अणूतो तापमान ई आपरो प्रभाव गेरै। इणसूं कागद पीळो पड़ जावै। इणीं भान्त साव कम तापमान भी कागद वास्तै हानिकारक हुवै है। कम तापमान मांय कागद रा जैविक शत्रुआं नैं पनपणै में घणी मदत मिलै। घणी नमी ई कागद सारू नुकसाण पुगावै। वायुमण्डळ में व्याप्त वाष्पीय पाणी री मात्रा ही अपेक्षित आर्द्रता प्रदर्शित करया करै। तापमान बधण अर बिरखा रै दिनां में इण अपेक्षित आर्द्रता मांय कमी-बेसी हुंवती रैवै। अपेक्षित आर्द्रता मांय जठै कमी आवण सूं कागद में बड़कण बधण लाग जावै, बठै ई अपेक्षित आर्द्रता री मात्रा बधण सूं फफूंद, दीमक अर दूजा जैविक शत्रु पनपण लाग जावै। इणरै साथै ई कागद माथै धब्बा, स्याही रा चकदा आद बणण लाग जावै। तेजी सूं बधतो औद्योगीकरण अर उणसूं निकळण आळी दूषित गैसां नैं फैलण सूं रोकण वास्तै पुख्ता बंदोबस्त नीं हुवण सूं जठै वायुमण्डळीय प्रदूषण सूं मानव-जीवण कठिनाई अनुभव कर रह्यो है, बठै ई पाण्डुलिपियां रा कागद ई इण प्रदूषण रै कारण संकट मे है। प्रदूषण सूं कागद मांय अम्लता बधै जिणसूं कागद री

अपकृष्टता वधण लाग जावै।

ऊपर आपां कागदां रा भौतिक शत्रुआं री जाणकारी ली, अबै थोड़ो विचार जैविक शत्रुआं माथै ई करलां। आपां सगळा जाणां हा कै फफूंद खाण-पीण री चीजां साथै कपड़ां अर कागदां माथै ई आपरो वास कर लेवै। अै अणूंता नैना-नैना जीव हुवै जिका हर जाग्यां विद्यमान रैवै। अै जीव कागद सूं आपरो भोजन भी प्राप्त करै। इणसूं कागद कमजोर पड़ण लाग जावै। इणरै साथै ई आं जीवां रा हाइफा ई कागद माथै भेळा हुय जावै जिणसूं कागद माथै दाग अर धब्बा बण जावै। रजतमीन अेक पंखरहित चांदी रै रंग जिसो कीड़ो हुवै जिको रात री बगत घणो सक्रिय रैवै। औ कीड़ो कम ताप अर घणी नमी साथै अंधारो पसन्द करै। कागद मांय कठैई लेई लाग्योड़ी हुवै का कागद नैं चमकावण सारू जिका पदार्थ उण मांय हुवै वांनैं रजतमीन खावती रैवै। इणसूं कागद मांय जाग्यां-जाग्यां तीणां हुय जावै। इणरै साथै ई तिलचट्टा ई लेई, कपड़ै अर गूंद नैं खावण सारू कागद नैं नुकसाण पुगावै। दीमक इण जैविक शत्रुआं मांय सगळां सूं खतरनाक गिणीजै, जिणनैं आपां उदाई कैवां। दीमक, जमीन अर लकड़ी दोनूं मांय रैवै अर आपरी सुरक्षा सारू मिट्टी री सुरंग वणायनै उणमें वास करै। कागद इणरो स्वादिष्ट भोजन हुवै। इणसूं पाण्डुलिपियां रो कित्तो भारी नुकसाण हुवै, आपां आछी तरै जाणां हां। उदाई (दीमक) रै अलावा ऊंदरा ई कागद नैं कुतरै।

ऊपर वतायोड़ा कागद रा जैविक शत्रुआं रै अलावा जका शोध अध्येता आं पाण्डुलिपियां रो उपयोग करती वगत सावचेती नीं बरतै, वै इणरा सगळा सूं बडा दुस्मीं है। घणकरा शोध अध्येता पाण्डुलिपि नैं आपरै शोध वास्तै इण भान्त तक खोलण री चेष्टा करै कै उणरा टांका टूट जावै। कई अध्येता पाण्डुलिपि मांय पेन अर पेंसिल सूं लाइणां तकात पाड़ण सूं नीं चूकै। इणरै साथै ई जे बख पड़ जावै तो पूरो आधो पानो ही फाड़नै ले जावै। खुद काम में लेवण पछै दूसरो उणरो उपयोग नीं कर सकै, इण बात नैं ध्यान में राखनै पाण्डुलिपि रा पाना भी उलट-पुलट कर देवै।

पाण्डुलिपियां नैं नष्ट हुवण सूं बचावण अर उणरी सार-संभाळ अर पुख्ता अंवेर सारू नीचै मंड्योड़ी बातां रो ध्यान राखणो चाहीजै–

1. जिण कमरै मांय पाण्डुलिपियां राखी जावै, उणमें हवा रो सांतरो आव-जाव रैवणो चाहीजै अर खंख नै धूड़ सूं बचावण सारू वैक्यूम क्लीनर उपयोग में लावणो चाहीजै। कमरै में निकास पंखा ई खासा उपयोगी साबित हुवै।

2. जे संभव हुवै तो कमरै रो तापमान 22 डिग्री सेण्टीग्रेड सूं 25 डिग्री सेण्टीग्रेड रै बिचाळै राखणो चाहीजै। साथै ई अपेक्षित आर्द्रता 45 प्रतिशत सूं 55 प्रतिशत राखणी चाहीजै। इणसूं पाण्डुलिपि घणै ताप अर नमी सूं हुवण आळा खतरां सूं निजात पाय सकै।

जमानै में आपणा पुरखा इण वात सूं परिचित हा, इण खातर संस्कृत भाषा रा पाण्डुलिपिकार तो पाण्डुलिपि रै अन्त में पाण्डुलिपि नै सुरक्षित राखण रा तरीका भी लिख्या करता हा। पण राजस्थानी भाषा री पाण्डुलिपियां में अै नुस्खा देखण में नीं आया। लारला सौ सालां मांय कागद नैं लेयनै तरै-तरै रा अनुसंधान हुया अर होय रह्या है। वैज्ञानिकां पुराणै कागद नैं अपकृष्टता सूं बचावण सारू घणा उपाय बताया है। इणरै साथै ई अपकृष्ट हुयोड़ा कागद जद फाटण अर बड़कण लाग जावै तो उणरी किण भान्त मरम्मत करणी चाहीजै, इण पर उजास नांख्यो है। कागद री अपकृष्टता रै कारणां माथै विचार करां उणसूं पैलां औ ई जाण लेवणो जरूरी है कै कागद रा बैरी कुण-कुण हुवै है।

धूड़, सूरज रो सीधो उजास, तापक्रम, नमी, प्रदूषण, आग अर जैविक जीव-जन्तु आद कागद नैं मौको लागतां ई नुकसाण पुगावण नैं त्यार रैवै है। इण रो खुलासो इण भान्त है। धूड़ रा कण कागद नैं क्षति पुगावण मांय सक्षम हुवै। कागद रो मुख्य अवयव सेल्यूलोज फाइबर हुवै है जिकै नैं धूड़ रा कण काटणो सरू कर देवै। इणसूं कागद कमजोर हुयनै बड़कण री स्थित मांय पूग जावै। इणरै साथै ई कागद पर पड़्योड़ा धूड़ रा आं कणां माथै जद नमी आपनैं केन्द्रित कर लेवै तो कागद री अपकृष्टता ओरूं बध जावै। इण भान्त आपां देखां कै धूड़ रा कण कागद नैं खासा नुकसाण पुगाय सकै है। पाण्डुलिपि पर सूरज रो सीधो उजास पड़ण सूं कागद तर-तर पीळो पड़ण लाग जावै। साथै ई उणमें नमी री मात्रा भी सूखण लागै। इणसूं कागद बड़कणो सरू हुय जावै। सूरज री रोशनी सूं कागद माथै स्याही सूं लिख्योड़ा *आखरां* रो भी फोटो केमीकल ओक्साइडेशन हुय जावै, जिणसूं आखरां नैं पढणो मुश्किल हुय जावै। कागद माथै अणूतो तापमान ई आपरो प्रभाव गेरै। इणसूं कागद पीळो पड़ जावै। इणीं भान्त साव कम तापमान भी कागद वास्तै हानिकारक हुवै है। कम तापमान मांय कागद रा जैविक शत्रुआं नैं पनपणै में घणी मदत मिलै। घणी नमी ई कागद सारू नुकसाण पुगावै। वायुमण्डळ में व्याप्त वाष्पीय पाणी री मात्रा ही अपेक्षित आर्द्रता प्रदर्शित कर्‌या करै। तापमान बधण अर बिरखा रै दिनां में इण अपेक्षित आर्द्रता मांय कमी-बेसी हुंवती रैवै। अपेक्षित आर्द्रता मांय जठै कमी आवण सूं कागद में बड़कण बधण लाग जावै, बठै ई अपेक्षित आर्द्रता री मात्रा बधण सूं फफूंद, दीमक अर दूजा जैविक शत्रु पनपण लाग जावै। इणरै साथै ई कागद माथै धब्बा, स्याही रा चकदा आद बणण लाग जावै। तेजी सूं बधतो औद्योगीकरण अर उणसूं निकळण आळी दूषित गैसां नैं फैलण सूं रोकण वास्तै पुख्ता बंदोबस्त नीं हुवण सूं जठै वायुमण्डळीय प्रदूषण सूं मानव-जीवण कठिनाई अनुभव कर रह्यो है, बठै ई पाण्डुलिपियां रा कागद ई इण प्रदूषण रै कारण संकट में है। प्रदूषण सूं कागद मांय अम्लता बधै जिणसूं कागद री

अपकृष्टता बधण लाग जावै।

ऊपर आपां कागदां रा भौतिक शत्रुआं री जाणकारी ली, अबै थोड़ो विचार जैविक शत्रुआं माथै ई करलां। आपां सगळा जाणां हा कै फफूंद खाण-पीण री चीजां साथै कपड़ां अर कागदां माथै ई आपरो वास कर लेवै। अै अणूंता नैना-नैना जीव हुवै जिका हर जाग्यां विद्यमान रैवै। अै जीव कागद सूं आपरो भोजन भी प्राप्त करै। इणसूं कागद कमजोर पड़ण लाग जावै। इणरै साथै ई आं जीवां रा हाइफा ई कागद माथै भेळा हुय जावै जिणसूं कागद माथै दाग अर धब्बा बण जावै। रजतमीन अेक पंखरहित चांदी रै रंग जिसो कीड़ो हुवै जिको रात री बगत घणो सक्रिय रैवै। औ कीड़ो कम ताप अर घणी नमी साथै अंधारो पसन्द करै। कागद मांय कठैई लेई लाग्योड़ी हुवै का कागद नैं चमकावण सारू जिका पदार्थ उण मांय हुवै बांनैं रजतमीन खावती रैवै। इणसूं कागद मांय जाग्यां-जाग्यां तीणां हुय जावै। इणरै साथै ई तिलचट्टा ई लेई, कपड़ै अर गूंद नैं खावण सारू कागद नैं नुकसाण पुगावै। दीमक इण जैविक शत्रुआं मांय सगळां सूं खतरनाक गिणीजै, जिणनैं आपां उदाई कैवां। दीमक, जमीन अर लकड़ी दोनूं मांय रैवै अर आपरी सुरक्षा सारू मिट्टी री सुरंग बणायनै उणमें वास करै। कागद इणरो स्वादिष्ट भोजन हुवै। इणसूं पाण्डुलिपियां रो कित्तो भारी नुकसाण हुवै, आपां आछी तरै जाणां हां। उदाई (दीमक) रै अलावा ऊंदरा ई कागद नैं कुतरै।

ऊपर बतायोड़ा कागद रा जैविक शत्रुआं रै अलावा जका शोध अध्येता आं पाण्डुलिपियां रो उपयोग करती बगत सावचेती नीं बरतै, वै इणरा सगळा सूं बडा दुस्मीं है। घणकरा शोध अध्येता पाण्डुलिपि नैं आपरै शोध वास्तै इण भान्त तक खोलण री चेष्टा करै कै उणरा टांका टूट जावै। कई अध्येता पाण्डुलिपि मांय पेन अर पेंसिल सूं लाइणां तकात पाड़ण सूं नीं चूकै। इणरै साथै ई जे बख पड़ जावै तो पूरो आधो पानो ही फाड़नै ले जावै। खुद काम में लेवण पछै दूसरो उणरो उपयोग नीं कर सकै, इण बात नैं ध्यान में राखनै पाण्डुलिपि रा पाना भी उलट-पुलट कर देवै।

पाण्डुलिपियां नैं नष्ट हुवण सूं बचावण अर उणरी सार-संभाळ अर पुख्ता अंवेर सारू नीचै मंड्योड़ी बातां रो ध्यान राखणो चाहीजै–

1. जिण कमरै मांय पाण्डुलिपियां राखी जावै, उणमें हवा रो सांतरो आव-जाव रैवणो चाहीजै अर खंख नै धूड़ सूं बचावण सारू वैक्यूम क्लीनर उपयोग में लावणो चाहीजै। कमरै में निकास पंखो ई खासा उपयोगी साबित हुवै।

2. जे संभव हुवै तो कमरै रो तापमान 22 डिग्री सेण्टीग्रेड सूं 25 डिग्री सेण्टीग्रेड रै बिचाळै राखणो चाहीजै। साथै ई अपेक्षित आर्द्रता 45 प्रतिशत सूं 55 प्रतिशत राखणी चाहीजै। इणसूं पाण्डुलिपि घणै ताप अर नमी सूं हुवण आळा खतरां सूं निजात पाय सकै।

3. जिण कमरै में पाण्डुलिपियां राखीजै उणरी भींतां अर आंगणा पक्का हुवणा चाइजै। आंगणै अर भींतां मांय सुराख अर तरेड़ आद नीं हुवणी चाहीजै। साथै ई कमरै रा किंवाड़ अर बारयां रै बारलै पासै छाजा हुवणा जरूरी है। इणसूं बिरखा अर तावड़ै सूं पाण्डुलिपियां बच सकै। किंवाड़ ई आंगणै सूं भिड़्योड़ा हुवणा चाहीजै। छेती रह्यां सूं पाण्डुलिपि पर बिरखां री छांटां अर सूरज री किरणां रो प्रभाव तो पड़ै ई है, ऊंदरा अर दूजा जीव ई कमरै में आसानी सूं घुसनै पाण्डुलिपियां नैं कुतर सकै है। कमरै मांय डबल-डोर सिस्टम हुवै ओर ई आछी बात है।

4. कमरै मांय सीधी सूरज री रोशनी नीं पड़ै, इण वास्तै दरवाजां अर बारयां माथै हळकै पीळै, केसरिया या हरै रंग रा परदा लगावणा चाहीजै। कमरै मांय फ्लोरोसेण्ट लाइट रो उपयोग करणो चाहीजै। उण लाइट माथै भी काच या प्लास्टिक कवर रैवण सूं नुकसाण पुगावण आळी एक्टिनिक रेज सूं बचाव हुय जावै।

5. पाण्डुलिपियां नैं संभावित आग रै खतरै सूं बचावण सारू कमरै रै बारै कार्बन डाई आक्साइड रा आग बुझावण आळा यंत्र लगावणा जरूरी है। इणरै साथै ई चार-पांच बेकळू रेत सूं भर्योड़ी बाल्टियां भी बारै त्यार राखणी चाहीजै। आग बुझावण सारू पाणी रो ई कनै जावतो राखणो चाहीजै। अेक बात रो खास ध्यान राखणो जरूरी है कै आग बुझावण आळा यंत्रां री हर छह महीनां मांय चैकिंग कर लेवणी चाहीजै अर उणरै संचालन री जाणकारी बठै बैठणियां कर्मचारयां नैं बरोबर रैवणी चाहीजै। आजकल धूंवै अर आग री तुरत सूचना देवण आळा यंत्र भी कमरा मांय लगाया जाय सकै है। फायर अलार्म इण दीठ सूं आछो यंत्र है।

6. कमरै मांय हीटर अर दूजा ज्वलनशीळ पदार्थ नीं राखणा चाहीजै। बिजळी रा तारां नैं कंडूप पाइप रै मांय-मांय अेक जाग्यां सूं दूजी जाग्यां लेजावणा चाहीजै। बिजळी रो ओटोमैटिक पावर सर्किट लगावण सूं शॉर्ट-सर्किट सूं बचाव हुय सकै।

7. कमरै मांय पाण्डुलिपियां नैं राखण वास्तै स्टील रा रेक अर स्टील री आलमारयां रो प्रयोग करणो ठीक रैसी। स्टील रेक्स नै जंग आद सूं बचावण वास्तै डस्ट प्रूफ आलीव ग्रीन रंग उपयुक्त रैवै। कमरै रै मांय रेक्स अर आलमारयां आंगणै, छत अर भींतां सूं 15 सेण्टीमीटर दूर राखणी चाहीजै, जिणसूं दीमक आद बठै तक आसानी सूं पूग नीं सकै। बिंयां खुला रेक आलमारयां सूं ज्यादा ठीक रैवै। इणीं भान्त पाण्डुलिपियां राखण सारू भवन अर उणरै अन्दर री व्यवस्था सारू IS.11,2663 "Code of practice For the basic elements in Design of Building For Archives" नैं अपणावणो चाहीजै।

8. पाण्डुलिपियां नैं जठै ताईं संभव हुवै अैसिड फ्री फोल्डरां रै बिचाळै राखनै कार्टून बॉक्स रै मांय ई राखणी चाहीजै। जे आ व्यवस्था संभव नीं हुवै तो दो प्लाइवुड

री तख्तियां रै बीच मांय राखनै उणनै रस्सी सूं बांधनै राखणी चाहीजै। इणसूं ताप, प्रकाश, नमी अर प्रदूषण रो इण माथै कम प्रभाव पड़ै।

9. पाण्डुलिपियां माथै कदैई किणी तरै रो केमिकल या इनसेक्टीसाइड नीं छिड़कणो चाहीजै। जे जरूरी हुवै तो नेफतलिन बाल या उणरी ईंट नैं अेक कपड़ै मांय बांधनै पाण्डुलिपियां रै कनै रेक माथै राख देवणी चाहीजै।

10. कमरै मांय किणीं तरै रो धूम्रपान अर खाणो-पीणो नीं करणो चाहीजै। कदै-कदैई पाण्डुलिपि नैं निकाळनै अजवायण रै सत सूं फूमीगेशन चैम्बर धूंवो दिरावणो ई पाण्डुलिपि रै वास्तै ठीक रैवै।

11. इणीं भान्त जैविक शत्रुआं, खास करनै फफूंद, रजतमीन, तिलचट्टा अर ऊंदरां सूं बचाव वास्तै कमरै मांय 10 प्रतिशत थाइमोल अेल्कोहल रै घोळ रो छिड़काव, बोरिक अम्ल आटै में मिलायनै आंगणै छिड़कणो घणो कारगर रैवै।

12. उदाई (दीमक) सूं बचाव वास्तै पूरै भवन, जिणमें पाण्डुलिपियां पड़ी है, उणरै च्यारूंमेर गहरी सुरंग बणायनै उण मांय एल्ड्रिन न्हांख देवणी चाहीजै, रेक अर आलमारी माथै क्रीसोट ऑयल रो लेप करणो चाहीजै।

ऊपर आपां कागद मांय अपकृष्टता नीं बधै, उणरै बचाव रा उपावां माथै विचार कर्‌यो। अबै जिकी पाण्डुलिपियां रा कागद पैली सूं ई अपकृष्ट हुयांड़ा है अर शल्यक्रिया बिना उणांरो उद्धार नीं हुय सकै उण माथै विचार करां। अठै अेक बात बतावण जोग है कै आज सूं सौ-दो सौ साल पैली कागद माथै जिकी काळी स्याही रो उपयोग कर्‌यो जावतो हो, बा पाणी में घणी घुळण आळी नीं हुंवती। इण खातर जिकी पाण्डुलिपि री किणीं ढंग री मरम्मत करणी हुवै उणसूं पैलां जे संभव हुवै तो उण रो डी-अेसिडिफिकेशन कर लियो जावणो चाहीजै। पण पैली इण बात री पक्की देखभाळ कर लेवणी जरूरी है कै कागद री स्याही पाणी में घुळण आळी तो नी है। आपां पैली चरचा कर चुक्या हां कै कागद मांय पैली सूं ही अम्लता हुवै अर बा धीरै-धीरै बधती रैवै। इणसूं कागद दिनोदिन बोदो हुंवतो रैवै। इण खातर जे मरम्मत हुवण आळै कागद री अम्लता आपां समाप्त करदां तो कागद बोदो हुवण सूं बच सकै है। कागद री इण डी अेसिडिफिकेशन री प्रक्रिया आपां वास्तै जरूरी है। अेक बाल्टी या परात मांय पांच सूं दस प्रतिशत केल्सियम हाईड्रोआक्साइड मैगनेशियम बाई कार्बोनेट रो पाणी मांय घोळ बणायनै पाण्डुलिपि रै कागद नैं उण मांय आछी तरयां भिंजोवणो चाहीजै अर थोड़ी देर उण मांय राख्यां पछै बारै काढनै छिंयां या हवा में सुखाय देवणो चाहीजै। इणसूं कागद री अम्लता बाल्टी मांय रैय जावै अर कागद अम्लरहित हुय जावै। इण पछै कागद री अवस्था नैं ध्यान में राखनै मरम्मत करणी चाहीजै। अठै आ बात बतावण जोग है कै सळ पड़्योड़ै अर मुड़्योड़ै कागद नैं सबसूं पैली दो ब्लोटिंग पेपर रै बिचाळै राखनै उण

माथै रूई सूं नमी देवणी चाहीजै। इणसूं कागद रा सळ निकळ जावै अर मरम्मत मांय आसानी हुय जावै। ज्यादातर पाण्डुलिपियां रा हासिया कट-फट जावै। इण बात नैं ध्यान में राखनै हैण्डमेड पेपर या टिश्यू पेपर री अेक सूं डेढ इंच चौड़ी पट्टी काटनै कागद रै हासियै माथै चेप देवणी चाहीजै। इणी भान्त पाण्डुलिपि रो कागद जिको कमजोर हुयग्यो हुवै अर जिको अेक कानीं सूं ही लिख्योड़ो हुवै, उणरै लारलै पासै हैण्डमेड पेपर या टिश्यू पेपर सूं पूर्ण लेपन रै रूप में चिपका देवणो चाहीजै। कागद री इण मरम्मतां मांय मैदा, लेई या सीअेमसी पेस्ट रो इस्तेमाल करयो जावणो चाहीजै। गूंद रो उपयोग बिलकुल नीं करणो चाहीजै। इणरै अलावा जे कागद अेकदम बड़क जावै अर बीच मांय सूं फाट जावै तो उणरी मरम्मत हैण्डलेमीनेशन पद्धति सूं ई करणी चाहीजै। इण पद्धति मांय कागद नैं सेल्यूलोज अेसीटेट फाइल अर टिश्यू पेपर रै बिचाळै राखनै अेसीटोन सूं पर्तावरित कर दियो जावै। आजकल हैण्ड लेमीनेशन सूं मरम्मत सबसूं उपयुक्त मानीजै है। अबै तो मरम्मत रो दायरो खासो बधग्यो है। फ्लेटनिंग, वाशिंग अेंड रिमूवल ऑफ स्ट्रेसेज, ट्रीटमेण्ट ऑफ फेड इंके, री एनफोर्सिंग ऑफ पेपर बाई ग्लेजिंग, साइजिंग, माउंटिंग, इनलेयिंग, सीफोन, टिश्यू पेपर, लेमीनेशन अर बाइडिंग आद मरम्मत उल्लेख जोग है।

आजकाल अभिलेख वैज्ञानिकां रो मानणो है कै पाण्डुलिपि रै बार-बार हाथ लगावण सूं उणनैं नुकसाण हुवण रो खतरो बण्यो रैवै क्यूंकै अध्येता वर्ग आप आपरी दीठ सूं उणरो उपयोग करती वगत तोड़-मरोड़ देवै। इण खातर पाण्डुलिपि धारकां नैं आ सलाह दिरीजै कै बै मूळ पाण्डुलिपि नैं तो संभाळनै राखै अर उणरी माइक्रोफिल्म, फाटोग्राफ, वीडियो/ऑडियो टेप अर कम्प्यूटर शीट त्यार करनै अध्येतावां नैं देवै।

इण भान्त जे पाण्डुलिपियां री आपां अंवेर अर सार-संभाळ करां तो आपणी इण अभिलेख रूपी अमोलक धरोहर री हजारी उमर हुय सकै।

इतिहास रा साक्षी निजू अभिलेखागार

आज रै प्रशासनिक युग में राजकीय व्यवस्था में चौतरफै विगसाव रै कारण अभिलेखां रै सृजन में मोकळी अभिवृद्धि हुंवती निजर आवै है। इणरै साथै प्रशासन चलावण आळा विभागां रा आप-आपरा अलग-अलग रिकार्ड रूम भी अस्तित्व में आया है, जिणां नैं आजकाल अभिलेखागार रै नांव सूं ओळखीजै, जाणीजै। आं अभिलेखागारां रै प्रशासनिक महत्त्व नैं समझनै भारत रा सगळा राज्यां भी आपरा प्रान्तीय अभिलेखागार कायम करया है। आं अभिलेखागारां में रियासती शासनकाल सूं लगायनै आज रै सचिवालय में काम संपूरण हुवण सूं निर्मित अभिलेखां नैं राख्या जावै। केन्द्र में तो पैलां सूं ई अेक राष्ट्रीय अभिलेखागार मौजूद है।

स्वतंत्र भारत में इण अभिलेखागारां रो प्रशासन तंत्र चलावण मोकळो महत्त्व है। जे आ बात कह्यी जावै कै अै अभिलेखागार देस री नींव रा आधार-थंभ है, तो कोई अतिशयोक्ति नीं गिणीजै। प्रशासन रै साथै-साथै अभिलेखागारां रो इतिहास लिखण रै काम में ई मोकळो महत्त्व रह्यो है। अभिलेखागारां में राख्योड़ी अभिलेख सामग्री आपांरै अतीत रै काम-काज अर उपलब्धियां री घणमोली निधि है। अभिलेख इतिहास रा इसा साक्षी है जिणसूं भूत अर वर्तमान रो समन्वय हुवै, इतिहास रो निर्माण हुवै अर ज्ञान-विज्ञान रै छेत्र में ई नूंवी दिसा मिलै।

अभिलेखागार में राख्योड़ी सामग्री रो अध्ययन कर इतिहासकार आपरै समाज नैं इणमें वर्णित संस्थावां अर वांरै कार्यछेत्रां रो दिग्दरसण करावै। मोटी बात आ है कै अभिलेखागारां में रक्षित अभिलेख सामग्री नैं आधार बणायनै आज रो इतिहासकार देस रै आर्थिक, सामाजिक अर राजनैतिक विषयां सूं सम्बन्धित सूचना सामग्री अेकठ करनै उणनैं उजास में लावण रो प्रयास कर रह्यो है। आज इतिहास लेखण रो ढंग भी बदळग्यो है। अबै इतिहास राजा लोगां री उठा-पटक री कहाण्यां ताईं सीमित कोनीं रह्यो, बो उण वगत रै सामाजिक जीवण, आर्थिक बुनियाद अर बीं माथै टिक्योड़ै समाज, कला, संस्कृति री जाणकारी रो खास साधन बणग्यो है। इणसूं उण समै रै लोगां रै जीवण री रेलपेल, दुख-दरद अर नित नूंवा बदळता रूपां रो बेरो पडै। इणरै साथै आजकाल आधुनिक इतिहास री प्रशासनिक अर राजनैतिक गतिविधियां रै सागै-सागै विदेसी शासन अर राजतंत्रीय शोषण सूं लोहो लेवण आळा स्वतंत्रता सेनानियां री कारगुजारियां माथै भी विशेष उजास न्हांखण रा प्रयास करीज रह्या है। सरकारी अभिलेखागारां में इण बातां री जाणकारी मुजब मोकळा अभिलेख देखण में आवै।

आंमें अेक तो बै अभिलेख है जिका में मुगलकाल सूं लगायनै दूजै महाजुद्ध ताईं घटित जुद्ध, सन्धियां अर दूजी राजनैतिक घटनावां री जाणकारी मिलै। इण सामग्री रो लारलै बरसां में मोकळो उपयोग हुयो है अर उणरै आधार सूं सैकड़ूं ग्रन्थ प्रकाश में आया है। दूजी भान्त रै अभिलेखां में राजस्व अर वित्त सूं सम्बन्धित अभिलेख है जिका

इतिहास रो

रो निर्माण शासन-तंत्र रै संचालन काल में हुयो है। राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में इसा दोनूं भान्त रा अभिलेख मिलै। दूजी भान्त रै अभिलेखां रो आज इतिहास लिखण में मोकळो महत्त्व है। राजस्व विभाग रा अभिलेख रियासती शासनकाल मे भारतीय किसानां री सामाजिक अर आर्थिक स्थिति माथै मोकळो प्रकाश पाडै। किसान रो समाज में कांई स्थान हो, कड़ी मैणत करण रै बाद भी बोयोड़ी उपज रो कित्तो भाग उणरै पल्लै पड़तो, किसानां पर किण-किण तरै रा कर लागता अर बां करां रै बोझ तळै बो किण तरै सूं दब्योड़ो हो, किसान नैं किण-किण लोगां सूं रिण मिलता अर बीं नैं कित्तो ब्याज चुकावणो पड़तो आद री सूचना राजस्व अभिलेखां में मिलै है। नीरखा बाजार रै अभिलेखां सूं उण बगत रा बजार भाव ई उजागर हुवै है तो पुण्यार्थ अभिलेखां सूं उण बगत री धार्मिक अर सामाजिक स्थित विशेष रूप सूं आम आदमी ब्याव अर धार्मिक तिंवारां में जिका कृत्य करता उणां री जाणकारी रो उल्लेख मिलै। दूजै कानी वित्त सूं सम्बन्धित अभिलेखां में उण टेम रै विणज-व्यापार, खास करनै व्यापारी सरूप, व्यापारी मारग अर व्यापारी करां आद री मोकळी जाणकारी मिलै। इणरै साथै न्याव सूं सम्बन्धित अभिलेखां में पुराणै समै में झगड़ा निपटावण में पंचायतां री भूमिका अर स्थानीय न्याव व्यवस्था री भी जाणकारी मिलै।

इतिहास रै साक्षी रै रूप में सरकारी अभिलेखागारां रै साथै निजी (व्यक्तिगत) अभिलेखागारां रो ई मोकळो महत्त्व है। अै अभिलेखागार सामाजिक संस्थावां, राजनैतिक पार्टियां, रिटायर्ड प्रशासनिक अधिकारियां, रियासतकालीन जागीरदारां, महन्ता, महाजनां अर स्वतंत्रता सेनानियां आद रा है।

जन-साधारण री निजरां में निजी अभिलेखागार घणा महत्वपूर्ण कोनीं, पण असलियत दूजी है। निजी अभिलेखागारां में सुरक्षित अभिलेखां रो चोखी तरयां सूं अध्ययन कर्यो जावै तो ठा पड़ै कै अै अभिलेखागार सरकारी अभिलेखागारां सूं ई कई बातां में ज्यादा महताऊ है। इणां री अभिलेखीय सामग्री सरकारी अभिलेखां में मिलण आळा संदर्भा रै पूरक रो काम करै अर इतिहास री उण घणकरी टूट्योड़ी कड़ियां नैं जोड़ण रो काम करै जिकी कई बार सरकारी अभिलेख सामग्री में कोनी मिलै।

कैवण रो मतलब औ है कै आलोचनात्मक अर क्रमबद्ध रूप में राजनैतिक क्रियाकळापां रो अध्ययन जद तांईं संभव कोनीं हुवै जठां लग कै सरकारी अभिलेखां रो अध्ययन आं निजी अभिलेखागारां रै अभिलेखां साथै नीं कर्यो जावै। इतिहासकार स्वतंत्रता आन्दोलन रो इतिहास लिखण री बगत किणी आन्दोलन में मुख्य लोगां री कारज खिमता रो मूल्यांकन उणां री व्यक्तिगत डायरियां अर पत्रां रै आधार सूं ज्यादा आछी तरै कर सकै बनिस्पत कै सरकारी अभिलेखा सूं। सरकारी अभिलेख तो फगत उण लोगां रै राजनैतिक क्रियाकळापां तांईं सीमित हुवै है जद कै व्यक्तिगत अभिलेख जियां आत्मकथावां, संस्मरण आद बांरै जीवण रै हरेक पहलु नैं उजागर करै। इणीं भान्त किणीं व्यक्ति विशेष रै कनै उणरै समकालीन घटण आळी घटनावां रो विवरण

लिख्योड़ो हुवै तो उण रो अध्ययन करयां उण वगत रै सरकारी अभिलेखां रै तथ्यां माथै खास उजास पड़ सकै।

धार्मिक संस्थावां में सुरक्षित अभिलेख विशेष रूप सू मिंदर, गिरजाघर, मस्जिद, गुरुद्वारा रो भी मोकळो महत्त्व है। आं धार्मिक संस्थावां रा अभिलेख अेकदम सूं सांमी आवणा मुश्किल है। अै अभिलेख समकालीन धार्मिक अर सामाजिक तथ्यां नैं सांमै लावै। निजू अभिलेखां अर व्यापारिक संस्थावां में उपलब्ध अभिलेखां रो महत्त्व ई कम कोनीं। इण अभिलेखां रो समकालीन सरकारी अभिलेखां रै साथै अध्ययन करनै इतिहास, देस, समाज अर सरकार रै आर्थिक अर सामाजिक इतिहास नैं सांवठै ढंग सूं प्रस्तुत करयो जाय सकै। इणीं भान्त राजनैतिक दळां जिंयां कांग्रेस पार्टी, जनता पार्टी, न्यारी-न्यारी कम्युनिस्ट पार्टियां अर भारतीय जनता पार्टी आद रा अभिलेखागारां रो भी इतिहास लिखण में कम महत्त्व कोनीं। आपांरै देस रो शासन मुख्य रूप सूं इण दळां रै प्रतिनिधियां रै मार्फत ई चालतो आयो है। आं राजनैतिक दळां रै अधिकार में उपलब्ध अभिलेखां सूं आं दळां री नीतियां, योजनावां अर कार्यकळापां रो देस रै उत्थान अर पतन में कांई योगदान रह्यो है इणरी जाणकारी मिलै। इणरै साथै ई दूजी सामाजिक संस्थावां में उपलब्ध अभिलेखां सूं भी आपांरै सामाजिक जीवण री संपूरण झांकी देखी जाय सकै।

राजस्थानी अभिलेखां में साहित्य, संस्कृति अर पर्यटन विकास

इतिहास इण बात रो साक्षी है कै हरेक देस अर शासनकाल में आप आपरी कला अर संस्कृति रै विकास सारू घणो काम करीज्यो अर आ परम्परा आज ई कायम है। इणसूं राजस्थान रा पुराणां रजवाड़ा ई अछूता कोनी हा। आज राजस्थान में कला अर संस्कृति रै विकास सारू अकादमियां रो जाळ बिछायो जाय रह्यो है अर पर्यटन री संभावना बधावण सारू नूंवी-नूंवी योजनावां बणायी जाय रह्यो है। अै अकादमियां अर पर्यटन विभाग आप आपरै अतीत री जाणकारी सूं सागीड़ो लाभ लेय सकै है। उणांरै अतीत री आधार-सामग्री है सैकड़ां बरसां पुराणा राजकीय अभिलेख, जिका आज राजस्थान रै विभिन्न भागां रै साथै राजस्थान राज्य अभिलेखागारां में उपलब्ध है। अठै बतावण जोग बात आ है कै अेकलै राजस्थान राज्य अभिलेखागार में राजस्थानी भाषा में लिख्योड़ा अभिलेख लाखां री संख्या में सुरक्षित है। अठै इण अभिलेख-सामग्री मांय सूं कई महत्वपूर्ण अभिलेख श्रृंखलावां रो संखेप में वर्णन करण री चेष्टा करी जाय रह्यी है, जिणां रै अध्ययन सूं राजस्थानी साहित्य अर संस्कृति रै सागै-सागै पर्यटन रै विकास में ई मदत मिलसी।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार में राजस्थानी भाषा री बोलियां, ज्यूंकै मारवाड़ी, हाड़ौती, ढूंढाड़ी, मेवाड़ी, मेवाती आद में लिख्योडा राजस्थान रा पुराणा रजवाड़ां रै राज-काज में प्रयुक्त हुवण आळा कागद राजस्थानी भाषा रो लारलै तीन सौ बरसां मे हुवण आळा क्रमिक विगसाव री कहाणी बतावण मे समर्थ है। अै कागद बही, तोजी, नत्थी अर पत्र-व्यवहार आद भान्त-भान्त रै रूपां मे उपलब्ध हुवै है। इण कागदां रै अध्ययन सूं जठै राजस्थानी साहित्य रै इतिहास री टूट्योड़ी कड़्यां नैं जोड़ण में मदत मिल सकै है बठै ही राजस्थानी भाषा री लिपि अर विराम चिह्नां नैं ई खोजनै निकाळ्या जा सकै है। आज राजस्थान में आपरी मायड़ भाषा राजस्थानी नैं राज-काज री भाषा बणावण नैं राज्य-सरकार तत्पर कोनीं। राजस्थानी रा विरोधी भी मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, मेवाती, हाड़ोती अर बागड़ी आद बोलियां नैं इणरी उपभाषावां बतायनै राजस्थानी पर अेकरूपता नीं हुवण रा आरोप लगावै। अठै बतावण जोग बात आ है कै तीन सौ बरस पुराणा अै कागद इण बात रा गवाह है कै राजस्थान रै सगळा रजवाड़ां रो काम-काज राजस्थानी भाषा में हुंवतो हो अर राज सूं बारै कर्‌यो जावण आळो घणकरो पत्र-व्यवहार राजस्थानी भाषा में ही कर्‌यो जावतो हो। रजवाड़ां री बोल्यां न्यारी-न्यारी ही पण उणांरी प्रशासनिक शब्दावळी में घणो अंतर कोनीं हो। जे राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी इण बगत प्रशासनिक शब्दावळी रो सांगोपांग अध्ययन करावण री व्यवस्था करै तो अेकै कानी राजस्थानी भाषा में शब्दां री अेकरूपता लावण में सहूलियत हुवै तो दूजै कानी राजस्थानी भाषा रो मानक-रूप भी सौरै-सांस निर्धारित हुय जावै। इणसूं जठै राजस्थानी भाषा रै माध्यम सूं पढाई करावण में जिकी कठिनाई आवै बा दूर हुय जावै, बठै ई राजस्थानी भाषा नैं राजकाज री भाषा बणावण रो मारग

भी प्रशस्त हुवै। ऊपर बतायोड़ा सरकारी कागदां रै अलावा राजस्थान राज्य अभिलेखागार में कई हजार डिंगळ गीत भी उपलब्ध है। इण गीतां रै अध्ययन सूं औ ठा पड़ै कै उण जमानै में राजस्थानी कित्ती टकसाळी अर विकसित हुयगी ही अर इणमें भाव-संप्रेषण री कित्ती सारी शक्ति ही।

साहित्य री तरै अठै रै अभिलेखागार में संगीत अर नाटक सम्बन्धी जाणकारी भी मोकळी प्राप्य है। राजस्थान रै रजवाडां में लोक कलाकारां नैं, जिणां में संगीत अर नृत्य दोनूं तरह रा कलाकार भेळा हा, ओपतो आवकारो मिलतो हो। इण लोक कलाकारां सारू न्यारा विभाग बण्योड़ा हा, जिणांरै माध्यम सूं लोक कलाकारां सारू सगळी भांत री व्यवस्था हुया करती ही। जयपुर राज्य में 'गुणीजन-खानो' इण नांव सूं अेक विभाग हो। इणरै कागदां में जयपुर राज्य में सतरहवीं सदी सूं लगायनै उगणीसवीं सदी रै अंत ताईं रै लोक कलाकारां री थोड़ी-घणी जाणकारी मिलै। जयपुर राज्य रै ही कागदां री अेक दूजी श्रृंखला 'दस्तूर कौमवार' है। इण श्रृंखला में जठै जयपुर राज्य रै लोक कलाकारां रै सामाजिक जीवण माथै प्रकाश पड़ै, उठै ई उणां री आर्थिक स्थिति री भी जाणकारी प्राप्य है। इणरै साथै ही इणमें नृत्य अर संगीत रै छेत्र में जयपुर घराणै रै लोगां री वंशावळियां भी देखी जा सकै है। पातरां अर दमामियां रै बारै में तो राजस्थान रै सगळै रजवाड़ां रै कागदां में सूचना मिलै है, जिणमें उणां नैं दियोड़ी जागीरां रो भी उल्लेख है। जे इण अभिलेख-श्रृंखलावां रो अध्ययन कर्‌यो जावै तो पुराणा लोक कलाकारां री सामाजिक अर आर्थिक स्थिति पर भी मोकळो प्रकाश पड़ सकैला।

ललित कलावां रै सम्बन्ध में तो अभिलेखागार में भरपूर सामग्री प्राप्य है। सतरहवीं सदी री बीकानेर री संभाळा बही में बीकानेर राज्य में उस्तां लोगां रा कागदां माथै उकेर्‌योड़ा चित्रामां री सांगोपांग सूचना प्राप्त हुवै है। बीकानेर कलम री जाणकारी सारू आ बही अेक अनूठो साधन है। इणीं भान्त जयपुर राज्य रै सूरतखाना रै कागदां री श्रृंखला में चित्राम अर चित्रकार रै साथै चित्राम बणावण रै काम आवण आळा रंगां नैं बणावण री भरपूर जाणकारी मिलै। बीकानेर री अठारहवीं सदी री कमठाणा बही में अर कोटा राज रै महलात रा कागदां में भित्ति-चित्राम बणावण में जिका रंग काम में आवता, उणां नैं बणावण री विधि अर कटार, तलवार री मूठ अर म्यान आद हथियारां री जाणकारी मिल जावै है। जयपुर रै छापाखानै रै कागदां री अभिलेख-श्रृंखला में *कपड़ां री छपाई री मोकळी जाणकारी है। छपाई रै काम आवण आळै रंगां नैं बणावण* रो तरीको अर भान्त-भान्त रै बूंटां री जाणकारी देणी इण अभिलेख-श्रृंखला री अेक खासियत है। जयपुर राज्य रै दस्तूर कौमवार में ललित कलावां में लाग्योड़ा कलाकारां रै सामाजिक अर आर्थिक जीवण माथै सांगोपांग प्रकाश पड़ण री खासियत है।

राजस्थान में पर्यटन री संभावना, विशेष रूप सूं विदेसी पर्यटकां नैं आकर्षित करण सारू अभिलेखागार में मोकळी सामग्री उपलब्ध है। राजस्थान रै रजवाड़ां में राज्य रै राजा अर उणरै परिवार रै सदस्यां खातर भोज्य पदार्थ बणावण वास्तै खास रसोवड़ा हुंवता हा। अभिलेखागार में प्राय: सगळै रसोड़ां री 'रसोड़ खास' नांव री अभिलेख-

शृंखलावां मिलै है। इण रसोड़ा खास अभिलेख-शृंखला रो अध्ययन करयो जावै तो उण बगत रै विविध भान्त रै भोजन री जाणकारी सुलभ हुय सकै है। खास तरै रा भोजन में कांई-कांई खास मसाला पड़ता हा, इणरी पूरी जाणकारी देवणी इण शृंखला री खासियत है। पर्यटन विभाग इण शृंखलावां रै अध्ययन री व्यवस्था कर विदेसी पर्यटकां में विशिष्ट प्रकार रै भोज्य पदार्थां रो प्रचार करै तो मोकळा पर्यटकां रै इण शाही खाणै कानी आकर्षित हुवण में जेज नीं लागै।

इणीं भान्त पर्यटन विभाग विदेसी पर्यटकां नैं आकर्षित करण वास्तै राजस्थान रै अैतिहासिक भवनां रो मूळ रूप कायम राखण सारू पुरातत्त्व अर संग्रहालय विभाग माथै जोर देय रह्यो है। अठै आ वात बतावण जोग है कै अभिलेखागार में घणकरा रजवाड़ां री सतरहवीं व अठारहवीं सदी री 'कमठाणां इमारतखाना' अर 'रंगखाना' नांव री *अभिलेख-शृंखलावां मिलै है। इण अभिलेख शृंखलावां* में भवन निर्माण में प्रयुक्त हुवण आळी निर्माण सामग्री विशेष रूप सूं भवनां नैं मांय अर बारै सूं पोतण नैं काम आवण वाळै रंग नैं बणावण रै तरीकां री जाणकारी दियोड़ी है। जे इण कागदां में मंड्यै मुजब नुसखां रो रंग बणायो जावै अर जूनां अैतिहासिक भवनां नैं मांय-बारै सूं पोत्या जावै तो भवनां रो मूळ रूप भी नष्ट नीं हुवै अर भवनां री चोखी मरम्मत ई हुय जावै। राजा लोग आपरी मौज-मस्ती खातर आप-आपरै राज्य में मोकळी शिकारगाहां बणाय राखी ही जठै बै भान्त-भान्त री चिड़ïयां अर जिनावरां रो शिकार करया करता हा। इण शिकारगाहां में जिका प्रसिद्ध शिकारगाह हा उणां रो तो राज्य सरकार विगसाव करयो पण जिका शिकारगाह मुख्य मारगां सूं टळ'र हा उणां रो विगसाव हुवणो अजै बाकी है। अभिलेखागारां में इसा घणा ही शिकारगाहां री जाणकारी मिलै है जिणांरै विगसाव सूं विदेसी पर्यटकां नैं आकर्षित करया जाय सकै। आ अेक विडम्बना ही है कै पर्यटन रा पंजीकृत (रजिस्टर्ड) पथदर्शक (गाइड) भी पर्यटकां नैं अैतिहासिक स्थलां री अधकचरी जाणकारी ई दे पावै है। जे पर्यटन विभाग चावै तो राजस्थान रै अैतिहासिक स्थलां री सही जाणकारी अभिलेखागार सूं ले सकै है। पर्यटन विभाग विदेसी पर्यटकां नैं आकर्षित करण वास्तै राजस्थान रै रेतीलै इलाकै में सफारी कार्यक्रम नैं लागू करण पर विचार कर रह्यो है। राजस्थान में उगणीसवीं सदी तांई सैकड़ां परम्परागत व्यापारी मारग हा जिका रेल-मारग रै बण जावण अर अंग्रेजी सरकार री नीतियां रै कारण सूं प्रचलन में को रह्या नीं। इण मारगां में अभिलेखागार में जगात रै कागदां में खासी जाणकारी उपलब्ध है। जे पर्यटन विभाग इण मारगां रो उपयोग सफारी कार्यक्रम रै वास्तै करै तो उण विभाग नैं खासी आमदनी हुय सकै है।

विदेसी पर्यटक राजस्थानी वेश अर गैणं-गांठां सूं घणा प्रभावित है। जे राजस्थान हैंडी क्राफ्ट अर पर्यटन विभाग जूनै बगत रै राजस्थानी वेष अर गैणां री नकल बणायनै विदेसी पर्यटकां नै बेचै तो उणनैं घणो ई लाभ हुवण री संभावना है। राजस्थान अभिलेखागार में ब्याव सम्बन्धी कागदां में गैणां अर वेषां री घणी सारी जाणकारी प्राप्य है।

राजस्थान में चिलका डाक व्यवस्था

राजस्थान में संचार व्यवस्था रो अध्ययन कर्यो जावै तो बेरो पड़ै के अठै भान्त-भान्त री डाक व्यवस्था प्रचलन में ही। मुगलकाल में मुगल बादशाह आपरी डाक भेजणै अर लावणै खातर अेक शाही डाक व्यवस्था बणाय राखी ही। इणमें पैदल अर सवार हलकारा डाक नैं दूर-दूर रै प्रान्तां में लावता अर ले जावता। जिण मारगां सूं डाक आवती-जावती ही, उठै थोड़ी-थोड़ी दूर माथै चैक-पोस्टां बणायोड़ी हुवती ही। इण चैक पोस्टां रा प्रभारी मिरधा नांव सूं जाण्या जावता। इण कारण सूं राजस्थान रा रजवाड़ा जिका मुगल दरबार री सेवा में हा अर आपरी डाक भी उणी'ज मारगां सूं मंगावता अर भेजता, इण डाक रो नांव मिरधा डाक ही राख दियो। मिरधा डाक व्यवस्था अठै घणै ही दिनां प्रचलन में रह्यी।

इणी'ज भान्त 18वीं सदी में जयपुर राज रा ब्राह्मण डाक लावण लेजावण सारू अेक गैर सरकारी संगठण बणायो अर इणरी शाखावां राजस्थान रै दूजा रजवाड़ां में ई खोल राखी ही। इण संगठण में ब्राह्मण जाति रा हलकारा हुवण रै कारण सूं इण डाक रो नांव 'बामणी डाक' पड्ग्यो। अंग्रेजी डाक व्यवस्था लागू हुवण सूं पैलां तांई 'बामणी डाक' व्यवस्था रो खासो बोलबालो हो। बामणी डाक रा हलकारा पगां मे घुंघरू, सिर माथै पागड़ी अर हाथ में डंडो राख्या करता। अै हलकारा सरकारी डाक रै साथै प्राईवेट डाक भी लाता लेजावता अर लिफाफै रै वजन रै आधार माथै उणां (प्राईवेट लोगां) सूं पईसा वसूल करता।

19वीं सदी रै अंतिम दसकां में राजस्थान रै रजवाड़ां में अफीम, रूई अर चांदी रो सट्टो हुवणो सरू हुयग्यो हो। अठै रै रजवाड़ां में इण जिनसां रो सौदो कलकत्तै अर बम्बई में इणीं जिनसां रै भाव सूं ही करता। इण खातर अठै रै रजवाड़ां रै व्यापारियां नैं कलकत्तै अर बम्बई सूं इण जिनसां रा भाव मंगावणै री जल्दी रैवती ही। कलकत्तै सूं जयपुर अर अजमेर तांई तो टेलीग्राफ लाइन ही, पण इणसूं आगै जोधपुर अर बीकानेर टेलीग्राफ लाइन सूं जुड़्योड़ा कोनीं हा। इण खातर जोधपुर अर बीकानेर रा व्यापारी कलकत्तै सूं समाचार देरी सूं पावता। इण समस्या रो समाधान बां 'चिलका डाक' सूं कर लियो हो। आ चिलका डाक अजमेर सूं जोधपुर अर अजमेर सूं बीकानेर आधा घंटै में पूग जावती ही। चिलका डाक अेक गैर सरकारी संगठण हो जिणमें हलकारां री जाग्यां बडा-बडा सीसा काम में लिया जावता। जिणां नैं ऊंचै पहाड़ या ऊंचै रेत रै टीलै माथै राखनै सूरज रै सांमै कर अर चिलको पैदा कर्यो जावतो।

कुशल अर जाणीकार लोग चिलकै नैं इण भान्त फेंकता कै उणरै इसारै नैं समझ अर आगै समाचारां रो भुगताण हुय जावतो। रात री बगत जे चिलका डाक सूं समाचार भेजणा जरूरी हुवता तो बारूद रो भभको पाखती जळायनै भी जरूरी संकेत

करनै समाचार भुगता दिया करता। बीकानेर-अजमेर अर जोधपुर-अजमेर रै विचाळै मारगां माथै हर दस कोस पर चिलको फेंकण सारू सीसा लगाया जावता हा। बीकानेर राज में भीमनाथ अर उण रो भतीजो शेरनाथ चिलका डाक भेजण अर चिलकै रै इसारां नै समझण में खासा माहिर हा। सन् 1873 तांई अजमेर-बीकानेर अर अजमेर-जोधपुर रै विचाळै चिलका डाक रै आवण री जाणकारी मिलै है।

जयपुर अर चूरू रै बिचाळै ई चिलका डाक भेजण रो प्रबन्ध हो। श्री गोविन्द अग्रवाळ आपरी पोथी में लिखै कै इण व्यवस्था रै त्हैत चिलकै रो संकेत जयपुर सूं हर्ष री पहाड़ी (सीकर कनै) माथै अर बठै सूं झुंझणूं री पहाड़ी माथै अर उठै सूं चूरू रै घुग्घु धोरै माथै पूगतो। घुग्घु धोरै माथै समाचार आवतां ही बठै सूं अेक आदमी दौड़नै शहर में आवतो अर व्यापारियां नैं समाचार भुगतावतो।

आ व्यवस्था बीकानेर अर जोधपुर टेलीग्राफ लाइन सूं जुड़्यां पछै बन्द हुयगी।

राजस्थान रै इतिहास में पर्यावरण सुधार रो महत्त्व

आज दुनियां भर रा सगळा देस पर्यावरण प्रदूषण सूं परेशान निजर आवै है अर पर्यावरण संतुलन बणायो राखण सारू दूजी वातां रै साथै नूंवा पेड़-पौधा लगावण अर जूनै दरखतां नैं नीं काटण माथै जोर देय रह्या है। भारत सरकार ई जंगळ लगावण रो सघन कार्यक्रम हाथ में ले राख्यो है। कई लोग निजू स्तर पर ई हरा दरखतां नैं काटण रै विरोध सरूप चिपको आन्दोलन चला रह्या है। पण राजस्थान री मरु-भूमि रै लोगां नैं इण वात रो गौरव प्राप्त है कै अठै राज्य स्तर पर अर निजू तौर पर लोग सैकड़ां वरसां पैली सूं ई पर्यावरण संतुलन सारू सावचेत रह्या है। अठै रा लोग दरखता री भूमिका नैं बखूबी जाणता हा। बीकानेर, जोधपुर, जैसळमेर अर शेखावाटी रै इलाकां में अंधाधुंध रूप में हरै शमी अर्थात खेजड़ी रै पेड़ नैं काटण माथै प्रतिबंध लाग्योड़ो हो। खेजड़ै रै हरै पेड़ नैं तेल री घाणी, बळधां री गाडी रा पहिया वास्तै तो काटण री मनाही कोनी ही पण दूजा कामां सारू इणनैं कोई काट नीं सकतो हो। इणरै लारै राज्य सरकार री मनसा आ ही कै मरु-प्रदेस में खेजड़ै रो दरखत ई इसो पेड़ है जिको कम पाणी में ई लंबै समै तक हरो-भरो रैवण री खिमता राखै अर रेत रै धोरां नैं आगै वधण सूं रोकण में औ आपरी महताऊ भूमिका निभावै। इणरै साथै इण दरखत रो राजस्थान रै जनमानस री धार्मिक भावना सूं जुड़ाव हो जिणसूं आज ई खेजड़ी रै दरखत नैं लोग कम ई काटै है।

सतरहवीं अर अठारहवीं सदी री बीकानेर री बहियां में राज्य री आमदनी री मदां में 'खेजड़ी री गुनहगारी' शीर्षक रो उल्लेख मिलै। इण मद में कदै-कदास पईसो जमा हुया करतो हो, पण महाराजा सूरतसिंहजी रै शासनकाल में इण मद मे खासो पईसो जमा हुवण रो उल्लेख मिलै। इण रो मुख्य कारण औ हो कै बीकानेर राज्य में खालसा छेत्र में हरी खेजडी रै काटण माथै प्रतिबंध लाग्योड़ो हो। पण तेल री घाणी, बळधा-गाडी रै चक्कां खातर खेजड़ै नैं काटण री छूट ही। महाराजा सूरतसिंहजी रै समै में इण छूट रो नाजायज फायदो उठायनै कई लोग खेजड़ां नैं अंधाधुंध काटण लागग्या। गैरकानूनी तौर सूं इण पेड़ नैं काटण आळै सूं राज्य री तरफ सूं दंड सरूप 'खेजड़ी री गुनहगारी' कर वसूल करयो जावतो हो जिणसूं इण मद में पईसै री बधोतरी हुयगी ही। सन् 1816 मे हरी खेजड़ी काटण री वधती घटनावां नैं गंभीरता सूं लियो गयो अर राज्य भर में हरी खेजड़ी काटण आळा सूं सख्ती सूं निबटण रो निस्चै करयो गयो। इण खातर राज्य सरकार अेक आदेश काढ्यो कै भविष्य में जिको कोई नाजायज तौर सूं खेजड़ी रै पेड़ नैं काटसी उण सूं रुपिया पच्चीस खेजड़ी री गुनहगारी रै रूप में वसूल करया जासी। इण आदेस रो अेक अंश इण भान्त है–

''देस रा गांवों रा चौधरियां जी सब सुनो जोग्य तिथां थी......जी साहबों देश सरवाळै री मरजाद बांधी छै न आगै सदामद पीढी सूं रकम लीजै...... आगै तो सदामद हरी खेजड़ी बढी....... संवत् 1853 साल हरी खेजड़ी बाढण री बा बळद तणी बढण री मनाई कीवी कै नैरा कागद देस सववाळै रै गांवों में हुय गया छै तैमै जाव छै इतरा कामां ने तो हरी खेजड़ी बढसी तैरी तो माफी छै.... हरी खेजड़ी बढसी वा बळद तणी

चाळसी तो गुनहगारी रा रु. 25) लागसी।"

जोधपुर रै जूना कागदां मूं मालम पड़ै कै मारवाड़ में खेजड़ी काटणै पर थोड़ो प्रतिबंध हो, पण उण पर सख्ती सूं नीं निपटयो जायतो हो। खुद राज्य कानीं सूं अनाप-सनाप खेजड़्यां काट ली जायती ही। अठै आ बात बतावण जोग है कै जोधपुर में बठै रा शासकां री अपेक्षा जनता में पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता घणी ही। इण बात रो बेरो मारवाड़ में 17वीं अर 18वीं सदी में घटयोड़ी घटनावां सूं ई पड़ै है। बिश्नोई सम्प्रदाय रा प्रवर्तक संत जांभोजी आपरै अनुयाइयां नैं जिण गुणतीस सिद्धांतां रो पाळण करण रो आदेश दियो हो उणमें अेक सिद्धांत मूंगै दरखतां री रक्षा करणै रो ई हो। 17वीं अर 18वीं सदी में बिश्नोई सम्प्रदाय रा लोग-लुगाई अर टाबर इण सिद्धांत री पाळणा सारू आपरी जान तक निछरावळ कर दी पण मारवाड़ रै इलाकै में हरी खेजड़्यां नैं कोनीं काटण दी। बिश्नोई समाज समाज सूं सम्बन्धित इण घटनावां नैं विद्वान लोगां भान्त-भान्त सूं प्रस्तुत करी है। श्री पुरखाराम बिश्नोई ई इण घटनावां रो सांगोपांग वर्णन कर्‌यो है। उणां मुजब विक्रम संवत् 1661 में जोधपुर राज्य में रामड़ास गांव री दो बिश्नोई जाति री लुगायां करमां अर गौरां मूंगी खेजड़ी नैं नीं काटण देवण सारू खेजड़ी रै चिपकनै आपरी जान देय दी। वि. सं. 1700 में इणीं भान्त बूचो जी अेयरा मूंगा पेड़ नीं काटण देवण वास्तै शहीद हुयग्या। इणीं बगत जोधपुर रै गांव तिलासणी में हरी खेजड़्यां नहीं काटण देवण खातर खींवजी, भैंरांजी अर नेतूजी नैण हंसता-हंसता आपरा प्राण देय दिया। वि. सं. 1787 री घटना तो पर्यावरण संरक्षण रै इतिहास में अेक महताऊ घटना मानीजै। तत्कालीन जोधपुर महाराजा नैं आपरै म्हैल बणावण में चूनो पकावण सारू लकड़ी री जरूरत पड़ी। राजाज्ञा सूं राज्य कर्मचारी कनलै अेक गांव खेजड़ली में इण खातर हरी खेजड़्यां काटण रो विचार कर्‌यो। खेजड़ली गांव रै बिश्नोई समाज रै लोगां नैं जद कर्मचारियां रै इण मतै रो ठा पड़्यो तो उणां इणरो घोर विरोध कर्‌यो पण राज्य-कर्मचारी टस सूं मस नी हुया। इणनैं देखनै सैंकड़ूं मिनख, लुगायां अर टाबर मूंगी खेजड़्यां रै बाथ घालनै चिपग्या अर कह्यो कै खेजड़ी कटणै सूं पैली म्हांरा माथा कटसी। राज्य कर्मचारी इणरी परवा कोनीं करी अर खेजड़्यां पर कुल्हाड़्यां चलावण लाग्या। देखतां-देखतां 363 मिनख, लुगाई अर टाबर आपरी जान सूं हाथ धोय बैठ्या। राजा नै जद बिश्नोई जाति रै इण लोगां रै बलिदान री जाणकारी मिली तो राजा सगळै मारवाड़ में हरी खेजड़्यां नैं नीं काटणै री मुनादी फिरवायी।

पर्यावरण रै संतुलन खातर पेड़ नीं काटणै रै साथै नूंवा पेड़-पौधा लगावण में ई लोग रुचि राखता हा। मरु-छेत्र री रियासतां रै राजस्व सम्बन्धी जूना कागदां सूं जाणकारी हासिल हुवै कै राज्य कानीं सूं किसानां नैं धोरां आळी धरती में खेती करण खातर प्रोत्साहन दियो जावतो हो। राज्य री मनसा आ रैवती ही कै इसी धरती माथै लोग खेती करसी तो धोरा ओर घणा नीं बधै अर उणां रो फैलाव ई रुक जासी।

ऊपरला सगळै तथ्यां सूं औ बेरो पड़ै कै आज री सरकार पर्यावरण में संतुलन बणावण सारू जिका जतन कर रह्यी है, उणरी जाणकारी दो सौ बरस पैली ई मरुस्थळ रा रैवासियां नै पूरी तरयां ही।

बिरछ अर पर्यावरण

राजस्थान रो घणकरो छेत्र, विशेष रूप सूं उत्तराधो-आथूणो राजस्थान अेक शुष्क प्रदेस रह्यो है। इण छेत्र मांय सदियां सूं पड़तो काळ अेक साधारण बात है। औ ई कारण है कै इण छेत्र रा लोग हरयै बिरछां रो महत्त्व समझता हा। ईंधन रै रूप में लकड़ी रो उपयोग अवार सूं ई घणो हुंवतो, जिणसूं बिरछां री कटाई ई अणूती हुंवती। बिरछां री इण अबूझ कटाई सूं पर्यावरण-संतुलन कित्तो बिगड़तो, इण रो अंदाज आज री बगत लगायो जाय सकै। पण सवाल औ उठै कै कांई समाज इण सूं अणजाण हो ? वास्तव में आ बात नीं ही। मिनख सदियां सूं पर्यावरण-संतुलन सारू बिरछां रो महत्त्व समझतो रह्यो है। खेती अर पशुपाळण में रूंखां रो महत्त्व हो, तो भूमि-कटाव अर बिरखा सारू ई रूंखां रै महत्त्व री जाणकारी समाज नैं ही।

भारत ठेट सूं अेक धर्म-प्रधान देस रह्यो है। औ ईज कारण है कै किणी बात नैं जे धर्म सूं जोड़ दी जावती तो वा घणी प्रभावी हुय जांवती। हरयै रूंखां नैं काटण सूं रोकणो कोई सोरो काम कोनीं हो। इण बात नैं ध्यान में राखनै अठै रा मिनखां प्रदेस रै दूजा छेत्रां री अपेक्षा हरयै रूंखां नैं संरक्षण देवण सांमी घणो ध्यान दियो अर रूंखां नैं धर्म सूं जोड़नै पर्यावरण-संरक्षण में धर्म रो ढाल री भान्त उपयोग करयो। औ ई साच है कै उण बगत हरया रूंख खेती अर पशुपाळण रो अभिन्न अंग बण चुक्या हा। इण कारण सूं आंरी कटाई रोकणी नीं तो असखेल हो अर ना ईज संभव। ओरण, रखत अर गोचर रै रूप में रूंखां नैं संरक्षण दियो गयो।

ओरण छोडण री परम्परा हरयै रूंखां रै संरक्षण में महताऊ कह्यो जाय सकै। जद ई कोई नूंवों गांव बसायो जावतो, उण बगत गांव री पंचायत कानीं सूं गांव रो अेक बडो भू-भाग 'ओरण' रै रूप में छोड दियो जावतो। इण खाली भू-भाग में किणी देवी-देवता री मूर्ति थापित कर दी जावती अर उणां रै नांव ई औ ओरण समर्पित कर दियो जावतो। कई लोग इणनैं ओरण री जाग्यां 'रखत' रै नांव सूं सम्बोधित करता। इण भान्त ओरण अथवा रखत छेत्र मांय ऊभा रूंखड़ां नैं गांव अथवा गांव सूं बारला लोग नीं तो काट सकता अर ना ईज उणां नैं खांडा कर सकता। ओरण छेत्र रा रूंख सुरक्षित रैवता। इणरै अलावा ओरण में ऊभा रूंखां रा पत्ता सूखनै ओरण री धरती में ईज पड़ता, जका सड़र बगत रै परवाण खाद रो काम करता। इणसूं घास-फूस ई दूजी जाग्यां सूं घणो ऊगतो। धीरै-धीरै औ ईज ओरण छेत्र जंगळ रो रूप लेय लेंवतो। ओरण मांय घणकरा रूंख कम पाणी सूं काम काढणिया अर तेज तावड़ो सहन करणिया ई पनपाइजता। इण तरै रा रूंखां में बोरड़ी अर खेजड़ी मुख्य रूप सूं हुंवता। फगत उत्तराधै-आथूणै राजस्थान रो सर्वेक्षण करयो जावै तो ई ठा लाग जावै कै आज ई इसा हजारूं ओरण अस्तित्व में है। बीकानेर सूं बत्तीस किलोमीटर दूर 'देशनोक' में करणी माता रो ओरण आज ई ओरण-व्यवस्था रो जीवतो-जागतो उदाहरण है।

'ओरण' अर 'रखत' री भान्त 'गोचर भूमि' छोडणो आर्थिक मवाल सूं महताऊ हुंवतां थकां ई धर्म सूं जोड दियो गयो। 'ओरण' जठै देवी-देवतां रै नांव सूं छोडीजतो, बठै ई गायां रै चरणै सारू 'गोचर भूमि' छोडण री ई लांबी परम्परा रह्यी है। हिन्दू धर्म में गाय नैं माता मानीजी है। इण सारू उणरै नांव माथै छोडीजी भूमि रा रूंखां नै काटण सारू ई लोग संकता। इण गोचर भूमि में ईज, जिणनैं कई लोग 'बीड़' रै नांव सूं जाणै, रूंखां रै साथै-साथै घास-फूस ई अणुतो हुवतो। इणसूं पशुधन नैं तो लाभ मिलतो ई मिलतो, साथै ई छेत्र रो पर्यावरण संतुलन बणायो राखण में ई सहायता मिलती। आजादी सूं पैलां ताईं गांवां अर कस्बां में धनवान लोगां कानीं सूं छुडाईजी हजार किलोमीटर ताईं री 'गोचर भूमि' उपलब्ध ही। पण धीरै-धीरै इण भूमि माथै अतिक्रमण करीजतो गयो अर 'गोचर भूमि' सारू अेक गंभीर संकट खड़ो हुयग्यो।

अठै आ बात उल्लेखनीय है कै ऊपर वाळी दोनूं प्रकार री व्यवस्थावां फगत उत्तराधै-आथूणै राजस्थान मे ई नीं, आखै राजस्थान मांय कायम ही। राजस्थान रै दिखणादै-अगूणै भाग में तो जंगळ रा जंगळ देवी-देवतावां रै नांव सूं सुरक्षित है। आं जंगळां नैं धार्मिक भावना दीठ में राखनै आज ई कटणै सूं सुरक्षा प्राप्त है। इणीं भान्त राजस्थान में प्राय: बड़, पीपळ अर नीम आद रूंखां नैं काटणो पाप मानीजै। इण सारू अै रूंखड़ा हर जाग्या आपरो अस्तित्व अजै ई बणाय राख्यो है अर पर्यावरण-संतुलन बणावण मे आपरो योग देय रह्या है। प्रदेस रै उत्तराधै-आथूणै अर अगूणै भाग में बोरड़ी अर खेजड़ी आद रूंखां नै ई इणी भान्त महत्त्व दियो जावै। इण छेत्र मांय सदियां सूं खेजडी रै नीचै देवी-देवतावां रा 'थान' थरपण री परम्परा चालती आय रह्यी है, जको आज ई हजारूं री संख्या मांय उपलब्ध है। इणी भान्त अठै रा ग्रामीण अंचलां में ई नीं, सहरी लुगायां भी अनेक धार्मिक अवसरां माथै खेजड़ी रै नाळ बांधनै उणरी पूजा-अर्चना करै है। खेजड़ी रै अलावा 'बोरड़ी' माथै ई लाल-पीळी धजावां चढायनै लुगायां अपणै आपनै धन्य समझै। आज ई जिण किणी खेजड़ी रै नीचै देवी-देवतावां रा थान अथवा बोरड़ी माथै धजा आद चढायोड़ी हुवै, उणनैं काटतो करड़ी सूं करड़ी छाती आळो आदमी ई डरै।

रूंखां नैं धार्मिक दीठ सूं महत्त्व दिरीजण रै लारै इणरै आर्थिक महत्त्व नै ई नकारयो नीं जाय सकै अन्यथा फळ देवणिया तो दूजा ई घणकरा रूंख अठै फळापै पण खेजड़ी रो फायदो सगळां सूं घणो है, औ कैवणो कोई अपरोगी बात कोनीं। खेजड़ी इण छेत्र री मोकळी जरूरतां पूरै। कंटाळी खेजड़ी अठै री नरम रेतीली धरती में मोकळी मात्रा में ऊगै अर उणरै पानड़ां रो उपयोग अठै रा पशुआं री चराई रै रूप में ई हुवै। इण रूंख री अेक खासियत आ ई है कै काळ अथवा कम पाणी रो इण माथै लगारैक ई असर नीं पड़ै। अमूमन देख्यो जाय सकै कै काळ पड़्यां पशु अर मिनख दोनूं ई इण रो लाभ उठावै। इण रा पत्तां री चराई करनै गाय-भैंस अर ऊंठ-बळध जठै आपरी पेट भराई करै, बठै ई इण रूंख री फळ्यां 'सांगरी' रो उपयोग सब्जी रै रूप में हुवै। इण

सांगरी नैं सुखायनै इण रो उपयोग चार सूं पाच साल तांई करयो जाय सकै, जकी अठै रा रैवासियां अर प्रवासियां सारू घणी रुचिकर है। साथै ई इण रा पानड़ा ठोस अर वजनी हुवण सूं दुधारू पशुवां रो दूध वधावै। इसा तमाम फायदां रै अलावा जिण खेत में खेजड़ी रा रूंख घणा हुवै, उण खेत में आंधी आयां सूं ई रेत अेक जाग्यां सूं दूजी जाग्यां नीं पूग सकै। इणसूं खेत री जमीन विगड़ण सू बच जावै अर साथै ई इणसूं झड़ण आळा पानड़ां सूख सड़नै खाद री गरज पाळै।

खेजड़ी रै रूंख बावत ऊपर लिख्या कीं गुणां नैं देखनै औ तथ्य ओरूं ई स्पष्ट हुय जावै कै आपां रा वडेरां इण छेत्र विशेष रा उणी'ज रूंखां नैं धार्मिक दीठ देयनै वचाय राख्या है, जका जन-साधारण सारू सगळा सूं घणा उपयोगी है।

पर्यावरण-संतुलन मांय रूंखा रै महत्त्व नैं समझनै ई इण छेत्र रा लोगां जका धार्मिक सम्प्रदाय वणाया अथवा चलाया, उणां में 'रूंख-संरक्षण' माथै खास जोर दियो। आज सूं लगैटगै 550 बरसां पैलां नागौर जिलै रै अेक छोटेक गांव में संवत् 1508 में जलम्या संत जाभोजी विश्नोई-सम्प्रदाय री थरपणा करी। उणमें वनस्पति संरक्षण माथै विशेष जो दियो गयो। कह्यो जावै कै संत जांभोजी नैं पर्यावरण-संतुलन में रूंखां री भूमिका रो पूरो ग्यान हो। इण सारू उणां रा अनुयायी नीं फगत हरयै रूंखा रै संरक्षण में विशेष रुचि लेवै है वल्कै उणां नैं अनावश्यक रूप सू कटण सूं ई रोकै।

विश्नोई-सम्प्रदाय री भान्त नाथ-सम्प्रदाय में ई विरछा नै हदभांत संरक्षण दियो जावै पण विश्नोई-सम्प्रदाय री भान्त आंरो अटल नियम कोनीं। धर्म-सम्प्रदाय रै अलावा ग्रामीण-छेत्र रा धर्म-स्थलां यथा मिंदरां, मठा मांय ज्यादा सूं ज्यादा रूंख लगायनै आंनैं हरया-भरया राखण री अेक लांवी परम्परा चाली आय रह्यी है। औ ई कारण है कै आं स्थलां में हरियाळी कीं ज्यादा ई देखण नैं मिलै। गांवां में ई नीं, अनेकूं शहरां मांय ई पीपळ अर वड़ रा पुराणा दरखत आपरै धार्मिक महत्त्व रै कारण आज ई आपरो अस्तित्व वणाय राख्यो है।

आं सगळी बातां पर विचार करतां-थकां औ घणो जरूरी है कै ज्यादा सूं ज्यादा विरछ लगाया जावै अर साथै ई आंरो भली-भान्त पोसण ई हुवै। पर्यावरण प्रदूषण री समस्या फगत राजस्थान अथवा भारत रै सांमी ई हुवै, अैड़ी बात कोनी। आज आ समस्या आखै जगत अर आखी मानव-जाति रै सांमी है।

राजस्थान में इतिहास-लिखण री परम्परा

आपणै देस में इतिहास लिखण री परम्परा पुराणै जमानै सूं चालती आयी है। आज तो इतिहास नूंवी-नूंवी रीतियां नै अपणायनै लिख्या जाय रह्या है। आंनै समझण सारू पुराणै समै सूं इतिहास लिखण री कांई परम्परा चालती आयी है, उणरी जाणकारी लेवणी जरूरी है। पिछम रै देसां में जियां हेरोडोट्स नैं इतिहास रो जनक मान्यो जावै है, वियां ई आपणै अठै रा महर्षि व्यास नैं जे आपां आ पदवी देवां तो कोई बेजां बात कोनीं। प्राचीन काल में ई आपांरै अठै इतिहास लिखण रो काम पुरजोर में हो। पण उण बगत रा इतिहासकार इतिहास पढण आळा लोगां री रुचि वधावण सारू अैतिहासिक तथ्यां रै साथै कथावां अर अनुश्रुतियां ई आपरै इतिहास में जोड़ता गया। इणरी झलक पुराण अर आख्यानां में देखण नैं मिलै है। स्वतंत्रता रै पैलां तांईं पिछम रा इतिहासकार आंनैं इतिहास ग्रंथ ई मानण नैं त्यार नीं हा। पण आज आंरो नूंवी दीठ सूं अध्ययन कर्यो जाय रह्यो है।

ऋग्वेद नैं संसार रो सबसूं पुराणो ग्रंथ मान्यो जावै है। इण मांय धार्मिक कृत्यां रै साथै-साथै इतिहास सम्बन्धी बातां ई लिख्योड़ी मिलै। इणीं भान्त पुराणां में प्राचीन भारत रै राजावां री वंशावळियां देखी जाय सकै है। आख्यानां में पुरु-वंश रै बिचाळै लड़ीज्या घरेलु जुद्ध री जाणकारी ई मिलै। इतिहासकार महाभारत रै जुद्ध नै ईसा सूं 900 पूर्व रै वीच लड़्यो गयो मानै है। आज रा शोध रा विद्यार्थी आं ग्रंथां रा प्रणेता महर्षि व्यास अर लोमहर्षण नैं मानै है। इणीं भान्त बौद्ध त्रिपिटकां में, जिणां रै बारै में कह्यो जावै कै बै ईसा पूर्व सूं 566 सूं 486 पूर्व रै बिचाळै लिख्या गया हा, भगवान बुद्ध रै जीवण री घणमोली घटनावां री मोकळी जाणकारी मिलै है। बौद्ध त्रिपिटकां रै अलावा अनेक जैन ग्रंथ ई लिखीज्या, जिणां में भगवान महावीर अर दूजा जैन तीर्थंकरां रो उल्लेख है।

इणरै बाद मौर्य अर गुप्तकाल में इतिहास लिखण री विधि में बदळाव आयो। अैतिहासिक ग्रंथां रै साथै-साथै इतिहासकार शिला (प्रस्तर) अर धातु रा बण्योड़ा खंभां माथै इतिहास खुदावण लाग्या। इण तरयां रा इतिहास राजा खुद या उणां रा प्रधानमंत्री आपरी देखरेख में लिखवाया करता। सम्राट अशोक रा शिलालेख अर समुद्रगुप्त री विजयां सूं सम्बन्धित प्रयाग-प्रशस्ति इण तरयां रै इतिहास रा नायाब नमूना है।

राजपूत-काल में फेरूं इतिहास लिखण री रीत में थोड़ो बदळाव आयो। इण काल में समूळो इतिहास दरबारी कवि-कोविदां ई लिख्यो। आंरै लिख्योड़ै इतिहास री आ खासियत ही कै बै आपरै इतिहास रै नायकां नैं अेक साधारण आदमी नीं मान्या अर उणां नै कल्पित कहाणियां रै साथै मिलायनै घणा ऊंचा उठाय दिया। बाण रो हर्षचरित, कल्हण रो राजतरंगिणी, कवि जयानक रो पृथ्वीराज विजय, न्यायचन्द्र रो हमीर महाकाव्य अर चन्द बरदायी रो पृथ्वीराज रासो आद इसा ई ग्रंथ है, जिणां में सम्राट

हर्ष, पृथ्वीराज अर हमीर रै बारै में इसी-इसी कल्पित घटनावां ई लिख दी गयी है, जिणां रै बारै में आज रो इतिहासकार भरोसो नीं कर सकै।

मुस्लिम-काल में इतिहास लिखण री रीति में फेरूं बदळाव निजर आवै। सुल्तान-बादशाह आपरै दरबारी इतिहासकारां सूं तवारीखां लिखावण री परम्परा चलायी। आं तवारीखां में दरबार में रोजीना घटण आळी घटनावां दर्ज करी जावती। आंरै साथै इतिहासकार आपरी याददास्तां सूं ई कई बातां आं तवारीखां में जोड़ता रैवता। आं सूं मुस्लिम-काल रै इतिहास री मोकळी जाणकारी मिलै। इण तरयां री तवारीखां में जीयाउद्दीन बरनी री तारीखे-फीरोजशाही, शम्मसिराज अफीफ री तारीखे-फीरोजशाही, याह्या सिरहिन्दी री तारीखे-मुबारकशाही, मुहम्मद बीहामदखानी री तारीखे-मुहम्मदी अर शरफुद्दीन अलीयजदी रो जफरनामो आद घणी मानीजती पोथ्यां है।

मुगल बादशाह इतिहास लिखण री रीति में फेरूं थोड़ो बदळाव ल्याया। बां तवारीखां रै साथै-साथै आत्मचरित लिखणा ई सरू कर दिया। बादशाह इण बात री परम्परा चलायी कै दरबारी इतिहासकार जिण बात नैं लिखता, उणनैं बो सुणतो अर उण मांय आपरी समझ सारू फेर-बदळ करा दिया करतो। मुगल बादशाह शाहजहां अब्दुल हमीर लाहोरी सूं शाहजहांनामो पढवायनै सुणतो अर उणमें फेरबदळ करवाया करतो। इण समय में इतिहास में राजनैतिक घटनावां रै साथै-साथै भौगोलिक अर सामाजिक स्थिति ई स्थान पावण लागगी। बाबर रो लिख्योड़ो 'बाबरनामो' इण बात रो लूंठो सबूत है। मुगल-काल रा इतिहासकार इतिहास लिखण सूं पैलां सरकारी रिकार्ड भेळो करता अर उणनैं आधार बणायनै इतिहास लिखता। अब्बुल फजल द्वारा जद 'अकबरनामो' अर 'आईने-अकबरी' लिखीजी तो दस-बरस पुराणो रिकार्ड भेळो करीज्यो अर उणरै आधार माथै आं ग्रंथां नैं लिख्या। मुगल इतिहासकारां रा लिख्योड़ा ग्रंथां में बाबरनामो, अकबरनामो, आईने-अकबरी, हुमायूंनामो, जहांगीरनामो, शाहजहांनामो, बादशाहनामो, मआसिरे-आलमगीरी अर ओरंगजेबनामो आद घणा नामी है।

अंग्रेजी-राज में तो इतिहास लिखण री रीति में क्रांतिकारी बदळाव आयग्यो। इण काल रा इतिहासकार इतिहास लिखण में आ विधि सरू करदी कै जिण सूं इतिहास पढण आळा खासतौर सूं तो राजनैतिक अर गौण रूप सूं सामाजिक अर धार्मिक स्थिति रो ई ज्ञान पाय सकै। अेक बात अठै जरूर कैवणी पड़सी कै अंग्रेज इतिहासकारां जिण इतिहास ग्रंथां री रचना करी, बै वैज्ञानिक तो हा पण इणरै साथै बै पूर्वाग्रह सूं ई ग्रसित हा। बां भारतीय इतिहास री पोथ्यां में इसी-इसी बातां लिख दी, जिणां नैं भारतीय सभ्यता अर संस्कृति नैं नीचो दिखाणै री कवायद कही जाय सकै। अंग्रेज इतिहासकारां *भारत रै जनसाधारण रै क्रियाकळापां, उणरी अनुभूतियां अर सुख-दुख रो कोई विवरण* देवणो आपरो ध्येय नीं मान्यो। इणरै बावजूद इण काल रा इतिहासकार इतिहास लिखतां थकां उण बगत री पुरातात्त्विक सामग्री, जिणमें मूर्तियां, भवन, अभिलेख, औजार, गुफालेख, शिलालेख, सिक्का, स्मारक-खंडहर, साहित्यिक सामग्री अर विदेसी लोगां

रखै इतिहास सांमी आवण में मदत मिलै है। इणरै अलावा आज इतिहास लिखण आळै रै सांमी आ समस्या ई कोनी कै विदेसां में उणरै विषय सूं सम्बन्धित सामग्री उणनैं उपलब्ध नीं हुय सकै। अबै यो विदेसां में पड़ी सामग्री री माइक्रो फिल्म बणवायनै आपरै कनैं मंगवाय सकै है।

आज रो इतिहास राजा-महाराजावां रो, सुल्तानां-बादशाहवां रो अथवा लाट-गवर्नरां रो इतिहास नीं हुयनै जन-साधारण रै जीवण रो, उणरै विगसाव रो लेखो-जोखो है। उण मांय कल्पना अर धारणा नैं स्थान कोनीं। आज वैज्ञानिक-इतिहास रो सम्मान है। औ ईज आज प्रामाणिकता रै इतिहास रो सरूप है, जिण मांय मिनख री प्रधानता नीं हुयनै समाज री प्रधानता है।

रै विवरणां रो भी पूरो उपयोग करणो सरू कर दियो हो।

अठै अेक बात ओर ई ध्यान राखण जोग है कै मुगल-काल अर अंग्रेजी-राज में मुगल-बादशाह अर अंग्रेज इतिहासकारा री देखादेख उण बगत री रियासतां रा राजा भी आप-आपरी रियासतां रो इतिहास लिखावणो सरू कर दियो। फळसरूप राजस्थान री राजपूत रियासतां रा राजावां सैकड़ूं इतिहास लिखवा दिया। सरू में औ इतिहास वंशावळियां अर ख्याता रै रूप में लिखवायो गयो। इण तरै री पोथ्यां में मुंहता नैणसी री ख्यात, बाकीदास री ख्यात, दयालदास री ख्यात, कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्तनम्, देस-दरपण, *आर्याख्यान कल्पद्रुम अर तवारीख राज बीकानेर आद घणी मानीजती रचनावां है।*

बगत रै परवाण राजा-महाराजा आपरै राज्य सूं बारै रा इतिहासकारां नैं आपरै अठै बुलायनै इतिहास लिखावण लाग्या। आं इतिहासकारां जिण-जिण राज्यां रा इतिहास लिख्या, बै पईसा लेयनै ई लिख्या। इण कारण सूं इतिहासकारां नैं इतिहास लिखती बगत राजा री रुचि रो पूरो ध्यान राखणो पड़तो। राजा रा नुमाइंदा इतिहासकारां रै सांमी बा सामग्री ई राखता, जिणसू उणांरै वंश री गौरव-गाथा ई लिखी जा सकती ही अर दूजी सामग्री, जिणसू कोई कमजोरी सांमी आवै, उणनैं चौड़ै नीं आवण देंवता।

स्वतंत्र भारत में इतिहास लिखण में आज नूंवी-नूंवी रीतियां अपणायी जाय रह्यी हैं। इण रो कारण औ है कै आज इतिहास लिखण आळां रै साथै-साथै इतिहास पढण आळां री रुचि ई बदळगी है। बै राजावां री उठा-पटक, जुद्ध अर सन्धियां रै बावत पढता-पढता ऊबग्या। अबै बै उण बगत रै आर्थिक, सामाजिक अर धार्मिक बदळावां बावत ज्यादा सू ज्यादा जाणणी चावै। इण कारण सूं आज देस रै विश्वविद्यालयां अर शोध-संस्थावां रै माध्यम सूं प्राचीन, मध्य अर आधुनिक भारत रै जन-साधारण री आर्थिक स्थिति रो विशेष रूप सूं किसानां माथै पड़ण आळै भार रो, विणज-व्यापार रै सरूप रो, जन-जातियां अर अनुसूचित जन-जातियां रै रहण-सहण रो पूरो लेखो-जोखो घणी बारीकी सूं इतिहासकार लिख रह्या है।

इणां रै साथै देस नै अंग्रेजां सूं स्वतंत्र करावण में जन-साधारण कांई भूमिका निभायी आद इसा विषय है, जिणां माथै पुरजोर सूं शोध-खोज करी जाय रह्यी है। आज रो इतिहासकार इण विषया माथै शोध करती बगत देस भर में फैल्योड़ा संग्रहालयां, अभिलेखागारां अर गैर सरकारी *शोध-सामग्री रो पूरो लाभ उठा रह्या है। आज रो* इतिहासकार उण बगत री सरकार री गोपनीय सूं गोपनीय सामग्री नैं देखनै नूंवो इतिहास लिखण सारू स्वतंत्र है।

नूंवां विषयां में शोध रै साथै उण बगत री स्थिति जन-साधारण नैं समझावण सारू आज रा इतिहासकार आंकड़ा अर उणां माथै आधारित ग्राफ रो उपयोग ई करण लाग्या है। इण खातर जठै संभव है, इतिहासकार कम्प्यूटर रो उपयोग ई कर रह्या है। आज देस में इतिहास रा विषयां नै लेयनै बडा-बडा अधिवेशन अर सेमिनारां हुवै, जिणां में देस-विदेस रा इतिहासकार उणांरै बारै में नूंवी-नूंवी जाणकारी देवै। इणसूं

खरो इतिहास सांमी आवण में मदत मिलै है। इणरै अलावा आज इतिहास लिखण आळे रै सांमी आ समस्या ई कोनी कै विदेसां में उणरै विषय सूं सम्बन्धित सामग्री उणनैं उपलब्ध नीं हुय सकै। अबै वो विदेसां में पड़ी सामग्री री माइक्रो फिल्म बणवायनै आपरै कनै मंगवाय सकै है।

आज रो इतिहास राजा-महाराजावां रो, सुल्तानां-बादशाहवां रो अथवा लाट-गवर्नरां रो इतिहास नीं हुयनै जन-साधारण रै जीवण रो, उणरै विगसाव रो लेखो-जोखो है। उण मांय कल्पना अर धारणा नैं स्थान कोनीं। आज वैज्ञानिक-इतिहास रो सम्मान है। औ ईज आज प्रामाणिकता रै इतिहास रो सरूप है, जिण मांय मिनख री प्रधानता नीं हुयनै समाज री प्रधानता है।

चामचोरी

आज दुनिया भर रा समाजशास्त्री अर कानून आप आपरै देस री अपराध प्रवृत्तियां नैं रोकण सारू वांरी प्रकृति अर कारणां रो अध्ययन करता निंगै आवै। पण दुनिया भर में खासकर लुगायां साथै होवण आळा अपराधां में व्याभिचार प्रमुख है। आं अपराधां वास्तै राजस्थानी में अेक शब्द प्रचलित हो– 'चामचोरी', आ चामचोरी मानवीय दुरबळतावां रै कारण ठेट सूं हुवती रह्यी है।

मध्ययुगीन राजस्थानी रजवाड़ां रै बगत में इसै अपराधां वास्तै कांई सजा दिरीजती, बांरो निपटारो किंयां करीजतो, इत्याद तथ्य समाज शास्त्रीय अध्ययन री दीठ सूं घणा महताऊ है। उण बगत री रियासती बहियां सूं इण बाबत मोकळी जाणकारी मिलै। सतरवीं सदी सूं लगायनै बीसवीं सदी ताईं रो इण भान्त रो रेकार्ड राजस्थान राज्य अभिलेखागार में मोकळो है। बीं बगत रियासती व्यवस्था मुजब हरेक रियासत में अपराध सम्बन्धी अभिलेख शृंखला न्यारै-न्यारै नांवां सूं दर्ज रैवती। इण आलेख में कोटा रियासत रै इसा कीं अभिलेखां रो हवालो दिरीज रह्यो है। अभिलेखां सूं जाण पड़ै कै इसै मामलां में जिको डंड मूळ करीजतो बो हर रियासत में आमदनी रो अेक सीगो हो।

कोटा रियासत में जिका इसा मामला चाल्या, उणां में राजा अथवा पंचायत किण भान्त रा फैसला किया, आ बात जाणणी आज रै संदर्भ में घणी रुचिकर है। इसै मामलां रा फैसला उण बगत गुण-दोष देखनै करया जावता जिणमें सामाजिक मूल्यां री अहम भूमिका रैवती। उदाहरण सरूप कोटा रियासत रा कीं मामला इण भान्त है–

1. वि. सं. 1820 री बात है। कोटा महाराजा रै सांमी व्याभिचार सम्बन्धी अेक मामलो आयो। इण मामलै में अेक लुगाई साथै अेक आदमी रा गैर ताल्लुकात बताईज्या हा। महाराजा जद दोनूं नैं आप-आपरी सफाई देवण रो अवसर दियो तो दोनूं जणां मामलै नैं ईर्ष्यावश मनगढ़ंत बणायोड़ो कैवतां खुदोखुद नैं निर्दोष बतायो। इण माथै महाराजा हुकम दियो कै जे बै दोनूं निर्दोष है तो लुगाई नैं माता समान मान आदमी नैं बी रो स्तनपान कर लेवणो चाहीजै। महाराजा रो हुकम मान'र आदमी जद लुगाई रो दूध चूंघ लियो तो बै दोनूं निर्दोष छूटग्या।

2. कोटा रिसायत री बही में वि. सं. 1866 रो अेक मामलो दर्ज है। इणमे चेचट गांव निवासी काछी खेतै माथै अेक लुगाई सागै चामचोरी (व्याभिचार) रो इल्जाम है। औ मामलो महाराजा सांमी आयो तो उणां काछी माथै बाईस रुपियां रो जुर्मानो करयो। इणमें सूं दस रुपिया राज रै खजानै में जमा हुया अर बारै रुपिया उण लुगाई नैं दिरीज्या जिण साथै चामचोरी हुई ही।

3. वि. सं. 1888 में झालरापाटण रै अेक ब्राह्मण माथै चामचोरी रो आरोप लाग्यो। सुणवाई में मामलो सही साबित हुयां महाराज उणनैं देस निकाळो देय दियो।

री साच

थोड़ा दिनां पछै देस बदर हुयोड़ै ब्राह्मण झालरापाटण आयनै आपरै बेटै रो ब्यांव करणै री इजाजत मांगी पण बा नीं मिली। अठै उल्लेख जोग बात आ है कै कोटा रियासत मे इसा अपराधां वास्तै बीं बगत अेक हजार रुपिया डंड सूं लेयनै देस निकाळै तांई री सजा दिरीजती।

4. वि. सं. 1893 में सोरसन गांव रो अेक लुहार चामचोरी रा अपराध में पकड़ीजग्यो। महाराज इण मामलै में लुहार माथै 11 रुपियां रो डंड घाल्यो अर राज री 25 बीघा बंजड़ धरती नैं हळ सूं आछी तरयां जोतनै त्यार करण रो हुकम दियो।

5. वि. सं. 1900 में कोटा नगर रै अेक महाजन उठै री लुगाई माथै व्याभिचार में लिप्त हुवण रो आरोप लगायो। लुगाई दरबार में हाजर करीजी तो उण खुद नैं निर्दोष बतावतां शिकायत करणिया माथै आरोप लगायो कै उण उणरो चरित्रहनन करण खातर उण माथै सफा कूड़ो आरोप लगायो है। इण माथै शिकायत करणियै नैं आरोप सिद्ध करण रो अवसर दिरीज्यो पण बो सिद्ध कर नीं सक्यो। इण माथै उणनैं सजा हुयगी अर लुगाई निर्दोष छूटगी।

6. वि. सं. 1912 मे बारां रै शाह सिरिया माहेश्वरी रो बेटो चामचोरी में पकड़ीजग्यो। पंचायत सांमी मामलो आयो तो पंचां फैसलो दियो कै पैली तो पाटण जायनै श्री जी नैं भेंट चढावै। पछै न्यात रा च्यार जणां नैं आपरै घरां लिजायनै जिमावै। तद बो न्यात में लियो जासी। इण फैसलै मुजब कसूरवार पाटण तो जाय आयो पण जद न्यात रा च्यार लोगां नैं जीमण खातर बुलाया तो कोई नीं आयो। कसूरवार महाराजा नैं फरियाद करी कै न्यात रा च्यार जणां राज रा हुकम सूं उणरै घरां जीमण नैं भेज्या जावै। पण महाराज इण काम सारू आपरी असमर्थता प्रगट करी अर कसूरवार न्यात बारै ई रह्यो। पंचायत रो फैसलो कायम रह्यो।

चामचोरी रै मामलां में ऊपर लिख्या फैसलां सूं अबार रा समाजशास्त्री उण बगत रा नैतिक मूल्यां सूं अवगत हुय सकै। इणरै साथै आज भारतीय दंड संहिता में इण भान्त रै अपराधां वास्तै सजावां रा जिका प्रावधान है, उणां रो तुलनात्मक अध्ययन करनै समाज में जिकी नैतिक मूल्यां री गिरावट आय रह्यी है उणसूं लोगां नैं अवगत कराया जाय सकै।

तीरथां रो तीरथ : कोलायत धाम

अरावली पर्वत रै आथूण अर उत्तराध-अगूण में राजस्थान रो मरु-प्रदेस 60,000 वर्ग मील मांय फैल्योड़ो है। इण मांय जैसलमेर अर बीकानेर री समूळी जूनी रियासत, जोधपुर रो घणकरो भाग अर जयपुर रै शेखावाटी रो इलाको भेळो है। मानव-इतिहास रै प्राचीनतम काळ सूं आज तांई राजस्थान रो औ मरु-प्रदेस मोकळी गौरवपूर्ण हलचलां सूं भरयोड़ी जिंदगी री साखी रह्यो है। पवित्र प्राचीन सरस्वती नदी रै कांठै सारस्वत प्रदेस री सभ्यता अर संस्कृति रै छेत्र में स्थित वर्तमान में प्रगति री करवटां लेवतो ओ विशाल मरुधरा रो रेतीलो सागर कदैई पाषाण-कालीन सभ्यता रो अेक प्रमुख केन्द्र हो। अठै आर्यै लोगां वेद ऋचावां री रचना करी। अठै ई बै सूत्र रच्या गया, जिणां में प्रकृति, आत्मा, विश्व अर बांरै दार्शनिक सम्बन्धां रै गहन सवालां माथै गूढ अन्वेषण अर विश्लेषण करयो गयो। विश्व संस्कृति नैं इण साहित्य पर आज ई घणो गीरबो है। आपरी अैतिहासिक परम्परा रै मुजब मुगलां रै शासनकाल में औ मरु-भाग देस री कला, साहित्य अर संस्कृति नैं घणो योग दियो। चित्रकला री शैली रा नूंवा-नूंवा रूप अठै पनप्या, कलात्मक दस्तकारी रो विकास हुयो, काव्य रा मधुर भक्तिपूर्ण छन्द अठै रच्या गया।

बिंयां तो राजस्थान रै इण मरुभाग में मोकळा कलात्मक मिंदर अर प्रसिद्ध धार्मिक स्थान है पण बीकानेर नगर सूं कोई 50 किलोमीटर दूर कोलायत नांव रो तीर्थ धार्मिक दीठ सूं आपरो खास महत्त्व राखै। राजस्थान में तीर्थराज पुष्कर रै बाद सगळा सूं बडो तीर्थ कोलायत ई वाजै। आज ई जद कदैई बीकानेर रै आसै-पासै रा लोग हरिद्वार जावै तो बांनैं बठै रै लोगां सूं सुणणो पड़ै कै थै कपिला तीर्थ (कोलायत) नैं छोडनै इण हाडां-तीर्थ हरिद्वार में कांई लेवण नै आया हो ? इण बात सूं आज ई कोलायत तीर्थ री महिमा सांमी आवै। कोलायत शब्द कपिलायतन रो अपभ्रंश है, जिण रो मतलब है कपिल मुनि रो आश्रम। कह्यो जावै है कै अठै कपिल मुनि आपरी मां देवहूति नैं सांख्य-दर्शन रो ज्ञान दियो अर करड़ी तपस्या करी। अठै उतंक मुनि रै तपस्या करण अर बींमें विघन घालण आळै रेत में लुक्योड़ै दैत्य धूंधूं नैं राजा कुवलयाश्व मारयो हो। कोलायत तीर्थ रै महातम रै बारै में स्कन्द पुराण में सूत्र ऋषि आपरै सौनकादि मुनियां नैं कह्यो है कै औ कपिलाश्रम (कोलायत) सतजुग में घणो प्रसिद्ध हुयो हो पण कळजुग में देवतावां इणनैं गुप्त कर दियो। सूत्र ऋषि री इण बात रो आज रा घणकरा विद्वान औ मतलब लगावै कै कळजुग में जद मिनख शरीर नैं कष्ट देयनै कड़ी तपस्या करण में असमर्थ हुय जासी तो बै थोड़ै परिश्रम सूं ई घणो पुण्य-लाभ हुवण सूं कोलायत तीर्थ में स्नान कर, देवतावां रो ध्यान धर, आप आपरी मनचाही गति नैं प्राप्त कर लेसी। इण कारण दूजा तीर्थ अर देवतावां रो प्रभाव कम हुय जासी। पण लोगां पर कृपा कर भगवान स्कन्द देव कळजुग में इण गुप्त तीर्थ नैं सगळां

लोगां खातर प्रकट कर दियो। इणीं भान्त कोलायत तीर्थ रै महातम रै बारै में ओर भी मोकळी कथावां प्रचलन में है। आं मांय सबसूं ज्यादा प्रचलित कथा इण भान्त है–

गुर्जर प्रदेस में अवंतिकापुरी में अेक बाणियो विणज-व्यापार करतो। उण रो बेटो आंधो हो। अेक दिन उणरी दूकान माथै मरु-भूमि रा मूंग बिकण नै आया। वाणियै रो आंधो बेटो जद मूंगां नै आपरै हाथां में लिया तो बांनै छाती सूं लगाय लिया। इणरै साथै ई उणनैं आपरै पूर्व-जन्म री याद आई। वो कैवण लाग्यो कै आं मूंगा नैं म्हैं मरु-प्रदेस में घणा ई खाया। उण समय म्हैं हिरण री जूण मांय हो अर कपिलायतन रै खेतां में चरया करतो। अेक दिन जद म्हैं अेक जाळ रै बिरछ सूं माथै री खाज मिटावण सारू रगड़का देवण लाग्यो तो बिरछ री थोथ में म्हारा सींग उळझग्या। म्हैं बांनैं निकाळण सारू घणो ई आफळ्यो पण सफळ नीं हुयो अर तड़फा तोड़तो बठै ई मरग्यो। म्हारी अस्थियां तो बिरखा रै पांणी रै बहाव साथै कपिलायतन तळाब में बहगी पण प्रमाण-सरूप म्हारो माथो आज ई उण जाळ रै बिरछ री थोथ में अटक्यो पड़्यो है। कोई म्हारै उण माथै नैं कपिलायतन रै तळाब में न्हांख देवै तो म्हारी आंख्यां री जोत पाछी आय सकै। वाणियै रै आंधै बेटै री आ बात जद पूरी कर दी गई तो सांच्या ई उणरी आंख्यां री जोत पाछी आयगी। तद सूं कपिलायतन तीर्थ रो महातम बधतो ई गयो।

कोलायत रै उत्तराध मे जागीरी नांव रो अेक तळाब है, जिणरै बारै में कह्यो जावै है कै *अठै पौराणिक काळ में याज्ञवल्क्य मुनि तपस्या करी।*

कोलायत तीर्थ धार्मिक महत्त्व रै साथै-साथै सैकड़ां बरसां सूं विणज-व्यापार रो ई अेक केन्द्र रह्यो है। बीकानेर अर जैसळमेर कानीं जावण आळा व्यापारी काफिला कोलायत हुयनै ई आया-जाया करता। कोलायत रै मेळै माथै दूर-दूर रा व्यापारी आयनै आपरो माल बिछायत रै रूप में वेचता अर पशुआं री खरीद-फरोख्त ई करता। लाखी जंगळ सूं लायोड़ा घोड़ा तो अठै बारला व्यापारी घणै चाव सूं खरीदता। अठै रै विणज-व्यापार सूं बीकानेर रै राजा नै हजारां रुपियां री सालाना आमदनी हुया करती। इण बात रो पतो बीकानेर री जूनी बहियां सूं लागै। पण बीसवीं सदी रै पैलड़ै बरसां में कोलायत रो व्यापारिक महत्त्व कम हुयग्यो। इण रो कारण देस रै *परम्परागत मारगां* रो ह्रास हुवणो है। व्यापारियां आपरा मारग बदळ लिया, जिणसूं कोलायत रै मारग सूं बांरो आवणो-जावणो भोत कम हुयग्यो।

कोलायत में काती महीनै री पूनम नैं मेळो भरीजण री परम्परा सैकड़ां बरसां सूं कायम है। मेळै माथै राजस्थान अर इणरै आसै-पासै रै इलाकै रा हजारूं तीर्थजात्री अठै आवै है। इण दिन पौ फाट्यां पैलां ई जात्री कोलायत रै तळाब में स्नान करणो सरू कर देवै अर तळाब रै 52 घाटां में घूम-घूमनै पाणी में गोता लगायनै अपणै आपनैं धन्य समझै। आं 52 घाटां नैं बीकानेर री महाराण्यां समै-समै पर बणवाया है। घाटां रै ऊपर *सैकड़ां बरस पुराणा पीपळ रा पेड है, जिका जात्रियां नैं छिंयां देवै है। जात्री लोग स्नान*

कस्यां पछै कपिल मुनि रै मिंदर, जिणमें विष्णु, शिव, गणेश, सूरज अर रामदेवजी री मूर्तियां बिराजै है अर कृच्छोदर (पतळै पेट रो गणेश) रै मिंदरां रा दरसण कर बांरी आरती में भाग लेवै। अठै कपिल मुनीश्वर रै मिंदर रै बाबत अेक बात बतावणी उचित है कै मिंदर री फेरी में च्यारूं कूंटां में भांभियां री मूर्तियां बण्योड़ी है, जिका आज अनुसूचित जाति में आवै। आ बात बतावै कै ई मिंदर मांय सब जात-पांत रै लोगां नैं मान्यता री छूट ही।

तळाब रै किनारै-किनारै दूर-दूर सूं आयोड़ै हठजोगियां रो प्रदर्शन ई मेळै रो आकर्षण रैवै। कोई जोगी कांटां ऊपर सूतो दीखै तो कोई ठण्डै पाणी रै कुंड में रातभर खड़्यो दीखै। कोई अेक टाग रै पांण ऊभो है तो कोई चारां कानीं आग लगायनै उणरै बिचाळै बैठ्यो दीखै। घणकरा जात्री तळाब में स्नान रै बाद मिंदरां रा दर्शन करै अर पछै आं हठजोगियां रा दर्शन करै। जात्री लोग श्रद्धा मुजब पईसा-टक्कां सूं बांरी सेवा ई करै। सांझ री बगत जात्री लोग दीया जळायनै तळाब में छोडै, जिणसूं दीपमालिका रो दरसाव देखतां बणै।

कोलायत में सेठ-साहूकारां रै अलावा दूजा लोग ई आप आपरी जातियां री धर्मशाळावां बणाय राखी है, जिकां में मेळै मगरियै रै बगत बै आराम सूं ठैर जावै। मेळै रै मौकै लोगां रो बडो समुदाय देख आजकाल सामाजिक चेतना नैं जगावण सारू जनसम्पर्क विभाग, स्वास्थ्य विभाग अर समाज-कल्याण विभाग आपरी प्रदर्शनियां अर चलचित्रां रो आयोजन ई करै।

कोलायत आपरी खनिज सम्पदा रै कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध रह्यो है। अठै री मुल्तानी मिट्टी (मेट) तो सैकड़ां बरसां सूं ऊंठां रै ऊपर लदनै दूर-दूर तक पूगती रह्यी है। सन् 1921 में महाराजा गंगासिंहजी कोलायत नैं रेल मारग सूं जोड़ दियो, जिकै सूं बारै रा लोगां नैं अठै पूगण में आसानी हुयगी। साथै ई कोलायत री खनिज-सम्पदा ई भारी मात्रा में बारै जावण लागगी। आज कोलायत पंचायत समिति रो मुख्यालय है, जिणरै माध्यम सूं कोलायत अर आसै-पासै रा गांवां रो विकास हुय रह्यो है। कोलायत पंचायत ई आपरै सीमित साधनां सूं इण कस्बै नै नूंवो रूप देवण रो प्रयत्न कर रह्यी है।

राजस्थान मांय नगरीय विकास

(जयपुर नगर थरपणा रै ऐतिहासिक संदर्भ में)

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर आपरै अठै स्वदेसी ढंग री अभिलेख सामग्री सारू देस-विदेस रा शोध-अध्येतावां सारू आकर्षण रो केन्द्र रह्यो है। इणमें ऐकठ राजस्थान री लगटगै सगळी रियासतां री अभिलेख शृंखलावां राजस्थानी जनजीवण रै सगळै पखां नैं उजास में लावण में सिमरथ है। आं रियासतां रै नगरीय विकास री जाणकारी ई इणसूं अछूती कोनीं। कोटा, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर अर उदयपुर राज्यां रै साथै दूजी सगळी रियासतां रा अभिलेखां में बठै री राजधानियां रै रूप में विकसित करीज्या नगरां रै लगोलग विकास री विगतवार जाणकारी मिलै। इणरै साथै आ ई बात उल्लेख जोग है कै इण भान्त री जाणकारी अभिलेखां रै अलावा आं नगरां रै आसै-पासै रा धार्मिक अर सार्वजनिक स्थानां पर लाग्योड़ा शिलालेखां अर निजू छेत्रां में खास रूप सूं साहित्यिक ग्रंथां यथा 'बीकानेर गजल' अर 'जैसळमेर गजल' आद में सांवठै ढंग सूं मिलै। इण आलेख में राजस्थान राज्य रै मुख्य नगर जयपुर रै क्रमिक विकास सूं सम्बन्धित राजस्थान राज्य अभिलेखागार में उपलब्ध अभिलेख-शृंखलावां री जाणकारी देवण रो प्रयास करीज्यो है।

आमेर (जयपुर) राज्य रै मुगलां री केन्द्रीय सत्ता रै सागै गहरै सम्बन्धां री जाणकारी जगचावी है। इणरै फळसरूप जयपुर राज्य रा हरैक छेत्र पर मुगल-प्रभाव रह्यो। जयपुर राज्य री अभिलेख निर्माण प्रथा ई इणसूं अछूती नीं रह्यी। औ ई कारण है कै जयपुर राज्य री अभिलेख शृंखलावां में परवाना, डोल, चिट्ठियात, तोजी, जमाखर्च, स्याह, हजूर, अखबारात, दस्तूर, कोमवार, खरीतेजात, रुक्का, जेर, याददास्ती, निरख बाजार, अर्जदास्त, स्याह बकाया, रोजनामा, इमारत, लिखत अर फरद आद नांव री उप-शृंखलावां ई मिलै। जयपुर नगर रै विकास री कहाणी जयपुर री ऊपर कथ्योड़ी सगळी अभिलेख शृंखलावा में बेसी-थोड़ी रूप में उपलब्ध हुवै। आं मांय सूं घणकरी अभिलेख शृंखलावां राजस्थानी भाषा री ढूंढाड़ी बोली में लिख्योड़ी है। कीं शृंखलावां फगत फारसी भाषा में ईज मिलै तो कीं फारसी अर राजस्थानी दोनूं भाषावां में मिलै।

आमेर रै शासक सवाई जयसिंह सन् 1727 मे जयनगर (जिणनैं आज जयपुर कैवै) नैं बसावणो सरू कर्यो। अभिलेखां सूं जाणकारी मिलै कै इण नगर रो नक्सो विद्याधर नांव रै ऐक बंगाली बणायो हो। संवत् 1784 रै परवानै मुजब इण नगर नैं आमेर अर सांगानेर छेत्र रै बिचाळै बसावण री योजना बणाईजी ही। जद इण नगर री बसावट सरू हुयी तो सगळां सूं पैलां संवत् 1784 में आमेर रो ऐक गांव श्री सामीदत्त दीक्षित नांव रै ब्राह्मण नैं संकळप सरूप दिरीज्यो हो। राजकीय अभिलेखा सूं जाणकारी मिलै कै संवत् 1768 सूं पैलां ई नगर में राज्य रै शासक सवाई जयसिंह रो मुख्य भवन

'जयनिवास' बणनै त्यार हुयग्यो हो। संवत् 1768 रै 'स्याह हजूर' सूं जाणकारी मिलै कै जद औ भवन बनणै त्यार हुयग्यो, तद उणरै दरोगा मोहनदास महाजन नैं पुरस्कृत करीज्यो। संवत् 1883 में जयनिवास में पाणी पुगावण सारू अेक नहर लावण री योजना बणाईजी। जयपुर नगर उण जाग्यां बसायो गयो जठै पैलां सूं कई लोग रैवता हा। आं लोगा नै बेदखल करनै मुआवजो देवण री व्यवस्था करीजी अर उणरै बाद संवत् 1784 में आगै रो निर्माण-कार्य करीज्यो।

नगर मांय निर्माण कार्य सारू सामग्री री लदाई सारू संवत् 1784 में किणी साहबराम नांव रै आदमी नैं बळध-गाडा आद री व्यवस्था रो काम सूंपीज्यो। संवत् 1784 रै अेक परवानै मुजब राज्य कानी सूं आमेर राज्य रा सगळा जागीरदारां नैं आदेस दिरीज्यो कै वै आप-आपरी हवेलियां नूंवै नगर में बणावै। इणरी अेवज में आमिल अर अमीनां नैं जागीरदारां सूं सैंकड़ै दीठ दस रुपिया रकम वसूल करण रो आदेस दिरीज्यो। थोड़ै बगत बाद संवत् 1786 में आमेर रा ब्राह्मणां अर महाजनां नैं ई जयपुर नगर में बसण रा निर्देश दिरीज्या।

सवत् 1788 री याददास्ती सूं सूचना मिलै कै उण वगत तांई जयपुर नगर मांय राजा आयमल री हवेली ई बणनै त्यार हुयगी ही। इणरै पछै संवत् 1790 में जयनगर (जयपुर) रै दूर-दूर रा इलाकां नैं विकसित करीज्यो। आंमें जळमहल, नगर झोटवाड़ा, राजचौक, महल सतखणा, जंज, घाट का दरवाजा अर शहर काट आद प्रमुख हा। शहर रो पर्यावरण संतुलन बणायो राखण सारू औ जरूरी हो कै नगर में बाग-बगीचा लगाया जावै। संवत् 1790 री अेक चिट्ठी सूं जाणकारी मिलै कै महाराजा आपरै दीवान रामनारायणदास अर विद्याधर नैं आदेस दियो कै वै नगर मांय अेक नींबू रो बगीचो लगवावै। बाद में इण बगीचै नैं मानसागर री पाळ तांई बधावण रा आदेस दिरीज्या।

इण भान्त जयपुर नगर रो विकास बराबर हुंवतो रह्यो अर नगर में अबाध गति सूं भवनां रो निर्माण ई हुवण लागग्यो। तोजी जमाखर्च संवत् 1790 सूं जयपुर नगर रा अनेकू भवनां माथै हुवण आळै खर्च रै विगतवार ब्यौरे री जाणकारी मिलै। स्याह हजूर, संवत् 1791 में सतखणा महल रै निर्माण करणै पर उस्ता खेमा, विद्याधर बंगाली अर हृदयराम पुरोहित रो राज्य शासक री तरफ सूं सम्मान करीजण री जाणकारी उल्लेख जोग है। संवत् 1793 रै स्याह हजूर मुजब ब्रह्मपुरी रै डूंगर (पहाड़) माथै ठाकुरश्री गणेशजी रो मिंदर बणाइज्यो।

उगणीसवीं सदी रै उत्तरार्ध में नगर मांय कई आधुनिक सुविधावां उपलब्ध कराईजी। संवत् 1909 में नगर में 'टाउन हॉल' री नींव रै मुहूर्त री विस्तार सूं विगत उपलब्ध है। इणीं भान्त संवत् 1932 रै स्याह हजूर सूं जाणकारी मिलै कै इणीं बरस शहर मे पैली बार गैस री लालटेण लगाईजी जिणसूं कै चोखो च्यानणो हुय सकै। संवत् 1930 में आमेर-सांगानेर सड़क रो रामगंज बजार रै बिचाळै सूं निर्माण कार्य करावण री जाणकारी सूं जयपुर नैं सडकां सूं किण भान्त जोड़ीज्यो, इणरी विगतवार सूचना

मिलै। संवत् 1856 री जेळ-शृंखला सूं जयपुर में पैली पुलिस चौकी थरपीजण री जाणकारी हासिल हुवै।

इणीं भान्त संवत् 1861 अर 1865 में शहर में डाक बांटीजण रा नेम-कायदा अर टेलीग्राफ आफिस थरपित करीजण सूं सम्बन्धित सूचना मिलै। संवत् 1924 में जयपुर मांय रायल कौंसिल री थापना अर उणरी पैली बैठक रै आयोजन री जाणकारी मिलै। इणीं बरस जयपुर में पंडित शिवदीन री हवेली मांय जयपुर राज्य रो पैलो अजायबघर थापित करीजण री योजना रो महाराजा जयपुर निरीक्षण कर्‌यो। इणीं भान्त संवत् 1925 में ठाकुर श्री आनन्द बिहारीजी रै मिंदरां में नगर री पैली म्यूनिसिपैलिटी थरपित करीजण री सूचना मिलै। संवत् 1935 रै स्याह हजूर में रामप्रकाश नाटकघर रै उद्‌घाटण समारोह रो विवरण मिलै।

जिण भान्त जयपुर में नूंवा भवन बण्या, उणीं'ज भान्त नगर में विणज-व्यापार नैं वधावण सारू ई कई प्रयास करीज्या। संवत् 1784 रै परवानै सूं जाणकारी मिलै कै राज्य री तरफ सूं व्यापारियां नैं जयपुर नगर में दुकानां अर हवेलियां बणवायनै आपरो विणज-व्यापार सरू करण रो आग्रह करीज्यो। इणीं उद्देश्य सारू संवत् 1784 में ई दिल्ली सूं सेठ भीखणराम चौधरी नैं जयपुर में बुलवायनै सर्राफा रो काम सरू करण सारू कहीज्यो। संवत् 1785 में आगरा शहर में जरी-गोटै रो काम करण आळा दस्तकारां नैं जयपुर नगर में आपरो धंधो सरू करण सारू सुविधावां दिरीजी। इत्तो ई नीं, इणीं बरस वारै रो जिको कोई व्यापारी जयपुर में धंधो सरू करणो चांवतो उणनैं कई तरै री रियायतां रो भरोसो दिरीज्यो। संवत् 1785 मे ईज आगरा री भान्त गुजराज में पारीचा अर मुखमल वगैरे बणावण आळा कारीगरां नै जयपुर नगर मांय आपरो विणज-व्यापार करण सारू कह्यो गयो। इणीं बरस सेठ घनश्यामदास चौधरी नैं जयपुर री चौधराहट सूंपीजी अर उणनैं दूजा व्यापारियां सूं लीरीजण आळी दस्तूरी रा नेम-कायदा बणावण रो कहीज्यो। संवत् 1786 में बीकानेर रा व्यापारियां नैं जयपुर में दुकानां अर हवेल्यां बणायनै रैवण सारू न्यूंतो दिरीज्यो। संवत् 1790 में जयपुर नगर रा प्रमुख बजार माणक-चौक री दुकान नैं फगत 25 रुपिया में खरीदण री जाणकारी उल्लेख जोग है। नगर में व्यापारी ई वस्तुआं अर जीन्सां रा भाव तै करता हा। संवत् 1784, 1790, 1820 अर 1826 रै अर सिरै ड्योढी रै बजार भावां री जाणकारी आज ई उपलब्ध है।

जयपुर नगर रो जिण भान्त विणज-व्यापार री दीठ सूं विकास हुय रह्यो हो, उणीं भान्त सांस्कृतिक हलचल ई खासी बधगी ही। सवाई जयसिंह रो खगोल-शास्त्र सांमी जिको रुझान हो, वो जगचावो है। उणां जयपुर नगर में खगोल विद्या सम्बन्धी अनुसंधान सारू अेक केन्द्र थरपित कर दियो हो। इण केन्द्र में देस-विदेस सूं खगोल-शास्त्र सूं सम्बन्धित महताऊ ग्रंथां नैं लायनै अेकठ करीज्या। संवत् 1787 री डोल री अभिलेख-शृंखला में किणीं नन्दराम ब्राह्मण रै मार्फत उलगबेग री जंज गणित

री सौ पानां री पोथी सूरत नगर सूं खरीदीजण री जाणकारी मिलै। इणीं भान्त संवत् 1790 री तोजी इमारत में जयपुर नगर में खगोल-विद्या सूं सम्बन्धित यंत्रां रै निर्माण में लाग्योड़ा खगोलविदां नैं मैणताने सरूप दिरीजी राशि री जाणकारी मंड्योड़ी है।

दूजै सांमी डोल, संवत् 1777 री अभिलेख-शृंखला में जयपुर नगर स्थित गोविंदजी रै मिंदर में किणी रामनाथ बंगाली (लेखक) री बेटी ललता नैं कार्तिक सुदी 2, संवत् 1777 सूं सेवा-पूजा सारू राखण अर उणरी अेवज में उणनैं रोज डेढ सेर धान दिरीजण रो उल्लेख मिलै। अठै औ ई उल्लेखनीय है कै जयपुर नगर में गोविंद देवजी रै मिंदर रो धार्मिक अर सांस्कृतिक महत्त्व घणो हो। संवत् 1791 री याददास्ती अभिलेख-शृंखला सूं ठा पड़ै कै नगर में गोविंदजी री मूर्ति नैं बाग जयनिवास में थापित करनै उणरै भोग आद री व्यवस्था सारू दस रुपिया रोज रै हिसाब सूं देवण रो आदेस हो। संवत् 1792 री डोल अभिलेख-शृंखला में इणीं गोविंदजी रै उच्छब-खरच सारू रकम जुटावण री जाणकारी ई उल्लेख जोग है।

संवत् 1790 री याददास्ती अभिलेख-शृंखला में किणीं बेदरू फिरंगी द्वारा महाराजा सवाई जयसिंह नैं अेक पोथी भेंट करयां उणनैं महाराजा री तरफ सूं बतौर इनाम दो सौ रुपिया दिरीजण री जाणकारी मिलै। जयपुर नगर में विविध हिन्दू-मुस्लिम तिंवार ई मनाईजता हा। संवत् 1790 रै स्याह हजूर मुजब महाराजा सवाई जयसिंह रंगां रै तिंवार होळी माथै जयपुर नगर रै मुख्य मारगां सूं होळी खेलता लवाजमै रै साथै निकळ्या। इणीं भान्त संवत् 1798 री याददास्ती में जयपुर नगर री मोती डूंगरी अर दूजी इमारतां माथै रोशनी री सजावट करीजण री सूचना ई उपलब्ध हुवै।

उगणीसवीं सदी रै जयपुर नगर में जीवण रै हर छेत्र में जिको विकास हुयो, उणरी ई विगतवार सूचना राजस्थान राज्य अभिलेखागार रै जयपुर राज्य री महकमा-खास री पत्रावळियां में उपलब्ध है।

डीडू सिपाही; अेक विश्लेषण

राजस्थान मांय सदियां सूं हिन्दू-मुस्लिम जातियां में आपसी सद्भाव रो वातावरण रह्यो है। इतिहास इण बात रो साक्षी है कै आंमें अेक-दूजै री धार्मिक आस्थावां रै पेटै सम्मान रो भाव रह्यो है। इणरी पृष्ठभूमि में मुख्य भूमिका अठै रा रजवाड़ां रा शासकां री धर्म-निरपेक्ष नीति तो रही, साथै ई मुस्लिम जातियां में धार्मिक कट्टरता रो अभाव ई रह्यो। शासक वर्ग ई आपरी प्रजा में कदेई धार्मिक उणमाद पैदा नीं हुवण दियो। वै तो सगळै धर्मां रै लोगां नैं समान दान-दिखणा देता अर उणांरै धार्मिक समारोह में भाग लेयनै आपरो हेत ई जतावता। मुगलकाल में राजस्थान रा शासकां द्वारा मुगलां सूं ब्यांव-सम्बन्ध ई इण दिशा में खासा सैयोगी रह्या।

मुस्लिम-काल सूं ई भारत रै दूजा भागां री भान्त राजस्थान में ई कई राजनैतिक अर सामाजिक बदळाव आया, पण मुगल आक्रमणां रो मारवाड़ छेत्र रै सामाजिक जीवण माथै खासो प्रभाव पड़्यो। मारवाड़ में औरंगजेब रै शासनकाल में इण छेत्र री कई हिन्दू जातियां रा कीं लोगां मुगल-सत्ता रै भय सूं मुस्लिम धर्म ग्रहण कर लियो। आंमें पिछड़ी जातियां रै लोगां री संख्या घणी ही। कालान्तर में अै ईज जातियां हिन्दू-मुस्लिम धर्म री मिलीजुली संस्कृति रै प्रतीक सरूप सांमी आयी। यूं तो राजस्थान में इण तरै री जातियां रो मुख्य प्रतिनिधित्व क्यामखानी जाति करै, जिकी शेखावाटी छेत्र में चौहान राजपूतां नैं आपरा पूर्वज मानै, पण मारवाड़ छेत्र री इण तरै री जातियां में सिपाही अर मुस्लिम ढोली आद जातियां प्रमुख कह्यी जाय सकै। सिपाही जाति री कई उपजातियां राजस्थान रै आथूणै भाग में जाग्यां-जाग्यां फैल्योड़ी है। आं ईज जातियां मांय सूं बीकानेर नगर में वस्योड़ा डीडू सिपाही जाति रा लोग है। इण आलेख में फगत डीडू सिपाहियां री ही चर्चा करीजी है।

जद्यपि इण जाति विशेष रै सम्बन्ध री जाणकारी सारू अभिलेख सामग्री रो अभाव है, पण गौणस्रोत रै रूप में इण जाति रो उल्लेख मिलै। डीडू सिपाही मारवाड़ रै राव सम्भाजी नैं आपरा पूर्वज मानै, जिका डीडवाणा रै सरदारपुरा गांव में रैवता। संवत् 1492 में किणीं खास परिस्थितियां रै चालतां उणरा वंशज हिन्दू हुंवता थकां ई मुस्लिम धर्म अंगीकार कर लियो। राव बीकाजी संवत् 1545 में बीकानेर राज्य री थापना पैली सूं जद जोधपुर सूं कूच कर्‌यो, उण वगत अै लोग सिपाही रै रूप में उणांरी सेना रै सागै बीकानेर आयग्या। डीडवाणै सूं सम्बन्ध राखण आळा सिपाही डीडू सिपाही रै नांव सूं ई जाणीजण लागग्या। औ उल्लेखनीय है कै अठै रैवण आळी सिपाही जाति अर डीडू सिपाही जाति री धार्मिक अर सामाजिक प्रथावां में कोई खास अन्तर निजर नीं आवै। पण आजादी मिल्यां पछै मुल्ला-मौलवियां रै कैवण सूं कई सिपाही जातियां रा लोग मुस्लिम-धर्म री मुख्य बातां नैं करड़ाई सूं स्वीकार करली अर हिन्दू परम्परावां नैं पूरी

तरै त्याग दी। सिपाहियां री औ सगळी उपजातियां, जिणांमें कै डीडू सिपाही ई हा आपरै गोत्र नैं मानै अर इणसूं ई ओळखीजै। इण गोत्र नैं अै लोग नख नांव सूं ई पुकारै। आंमें चौहान, सिसोदिया, पंवार, जोइया, खोखर, भाटी, तंवर, सोलंकी आद मुख्य है। कई लोग इण उपजातियां नैं खांप ई कैवै। आज हरैक सिपाही जाति रो आदमी किणीं न किणीं गोत्र, नख कै खांप रो नांव आपरै नांव रै अन्त में अवस लिखै।

बीकानेर रै शासकां रो सिपाही जाति रै लोगां माथै खास भरोसो हो। सुरक्षा सूं सम्बन्धित घणकरा काम आंरै ई जिम्मै हा। जनानी ड्योढी माथै तो अवस करनै डीडू सिपाही ई पहरो देंवता हा। राज्य री सेना में ई उणां नैं मध्यम दरजै रो औहदो मिल्योड़ो हा। राज्य री खास चाकरी री अेवज में आं मांय सूं कई लोगां नैं जागीरां ई मिल्योड़ी ही। गारबदेसर डीडू सिपाहियां री जागीर रो प्रमुख गांव हो। इणीं भान्त किळचू, गेगड़ा, बीछवाळ ई आंरी ई जागीरी रा गांव हा। आज जिण गांवां में घणकरा सिपाही जाति रा लोग मिलै, उणां में घड़सीसर, काहवनी, करमीसर, सोभासर, रिड़मलसर, जग्गासर, समेजा, बेरियांवाली आद रा नाव उल्लेख जोग है, पण डीडू सिपाही बीकानेर नगर रै सोनगिरि कुअै रै कनै अेक मोहल्ले में ई रैवै। आं जातियां में खास रूप सूं डीडू सिपाहियां में जिका हिन्दू रीति-रिवाज प्रचलन में है उणांमें कीं इण भान्त है। जद लुगाई पेट सूं (गर्भवती) हुवै तद उणनै सात महीनां हुयां पीळा गाभा पैरायनै सतवासो मनाईजै। छोरो जलम्या छत पर चढनै थाळी बजाईजै। इणी भान्त सगाई रै समै नारेळ देवण अर मोळी री गांठ बांधण री परम्परा ई है। छोरै अर छोरी रै ब्याव सूं पैली उणां नै ई पीळा गाभा पैरायनै हाथ में लोह रो चिटियो दिरीजै। ब्याव री बगत बींद द्वारा तोरण टांकण री रस्म ई पूरीजै। घर-आंगणै आयोड़ी बहू री आरती उतारीजै। ब्यांव रै पछै मिरासियां अर नाइयां आद नैं दान-त्याग करण ई परम्परा ई इण जाति में विद्यमान है। ब्याव री बगत बींद री कमर में तलवार बांधीजै अर गठजोड़ो ई बंधै। ब्याव री बगत सगा-परसंग्या नैं गीतां में गाळ गावण रो रिवाज है। मृत्यु हुवण पर औसर करण री परम्परा ई इण जाति में रह्यी है।

सामाजिक रीति-रिवाज रै साथै हिन्दू धार्मिक तिंवारां में होळी, दीवाळी समेत शीतळा सात्यूं आद नैं इण जात रा लोग साधारण ढंग सूं मनावै। लुगायां रो परिवेश ई घणकरो हिन्दू लुगायां री तरै ई हुवै।

राजस्थान रै इतिहास रो महताऊ स्रोत : राजस्थानी साहित्य

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में अपुरालेखीय खंड री सामग्री में जोधपुर राज्य सूं प्राप्त राजस्थानी भाषा, साहित्य सूं सम्बन्धित अैतिहासिक सामग्री रै अध्ययन रो अवसर मिल्यो। यद्यपि राजस्थानी भाषा में लिख्योड़ी आ सामग्री मुख्यत: जोधपुर रियासत रै विविध पहलुआं सूं ही सम्बद्ध है; फेर भी इण सामग्री री आ विशेषता है कै मध्यकाल में राजस्थानी भाषा रै साहित्य रो जिण विविध रूपां में सिरजण हुयो वै सगळा रूप इण सामग्री में मिलै है। इण वास्तै राजस्थान अर उणरै बारै रा शोध अध्येतां वास्तै, जिका राजस्थान रै इतिहास रै अध्ययन में संलग्न है, इण सामग्री रो महत्व घणो बधग्यो है। ओ सही है कै आजादी सूं पैलां रै भारतीय इतिहास रो राजस्थान रै संदर्भ में अध्ययन कर्‌यो जावै तो मालूम पड़सी कै तत्कालीन इतिहासकारां उणमें साहित्यिक सामग्री रो भी काफी उपयोग कर्‌यो हो, पण तथ्यां सूं ओ पतो चालै कै इण तरै री सामग्री रो सबसूं बेसी उपयोग उण वगत री राजनैतिक घटनावां रो विस्तार सूं वर्णन करण वास्तै ई हुयो हो। पण आज इतिहास लेखन में राजनीति रै साथै-साथै तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक अर आर्थिक स्थिति रो मोकळो अध्ययन करीजण सूं राजस्थानी भाषा री साहित्यिक आधार-सामग्री रो महत्त्व घणो बधग्यो है, *क्यूंकै इण साहित्य में उपर्युक्त पखां री घणी सारी जाणकारी मिलै।* राजस्थानी भाषा में लिख्योड़ो औ साहित्य, च्यार मुख्य भागां में बांटीजण री परम्परा रही है। अै च्यार भाग जैन-साहित्य, चारण-साहित्य, भक्ति-साहित्य अर लोक-साहित्य है। जैन साहित्य अधिकांशत: जैन यतियां अर उणां रा अनुयायी श्रावक-श्राविकावां द्वारा लिख्योड़ो है। चारण शैली में साहित्य रै निर्माण में चारण जाति रै लोगां री देन मानीजै। राजस्थान में भक्ति-साहित्य ई घणी सारी मात्रा में लिखीज्यो है। संत कवियां री वाण्यां आज ई समाज में खूब प्रचलित है। इण तीनां रै अलावा राजस्थान रा हजारूं कवियां आपरी काव्य-कला रै माध्यम सूं राजस्थानी लोक-साहित्य रो सिरजण कर्‌यो जिको आज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हुवै है। इणमे जैन अर भक्ति-साहित्य री आंतरिक सचाई, जियां- विभिन्न धर्म-संप्रदायां, उणां रा आन्दोलनां अर क्रिया-कलापां री पद्धतियां रो उण वगत रै परिप्रेक्ष में तटस्थ अर संतुलित दृष्टि सूं अध्ययन री जाणकारी वास्तै महताऊ है, *बठै ही चारण शैली में लिख्योड़ो अर दूजो लोक-साहित्य समाज री* छोटी-सूं-छोटी मान्यतावां, धारणावां अर जीवण-मूल्यां नैं समझण सारू महताऊ है। गद्य अर पद्य में रच्योड़ो राजस्थानी रो औ साहित्य इत्तो विपुल परिमाण में है कै उण रो विवेचन अेक लेख में संभव कोनीं। इण बात नैं दीठ में राखता थकां प्रस्तुत लेख में बीकानेर रै राजस्थान राज्य अभिलेखागार में राजस्थानी में उपलब्ध अैतिहासिक महत्व आळै साहित्य री अेक संक्षिप्त ग्रंथ-सूची देवण रै साथै उणरै विभिन्न स्वरूपां रै बारै

वतळावण रो प्रयत्न कर्यो गयो है। राजस्थानी भाषा री उपलब्ध साहित्यिक सामग्री पद्य अर गद्य दोनूं रूपां में है। पद्य रूप में उपलब्ध सामग्री जठै विलास, रूपक, वचनिका, वेलि, नीसाणी, झूलणा, झमाल, गीत, कवित्त (छप्पय) अर दूहा रूप में है, बठै ई गद्य साहित्य में ख्यात, तवारीख, वात, विगत, वंशावली अर वार्ता आदि रूपां में मिलै।

राजस्थानी गद्य साहित्य रै विगसाव में ख्यातां रो खासो महत्त्व है। साहित्यिक दृष्टि रै अलावा इण रो ऐतिहासिक महत्त्व ई कम कोनीं। राजस्थानी ख्यात शब्द प्राय: इतिहास रै पर्यायवाची शब्द रै रूप में ही प्रयुक्त हुवै है। अठारवीं सदी में कई ख्यातां लिखीजी। ख्यातां प्राय: दो ढग सूं लिखी जावती ही। अेक तो बै है, जिकी लगातार इतिहास ग्रंथ रै रूप में, जिणमें क्रम भंग नीं हुवै, लिखीजी। इण कोटि में दयालदास री ख्यात राखी जा सकै है। दूजै भान्त री बै ख्यातां है, जिणमें क्रमबद्ध इतिहास री जाग्यां फुटकर बातां पायी जावै। जे आं बातां नै क्रमबद्ध कर भी दियो जावै तो ई शृंखलाबद्ध इतिहास ग्रंथ को बणै नी। इण भान्त री ख्यातां मे बांकीदास री ख्यात उल्लेख जोग है। ख्यात लेखक या तो ख्यात रो नामकरण आपरै नांव सूं कर देवतो हो, या जिण राजा या राजवंश रै नांव पर जिण नै बो आपरी ख्यात रो विषय बणावतो। उपर्युक्त ख्यातां में नैणसी री ख्यात अर मुंदियाड री ख्यात में सतरहवीं सदी रै राजस्थान में राजपूत अर मुगलां रै सम्बन्धां पर विस्तार सूं प्रकाश पड़ै। बांकीदास री ख्यात सूं दूजी बातां रै अलावा अंग्रेज-विरोधी विचारधारा री जाणकारी मिलै। दोनूं भान्त री प्रमुख ख्यातां इण भान्त है।

1. ठिकाणा मुंदियाड़ री पुस्तक, 2. राठौड़ां ख्यात जोधपुर री, 3. परगना फळोदी रै गांव खारिया रै पठावतां री ख्यात (खुलासो), 4. ठाकुर रणजीतसिंघजी ख्यात, 5. परगनै जालौर रै गांव भंवरा रै राठौड़ वभूतसिंह खांप अडळावतां री ख्यात, 6. परगनै सोजत रै गांव वगड़ी खांप जेतावतां री ख्यात, 7. खांप पीढियां री ख्यात, 8. खांप करणोतां री ख्यात, 9. खांप जोधाजी री ख्यात, 10. महाराणा अजीतसिंघजी ख्याात, 11. खांप कांधळोत राठौड़ां री ख्याात, 12. खांप भिंवोत राठौड़ां री ख्यात, 13. खांप करमसोतां री ख्यात, 14. ऊदावतां री ख्यात, 15. खांप मांडणोतां री ख्यात, 16 ख्यात री बही वणसुर जादूदान री बही री नकल, 17. महाराजा श्री जसवंतसिंहजी री ख्यात, 18. रावसिंहजी री ख्यात, 19. दिल्ली राजा पातसाह हुया जिणां री ख्यात, 20. मूंता नैणसी री ख्यात, 21. ख्यात श्री कुचामन री, 22. महाराजा सवाई सूरसिंघजी री ख्यात, 23. राव श्री मालदेवजी री ख्यात, 24. राव श्री सातळजी री ख्यात, 25. महाराजा श्री रायसिंघजी री ख्यात, 26. महाराजा श्री अभयसिंघजी री ख्यात, 27. परगना नागौर रै गांवां री ख्यात, 28. परगनै बिलाड़ै रै गांवां री ख्यात, 29. खांप भादावत चांपावत अर कुंपावतां री ख्यात, 30. मुंदियाड़ ठिकाणै री ख्यात, 31. ख्यात बीकानेर रै राठौड़ां री, 32. दयालदास री ख्यात, 33. ख्यात नैणसी री, 34. जोधपुर री ख्यात, 35-36. जोधपुर रा महाराज मानसिंघजी री नै तखतसिंघजी री ख्यात,

37. बांकीदास री ख्यात आद। इण ख्यातां में राजस्थान रै राजवंशा रै इतिहास री जाणकारी मिलै।

राजस्थान में ख्यात-लेखन रै साथै ही तवारीख-लेखन ई कम नीं हुयो। यद्यपि औ लेखन घणकरो उगणीसवी सदी रै छेकड़लै दसकां अर उणरै बाद रो है। मुगल दरबार री भान्त राजस्थान रा शासक बडा जागीरदारां नैं आपरै खदुरै अथवा आपरै पैली रा राज्यां, जागीरां अर उणांरै त्हैत आवण वाळा गांवां री तवारीखां लिखावणी सरू कर दी ही। इण तवारीखां री विशेषता आ है कै अै मुगल शासन में लिखीजण वाळी तवारीखां री दांई फारसी में नीं लिखीजनै राजस्थानी में लिख्योड़ी मिलै। आं में कीं महताऊ तवारीखां इण भान्त है– तवारीख कुशलगढ राज्य, तवारीख खांप जोधा (दूजो भाग), तवारीख महाराजा श्री तख्तसिंघजी, तवारीख जोधपुर महाराजा श्री विजयसिंघजी री, परगनै पाली रै *गांव सेखा री तवारीख, सीतामऊ राज्य री तवारीख, रतलाम राज्य री* तवारीख, टांटोटी इलाकै अजमेर री तवारीख, तवारीख रियासत झाबुआ री, मालपुरा री तवारीख, *श्री अजीतसिंघजी री तवारीख, परगना मेड़ता गांव छातो री तवारीख,* मोटा राजा उदयसिंघजी री तवारीख, तवारीख ठाकुरां राजश्री शिवनाथजी री, महाराजा श्री गजसिंहजी री तवारीख, महाराजा श्री भीमसिंह रै राज री तवारीख, महाराजा सूरसिंहजी रै राज री तवारीख, राव गांगाजी री तवारीख, राव चन्द्रसेनजी अर मोटा राजा उदयसिंघजी रै काळ री तवारीख, महाराजा श्री अभयसिघजी री तवारीख, महाराजा श्री विजयसिंघजी री तवारीख, महाराजा मानसिंघजी री तवारीख, राव सूजाजी अर बाघाजी री तवारीख, महाराजा श्री विजसिंघजी री तवारीख आद। मुगलकालीन तवारीखा री भान्त आं तवारीखां में ई अलेखूं अतिशयोक्तिपूर्ण बातां समायोड़ी है, पण इणरै हुवतां थकां ई आं रो ऐतिहासिक महत्त्व कम कोनीं।

राजस्थानी गद्य-साहित्य में बात-साहित्य रो इतिहास ई महताऊ आधारभूत सामग्री है। ख्यातां रै विभिन्न अध्यायां नैं बातां रै रूप में लिखण री परम्परा रह्यी है। इणरै राजावां रै विशिष्ट व्यक्तियां अर उणांरै कार्यकळापां रै आधार माथै ई अणगिणत बातां री रचना हुयी है। समृद्धता री दीठ सूं राजस्थानी रो बात साहित्य सबसूं बेसी महत्त्व राखै। इणमें सूं ऐतिहासिक बातां रो राजस्थान रै इतिहास लेखन में विशेष महत्त्व है। बातां री आ खासियत है कै आं में सामान्य जनजीवण री जाणकारी मिलै। बातां रो नामकरण ई ख्यातां री भान्त ई राखीजतो हो। कतिपय प्रमुख बातां इण भान्त है– बीकानेर रा राठौड़ां री बात, नागौर रै मामलै री बात, दिल्ली रै धणियां री बात, रायधण री बातां, लाखै फूलाणी री बात, बीजी फुटकर बातां, फुटकर बातां रो संग्रह, जगदेव पंवार री बात, कुंवरसी सांखळै री बात, हालां-झालां री बात, ढोला मरवण री बात, राव रिड़मल री बात, पाबूजी री बात, कान्हड़दे री बात, नापै सांखळै री बात, राव अमरसिंहजी री बात, फीरोजशाह पातिसाह री बात अर मूमल री बात।

बात साहित्य री दांई राजस्थान राज्य अभिलेखागार में वार्तावां रो संग्रह ई

उपलब्ध है। वार्तावां ऐतिहासिक दीठ सू खासी महताऊ मानीजी है। इणमें कतिपय वार्तावां इण भान्त हैं– वार्ता महाराणा सांगा री, वार्ता जलाल बूबना री, विविध वार्ता संग्रह, वार्ता शाहजादा कुतुबुद्दीन री, वार्ता रिड़मल खावड़िया री, वार्ता पन्ना री, वार्ता ढोला-मरवण री, वार्ता महचो कंवर जगमालसिंघजी री, भाटियां री ख्यात वार्ता, अनंतराय साखळा री वार्ता आद।

वार्ता साहित्य री भान्त 'विगत' साहित्य ई ऐतिहासिक दीठ सूं घणै महत्त्व रो है। विगत रो शाब्दिक अर्थ वृत्तान्त है। राजस्थानी में लिखी विगतां री संख्या कम कोनीं। अठै आ बात उल्लेख जोग है कै आज रा इतिहासकार विगत साहित्य नैं राजस्थान रै सामाजिक अर आर्थिक इतिहास री जाणकारी रै वास्तै महताऊ आधार सामग्री मान रह्या हैं। महाराजा अनूपसिंघजी रै मुनसब रै तलब री विगत संवत् 1724 सूं 1752 तांई री मुगलकालीन घटनावां रै साथै तत्कालीन विषयां सूं सम्बन्धित आंकड़ां ई प्रस्तुत करै है। नैणसी री मारवाड़ रा परगना री विगतां में, जिकी आज रै इतिहास री सर्वश्रेष्ठ आधारभूत सामग्री बणगी है, मारवाड़ रै परगनां रै गांवां री भौगोलिक स्थिति, वाणिज्य, व्यापार, व्यापारिक-मार्ग, विभिन्न स्रोतां सूं आय रा साधन, किसानां री स्थिति आद पर विस्तार सूं प्रकाश पड़ै है। अभिलेखागार में प्राप्त कीं दूजी विगतां इण भान्त हैं– महाराजा रामसिंघजी गढ ऊपर टीकै विराजिया री विगत, पुस्तक प्रकाश री जूनी बही में लिखी तिणरी विगत, श्रीजी साहबा रै अर रामचन्द्र रै ब्याह री विगत, महाराजा जसवन्तसिंघजी रै ब्याह री विगत, महाराजा अजीतसिंघजी साहबा रै राज लोक री विगत। इणरै अलावा गहलोतां री चौबीस शाखां री विगत, कछवाहां-शेखावतां री विगत, जोधपुर-बीकानेर टीकायतां री विगत ई उल्लेखजोग है।

राजस्थान में कत्ता लिखण री परम्परा लंबै वगत सूं रह्यी है। कत्ता रो शाब्दिक अर्थ राजकीय विवरण सूं लेवां तो अतिशयोक्ति कोनीं। इण वास्तै आं में ऐतिहासिक सामग्री भरपूर मात्रा में मिलै है। अभिलेखागार में पाया जावण आळा कत्ता घणा पुराणा तो कोनीं पण फेर ई खासा महताऊ है। उणां मांय सूं कई कत्ता इण भान्त है– डाबी मिसल रो कत्तो, महाराजा श्री अजीतसिंघजी रै समय रो कत्तो, महाराजा श्री अजीतसिघजी रै जीवणी मिसल रो कत्तो, राठौड़ां रै गढावतां री वंदगियां रो कत्तो, सन् 1885 सूं 1886 तांई महाराजा सरदारसिंघजी रै राजतिलक रो कत्तो, सन् 1885 सू 1889 तांई रो कत्तो, महाराजा श्री जसवंतसिंघजी द्वितीय रै जन्म अर अहमदनगर पधारणै रो कत्तो।

कुर्सीनावै अर वंशावळी रो ऐतिहासिक महत्त्व सर्वविदित है। राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर मे घणी सारी वंशावळियां अर कुर्सीनांवा मिलै है। आं मांय सूं कई महताऊ वंशावळियां अर कुर्सीनांवा इण भान्त है– कुर्सीनांवो अचळदास खीची रो, राठौड़ वंशावळी, वंशावळी उणियांरा रा राव राजा फतहसिंघजी री, खाप मेडतिया

विठलदासोत, केसोदासोत तथा मेड़तिया रघुनाथसिंघोत तथा आनन्दसिघोत रो कुर्सीनांवो, परगनै नागौर रै गांव माण रो पोटलिया रै जागीरदारा रायमलोत, नाहरसिंघ रै पट्टै रै गांव रो कुर्सीनांवो, नकल कुर्सीनांवो, महाराजा साहव माढा, अचलदासजी, आसकरणजी, रावत सिंघोत, शंकरदास, भानीदासोत आद रा कुर्सीनांवा अर खीचिया रा कुर्सीनांवा।

राजस्थानी गद्य-साहित्य में 'हाल' लिखण री परम्परा ई रह्यी है। इण रो ई ऐतिहासिक महत्त्व खासो है। राजस्थान रै विभिन्न भागां में अनेक हाल मिलै है। महाराजा जोधा रो हाल व जोधा रो जन्म सम्बन्धी हाल, मारवाड़ रै इतिहास रै बारै मे महताऊ जाणकारी देवै। इणरै अलावा गद्य-साहित्य में अनेक दवावैत ई उपलब्ध है जिका हाल अर ख्यात री भान्त इतिहास रै वास्तै आधार-सामग्री रै रूप में महताऊ कह्या जाय सकै है। दवावेतां में महाराजा अजीतसिंघजी रो दवावैत उल्लेख जोग है।

राजस्थानी भाषा रै गद्य-साहित्य री भान्त उण रो पद्य-साहित्य ई इतिहास री आधार-सामग्री रै रूप में कम महत्त्व रो नीं है। इण अभिलेखागार में पद्य रूप में जिको साहित्य उपलब्ध है, उणमें वचनिका साहित्य ई ऐतिहासिक दीठ सूं जाणकारी देवण में सिमरथ है। वचनिका लिखण री आ खासियत रह्यी है कै किणी ऐतिहासिक व्यक्ति नैं आधार बणायनैं जिकी वचनिका री रचना करीजती ही, उणमें गद्य अर पद्य दोनूं हुंवता हा। शिवदास चारण कृत अचलदास खीची री वचनिका अर राठौड़ रतनसिंघजी महेसदासोत री वचनिका उल्लेख करण जोग है।

राजस्थानी रै पद्य-साहित्य में 'नीसाणी' लिखण री ई परम्परा रह्यी है। किणी व्यक्ति अथवा घटना री स्तुतिपरक अथवा स्मरण दिरावण आळी रचना निसाणी कहीजती ही। राजस्थानी साहित्य में नीसाणी रो ई ऐतिहासिक महत्त्व रह्यो है। कीं निसाणियां इण भान्त है– ठाकुर राजसिंघजी खीमावत री नीसाणियां, नीसाणी परगना सोजत रै गांव पंचोटिया रै किशनोजी दुरसावत री कही हुयी, नीसाणी ठाकुर बिठलदास गोपाळदास चांपावत री, नीसाणियां भंडारी गंगारामजी री, नीसाणी सेवक मछारामजी री कही हुयी, नीसाणी वीरमाण री, गोगैजी चौहाण री नीसाणी अर आंबेर रा महाराजा प्रतापसिंघजी री नीसाणी।

नीसाणी अर वचनिका री भान्त 'वेलि' लिखण री परम्परा ई राजस्थान में पुराणै बगत सूं रह्यी है। इण कारण अठै वेलि-साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलै। वेलियां में वीर रसात्मक वेलियां ऐतिहासिक महत्त्व री है। प्राचीन राजस्थानी में लोकहित रै वास्तै प्राणोत्सर्ग करण आळा वीरां री चारित्रिक विशेषतावां अर उणांरै सखरै करनामां माथै घणकरी वेलियां रो सिरजण हुयो है। सतरहवीं सदी में रच्योड़ी राठौड़ रतनसिंघजी री वेलि सगळां सूं सिरै है। वेलि साहित्य री दूजी महताऊ वेलियां में क्रिसन-रुक्मिणी री वेलि, बीकानेर महाराज पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा विरचित अर राजा रायसिंघजी री वेलि, माला सांदू विरचित है।

वचनिका अर वेलि रै अलावा राजस्थानी रै वीर रसात्मक साहित्य में अनेक

काव्य गीत, फुटकर दूहा अर छंद ई उपलब्ध है। इण दूहां, गीतां अर कवित्त आद में डिंगळ में छप्पय, कवित्त, रूपक, झमाळ, झूलणा, मरसिया आद रचनावां खासी महताऊ है।

इतिहास रा अध्येता उक्त पद्य-साहित्य नैं इतिहास री आधार-सामग्री बणावै, इणसूं पैली अनेकूं नांवां सूं प्रसिद्ध इण साहित्य रो शाब्दिक अर्थ जाण लेवणो ठीक रैसी। रूपक सूं तात्पर्य उण काव्य या ग्रंथ सूं है जिणमें किणी महान जोद्धा रो चरित्र-चित्रण हुवै, पण वास्तव में औ डिंगळ गीत छंद विशेष में हुवै। आं छन्दां री संख्या 84 तक मानीजै। इणी भान्त झमाळ डिंगळ रो वो छंद विशेष है जिणमें छंद रै पछै चंद्रायण अर फेर उल्लाळा छंद राखनै सिंहावलोकन री रीत सूं पढ्यो जावै। झमाळ री भान्त ही झूलणा 37 मात्रावां रो मात्रिक छंद अथवा 24 आखरां रो वर्णिक छंद विशेष है जिणरै अन्त में यगण हुवै। मरसिया किणी मृत व्यक्ति रै शोक में बणायोड़ो पद्य हुवै है। बां ऐतिहासिक घटनावां रै, जिण रो दूजी मूळ सामग्री सूं सत्यापन नीं हुय पावै, सत्यापन रै वास्तै आ सारी सामग्री उपयोगी सिद्ध हुवै। अभिलेखागार में इण भान्त री कुछ सामग्री इण भान्त है– जोधपुर महाराजा जसवंतसिंघजी, मानसिंघजी, अजीतसिंघजी, देवीसिंघजी शेखावत, सीसोदिया भीमसिंघजी, राणा अमरसिंघजी आद राजावां रा विड़द गीत, महाराजा अर वडा सरदार जिका जुद्ध में काम आया उणां रा विड़द अर जस-गीत, कवित्त-छप्पय भटियाणीजी उम्मेदीजी राव मालदेवजी रै लारै सती हुवा तिण भाव रो, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, जैसळमेर इत्याद रै राजावां रा विड़द गीत, जोधपुर महाराजा बखतसिंघजी रा फुटकर गीत, कवित्त, छप्पय, इत्याद, महाराजा जसवंतसिंघ, रामसिंघ, रायमल, राव मालदेव, पृथ्वीराज इत्याद रा विड़द गीत, जोधपुर, सीकर, उदयपुर रै सीहाजी, बखतसिंघजी, राणा अमरसिंघजी अर वडा सरदारां रा, जिका जुद्ध में काम आया, विड़द गीत; उदयपुर, जयपुर रै राजावां समेत कोटा रै दुर्जनशाल अर बडा सरदारां सूं सम्बन्धित गीत; महाराजा अजीतसिंघजी, अमरसिंघजी, मानसिंघजी अर महाराणा प्रतापसिंघजी रा विड़द गीत; जोधपुर महाराजा अभयसिंघजी अहमदाबाद रै नवाब शेरबुलंद खां सूं झगड़ो कर्‌यो, उणसूं सम्बन्धित छप्पय, किशनगढ महाराजा बहादुरसिंघजी, जोधपुर महाराजा मानसिंघजी, अभयसिंघजी, अजीतसिंघजी, सरदारसिंघजी अर बूंदी रा महारावळ अर जैसळमेर रा रावळ गजसिंघजी अर देवळिया अर बिदनौर रै ठिकाणां रा गीत; जैसळमेर, बीकानेर, बूंदी, कोटा अर जोधपुर ठिकाणां रै सरदारां री वीरता रा गीत; आलिया चारण अखैदानजी कृत डिंगळ भाषा काव्य-गीत, कवित्त, दूहा, छंद इत्याद फुटकर संग्रह; उम्मेदसिंघजी रा कवित्त, छप्पय, छंद आद, सांदू रिड़मलदानजी कृत डिंगळ भाषा काव्य-गीत, कवित्त, फुटकर संग्रह; महाराजा तखतसिंघजी रो कवित्त, छप्पय, आढा चारण मूळराज कृत गीत-संग्रह, क्षेत्रपाळजी रा छंद, महाराजा मानसिंघजी रो जस कवित्त (आसिया बांकीदास कृत), फुटकर गीत दूहा, नाथिया अर मोतीसरां रा दूहा, पोहकरण ठाकुर बभूतसिंघजी रा

छप्पय, जळंधरनाथजी रो जस वर्णन, मेहड़ू महादान कृत नाथजी रा कवित्त, सेवक मघजी बड़लू वाळा कृत रूपनगर री सतियां रा कवित्त, परगनो जसवंतपुरा गाव अवतारी रै चारण हणूदानजी री पुस्तक री नकल, फुटकर गीत, कवित्त आद, फुटकर गीत कविराजा गणेशदानजी री पुस्तक री नकल, फुटकर गीत, कवित्त, दूहा (खिड़िया पीरदानजी री पुस्तक री नकल), फुटकर गीत, कवित्त, दूहा आदिनाथजी रा, विविध गीत संग्रह बारहठ रूपदान कृत; विविध गीत संग्रह, आढा चारण चतुर्भुज कृत; फुटकर गीत कवित्त संग्रह खिड़िया चारण हरसुख कृत; फुटकर गीत कवित्त संग्रह, वणासुर महादानजी कृत; बिरद प्रकाश फुटकर गीत कवित्त (बीकानेर रै गांव सीलवा रै चारण आसिया मोतीराम कृत, उदयपुर, जोधपुर रै सरदारां अर राजावां रा फुटकर गीत; पाबूजी रा छंद; चौथ री कथा तथा अन्य फुटकर गीत, राजावां सरदारां अर बडा ठाकुरां रा जस अर वीरता रा गीत; महाराजा सूरतसिंघजी, महाराजा गजसिंघजी, राजा जसवंतसिंघजी, राव चौड़ो धूहड़जी, छत्रशालजी सम्बन्धी गीत, विविध गीत संग्रह रो गुटको, जोधपुर रै राजा तखतसिंघजी रा कवित्त, छप्पय तथा छंद आद रो संग्रह, फुटकर गीत संग्रह कवित्त, दूहा आद गोरखदान री पुस्तक मांय सूं लिया हुवा, डिंगळ काव्य फुटकर विविध गीत चारण शंकरदानजी री पुस्तक सूं संग्रहीत; आसिया मोतीराम कृत गीतां रो फुटकर संग्रह, बारठ रूपदान कृत विविध गीत संग्रह, चारण आढा चतुर्भुज कृत फुटकर गीत संग्रह; रतनू चारण पाबूदान अर जुगतीदान कृत गीत संग्रह; बारठ बिहारीदास कृत फुटकर गीत संग्रह, चारण दुरसाजी कृत विविध गीत संग्रह, सांदू चारण घनश्यामजी कृत विविध गीत संग्रह, बारठ देवकरण रतनू चारण, पाबूदान अर जुगतीदान कृत फुटकर गीत, कवित्त दूहा संग्रह; जेतदान संग्रहीत फुटकर गीत, कवित्त अर दूहा अर नीसाणी; सिंढायच पीरदान कृत फुटकर गीत, कवित्त अर दूहा संग्रह, जेतदान संग्रहीत फुटकर गीत, कवित्त अर दूहा; रतनू चारण गणेशदान अर खेमदान द्वारा संग्रहीत फुटकर गीत, कवित्त; डिंगळ भाषा काव्य, गीत, कवित्त, दूहा अर छंद; सांदू चारण शोभजी कृत फुटकर गीत; बारठ रुद्रजी कृत फुटकर गीत, कवित्त अर दूहा; चारण नाथूदानजी कृत फुटकर गीत, कवित्त अर आढा महाड़सिंघ विरचित फुटकर गीत-संग्रह उल्लेख जोग है।

गीत, कवित्त अर दूहा री भान्त झमाळां में उदयपुर महाराणा री झमाळ, रतनू चारण कृत जोधपुर महाराजा री झमाळ अर पोकरण ठाकुर देवीसिंघ री झमाळ उल्लेखनीय है। इणां भान्त महताऊ रूपकां में मोतीसर बखतावर कृत पाबूजी रो रूपक, गोगाजी रो रूपक, महाराजा बजरंगसिंघजी रो रूपक, चारण रामदीन कृत विरदप्रकाश रूपक, महाराजा गजसिंघ अर आयश देवनाथ रो रूपक उल्लेख करण जोग है। महाराजा मानसिंघ रो मरसियो अर रायसिंघ रो झूलणो, प्रमुख मरसिया नै झूलणां में आवै।इण सामग्री रै टाळ हिन्दी अर राजस्थानी में लिखी दूजी अनेक रचनावां इण अभिलेखागार में उपलब्ध है, जिकी मध्यकालीन राजस्थान रै इतिहास री

जाणकारी रै वास्तै घणी महताऊ है। आ मांय सूं कई इण भान्त है– *गुण भाषा चित्र* महाराजा गजसिंघजी रो कह्यो, हेम कवि कृत तवारीख पातसाह री; विजय विलास, कवि बारठ विशनसिंह कृत, रतनरासो कविराजा गणेशदान कृत, भरतपुर रो इतिहास, *झाबुवा राज्य रो संक्षिप्त इतिहास, सीतामऊ राज्य रो संक्षिप्त इतिहास*, पृथ्वीराज दौलमतोत री विजय, गुण जिहाज महाराजा श्री गजसिंघजी रा, गुण कुंडळिया सावळदास भोजराजोत रा, गुण महाराजा श्री गजसिंघजी रो हेमकवि कृत, बडा महाराजा श्री मानसिंह रा ख्यालातां रो खरड़ो, महाराजा मानसिंघजी रो राजविलास, देशी नाममाला, आढा सामदान कृत नाथजी रो वर्णन, गोगामेड़ी आसाजी री कही हुयी, मानजसोमंडण, आसिया बांकीदास कृत वीर सतसई, चारण सूरजमल कृत नाममाला डिगळ, हमीर रतनू कृत ओसवाळ उत्पत्ति, अनेकार्थ मंजरी नंददास कृत, परगना मालाणी रै गाव सेताराऊ री खांप, राठौड़ *जैतमलोत तथा वाला नराराजोत दूदावत तथा* बीदावत री खांपां, रजिस्टर खाप पतावतां री, रजिस्टर खांप नक्शो शेखावत लाडरवाणियां रो अर ऊदावतां राठौड़, गांव जसोल खांप करमसोत रा नक्शा, रजिस्टर *गोगादे, पागळिया, भाटी जैसा आद री खांपां, रजिस्टर नक्शा मेडतियै रघुनाथ सिंघोत* चांदावत, कल्याणदासोद इत्याद पुराणी खांपां राठौड़ां री अमरखाण, रावजी श्री अमरसिंघजी रै समय रो रजिस्टर, राव रायसिंघजी अमरसिंघ रै काळ रो रजिस्टर, *महाराजा श्री जसवतसिंघजी रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा श्री अभयसिंघ रै काळ रो* रजिस्टर, महाराजा श्री विजयसिंघजी रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा तखतसिंघजी रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा श्री भीमसिंघजी रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा श्री *सरदारसिंघजी रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा श्री सुमेरसिंघजी रै काळ रो रजिस्टर,* उदयपुर रै कविराजा श्यामलदासजी विरचित वीर विनोद मे सत्ताजी सूं मंडोवर लेवण रो वृत्तांत, महाराजा मानसिंघजी विरचित जळंधर नाथजी रो जसभूषण, पिंगळ गुणग्रंथ, *आलमगीर नामा, पृथ्वीराज रासो चंदवरदायी कृत अर ग्रंथ लच्छ सतरंग बारठ* विहारीदास कृत। इण फुटकर रचनावां रो राजस्थान रै इतिहास लेखन में घणो महत्त्व है। मुगलकाल सूं लेयनै राजस्थान में मराठां रो आक्रमण अर उणां पछै अंग्रेजी सत्ता द्वारा रजवाड़ां रै *आंतरिक मामलां में भरपूर मात्रा में हस्तक्षेप री सूचना आं सूं मिलै।* राव जैतसी रो छंद बीठू सूजा रो कह्यो, में बीकानेर माथै कामरान रै आक्रमण अर *बीकानेर रै शासक राव जैतसी द्वारा उणनैं हरावण रो महताऊ वर्णन मिलै।* राजरूपक में जोधपुर रै राठौड़ शासकां रो औरंगजेब रै मुगल सेनापतियां रै साथै हुयोड़ा जुद्धां रो वर्णन कर्यो गयो है। उगणीसवीं सदी में बूंदी राज्य रै चारण कवि सूर्यमल्ल मीसण द्वारा रचित वंश भास्कर अर वीर सतसई क्रमशः राजस्थान में मराठा अर अंग्रेज विरोधी भावना री जाणकारी री महताऊ आधार-सामग्री है। बांकीदास, महाराजा मानसिंघ (जोधपुर) अर दूजा कई चारण कवियां आपरी अंग्रेज-विरोधी भावना सूं राजस्थान रै जनमानस नैं झकझोरनै राख दियो।

राजस्थानी में शोध अर सिरजण री समस्यावां

राजस्थानी आपरो स्वतंत्र अस्तित्व राखण आळी अेक सिमरध भाषा है। आ सिरजण री दीठ सूं दूजी भाषावा रै टक्कर री है। सगळी विधावां इणमें विद्यमान हैं। इण रो आपरो व्याकरण, कोष, लिपि अर पुराणो नै नूंवो साहित्य भी उपलब्ध हैं। इणरै बावजूद देखां हां कै राजस्थानी भाषा देस री दूजी आधुनिक भाषावां री भान्त अबार तांई उचित प्रतिष्ठा प्राप्त नीं कर पायी है। इण रा कई कारण है। राजस्थानी भाषा में शोध अर सिरजण सम्बन्धी जिकी समस्यावां है बै ई आं में कारण-भूत है। इण समस्यावां नैं सही रूप में समझण सारू पैलां संक्षेप में इण भाषा रै साहित्य रै सरूप नै समझणो जरूरी है।

राजस्थानी भाषा रो प्राचीन साहित्य जठै शोध री दीठ सूं महताऊ है, बठै ई आधुनिक राजस्थानी साहित्य रो इण दीठ सूं खास महत्त्व नीं है। राजस्थानी रा विद्वाना इण भाषा रै सिरजण-काल नैं तीन भागां में बांट मेल्यो है, जिका बारहवीं सदी सू आज तांई रै बिचाळै रा है। जे बीसवीं सदी नैं टाळ देवां तो ई तीनूं काल-विभागां में राजस्थानी भाषा में मोकळो सिरजण हुयो है। इणरै बाद विविध विधावां में आधुनिक राजस्थानी साहित्य रो सिरजण हुयो अर हुय रह्यो है।

शोध री दीठ सूं राजस्थानी रै पुराणै साहित्य नैं घणो अर आधुनिक साहित्य नैं उणसूं कम महत्त्व दियो जावै। इणीं बात नै ध्यान में राखनै इण लेख में राजस्थानी भाषा रै पुराणै साहित्य मूं जुड़्योड़ी कीं समस्यावां माथै विचार कर्‌यो जावै है। इण रो मतलब औ नीं है कै राजस्थानी रै आधुनिक साहित्य रै सम्बन्ध में शोध री कोई समस्या ई नीं है, पण आधुनिक साहित्य रै संदर्भ में अेक बात अवस कह्यी जाय सकै है कै पुराणै साहित्य रै मुकाबलै इण साहित्य में शोध सम्बन्धी समस्यावां कम है।

अठै इण साहित्य रै शोध अर सिरजण में व्यावहारिक रूप में आज रै संदर्भ मे जिकी समस्यावां है, उणां माथै संक्षेप में विचार कर्‌यो जावै है।

शोध समस्यावां

राजस्थानी भाषा रो पुराणो साहित्य, जिण रो ऊपर वर्णन कर्‌यो गयो है, प्रदेस में च्यारूंमेर बिखर्‌यो पड़्यो है। शोध-अध्येतावां नै इण साहित्य रो सर्वेक्षण नीं हुवण सूं मोकळी अबखायां उठावणी पड़ै। सुप्रसिद्ध विद्वान अर भाषाविद डॉ. ग्रियर्सन आपरै ग्रंथ 'अे लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' में राजस्थानी भाषा री बोलियां रो सर्वेक्षण कर्‌यो है। इण पछै इटालियन विद्वान डॉ अेल. पी टैस्सीटोरी राजस्थानी भाषा रै चारण साहित्य रो व्यापक सर्वेक्षण कर्‌यो। उणरै बाद राजस्थान री प्राय: सगळी रियासतां में आप-आपरा इतिहास लिखावण वास्तै राजस्थानी भाषा री विविध विधावां रो सर्वेक्षण कार्य हुयो। इणरै बावजूद राजस्थानी भाषा री अथाह सामग्री अबार भी इत्ती है कै जिण रो व्यापक सर्वेक्षण हाल नीं हुयो है। आ सामग्री अबार इसा व्यक्तियां अर संस्थावां

कनै पड़ी है, जिका उणरै महत्त्व नै नीं समझै अर जद शोध-अध्येता उण सामग्री नै देखण नै जावै तो उणांनै आपरी सामग्री दिखावै तक कोनीं। इण कारण सूं शोध-अध्येता अंदाज सूं ही सामग्री-संकलन वास्तै इन्नै-विन्नै भागता फिरै। इणसूं नीं फगत उणां रो धन खरच हुवै बल्कै वगत भी बरबाद हुवै। जे उणां नैं वांछित सामग्री रो केटलाग या सूची उपलब्ध हुय जावै तो उणां रै शोध रो काम आसान हुय जावै। इण वास्तै राजस्थानी भाषा अकादमी अर दूजी शोध-संस्थावां रो औ दायित्व है कै राजस्थानी भाषा री अणछपी अर छप्योड़ी सामग्री रो व्यापक सर्वेक्षण करै अर करावै। पछै उण सामग्री रा केटलाग त्यार करायनै शोध-अध्येतावां नैं उपलब्ध करावै।

पुराणै राजस्थानी भाषा-साहित्य में शोध करण आळै शोध-अध्येता रै सांमी अेक समस्या राजस्थानी भाषा री पुराणी लिपि नैं पढण अर समझण सम्बन्धी भी आवै। कैवण में राजस्थान रै विविध क्षेत्रां री लिखावट राजस्थानी ही कहावै पण व्यवहार रूप में जद उणानैं पढ्यो जावै तो उणां री लिखण री आप-आपरी विशिष्ट शैली रै कारण शोध-अध्येता नैं पढण में थोड़ी कठिनाई मैसूस हुवै। राजस्थान राज्य अभिलेखागार मे उपलब्ध राजस्थानी अभिलेखां री विविध लिपि-शैलियां रो तुलनात्मक अध्ययन करां तो पतो चालै कै बीकानेर रो आदमी कोटा, झालावाड़ अर बूंदी री लिखावट नैं सोरै सांस नीं पढ सकै। इण वास्तै जरूरी है कै सम्बन्धित शोध-संस्थावां राजस्थानी भाषा रो ग्रियर्सन द्वारा त्यार कर्योड़ो लिपिचार्ट अर तुलनात्मक चार्ट शोध-अध्येतावां नैं उपलब्ध जरूर करावै।

साहित्यिक शोध में व्याकरण रो महत्त्व सर्वविदित है। राजस्थानी भाषा रा कई ज्ञात अर अज्ञात व्याकरण-ग्रंथ संग्रामसिंह, जर्मन विद्वान केलाग, मेकालिस्टर, सूर्यमल्ल मीसण, डॉ. टैस्सीटोरी, प. रामकरण आसोपा, सीताराम लाळस, नरोत्तमदास स्वामी, काळीचरण बहल, कन्हैयालाल शर्मा, कैलाशचन्द्र अग्रवाळ, चिन्तामणि उपाध्याय आद रा उजास में आया है। पण आं मांय सूं किणी अेक पोथी नैं राजस्थानी भाषा रो सम्यक या सम्पूर्ण व्याकरण नीं कह्यो जाय सकै। इण रो परिणाम औ है कै देस अर विदेस रा शोध-अध्येता, जिका राजस्थानी साहित्य माथै शोध करणो चावै, उणां नैं मानक-व्याकरण रै अभाव में खासी कठिनाई अनुभव हुवै। राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी, दूजी शोध-संस्थावां अर मानीता विद्वाना रै सैयोग सूं राजस्थानी भाषा रो अेक मानक-व्याकरण त्यार करवायनै शोध नैं नूवी दिशा प्रदान करणी चाहीजै।

व्याकरण री तरै राजस्थानी भाषा रा कई शब्द-कोश ई सांमी आया है। आं में राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी (जोधपुर) सूं छप्योड़ो डिंगळ शब्दकोश, श्री बदरीप्रसाद साकरिया रो राजस्थानी भाषा शब्दकोश अर श्री सीताराम लाळस रो राजस्थानी भाषा रो विस्तृत शब्दकोश उल्लेखनीय है। आं में श्री सीताराम लाळस रो 'सबद कोस' (शब्दकोश) तो चार खंडां अर नौ जिल्दां में दो लाख सूं बेसी शब्दां रो

है। निश्चित रूप सूं औ शब्दकोश घणो महताऊ है, पण शोध-अध्येतावां नैं आपरै शोधकार्य में इसा-इसा शब्दां रो सामनो करणो पड़ै, जिकां रो उल्लेख इण शब्दकोशां में नीं मिलै। कारण साफ है कै राजस्थानी भाषा में हाल इसो मानक शब्दकोश नीं है, जिणसूं शोध-अध्येता पूरो लाभ उठा सकै। इण वास्तै राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी अर दूजी संस्थावां नैं 'मानक व्याकरण' री भान्त 'मानक शब्दकोश' त्यार करण सारू ई ठोस योजना वणावणी चाहीजै।

आज राजस्थानी भाषा मे उणरै शास्त्रीय-साहित्य में वैज्ञानिक पद्धति सूं शोध करावण आळा शोध-निर्देशकां री कमी भी शोध क्षेत्र में अेक समस्या बण रह्यी है। इण रो कारण जठै पुराणै शास्त्रीय-साहित्य रो समय रै साथै दुर्लभ हुय जावणो है, बठै ई नूंवा साहित्यकारां द्वारा शास्त्रीय-साहित्य में रुचि कम लेवणी भी है। आ समस्या वरोवर बधती जावै है। आज राजस्थानी भाषा रा घणकरा शोध-ग्रंथ हिन्दी भाषा मे लिख्या जावै है अर उणां रा शोध-निर्देशक भी प्राय: हिन्दी रा प्रोफेसर ई मिलै। इणसूं राजस्थानी भाषा रै शोध में गिरावट आ रह्यी है अर राजस्थानी भाषा रो महत्त्व ई कम हुय रह्यो है। इण वास्तै शोध-संस्थावां अर विश्वविद्यालय नैं चाहीजै कै राजस्थानी भाषा-विषयक शोध-निर्देशक उण व्यक्ति नैं ई वणायो जावै, जिकै आपरी डाक्टरेट या शोधकार्य राजस्थानी भाषा रै ईज किणी पक्ष नैं लेयनै करयो हुवै। इणरै साथै राजस्थानी शोध-ग्रंथ राजस्थानी भाषा में ईज लिख्यो जावणो चाहीजै, जिणसू राजस्थानी में शोध रो स्तर ऊंचो हुवै।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग न्यारै-न्यारै विश्वविद्यालयां में विशिष्ट विषयां रै विशेष अध्ययन सारू 'अेडवांस स्टडी सेंटर' खोल राख्या है। उणां में सम्बन्धित विषयां में शोध करण आळा छात्रां नैं आधुनिक वैज्ञानिक शोध सुविधावां उपलब्ध है। पण अबार तांई विश्वविद्यालय अनुदान आयोग राजस्थानी भाषा रै वास्तै इण तरै री कोई सुविधा नीं जुटायी है। इण कारण सूं राजस्थानी भाषा रो अध्ययन अर शोध करण आळा शोध-अध्येतावां नैं वै सुविधावां नी मिल रह्यी है, जिकी दूजै विषयां रै छात्रां नैं मिलै है। अठै आ बतावण जोग बात है कै आज राजस्थान में प्राय: सगळा विश्वविद्यालयां में अेम. अे. स्तर तांई राजस्थानी पढावण री व्यवस्था करीजी है। इण वास्तै विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सूं राजस्थान रै किणीं अेक विश्वविद्यालय में राजस्थानी भाषा रै वास्तै 'अेडवांस स्टडी सेंटर' खुलावण रो प्रयास करणो चाहीजै, जिणसूं राजस्थानी भाषा रै शोध-अध्येतावां री अनेक समस्यावां रो समाधान हुय सकै।

राजस्थानी भाषा साहित्य रै शोध नैं सरकारी अर गैर-सरकारी प्रोत्साहन ना रै बरोबर मिल रह्यो है। आज जिको विद्यार्थी राजस्थानी विषय लेयनै पी. अेचडी. री डिग्री प्राप्त कर लेवै है, उण सारू नौकरी ढूंढणी मुश्किल हुय जावै। राजस्थान रै विश्वविद्यालयां अर दूजी शोध-संस्थावां में राजस्थानी भाषा रै शोध सम्बन्धी पदां माथै ई हिन्दी भाषा रा विद्वान ई नियुक्त कर दिया जावै अर राजस्थानी भाषा रा विद्वान टापता

रेवै। इण वजै सूं राजस्थानी भाषा रै शोध-अध्येतावां रै सांमी रोजी-रोटी री समस्या भी बणी रेवै है। जे राजस्थानी भाषा रै शोध नै प्रोत्साहन देवणो है तो इण पदां माथै राजस्थानी रै विद्वानां नै ई नियुक्त करया जावै।

राजस्थानी भाषा रै आधुनिक साहित्य सू सम्बन्धित शोध-विषय रो चयन कर उणनै विश्वविद्यालय सू शोध रै वास्तै स्वीकृत करावणो आसान काम नीं है। बापड़ो शोधार्थी अर उण रो शोध-विषय विश्वविद्यालया रै प्रोफेसरां रै चक्कर में चढ जावै तो बरसां ई शोध-विषय स्वीकृत नीं हुवै। दिखावै रै रूप में विषय नै स्वीकृत करण सारू विश्वविद्यालयां मे कमेटी बणायोड़ी हुवै पण उणमें समुचित न्याय नीं हुवै। इण कारण सू शोधार्थी नूंवै राजस्थानी साहित्य नै शोध रो विषय नी बणा पावै अर उण रो वगत ई बरबाद हुवै।

सिरजण री समस्या

राजस्थानी भाषा रो जुड़ाव अबार ताईं रोजी-रोटी सूं नीं हुय सक्यो है। राजस्थानी भाषा पढण आळै नैं जद राजस्थान री सरकार ई प्रोत्साहन नीं देय रह्यी है तो दूजा प्रदेसां अर केन्द्र सरकार सूं कांई उमेद राख सकां हां ? राजस्थान में राजस्थानी भाषा पढण आळो नौकरी वास्तै भटकतो फिरै। दूजै प्रदेसां में नौकरी वास्तै प्रदेस री भाषा रो ज्ञान जरूरी मानीजै पण अठै इण ढग री कोई व्यवस्था नीं है। इणसूं राजस्थानी भाषा नै कोई पढणो नी चावै। इणसू राजस्थानी भाषा में अेक खास तरै रो सिरजण तो हुय रह्यो है पण आम लोगां वास्तै सिरजण बन्द पड्यो है। राज्य सरकार नैं चाहीजै कै टाबरां नै बचपन सू ई राजस्थानी भाषा रै माध्यम सूं शिक्षा देवणी सरू करै अर अठै री हर स्तर री नौकरी मे राजस्थानी भाषा नै महत्त्व देवै। इणसूं राजस्थानी भाषा रै सिरजण में विशेष गति आसी।

राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी (बीकानेर) ई सिरजण में यथोचित मदत नीं दे पाय रह्यी है। इंयां लागै है कै ई संस्था आपरो धर्म जरूरतमंद लेखका नैं आटे में लूण रै बरोबर आर्थिक सहायता देवण, साधकां नैं इनाम देवण अर अेक पत्रिका निकालण ताईं ई मान राख्यो है। कदैई-कदैई सेमिनारां रो धूम धड़ाको ई कर लेवै है। इण भाषा रै विगसाव सारू जिका दूजा काम हुवणा चाहीजै, बै नीं रै बरोबर है। कांई इण अकादमी रो औ दायित्व नीं है कै आ राजस्थानी भाषा रो मानक व्याकरण अर छात्रोपयोगी शब्दकोश त्यार करवावै, राजस्थानी भाषा री अेकरूपता रै वास्तै मानक भाषा रो सरूप निर्धारित करै अर साहित्य रै साथै दूजै विषयां मे ई सिरजण नैं प्रोत्साहन देवै ? जिण भान्त राजस्थान हिन्दी ग्रथ अकादमी दूजै विषयां री पोथ्यां रो हिन्दी में अनुवाद करवावै, उणीं भान्त दूजी भाषावां री श्रेष्ठ पोथ्यां रो राजस्थानी में अनुवाद करावतां इण अकादमी नैं कुण रोकै है ? जे अै काम अकादमी सरू कर देवै तो राजस्थानी मे सिरजण री कमी नीं रेवै।

राजस्थानी भाषा रै लेखकां रै सांमी आ अेक लूंठी समस्या है कै उणां नैं किणी

कानीं सूं प्रोत्साहन नीं मिल रह्यो है। राजस्थानी भाषा रो लेखक जे रचना त्यार कर लेवै तो प्रकाशक उणनैं सोरै सांस नीं छापै। जे छाप देवै तो उण सारू पाठकां अर ग्राहकां रो अभाव बण्यो रैवै। इण कारण सूं राजस्थानी में सिरजण रो परिमाण जावक ई ओछो रैवै। इण समस्या सूं छुटकारो तद ही मिल सकै है, जद कै राजस्थानी भाषा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी राजस्थानी भाषा में पोथी छापण रो जिम्मो आप माथै लेवै।

राजस्थानी भाषा रो 'मानक सरूप' सांमी नीं आवण सूं सिरजण री अेकरूपता नीं आय रह्यी है। इणसूं नूंवा लेखकां रै सांमी आ समस्या है कै बै राजस्थानी भाषा रै किण रूप नैं अपणावै ? राजस्थानी भाषा रो मानक रूप त्यार करण रा प्रयास ई हुया है, पण फेरू ई औ मामलो आज तांईं तय नीं हुय सक्यो है। अेक बात इण वास्तै जरूर कह्यी जाय सकै है कै इण भाषा नैं जन-जन तांईं पुगावण वास्तै राजस्थानी भाषा रै तद्‌भव शब्दां रै साथै तत्सम शब्दां रो प्रयोग समुचित मात्रा में करनै इण रो मानक सरूप त्यार करयो जावै। इणसूं इण भाषा रै सिरजण में गति आसी।

राजस्थानी भाषा नैं संविधान री आठवीं अनुसूची में स्थान नीं मिलण सूं नूंवा लेखक हतोत्साही हुयोड़ा-सा निजर आवै है। इणसूं राजस्थानी भाषा रै सिरजण में अेक ठैराव-सो आयोड़ो है। राजस्थानी भाषा रै भविष्य रै प्रति आशान्वित नीं हुवण सूं लेखक दूजी भाषा में सिरजण नैं बेसी महत्त्व देवण लाग रह्या है। इण वास्तै जरूरत आ है कै राजस्थानी भाषा नैं मान्यता दिरावण वास्तै ग्राम पंचायत स्तर माथै प्रचार सरू करयो जावै। पंचायतां रो सगळो कामकाज राजस्थानी में करण वास्तै पंचायत राज रै जन प्रतिनिधियां नैं समझायो जावै; निशुल्क कक्षा लगायी जावै अर साल रै अन्त में उण ग्राम पंचायत नैं पुरस्कृत करी जावै, जिकी राजस्थानी भाषा में आपरो सगळो काम करयो हुवै। औ क्रम पंचायत समिति स्तर तक अपणायो जावै। इण काम नैं अेक संस्था या आदमी नी कर सकै। इण काम वास्तै इसै उत्साही लोगां री जरूरत है, जिका राजस्थानी भाषा नैं मान्यता दिरावण वास्तै आपरो जीवण लगावणो चावै। राजस्थानी भाषा रो जन-आन्दोलन जद ग्राम-स्तर सूं उठसी तो उणनैं मान्यता देवणी ई पड़सी। जनता आगै सरकार दबती आई है।

राजस्थानी भाषा में देस री दूजी प्रान्तीय भाषावां री भान्त विविध विधावां में सिरजण अजै ई बरोबर नीं हुय रह्यो है। सिरजण अर उणनैं पढण आळै पाठकां री संख्या बधावण सारू राजस्थानी में ई रोचक कहाणियां अर उपन्यासां रो हळको-फुळको, सुबोध अर सरस साहित्य लगोलग छपणो चाहीजै।

राजस्थानी भाषा रो प्रचार माध्यम ई खासा कमजोर है। दूरदर्शन में तो इण भाषा नैं नगण्य स्थान मिल्योड़ो है। रेडियो में जरूर इण भाषा माथै बरोबर ध्यान दियो जावै। पण इत्तो नीं, जित्तो कै दियो जावणो जरूरी है। पत्र-पत्रिकावां ई साहित्यिक है, इण वास्तै बै अेक वर्ग विशेष तांईं ई सीमित है। 'माणक' नांव री राजस्थानी मासिक पत्रिका री पकड़ आम पाठकां तांईं जरूर है अर उणमें छपण आळी सामग्री ई रुचिकर

है पण अेकली 'माणक' पत्रिका काई कर सकै ? इसी रुचिकर पत्रिकावां और भी निकळणी चाहीजै।

राजस्थानी में बाल-साहित्य री रचनावां ई नीं रै बरोबर सांमी आय रह्यी है। इण कानी लेखकां रो ध्यान जावणो जरूरी है। जे राजस्थानी भाषा रै सिरजण नैं प्रोत्साहन देवणो है तो पाठका री रुचि अर जरूरत रै अनुरूप साहित्य रो सिरजण हुवणो चाहीजै।

राजस्थानी लोकगाथावां मांय अैतिहासिक तत्त्व

लोकगाथावां री परम्परा मोकळी पुराणी है। अै गाथावां जातक, पंचतंत्र आद ग्रंथां रै सहारै सूं संकलित हुयनै आज तांई किणीं न किणीं रूप में चालती आ रही है। घणकरी लोकगाथावां मौखिक रूप में प्रचलन में रही, लिपिबद्ध नीं हुय सकी। इण कारण सूं समै रै साथै मोकळी गाथावां बणती अर बिगड़ती भी रही। जिकी लोकगाथावां लिपिबद्ध हुयोड़ी मिलै, वै कित्तीक पुराणी है, ओ बतावण रो आधार नीं है। आ बात दूजी है कै अैतिहासिक लोकगाथावां री घटनावां रो दूजै इतिहास रै साधनां सूं मेळ बैठावां तो इण बात रो पतो लागै कै अै गाथावां कित्तीक प्रामाणिक है। यूं आज भी दसूं गाथावां प्रचलन में है, जिकी अठै रै गांवां में बडै आणन्द सूं सुणी अर सुणाई जावै। राजस्थानी जनजीवण में तो अै गाथावां इण भान्त रमगी कै आंमें जन-साधारण रो पूरो भरोसो बंधग्यो।

राजस्थान रै इतिहास री संरचना में जित्तो फारसी अर राजस्थानी ख्यातां रो महत्त्व है, बित्तो आं लोकगाथावां रो कोनीं। पण आज रो इतिहासकार इण विडम्बना नैं समझण लागग्यो है। अबै इतिहास में राजनैतिक घटनावां रो समावेश कम अर जन-साधारण री सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक स्थिति अर उणरै दुख-दरद री जाणकारी माथै ज्यादा जोर दियो जावण लाग्यो है। इणसूं दूजा अैतिहासिक साधनां रै साथै-साथै जिण जाग्यां रो इतिहास लिख्यो जाणो है, उणरै जनजीवण रो अध्ययन उठै रै लोक-साहित्य रै अध्ययन रै बिना अधूरो ई रैवै। लोकगाथावां लोक-साहित्य रो मुख्य अंग है। गाथावां में देस अर समाज री स्वाभाविक चेतना, लोकविश्वास अर संस्कृति री झलक साफ निजर आवै। समाज री अलग-अलग प्रवृत्तियां अर न्यारै-न्यारै वर्गां रो सही चित्रण जिण रूप में आं गाथावां में मिलै, वो खरो है। समाज री छोटी-छोटी मान्यतावां जीवण-मूल्यां अर धारणावां रो जे गहन अध्ययन करणो हुवै तो लोकगाथावां रै मुकाबलै में दूजो स्रोत नीं है। कैवण रो मतलब औ है कै जे राजस्थान रो सही सामाजिक अर आर्थिक इतिहास लिखणो है तो उणमें लोकगाथावां रो महत्त्व नकारयो नीं जा सकै। मध्यकालीन शासन-व्यवस्था, कलात्मक सृजन, साहित्यिक वातावरण, आमोद-प्रमोद, पशुपालण, विणज-व्यापार अर खेती-पांती आद री भरपूर जाणकारी इण गाथावां में मिलै है। अठै आ बात ई बतावण जोग है कै इण गाथावां रो राजस्थान रै राजनैतिक इतिहास में ई महत्त्व कम नीं है। मोकळी लोकगाथावां में जाग्यां-जाग्यां अैतिहासिक विवरण, जुद्ध विशेष में भाग लेवण आळा अर हताहत लोगां री नामावळी ई मिलै है। इणी भान्त कई जाग्यां वंश-परम्परा अर घटनावां रो उल्लेख ई देख्यो जावै है।

राजस्थानी भाषा अर लोकगाथावां रा मर्मज्ञ विद्वान डॉ. मनोहर शर्मा राजस्थानी लोकगाथावां रो सांतरो अध्ययन करयो है। उणां आं गाथावां रो वर्गीकरण ई करयो है।

अठै आं सगळी भान्त री लोकगाथावां रो इतिहास री संरचना में जिको योग हुय सकै उणनैं अलग-अलग देवणो संभव नीं है। इण खातर अठै मात्र उण वीर अर अैतिहासिक लोकगाथावां रो बखाण कर्‌यो जावै है जिणां रो इतिहास-संरचना में महत्त्व है। राजस्थान सरू सूं ई वीरां री धरती रह्यो है। अै वीर अठै जनमिया अर आपरी किणी वीरता या विशिष्टता रै कारण सूं जन-साधारण री पूजा रा पात्र बणग्या। समय रै साथै-साथै जन-साधारण उण वीरां री स्मृति नैं कायम राखण सारू प्रयास कर्‌यो, जिको आज अैतिहासिक गाथावां रै रूप में मिलै है।

गोगाजी, अेक इसै वीर री गाथा है, जिका आज जन-साधारण में सांपां रै देवता रै रूप में पूजीजै। उणां रै बारै में आ गाथा प्रचलित है कै जिण किणनैं सांप डस लेवै तो उणरै गोगाजी रे नांव रो डोरो (तांती) बांधण सूं सांप रो जहर उतर जावै। आज रै शोध सूं गोगाजी अेक इतिहास-पुरुष होयग्या है। भारत रा प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. दशरथ शर्मा आपरै शोध-ग्रंथ 'अर्ली चौहान डाइनेस्टीज' में गोगाजी नैं दिल्ली रै अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान रै वंश में जन्मयोड़ो वीर मान्यो है। गोगै चौहान रो जन्म ददरेवा (जिको आज चूरू जिलै री राजगढ तहसील सूं 16 मील दूर है) में हुयो। उणरै बाप रो नांव सूरजपाळ हो। गोगो चौहान गोरखनाथ रै सम्प्रदाय रो अनुयायी हो, इण खातर उणनैं मोकळी सिद्धियां प्राप्त ही। बो आपरै जीवण में घणा ई शौर्यपूर्ण अर चमत्कारी काम कर्‌या। अन्त में जद संवत् 1440 में दिल्ली रो बादसाह फीरोजशाह तुगलक ददरेवै माथै आक्रमण कर्‌यो तो चौहान कुळ रो गोगो लड़तो थको वीर गति नैं प्राप्त हुयो। इण बात सूं ठा पड़ै कै गोगोजी सम्बन्धी गाथा में इतिहास-संरचना में काम आवण आळी मोकळी सामग्री मौजूद है।

पाबूजी राठौड बडा वीर हा। उणांरै बारै में आ गाथा प्रचलित है कै वां आपरै वचन री रक्षा वास्तै आपरा प्राण न्योछावर कर दिया। गोरक्षा रै वास्तै वै आपरै ब्यांव री बगत चंवरी मांय सूं उठनै बाहर चढ्या अर जुद्ध करता थकां वीर गति प्राप्त करी। पाबूजी राठौड़ राजस्थान रा लोकदेवता मानीजै है। गांवां में आज ई उणां री याद में रातिजोगो लागै अर लोकगायक पाबूजी राठौड़ री फड़ गायनै जागण लगावै। अैतिहासिक शोध सूं बेरो पड़ै कै पाबूजी राठौड ई इतिहास-पुरुष हा। मारवाड़ मांय आसथान राठौड़ पाली में आपरी सत्ता स्थापित कीवी। आसथान राठौड़ रै आठ बेटां मांय सूं दो बेटा धूहड़जी अर धांधळजी घणा प्रतापी हुया। धूहड़जी रा वंशज जोधपुर अर बीकानेर रा राठौड़ शासक बण्या। धांधळजी रा दोय बेटा बूडोजी अर पाबूजी हा। पाबूजी घणी लड़ायां लड़ी। सरू में पाबूजी री आना बाघेलै सूं सात थोरियां नैं लेयनै अणबण हुयगी। अै सातूं थोरी पैलां आना बाघेलै रा सेवक हा, जिका उणसूं अणबण रै कारण पाबूजी राठौड़ रै कनै चल्या गया। जद दोनां में लड़ाई हुई तो आनो बाघेलो मार्‌यो गयो। इणरै पाछै जायल रो जिनराज (जींदराव खीची, जिको देवळदे चारणी री गायां नैं आपरै अठै लेयग्यो हो, उणसूं पाबूजी राठौड़ री गायां छुडावण रै वास्तै लड़ाई

हुयी। पाबूजी राठौड़ गायां छुडावण में तो सफल हुयग्या पण जुद्ध में वीरगति प्राप्त करी। पाबूजी राठौड़ री गाथा सूं जठै उण समै रा जागीरदारां रै आपसी सम्बन्धां री जाणकारी मिलै, बठै ई गोरक्षा रै महत्त्व रो ई बेरो पड़ै।

करणीजी नांव री देवी आपरै चामत्कारिक कामां रै कारण सूं जोधपुर अर बीकानेर रै शासकां में ही नीं, जन-साधारण में भी पूजी जावण लागी। आंरै बारै में घणी लोकगाथावां प्रचलन में है। औ अेक अैतिहासिक सत्य है कै विक्रम री पंद्रहवीं सदी रै उतरार्ध में अेक चारण कुळ में करणीजी रो जन्म हुयो। करणीजी रा पिता कीनिया खांप रा मेहोजी चारण हा। करणीजी री मां रो नांव देवळ बाई हो। करणीजी रो ब्यांव साठीका गांव रै केळू बीठू रै बेटै देपोजी बीठू रै साथै हुयो। ब्यांव री बगत आपरै बाप सूं दायजै में मिली गायां रै खातर सासरै में पाणी रै अभाव नैं देख'र करणीजी आपरै सासरै नैं त्याग दियो अर गायां नैं लेयनै अेक तळाव कनै डेरो लगायो। थोड़ां दिनां पछै बैसाख शुक्ला दूज, शनिवार, संवत् 1476 में करणीजी देशनोक गांव री नींव राखी। अठै पैलां पंवार क्षत्रियां री सांखला खांप रो आधिपत्य हो। तापछै भाटियां आपरो आधिपत्य जमा लियो। सांखला अर भाटियां रै आपसी झगड़ै सूं फायदो उठायनै जोधपुर रा राठौड़ां करणीजी री सहायता सूं बीकानेर राज्य री थापना कीवी। बीकानेर रा शासकां देशनोक में करणीजी रो अेक भव्य मन्दिर बणायो अर करणीजी नैं कुळदेवी रै रूप में मान्यता दीवी। बीकानेर राज्य री सत्रहवीं अर अठारवीं सदी री बहियां में इण कुळदेवी रै वंशजां नैं राज्य कानीं सूं दिया गया गांवां रो उल्लेख मिलै। करणीजी री गाथा में अैतिहासिक तत्त्वां री कमी नीं है, आ बात तो अेकदम स्पष्ट ईज है।

रामदेवजी तंवर दिल्ली रै तोमर-नरेश अनंगपाळ रै वंश में अजमाल रा बेटा हा। रै चमत्कारी कामां रै बारै में जन-साधारण में मोकळी गाथावां प्रचलित है। आज तो बांरै रामदेवजी तंवर राजस्थान अर गुजरात में लोकदेवता रै रूप में पूजीजै है। अजमालजी रै दूजै बेटै रो नांव वीरमदेव हो। कह्यो जावै कै अेक दिन खेलता-खेलता दोनूं भाई पोकरण में बाळकनाथजी री कुटिया में पूगग्या। बाळकनाथ सूं रामदेव नैं सिद्धि प्राप्त हुयी। बाळकनाथ रै आशीर्वाद सूं सबसूं पैलां रामदेवजी तंवर पोकरण रै दुष्ट भैरूं नैं मार्यो अर उजड़योड़ै पोकरण नैं पाछो बसायो। रामदेवजी रै चमत्कारां सूं हिन्दू अर मुसळमान दोनूं जातियां रा लोग प्रभावित हा। इण खातर रामदेवजी तंवर नैं 'रामसा पीर' ई कह्यो जावै है। संवत् 1515 में रामदेवजी पोकरण सूं आठ मील दूर रूणीचै नांव री जाग्यां में जीवित समाधि ली ही। इतिहास में जद धार्मिक सहिष्णुता रै बारै में लिख्यो जासी तो रामदेवजी तंवर भुलाया नीं जाय सकै।

डूंगजी-जवाहरजी रै कामां रो मोकळी गाथावां जन-साधारण में प्रचलित है। डूंगजी अर जवाहरजी राजस्थान रै शेखावाटी छेत्र रा राजपूत सरदार हा। बै अंग्रेजां नैं देस री सम्पदा लूटतां अर प्रजा नैं भूखी मरतां देखनै जनता रा हिमायती बणग्या अर बीं री सहायता सारू धाड़वी रो रूप धारण कर्यो। अै गरीबां री मदद करता, इण कारण

राजस्थान री जनता रो तो उणां नै समर्थन हो ई पण राजस्थान रा शासक अर भारत री अंग्रेज सरकार रा नुमाइंदा आंरा बैरी बणग्या। आज डूंगजी-जवाहरजी नैं इतिहासकार स्वतंत्रता सेनानी बतावै है अर आं सूं सम्बन्धित लोकगाथावां रो उपयोग करै है।

ऐतिहासिक लोकगाथावां रै अलावा बगड़ावत, निहालदे-सुल्तान, ढोला-मारू, जलालबूबना, नागजी-नागवंती आद इसी लोकगाथावां है, जिणां में समाज रै सगळै अंगां रो सांगोपांग वर्णन मिलै। राजस्थानी जनजीवण में प्रचलित परम्परावां जियां पुत्र-जन्म, ब्यांव आद् रीतियां रो वर्णन ई आं गाथावां में विस्तार सूं मिलै। इणरै साथै राजस्थानी तिंवारां, जियां सावण री तीज रो वर्णन ई उल्लेखनीय है। लोकविश्वास तो आं राजस्थानी गाथावां में भरया पड़्या है। विणज-व्यापार किण भान्त करयो जावतो, व्यापार में काम आवण आळा नांव जियां बिणजारा, मोदी, कोठी, हाट, बिछायत, कतार, जोखम, हुंडी आद री सूचना इण गाथावां री विशेषता है। राजस्थान में पशुधन समाज में श्रेष्ठ धन मानीजै। बेटी रो बाप आपरी बेटी नैं दायजै में गाय-भैंस अर ऊंठ दिया करतो। दायजै में गायां अर ऊंठां रा टोळा देवण रा उल्लेख सैकड़ां लोकगाथावां में मिलै। प्रेम-गाथावां में लुगायां री सामाजिक स्थिति रो चित्रण है। कैवण रो मतलब है कै जीवण री विविध अवस्थावां अर अनुभवां रो चित्रण आं गाथावां में मिलै।

अंत में आ बात कैवणी उचित है कै आज रो इतिहासकार जे राजस्थान री सांगोपांग सामाजिक अर आर्थिक इतिहास लिखणो चावै तो उणनैं राजस्थान में प्रचलित लोकगाथावां अर लोकगीतां रो अध्ययन जरूर करणो चाहीजै, पण साथै ई औ ध्यान भी राखणो जरूरी है कै आं गाथावां में वर्णित घटनावां नैं ऐतिहासिक स्वीकार करणी अेक अलग बात है।

राजस्थानी भाषा अर इतिहास रो साच

राजस्थान विधानसभा मांय जद-जद राजस्थानी भाषा री मान्यता सारू आवाज उठाई जावै, तद-तद राजस्थान रा अलग-अलग अंचलां रा विधायक इणरै पख अर विपख मांय आप-आपरो अलाप सरू कर देवै। उण बगत सत्ता पख मांय बैठ्योड़ा राजनेता आपरै वोट-बैंक में नुकसाण रै डर सूं मातृभाषा री मान्यता रो प्रस्ताव पाछो ले लेवै। इण भान्त लारलै पिचपन बरसां सूं राजस्थानी भाषा आपरै वाजिब हक सूं वंचित हुयनै अेक निर्वासित जीवण जी रह्यी है।

जद्यपि अठै री साहित्यिक संस्थावां, साहित्यकार अर मारवाड़ी बोली रै प्रभाव आळा छेत्रां रा जन प्रतिनिधि समै-समै पर राजस्थानी भाषा री मान्यता सारू आपरी आवाज उठावण में पाछ नीं राखी। जिका लोग राजस्थानी भाषा रो राजस्थान मांय ई विरोध कर रह्या है, उणांरै मन मांय शंका रा मोकळा कारण घर कर्‌योड़ा है। पण मोटा कारण घणा कोनीं। राजस्थान मांय लारलै पचास-साठ बरसां पैली बारै सूं आयनै अठै स्थायी रूप सूं बस्योड़ा लोग, जिणां री मातृभाषा सरू सूं हिन्दी ई रह्योड़ी ही, उणां नैं इण बात रो भय है कै जे राजस्थान मांय राजस्थानी भाषा नैं मान्यता मिलगी तो उणांरै टाबरां री मुश्किल वध जासी। पण इसा लोगां री संख्या ई कम ही है। राजस्थान मांय अठै री अगूणी अर दिखणादी छेत्र री रियासतां मांय जाया-जलम्या उठै रा मूळ निवासी आज इण बात सूं भयभीत है कै अबार जिकी राजस्थानी भाषा विभिन्न माध्यमां सूं बोलण अर लिखण में काम आय रह्यी है, उण माथै मारवाड़ी बोली रो घणो प्रभाव है। अै लोग इणनैं आपरै सारू फायदैमंद नीं मानै। इण कारण सूं बै राजस्थानी भाषा री मान्यता रो भी विरोध करता रैवै है। राजस्थानी भाषा रै विरोध रा अै दोनूं ई स्वर बिरथा अर लचर है। इण दोनूं ई बातां में कोई दम-खम नीं है। औ तो अेक सही काम में रोड़ो अटकावण आळी बात है। आज राजस्थानी भाषा नैं बोलण अर समझण आळा री संख्या दस करोड़ रै अड़ै-गड़ै है। राजस्थानी भाषा रो विरोध करणियां नैं इण बात रो ध्यान राखणो चाहीजै कै इणसूं वत्तो विरोध तो गुजराती, मराठी, पंजाबी, असमी आद प्रांतीय भाषावां रो आप आपरै राज्यां मांय हुयो हो। पण अै सगळी भाषावां छाती ठोकनै आपरै राज्यां री मातृभाषा बणगी। राजस्थान मांय ई राजस्थानी भाषा नैं देर-सवेर मातृभाषा घोषित करणी ई पड़सी।

राजस्थानी भाषा रो बिरथा विरोध करणिया लोग इण बात सूं भली-भान्त परिचित है कै राजस्थानी भाषा साहित्यिक अर वैज्ञानिक दीठ सूं अेक सिमरध भाषा है अर इणरी अेक लांबी अैतिहासिक परम्परा रह्यी है। पण बै इण बात सूं परिचित नीं है कै लारला तीन सौ बरसां सूं राजस्थान रा सगळा रजवाड़ां री प्रशासनिक भाषा भी राजस्थानी ई ही।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार रै नांव सूं अेशिया में चावै महकमै में ३५,.

इतिहास रो

राज्य अभिलेखागार सूं लगैटगै साठ अैतिहासिक दस्तावेजां री फोटो प्रतिलिपियां भी प्रस्तुत करीजी। आं अैतिहासिक दस्तावेजां रो चयन करण मांय समिति रा अध्यक्ष अर सदस्यां रै साथै इण आलेख रै लेखक रो ई घणमोलो सहयोग रह्यो।

राजस्थान भर में सन् 1920 सूं रियासतां मांय उत्तरदायी शासन सारू जिका जन आन्दोलन हुया वै सगळा राजस्थानी भाषा रै माध्यम सूं ई लड़्या गया। आं आन्दोलनां रा नेता आपरा भाषण, अपीलां अर पेम्फलेट राजस्थानी में ई प्रचारित-प्रसारित करता हा। रियासतां रा लोगां रो राजस्थानी नैं टाळ दूजी किणी भाषा सूं कोई सरोकार ई कोनीं हो। राजस्थान राज्य अभिलेखागार में रियासतां रै जन-आन्दोलन सूं सम्बन्धित जिका दस्तावेज सुरक्षित है, उणांरै आधार माथै कह्यो जाय सकै है कै अबार रै संयुक्त राजस्थान री नींवां री मजबूती मांय राजस्थानी भाषा ई आपरो सांतरो योगदान दियो हो।

छतांपण लारला पचपन सालां रै उपरान्त भी राजस्थानी भाषा आपरै खुदरै प्रदेस मांय आपरो उचित स्थान नीं पाय सकी, आ अेक भारी विडम्बना है। आपांनैं इण बात माथै भी गौर करणो चाहीजै कै जद सन् 1949 में देसी रियासतां रो अेकीकरण हुयनै राजस्थान रो निर्माण हुयो तो आपणा राजनेता राजस्थानी भाषा नैं उण रो उचित स्थान किण कारण सूं नीं दिराय सक्या। इणरी पृष्ठभूमि में कोई प्रशासनिक कारण हो या कोई दूजो। म्हारी दीठ में इण रो अेक कारण राजस्थान में स्वतंत्रता आन्दोलन रै दौरान ही त्यार हुयग्यो हो। राजस्थान री घणकरी वडी रियासतां रै जन-आन्दोलनां मांय उठै रा मूळ निवासियां रै साथै वडी संख्या में मध्यप्रदेस, उत्तरप्रदेस अर पंजाब आद इलाकां सूं आयोड़ा वुद्धिजीवी भी सक्रिय हुयग्या हा। उणां रो आं आन्दोलनां मांय खासो दबदबो भी हो। घणकरा इसा बुद्धिजीवी हिन्दी भाषी हा। राजस्थान रै निर्माण में ई आं लोगां री लूंठी भूमिका रह्यी ही। बाद में मंत्री ई आं मांय सूं बण्या। बां हिन्दी भाषा रो पख लियो अर अठै रा मूळ नेता झोड़-झपाट सूं बचण सारू उणां री बात नैं सहजां स्वीकार कर लेवणो ई उचित मान्यो। इणरै साथै हिन्दी-भाषी नेता जिका केन्द्र मांय सत्ता में बैठ्योड़ा हा, वै भी हिन्दी-भाषी राज्यां री संख्या मांय कमी नीं आवण देणी चांवता हा। इण भान्त राजस्थानी भाषा आपरै वाजिब हक सूं वंचित रैयगी। पण अबै राजस्थान में राजस्थानी भाषा रै विरोधियां नैं ऊपर बतायोड़ा अैतिहासिक तथ्यां रै अध्ययन सूं औ आछी तरै समझ लेवणो चाहीजै कै राजस्थानी भाषा रै साथै जिको अेक सुनियोजित षड्यंत्र रचीज्यो, वो लंबै समै तक टिकण आळो नीं है। राजस्थानी नैं उण रो वाजिब हक देवणो ई पड़सी।

बीकानेर राज

बीकानेर राजघराणै री
राजघराणै रै राव जोधा रा म
राखी। तद सूं अवार तांईं इ
स्वतंत्रता रै पछै बीकानेर रिय
भाषा बीकानेर राजघराणै नैं
सदैव सवाई बणाई राखी। इ
अणमीत परिमाण मांय राजस्
रै कीं बरसां पैली राजस्थानी
राजस्थानी भाषा मांय बोलतो
भाषा में रंग्योड़ा हा। आ स्थि
तापछै बीकानेर राज मांय वा
हिन्दी अर अंग्रेजी माथै बणाय

सरू सूं ई बीकानेर र
उपयोग कर रह्यो हो क्यूंकै
खासो हेत हो। रोजीना री भा
भाषा बोलता। राजघराणै री
बीकानेर राजघराणै आपरै अ
आपरै सचिवालय स्तर पर र
रा अवसर दिया। नीचलै स्तर
अेक ई भाषा नैं बरतता। अठै
सिरै राजस्थानी साहित्य री र
राव बीका कवि माधूलाल नै
निजर कर सम्मान दियो। बार
बगत अर उणरै पछै ई बीका
साहित्य रच्यो। संत-महात्मा

बीकानेर रा राजा राव
वांरी कीरती में बीठू सूजा क
मानी जावै। इण पोथी में राव
माथै जकी विजय हासल क
मेहा बीठू ई इणी नांव सूं अे

बीकानेर रा ई राजा
नांव री संस्कृत पोथी री राज
रीझनै सवा क्रोड़-पसाव री

राणै मांय राजस्थानी रो वैवार

पांच सौ बरसां री लूंठी थाती रह्यी है। मारवाड़ रै राठौड़
टा बेटा राव बीका वि. संवत् 1545 मांय इण री नींव
री आपरी लूंठी साख रह्यी है। आ बात न्यारी है कै
सत नैं ई 'सैंगठ राजस्थान' मांय रळा लीवी। राजस्थानी
रासत मांय मिली। विरासत री इण साख नैं औ घराणो
रो सुफळ औ हुयो कै लारलै पांच सौ बरसां मांय अठै
नी साहित्य रो सिरजण हुयो अर रियासत रै विलीनीकरण
अठै री राजकाज री भाषा रह्यी। अठै रो आम जन भी
लिखतो अर पढतो रह्यो है। अठै रा गांव अर स्हैर मायड़
ति उगणीसवीं सदी रै छेकड़ तांईं चालती रह्यी। अंग्रेजी
परण लागी। पण तोई, राजस्थानी आपरो बडेरचारो उर्दू,
ं राख्यो।

जघराणो जीवण रै हरेक पख मांय राजस्थानी भाषा रो
अठै रा राजावां अर राजवियां रो राजस्थानी साहित्य सूं
ा भी सगळां री राजस्थानी ही। दरबार अर जनता अेक ई
लुगायां ई राजस्थानी साहित्य कांनी घणी रुचि राखती।
सरै मांय साहित्य सिरजण नैं जित्तो बधावो दियो बित्तो ई
जस्थानी रो सगळेठ वैवार कर उणनैं घणी-घणी पांगरण
सूं लेयनै राज मांय नीति निर्धारण करण आळा सैंग लोग
रा राजा साहित्यकारां नैं आसरो देवता थकां खुदोखुद ई
चना करी। कह्यो जावै कै बीकानेर री थापना करण आळा
खारी गांव अर चारण चन्नण खिड़िया नैं 'लाख पसाव'
ठ चौथो तो राव बीका रै बगत रो सिरैनांव कवि हो। उण
नेर में चारणां, संतां अर जैन साधुवां घणमोलो राजस्थानी
लोक शैली मांय साहित्य सिरजण करयो।
जैतसी रै बगत चारण कवि सूजो बीठू घणो नांव कमायो।
त 'राव जइतसी रउ छंद' डिंगळ साहित्य री अनुपम पोथी
जैतसी मुगल बादसाह हुमायु रै भाई कामरां सूं जूझनै उण
री, उण रो सांगोपांग वर्णन है। इणीं प्रसंग नैं लेयनै कवि
काव्य लिख्यो।
रायसिंघ घणा मानीता लेखक हा। बां 'ज्योतिष-रत्नाकर'
स्थानी टीका मांडी। बां बारठ शंकर नैं बांरी कविताई माथै
भेंट करी। रायसिंघ रा भाई पृथ्वीराज राठौड़ तो राजस्थानी

साहित्य रा ऊजळा नखत हा। वांरी गिणत अकबर रा नव-रत्नां मांय करी जांवती। वांरै रच्योड़ै 'वेलि क्रिसन रुकमणि री' ग्रंथ नैं पाचवै वेद री संज्ञा दिरीजी। वै दसरथ रावउत रा दूहा, वसदेव रावउत रा दूहा अर दूहा साहित्य में ई 'गंगाजी रा दूहा' नांव री घणमोली पोथ्यां लिखी। वांरै पछै बीकानेर रा महाराजा सूरसिंघ रै बगत अेक चारण कवि 'सूरसिंघजी रो पाघड़ी छंद' रच्यो। बीकानेर नरेशां री पीढी में अनूपसिंघ खुद आछा विद्वान अर साहित्य पारखी हा। वां प्राचीन राजस्थानी साहित्य अर संगीत साहित्य रै विगसाव छेत्र में घणो नांवचीन काम करयो। कित्ता ई विद्वानां अर संगीतकारां नैं वां आपरै गुणीजन खानै मांय आसरो दियो। वांरै बगत में कवि देवीदान वेताळ पच्चीसी, सिंघासण बत्तीसी अर सूवा बहतरी नांव री लोकचावी पोथ्यां लिखी। उणीं बगत जोसीराय 'दम्पति विनोद' री रचना करी। महाराजा अनूपसिंघ राजस्थानी रा हजारूं दूहां नैं भेळा करवायनै 'दूहा रत्नाकर' नांव रो संकलन त्यार करवायो। इण पछै महाराजा सुजाणसिंघजी रै आसरै मांय कवि जोगीदास मथेरण बरसलपुर गढ विजय, सुजाणसिंघ रासो अर राधाकिसनजी रा दूहा सिरैनांव सूं भ्रमर-गीत परम्परा रा छिंयासी दूहा बणाया।

इणीं भान्त गजसिंघजी रै आसरै रा कवि गोपीनाथ गाडण अेक नामी ग्रंथ 'ग्रंथराज' त्यार करयो। महाराजा रो मंत्री भीमसिंघ 'गजनामा' नांव री ख्यात त्यार करवाई। गजसिंघ रै पछै महाराजा रतनसिंघ रै राज मांय बीठू भोमा 'रतन-रूपक', 'रतन-विलास' अर 'रतन जस प्रकास' नांव रा तीन ग्रंथ त्यार करया। आंरै ई राज में सागरदान 'रतन-रूपक' लिख्यो। महाराजा रतनसिंघ रा भाई लिछमणसिंघ 'मुंहता नैणसी' री ख्यात री पड़त करवाई।

महाराजा रतनसिंघ रै पछै महाराजा सरदारसिंघजी अर डूंगरसिंघ रै राज मांय सिंढायच दयालदास राजस्थानी भाषा में दोनूं रै राजकाज रो लेखो-जोखो तो विस्तार सूं अर पैलड़ी पीढ्यां रो लेखो संक्षेप में लिख्यो। दयालदास रा लिख्योड़ा ग्रंथ- 'बीकानेर रै राठौड़ां री ख्यात', 'ख्यात देस-दरपण' अर 'आर्य आख्यान कल्पद्रुम' राजस्थानी रा ख्यात ग्रंथां मांय घणा महताऊ जाणीज्या। आं ख्यातां रै अलावा ई दयालदास 'जस-रत्नाकर', 'पंवार वंश दरपण', 'सुजस बावनी', 'उजास इक्कोसी' अर फुटकर डिंगळ गीतां री रचना करी। महाराजा गंगासिंघजी तो राजस्थानी भाषा रा घणा लूंठा हिमायती हा। वां इटली रै विद्वान डॉ. अेल. पी. टैस्सीटोरी सूं बीकानेर रै राज्य पुस्तकालय सूं राजस्थानी ग्रंथां री विवरणात्मक सूचियां त्यार करवाई। इण सूचीकरण सूं शोधार्थियां नैं घणो लाभ हुयो। टैस्सीटोरी वेलि क्रिसन रुकमणि री, राव जइतसी रउ छंद अर वचनिका राठौड़ राव रतन महेसदासोत री रो संपादन करयो। महाराजा गंगासिंघजी रै ई बगत महाराज जगमालसिंघ पृथ्वीराज रची 'वेलि' री टीका लिखी जिणनैं बाद में ठाकर रामसिंघजी अर सूर्यकरण पारीक संपादित कर छपवाई।

महाराजा सार्दुलसिंघजी रै शासन मांय 'सार्दुल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट री थापना हुयी। इण संस्था राजस्थानी भाषा रै विगसाव री दीठ सूं कई घणमोला ग्रंथां रो प्रकासण करयो। बीकानेर राजघराणो आपरो घरू अर दूजा राज्यां रै राजावां सागै आखो पत्र वैवार राजस्थानी भाषा मांय ई करया करतो। बीकानेर रै अभिलेखागार मांय भेळा

करयोड़ा दस्तावेज इण बात रा मूंडै बोलता प्रमाण है। घरू पत्र वैवार रै अलख सगळो लेखो-जोखो ई राजस्थानी माय ई मिलै। जलम सूं लेयनै मृत्यु तांईं रा अै अभिलेख पढियां आपांनैं अेकै कानी सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक स्थितियां री जाणकारी मिलै उठै ई दूजै कांनी राज-परिवार री जीवन-शैली री भी ठा पड़ै। बीकानेर रा राजा आपरै बराबर रै दूजै राजा नैं आपरी निजू बात कै दूजी कोई बात लिखता तो उणरी भाषा राजस्थानी ई होंवती। हां, आ वात दूजी है कै कई वार आ बात पद्य भाषा मांय ई लिखी जांवती। इण ढंग रा कागदां नैं 'खरीता' नांव सूं जाण्या जांवता। इसा खरीता बीकानेर रै अभिलेखागार मांय मोकळा ई ठावा पड़्या है। अठै अेक वतावण जोग बात आ है कै राजस्थान रै सगळा राजघराणा आपरै पत्र वैवार अर दस्तावेजां रा नांव मुगल शैली रै उणियार ई राख राख्या हा। अठै रा राजा फारसी नीं जाणता। इण वास्तै कागद-पत्र राजस्थानी मांय ई मांडता। मुगल बाहसाह कै बांरै किणी प्रतिनिधि नैं राजस्थानी मांय ई कागद लिखता हा। राजस्थानी भाषा नैं जाणणिया लोग मुगल दरबार मांय होंवता अर बै ई वां कागदां नैं वांचनै सुणाय देंवता। आ बात जगचावी है कै मुगल दरबार मांय राजस्थानी रो वोलवालो हो।

मुगल दरबार री ज्यूं बीकानेर रा राजा ई कागद-पत्र आपरै हाथ सूं कोनी मांडता, जिणसूं आज ई वांरी हस्तलिपि री ठाह कोनीं पड़ै। सगळो पत्र वैवार बै दूजै लिखारै कनै सूं लिखवाया करता। बीं वगत कागद माथै किणीं राजा-राणी कै राजकुंवर रा दसखत नीं मिलै। राजा लोगां कानी सूं कई भान्त रा कागद लिखवाया जांवता। जद बै किणी आदमी माथै घणा मेहरबान होंवता तो उणनैं 'खास रुक्को' इनायत करता। बीकानेर राज रा पुराणा सेठ-साहूकारां रै घरां मांय आज ई अै देखण मांय मिलै। आं रुक्का, परवाना मांय वरतीजी राजस्थानी भाषा आज री राजस्थानी सूं न्यारी नीं है। अभिलेखागार री कई वहियां मांय अै रुक्का, परवाना ठावा मंड्योड़ा है।

बीकानेर राज रो आखो काम राजस्थानी भाषा मांय हुंवतो। राज री कई प्रशासनिक इकाइयां होंवती, सैंगां सूं छोटी इकाई 'गांव' हो। गाव रै राजस्व रो सगळो काम चौधरी री मार्फत होंवतो। इण वास्तै बगत-बगतसर चौधरी नैं राज कानी सूं कई भान्त रा निरदेस अर सल्लावां दिरीजती, बै राजस्थानी मांय होवती अर चौधरियां रा पाछा उथळा ई राजस्थानी मांय होंवता। इणीं भान्त चीरा, परगना रै अधिकारियां सागै ई आ ईज प्रक्रिया अपणाई जांवती, पछै जांवता राज मांय निजामी व्यवस्था कायम हुयी। निजामत रै हेठै तहसीलां बणी, पण भाषा वैवार तो राजस्थानी मांय ई होवता रह्यो। बीकानेर रजवाड़ै मांय हरेक स्तर माथै राजस्थानी ई बरतीजती। आज ई न्यारै-न्यारै महकमा री बहियां, चौपड़्यां, पानड़्यां, कागदां सूं औ ठा लागै कै राजस्थानी मांय काम करण सूं अठै रै रजवाड़ै नैं घणी सोराई रैवती, क्यूंकै राज अर समाज री अेक ई बोली अर अेक ई भाषा ही। भान्त-भान्त रा अभिलेखां रो जखीरो देख्यां सूं ठा लागै कै राजस्थानी सरू सूं ई कित्ती सिमरध भाषा रह्यी है। राजस्थानी भाषा रै वैवार रै कारण ई राज रो आखै रजवाड़ै माथै दवदबो रह्यो। राजस्थानी भाषा उण बगत जणै-जणै रै काळजै इण भान्त मंड्योड़ी ही कै कोई आ सोच ई नीं सकतो कै अेक दिन आजादी

मिल्यां पछै आ भापा राजनेतावां री ओछी सोच री बळी चढ जावैला।

म्हनैं बीकानेर राज री कोई दो हजार बहियां री विवरणात्मक सूची बणावण रो मौको मिल्यो तद लगातार औ ई सोचतो रह्यो कै जे पैली री भान्त बाद में ई राजस्थानी रो वैवार चालू रैवतो तो निस्चै ई आज राजस्थान री अेक न्यारी ई छिव होवती। अेक भाषा हजार बरसां पैली अठै जलमी, पांगरी बींनैं तो छोड छिटकाय दी अर दूजी भाषा नैं आजादी रै पचास बरसां मांय धिंगाणै अपणावण री चेष्टा करीज रह्यी है। कनै अेक सिमरध भाषा होंवतां थकां ई भाषा रो फोड़ो क्यूं भुगत रह्यो है–औ प्रान्त। बीं बगत राजस्थानी भाषा नैं जाणणिया अर लिखणिया दूजी भाषा नैं जाणता ई कोनीं, इण कारण बांरी भाषा में जिकी सबदावळी काम मांय लिरीजती बा ठेट राजस्थानी री ई मिलै।

बीकानेर राज री बहियां में काम लिरीजी सबदावळी मांय सूं कोई दोय हजार सबदां रा परिभाषावां समेत अरथ त्यार करीज्या है। देस-विदेस रा शोध-खोज करणियां खातर आ सबदावळी घणी महताऊ है। बीकानेर राज रो जिको ई काम-काज होंवतो बो आं बहियां मांय दरज है।

अै सगळी बहियां सतरहवीं सदी सूं लगायनै राजस्थान रै अेकीकरण सूं पैली तक री मिलै है। हर मुख्य सीगै री बही रै साथै सैकड़ूं सीगै री बहियां मिलै है। हासल बही, लेखा अर जमा खरच री बही, जगात बही, जमीं रै कागदां अर अमल रै चिट्ठा री बही, कूचमुकाम री वही, मरजाद रै कागदां री बही, कमठाणा बही, पट्टा-परवाना बही, ब्याव वही, तलब तैयारी (तलबाणा) बही, चिट्ठा अर खतां री बही आद मुख्य सीगा है। अेकली कागदां री बही मांय सेठ, नाता, फरोही, गुनैगारी, पेसकसी, जमाबंदी, सिरबंधी रा कागद मिलै है।

उगणीसवीं सदी रै सरू मांय बीकानेर राज में उर्दू भाषा रो बोलबालो ई हुयग्यो हो। पण राजस्थानी राजकाज मांय प्रमुख भाषा बणी रह्यी। बीकानेर राज में थापना सूं लगायनै 1956 तक रो दीवानी काम राजस्थानी मांय ई चालतो हो। मालमण्डी रै दस्तावेजां रा सीगा तो उर्दू मांय हा, पण उणांरी मांयली इबारत राजस्थानी भाषा में ई लिख्योड़ी है। मुतफरकात माल, कुलियात माल, नम्बरी दीवानी, परचा खतोनी, ढाल मंच, मुशाबी, हकमोरूसी, सनदी कागजात, मिसल बन्दोवस्त, कौंसिल रा हुकम, रोकड़, जमा बन्दी अर मोहर छाप रा पट्टा इसा प्रमुख सीगा हा।

अठै फेरूं अेक बात बतावण जोग है कै बीकानेर राजा जिण भान्त निजू अर राजकाज माय राजस्थानी भाषा रो उपयोग करता रह्या है, उणीं भान्त बोलचाल मे ई इणीं भाषा नैं बोलता। आपरी सेना अर प्रजा दोन्यू में आपरी बरसगांठ, दसरावै अर होळी-दीवाळी रै अवसरां अर बगत-बगत माथै राजा अर सरदार लोगां री भाषण देवण री परम्परा कोई नूवी नीं ही। राज्य रा सरू रा राजावां रै भाषण रो उल्लेख तो जरूर मिलै है पण लिख्योड़ा भाषण देखण में नीं मिलै। पण जद सूं राज्य मांय छापाखानै रो विगसाव हुयो, उण वगत रा राजस्थानी भाषा में दियोड़ा राजावां रा भाषण ठावा मिलै है। महाराजा गंगासिंघ, महाराजा सार्दुलसिंघ अर आखीर मांय महाराजा डॉ. करणीसिंघजी

रा घणकरा भापण राजस्थानी भाषा मांय दियोड़ा है। अठै आ फेरूं अेक विशेषता ही कै बीकानेर रा लोग छेत्र रो दोरो करण नैं जांवता वठै वांरो अभिनंदन राजस्थानी भाषा मांय ई हुया करतो। बीकानेर मांय राजावां नैं जनता कानी सूं जिका राजस्थानी भाषा में अभिनंदन-पत्र भेंट करया जांवता हा, वै आज ई बीकानेर रै जूनागढ री दर्शक दीर्घावां मांय ठावा है।

इणीं भान्त जद आपां रजवाड़े मांय राजस्थानी रै वैवार री वात करां तो बीकानेर रै राजा राजस्थानी भाषा रै लोकगीतां नैं कित्तो महत्त्व दियो, उण रो दीठाव उण वगत रा लोकगीतां नैं सुणियां सूं लागै। बीकानेर रा महाराजा गंगासिंघ रै वगत दिनूंगै सूं लेयनै सोपो पड़्यां तांई लोक गायिकावां महलां मांय गीत गावती, वै सगळा गीत राजस्थानी मांय ई हुंवता। खास-खास अवसरां माथै राजस्थानी 'मांड' सुणणो ई राजावां रो खास शौक हो। मेळा-मगरियां रै मौकै ई गीतां रा हिलोर उपड़ता। राज रा वैण्ड ई मारवाड़ी धुनां ई बजांवता। कैवण रो अरथाव औ कै राजस्थानी भाषा सूं निरवाळी कोई चीज नीं ही।

वियां तो बीकानेर रा सगळा ई राजा अर राणियां राजस्थानी भाषा रा उपासक हा, पण गंगासिंघ, सार्दुलसिंघ रै जमानै मांय हिन्दी, अंग्रेजी अर उर्दू ई च्यारूं कानी बरतीजणी सरू हुयगी ही। पण दोनूं ई राजा आपरी राजस्थानी भाषा अर राजस्थानी माठ छोडी कोनीं। स्वतंत्रता रै पछै महाराजा करणीसिंघ ई राजस्थानी री जोत नैं जगाई राखी। बां राजस्थानी मांय बोलण रो व्रत लियो अर राजस्थानी भाषा री मानता खातर अणथक प्रयास करया। जद पंजाबी भाषा रै आधार माथै पंजाब राज्य रो गठन हुयो तो 14 मार्च, 1966 नैं लोकसभा मांय राजस्थानी भाषा नैं मान्यता री वात राखी। बां कह्यो– जद कै राजस्थानी दो करोड राजस्थानियां री भाषा है, पण इण प्राचीन भाषा नैं सविधान री मान्यता कोनीं। म्हारो आपसूं अनुरोध है कै आप म्हारै विल रो समर्थन करनै राजस्थानी नैं मान्यता दिरावण सारू सहयोग करो।

आगै फेरूं 16 फरवरी, 1968 नैं बां लोकसभा मांय राजस्थानी भाषा री मान्यता सारू आपरो अैतिहासिक भाषण देवता कह्यो– हूं राजस्थानी रा दोय करोड़ लोगां कानीं सूं बांरी भावना प्रगट कर रह्यो हूं। राजस्थानी म्हारी मायड़ भाषा है। आ, बा भाषा है जिकी देस नैं जुझारू जोधा दिया है। भाषा शास्त्रियां री दीठ मांय आ अेक सुसंकृत अर सिमरध भाषा है। वगत माथै जनभावना नैं समझणो राजनैतिक समझदारी मानी जावैली। आ मांग राजस्थान रै अेकीकरण रै सागै ई सरू हुयगी ही। राजस्थान री भावनात्मक अेकता रै वास्तै राजस्थानी नैं संवैधानिक मान्यता जरूरी है। इण विधेयक सूं राष्ट्र री अेकता माथै कोई आंच नीं आवैला।

सन् 1974 पछै महाराजा करणीसिंघजी संसद सदस्य कोनी रह्या। सन् 1988 में आपरै देवलोक गमन हुयां तक आप राजस्थानी नैं मान्यता दिरावण रा जतन करता रह्या। बांरी धर्मपत्नी राजमाता सुशीला कुमारीजी रो अर बांरै कड़ूंबै रा दूजा लोगां रो ई राजस्थानी रै प्रति मोकळो सनेव रह्यो है। राजस्थानी भाषा अर राजस्थानी साहित्य सारू राज-परिवार कानी सूं मालो इमदाद ई दी जावै।

बीकानेर रा सेठ-साहूकार

राजस्थान रा सगळा राजपूत राज्यां मांय सेठ लोगां री अेक लंबी परम्परा रह्यी है। जिको राज्य जित्तो पुराणो है उणमें सेठ लोगां रो वर्ग उत्तो ई पुराणो। सेठ-साहूकारां रो औ वर्ग दो भागां में बंट्योड़ो हो। पैलड़ो वर्ग राज-मंत्रियां रो हो, जिण रा घणखरा सदस्य राज्य रा मंत्री, राजदूत या पछै सेनापति जैड़ा पदां पर लाग्योड़ा रैवता। सेठ लोगां रो दूजो वर्ग व्यापारियां रो हो। औ वर्ग ई खासो प्रभावशाली रह्यो है। सेठ-साहूकारां रै आं दोनूं वर्ग रा लोगां वगत पड़ियां आपरै राज्य रा शासकां री आर्थिक सहायता करनै खासी ख्याति अर्जित कर चुक्या हा।

बीकानेर राज्य घणो पुराणो नीं हुवण सूं सेठ-साहूकारां री परम्परा ई घणी पुराणी कोनीं। पण राज्य थरपणा री सरूआती सदियां में सेठ लोगां रो पैलड़ो राज्यमंत्री वर्ग अठै आपरो राजनैतिक अर सैनिक कौशल दिखायनै आपरो मोकळो ही प्रभाव बधायो। बीकानेर री भौगोलिक स्थिति रै कारण उण वगत तांईं व्यापारी वर्ग घणो विकसित नीं हो पायो; पण लारली सदियां, खास करनै 19वीं सदी में अर उणरै पछै औ वर्ग इत्तो धन सम्पन्न हुयो कै इण वर्ग रा लोग फगत राज्य मांय ई नीं बल्कै देस रै आर्थिक निरमाण में ई आपरी महताऊ भूमिका निभाई।

राव बीकाजी जद जोधपुर सूं रवाना होया, उण वगत वांरी सेना मांय की मुत्सद्दी अर साहूकार भी हा। आंमें मुत्सद्दी रै रूप में ओसवाळ जात रा लाला लाखणसी वैद, चौथमल कोठारी, बरसिंह बच्छावत अर साहूकार रै रूप में माहेश्वरी जात रा सालोजी राठी भी हा। सन् 1874 में जद पाउलेट बीकानेर राज्य रो गजेटियर त्यार कियो, उणमें राज्य री आबादी रै सर्वेक्षण री बगत नगर में रैवणिया 80 व्यापारी अर 10 मुत्सद्दी घराणां ऊपर उल्लेखित लाला, लाखणसी वैद नैं आपरा पूर्वज मानता। इणरै अलावा पांच व्यापारी घराणा चौथमल कोठारी अर लगै-टगै 150 घराणा सालोजी राठी नैं आपरा पूर्वज मानता। राज्य रा घणखरा ओसवाळ अर माहेश्वरी जात रा लोग ऊपर कथ्योड़ै घराणां रा वंशज ई है। व्यापारी वर्ग री दूजी जातियां में अग्रव ळ प्रमुख रह्या है। आं अग्रवाळां रा पूर्वज राज्य में ज्यूं-ज्यूं नूंवा गांव अर कस्बा अस्तित्व में आता गया, त्यूं-त्यूं बीकानेर राज्य रै आसै-पासै आयनै बसता गया।

इणां मांय सूं कई लोग जठै राज्य री थरपणा पछै ऊंचै पदां रा अधिकारी रह्या बठै ई कई लोग राज्य री सेना में जुद्धां रो संचालन करता थकां वीर गति पाई। मुत्सद्दी रै रूप में ओसवाळ घराणै रा मेहता कर्मचन्द बच्छावत, अमरचंद सुराणा अर मेहता हिन्दूमल आद रा नांव उल्लेख जोग है। माहेश्वरियां मांय मोहता बख्तावरसिंह ई दीवाण रै रूप में खासी ख्याति अर्जित करी।

उगणीसवीं सदी में भारत री आर्थिक स्थिति मांय घणी उथळ-पुथळ माची, जिण रो प्रभाव बीकानेर राज्य रा मारवाड़ी व्यापारियां माथै ई पड़ियां बिनां नीं रैय

सक्यो अर मजबूर होयनै उणां नैं राज्य सूं देस रै दूजा भागां में जावणो पड़्यो। आं माय सूं अनेक लोग तो संचार अर आधुनिक सुविधावां रै अभाव सूं उपजी आशंकावां रै बिचाळै पलायन करयो अर आपरी व्यापारिक सूझ-बूझ रै पाण भारत रै विणज-व्यापार नैं अंतरराष्ट्रीय स्तर माथै पुगावण में महताऊ भूमिका निभाई। आगै चालनै आं मांय सूं ई कीं लोगां पैलड़ै विश्व-जुद्ध रै पछै भारत रै अेकीकरण में योग देयनै देस रा प्रमुख उद्योगपतियां में आपरो स्थान वणायो। धपाऊ धन हुयां पछै विणज, व्यापार अर उद्योगां मांय लाग्योड़ा आं व्यापारियां आपरै मूळ राज्य बीकानेर समेत आखै देस में जन-कल्याण रा कामां में धन लगावणो सरू कर दियो अर देखतां-देखतां आंरै मार्फत चालता जन-कल्याण रा कामां रो समूचै भारत में जाळ-सो बिछग्यो। आं मांय सूं अनेक व्यापारियां राज्य री आर्थिक विगसाव योजना में ई धन लगावण रै साथै-साथै राज्य रै शासकां री ई घणी सहायता करी। आखिरकार जद 'अंग्रेजी भारत' में आं रै कारोबार में अंग्रेज राज अबखायां पैदा करणी सरू करी तद भी बै दूजा व्यापारियां रै सहयोग सूं भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में छानै-छुपकै ई सहयोग देयनै आपरै कर्त्तव्य रो भली-भान्ति पाळण करण सूं लारै नीं रह्या।

चूरू रा चतुर्भुज पोद्दार लगैटगै 200 बरसां पैली चूरू सूं व्यापार करण सारू भटिंडा (पंजाब) पलायन करयो। आंरा वंशज देखता-देखतां इत्ता धनवान हुयग्या कै उणां रो छोटकियो बेटो ताराचंद पोद्दार अर बी रा वंशज 'सतपीढिया शाह' कहाया। चतुर्भुज पोद्दार रै पौतै जिंदाराम रो बेटो मिर्जामल पोद्दार बैंकिंग अर विणज-व्यापार में अणूती ख्याति अर्जित करी। लगैटगै उणी'ज वगत में चूरू रा मोहनराय सरावगी खुरजा में जाय वसिया। आगै चालनै आंरा वंशज रानीवाळा रै नांव सूं प्रसिद्ध हुया। दोय सौ वरसां पैलां ई राजलदेसर रा हजारीमल दुधेड़िया बगाल रा अजीमगंज में जायनै कपड़ै रो व्यापार करण लागग्या। बीकानेर रा बंशीलाल अबीरचंद डागा अर अमरसी सुजानमल लगैटगै डेढ सौ वरस पैलां अठै सूं मध्यप्रदेस अर बनारस मांय आपरा कारोबार खोल चुक्या हा। थोड़ा-घणा लोगां नैं ई इण बात रो ठा है कै सन् 1828 में बंगाल सूं आसाम जायनै विणज-व्यापार करण वाळा पैला मारवाड़ी व्यापारी बीकानेर राज्य रा नौरंगराय अग्रवाळ हा। आरंभ में उणां तेजपुर में रवड़ रो कारोबार करयो। पछै उणां रो ईज बेटो हरविलास तेजपुर अर डिब्रूगढ में दूजी चीजां साथै-साथै चाय-उद्योग में प्रवेस करयो। सन् 1868 में उणां द्वारा खरीदयोड़ो चाय रो बगीचो आज ई आसाम में सगळां सूं पुराणो वगीचो बाजै।

म्हनैं सेठ हरखचंदजी नाहटा सूं ठा लाग्यो कै सन् 1748 में गेरसर रा श्री महासिंघजी अजीमगंज में जगत सेठ री टकसाळ रो प्रवन्ध संभाळ लियो हो। उण परिवार रा सेठ मेघराजजी कोठारी सन् 1812 में आसाम रै ग्वालपाड़ा में पूग्या हा। उणां सन् 1818 में वठै व्यापार थापन करयो हो, जको 'बडै गोळे' रै नांव सूं आज ई जाणीजै है। उणां सन् 1828 में व्यापार घणो फैलण सूं गोहाटी, तेजपुर अर चारहली में

भी व्यापार ठिकाणो वणायो हो। सन् 1830 में सेठ मेघराजजी कोठारी तेजपुर में जैन मंदिर ई वणवायो हो। सन् 1835 में बीकानेर सूं डांडूसर वाळा सेठ उदयचंदजी नाहटा कारोबार खातिर ग्वालपाड़ा पहुंच्या अर 'उदयचंद राजरूप' नांव सूं व्यापार थापण कर्यो हो। उणां रै पछै ई छापर रा श्री हुकमचंदजी नाहटा ई ग्वालपाड़ा में आपरो व्यापार सरू कर्यो हो। सन् 1839 में सेठ उदयचंदजी नाहटा, सेठ मेघराजजी कोठारी आदि मिल परा ग्वालपाड़ा में जैन मंदिर ई वणवायो हो, जिको आज तक कायम है। सन् 1864 में सेठ मेघराजजी कोठारी नैं 'राय बहादुर' री पदवी मिली ही। बाद में उदयचंदजी रै परिवार रा सेठ शंकरदानजी नाहटा आसाम में चापड़ (धुवड़ी), सिलहट, बाबुरियाहाट में पेढी थापण करी। पछै बंगाल में बोलपुर अर कलकत्ता में गद्दी वणायी ही। भारत रै बंटवारै रै बाद जद सिलहट, बाबुरियाहट पाकिस्तान में चलो गयो; पछै सिलचर, करीमगंज अर हाथरस में गद्दी थरपनै बठै व्यापार सरू कर्यो। उणरै बाद परिवार वाळा व्यापार नैं कानपुर, अगरतला, मुम्बई, दिल्ली आद घणी जगै फैलायो हो। इयां ई महासिंघ मेघराजजी कोठारी रो व्यापार ई गौहाटी, दिल्ली, कलकत्ता अर दूजी जाग्यां में फैल्योड़ो है, जठै सब उणांनै 'बडै गोळै वाळा' रै नांव सूं ओळखै। उदयचंदजी नाहटा रै परिवार में ही अगरचंदजी अर भंवरलालजी हुया है, जिका भाषा, इतिहास अर साहित्य रै छेत्रां में देस रा घणा मानीजता विद्वान रै रूप में ओळखीजै है।

सन् 1860 में जद दिल्ली अर कलकत्ता बिचाळै रेल मारग वणग्यो, तद तो राज्य रा जोध-जवानां रै साथै-साथै बूढा-वडेरा ई अळघी-अळघी जाग्यां जायनै आपरा डेरा जमावण लाग्या। बीकानेर राज्य रा सेठ रिद्धकरण सुराणा अर गणपतराय खेमका इणी'ज वगत में कलकत्ता गया अर सन् 1900 में बठै 'मारवाड़ी चैम्बर ऑफ कॉमर्स' री थरपणा करी। सुराणाजी इण रा पैलड़ा मानद सचिव बण्या। राजा शिवबक्स राय बागला अर रायबहादुर भगवानदास बागला बंगाल अर बर्मा जायनै चावळ, जमींदारी अर काठ रो धंधो करनै खासो धन कमायो। सेठ भगवानदास बागला नैं तो मारवाड़ियां मांय पैला करोड़पति बणण री गौरव मिल्यो। आगै चालनै बागला परिवार रा सेठ रामनिवास बागला तो 'केसरी हिन्द' बण्या। सेठ खेमराज बजाज बम्बई जायनै मारवाड़ियां में छपाई रै काम सारू पैलपोत स्टीम प्रेस लगायां अर 'वंकटेश्वर-समाचार' नांव सूं पैलड़ो दैनिक अखबार निकाळ्यो। बीकानेर रा ई सेठ बलदेवदास नाथाणी कलकत्ता जायनै पैलै 'कलकत्ता स्टॉक अेक्सचेंज अेसोसियेशन' री थरपणा करी। सरदारशहर रा सेठ चैनरूप दुग्गड़ ई कलकत्ता जायनै 'चैनरूप-सम्पतराम' नांव री फर्म थापित करी, जिणमें बैंकिंग रै कामां रै साथै-साथै इग्लैंड सूं सीधो कपड़ो आयात करीजतो। सेठ रुक्माचंद बहिचंद, सेठ उदयमल वैद, सेठ नरसिंहदास मूंधड़ा, सेठ खड़गसिंह, सेठ माणकचंद वैद अर सेठ सदासुख कोठारी री 'सदासुख-गंभीरचंद' नांव री फर्मां उगणीसवीं सदी रै आखरी दसक में कलकत्ता मांय थरपीज चुकी ही। इण फर्मां में कपड़ा अर बैंकिंग रो काम मुख रूप सूं हुंवतो। सेठ सदासुख कोठारी तो सन्

1902 में कलकत्ता माय 'सदासुख-कटळा' रो निर्माण करवाय दियो, जिको आज ई बडा बाजार, कलकत्ता रो सिरै व्यापारी केन्द्र हे। सन् 1883 में बहादुरमल रामपुरिया कलकत्ता मांय 'हजारीमल हीरालाल' नांव री कपड़ा फर्म थापित करी। इणीं बगत मे सेठ अगरचंद सेठिया, चिमनलाल गनेड़ीवाल ई कलकत्ता में आपरा व्यापारी प्रतिष्ठान थरपित कर चुक्या हा। बिहार में राज्य रा राजगढिया परिवार अभ्रक रो कारोबार करनै अग्रणी व्यापारी बण चुक्या हा। सन् 1900 रै पछै तो बीकानेर राज्य रा सैकड़ां व्यापारी अठै सूं पलायन करनै देस रै विभिन्न भागां मांय आपरा व्यापार थरप चुक्या हा।

मारवाड़ी व्यापारियां री भान्त ही बीकानेर राज्य रा व्यापारी ई जिण किणी छेत्र में गया, बठै री जरूरतां नैं ध्यान मे राखनै आपरो कारोबार आरंभ कर्‌यो। बैंकिंग रा कामां सूं जुड़्योड़ा लोग उण छेत्रां रै ग्रामीण अंचळां तांई प्रवेश करनै उठै रा करसां नैं अैडी नगदी फसल उपजावण सारू धन देवणो आरंभ कर्‌यो जिणरी अंग्रेजां सारू घणी माग हुवती। बंगाल अर आसाम री ब्रह्मपुत्र घाटी मांय पूगनै बीकानेर रा सेठ-साहूकार आयात-निर्यात रो काम अंगेज'र उठै रा सिरै व्यापारी बणग्या। जका सेठ लोग महाराष्ट्र अर मध्यप्रदेस सांमी गया वै अफीम अर कपास रो धंधो अपणाय मराठां रा बंकर अर सेना नैं रसद सप्लाई करणिया ठेकेदार बणग्या। इणी'ज भान्त जिका व्यापारी गगा-जमुना घाटी छेत्र सांमो गया उणां खुरजा, हापुड़, हाथरस, फिरोजाबाद, कानपुर अर मिर्जापुर में गल्लै रो काम अपणायो। धीरै-धीरै बीकानेर राज्य रा कीं सेठ-साहूकार लोग दूजा मारवाडिया री देखादेख आपरै छेत्रां में जमींदारी अर सट्टा लगावणा ई सरू कर दिया हा।

पैलड़ै विश्व-जुद्ध रै पछै आं मांय सूं घणकरा लोगां उद्योगां में प्रवेश पाय लियो। उद्योगां री थरपणा करण वाळा बीकानेर राज्य रा प्रमुख लोगां में सूरजमल नागरमल जालान रो नांव उल्लेख जोग है। इण फर्म सन् 1927-28 में बंगाल माय अेक जूट री मिल थापित करी। पछै इणी'ज फर्म रा मालकां 'डेवनपोर्ट' अर 'मालियोड्स' रा 'राइट' खरीदनै जूट री मिलां नैं औरूं बधायी। उण बगत में ई बीकानेर रै कनोई घराणो 'अेडरसन' रा राइट खरीदनै पटसन अर हेसियन रै निर्यात छेत्र में प्रवेश कर्‌यो। बीकानेर राज्य रा ई अेक दूजा सेठ भीखमचंद मोहता मध्यप्रदेस रा हिंगनघाट मे सूती कपड़ै री मिल थरपित करी। अठै ईज बीकानेर राज्य रा बंशीलाल अबीरचद डागा री फर्म लगोलग हिंगनघाट, नागपुर अर बदनेरा आद में सूती कपड़ा री मिलां चालू करी अर कोयलां री छह खानां ठेकै माथै ली। सन् 1930 में बीकानेर राज्य रा सेठ गणपत राजगढिया बिहार में ई अेक जूट मिल थरपी। सन् 1933 में सेठ गंगाधर बैद्यनाथ बागला कानपुर में अेक जणा रै भेळप में अेक जूट मिल खोली। लगैटगै इणीं बगत में 'हजारीमल हीरालाल रामपुरिया' नांव री फर्म कलकत्ता में कपड़ा री मिल खोली। अठै अेक दूजी फर्म 'अगरचंद भैरूदान सेठिया' रंग बणावण रो कारखानो खोल्यो। 'सेठ रामगोपाळ शिवरतन मोहता' कराची मे हरमन री हिस्सैदारी में वॉल

वियरिंग वणावण रो कारखानो खोल्यो। बीकानेर छेत्र रा जी. डी. कोठारी, अम. के. मेहता, माधोदास मूंधड़ा, डूंगरमल सेठिया इत्याद उद्योग धंधा में नांव कमा चुक्या है।

अठै आ वात ई उल्लेख जोग है कै बीकानेर रै औद्योगिककरण में ई आं सेठ-साहूकारां आपरो महताऊ योग दियो हो अर आज लग देय रह्या है। आजादी सूं पैलां बीकानेर में सन् 1929 में सेठ चांदमल चड्ढा 'वूल वरिंग' फैक्टरी खोली। गंगानगर रा सेठ शिवचंद झावक अर सेठ ईसरदास चौपड़ा ऊन साफ करण अर कॉटन जीनिंग फैक्टरी थरपी। आजादी रै पछै तो बीकानेर नगर, नोखा, चूरू, लूणकरणसर, नापासर अर गंगानगर में मोकळा सेठ-साहूकारां भान्त-भान्त रा उद्योग थापित कर्‌या। आं सगळां रो वर्णन करणो संभव नीं, क्यूंकै आंरी सूची खासी लांबी है।

बीकानेर जैड़ा मरुस्थळ राज्य रै सारू फगत राज्य रा संसाधनां रै बूतै विकास रा कामां सारू धन जुटावणो आसान कोनीं हो। राज्य रा सेठ-साहूकारां सैकड़ां वरस पैलां सूं राज्य में कुआ, वावड़ियां, ताळाव, वाग-वगीचा अर बींड़ आद वणावता रह्या पण 19वीं सदी रै छेकड़लै दसक सूं लेयनै भारत री आजादी तांई आं लोगां जन-कल्याण रै कामां में अणूंतो धन खरच कर्‌यो। राज्य में पाणी री समस्या रै समाधान सारू राज्य रो कोई कस्बो कै गांव लारै नीं रह्यो जठै सेठ लोगां कुओ नीं वणवायो हुवै। संस्कृत शिक्षा अर आयुर्वेद चिकित्सा नैं प्रोत्साहन देवण सारू जाग्यां-जाग्यां संस्कृत पाठशालावां अर आयुर्वेद औषधालय खुलवाया। अनेक सेठ-साहूकारां अंलोपैथिक अस्पताळ, डिस्पेंसरी अर प्रसूतिगृह रा निर्माण करायनै आपरो महताऊ योग दियो।

बीकानेर राज्य मांय काळ पड़णो तो साधारण वात ही। सन् 1899-1900 अर उणरै पछै पड़्या भीषण काळां री वगत अै ही सेठ-साहूकार जन-धन नैं बचावण सारू पाणी रै परवाण रुपिया खरच करण में ई संकोच नीं कर्‌यो। इत्तो ई नीं, महाराजा गंगासिंहजी रै शासन-काल में रेल-लाइण रै विस्तार अर सिंचाई सारू गंगानहर रै निर्माण रो अवसर आयां, आं सेठ-साहूकारां राज्य सूं जारी लाखूं रुपिया रा बोंड खरीद्या। सन् 1903 में जद बीकानेर में रेल परियोजना रो विस्तार करीज्यो, उण वगत सेठ कस्तूरचंद डागा इण काम पेटै 3,46,000 रुपिया सरकार नैं दिया। इणरै अलावा गंगानहर रै निर्माण कार्य में धन लगावण वाळां में हजारीमल हीरालाल रामपुरिया 5 लाख रुपिया, सेठ दानचंद चौपड़ा 20 लाख 50 हजार रुपिया अर सेठ बालचंद आसकरण 50 हजार रुपियां रा बोंड खरीद्या। राज्य में स्कूलां खुलावण वाळां में बीकानेर रो रामपुरिया परिवार बीकानेर में रामपुरिया कॉलेज, सेठ चम्पालाल बांठिया भीनासर में जवाहर हाई स्कूल, सेठ कन्हैयालाल लोहिया चूरू में लोहिया कॉलेज, अर सेठ जब्बरमल दुग्गड़ सरदारशहर में सेठ बुद्धमल दुगड़ विद्यालय' री थरपणा करी। आजादी आयां पछै तो आं सेठ लोगां बीकानेर रियासत रा छोटा-मोटा अनेक कस्बां में स्कूल अर कॉलेजां खुलवाय दी।

राज्य रा इसा सेठ-साहूकारां री संख्या हजारां मे है, जिणां बीकानेर राज्य सूं बारै

जायनै आपरो विणज-व्यापार अर उद्योग-धधै में वधेपो करनै देस रै जन-कल्याणकारी कामां अर आर्थिक विगसाव में आपरो जथा योग दियो। ऊपरै आया नांवां रै अलावा वीकानेर राज्य रा कीं प्रमुख सेठ-साहूकारां रा नांव इण भान्त है– सेठ विश्वंसर दास डागा, सेठ भैरूदान भंसाळी, सेठ खुशालचद डागा, सेठ नरसिंहदास डागा, रामनाथ डागा, सेठ गणपतराय फतैपुरिया, सेठ वजरगदास, सेठ शिवप्रसाद टीकमाणी, सेठ निहालचद सरावगी, सेठ हजारीमल दूधवैवाळा, सेठ थानमल मुहणोत, सेठ प्रेमचंद खजांची, सेठ राधाकृष्ण मेहता, सेठ भैरूंदान दुगड़, सेठ चिरंजीलाल वाजोरिया, सेठ ईशरचंद चौपड़ा, सेठ मदनगोपाळ दम्माणी, सेठ वैजनाथ जालान, सेठ मथुरादास मोहता, सेठ जवाहरमल खेमका, सेठ मूळचंद कोठारी, सेठ जगन्नाथ बजाज, सेठ गणेसदास गधैया, सेठ गंगाधर बगड़िया, सेठ मूळचंद मीमाणी, सेठ फूसराज दुग्गड़, सेठ कन्हैयालाल दुग्गड़, सेठ भैरूमल कोठारी, सेठ शिवदास मोहता, सेठ रामगोपाळ मोहता, सेठ दिलसुखराम लोहारीवाळा, सेठ गोविंदराम पेड़ीवाळ, सेठ रामेश्वरलाल गनेड़ीवाळा, सेठ नौरंगराय अजितसरिया, सेठ रामरतनदास वागड़ी, सेठ मंगूराम तापड़िया, सेठ सूरजमल मोहता, सेठ मूलचंद वाघेरा, सेठ सूरजरतन दम्माणी, सेठ मालचंद भादाणी, सेठ आशाराम झंवर, सेठ गजानंद लेवर, सेठ चम्पालाल वांठिया, सेठ विलासराय केडिया, सेठ मथुरादास वागड़ी, सेठ नरसिंहदास विन्नाणी, सेठ रामचन्द्र मंत्री, हनुमान प्रसाद कनोई, सेठ गिरधरदास मूंधड़ा, सेठ पूनमचंद सावणसुखा, सेठ गिरधारीलाल विहाणी, सेठ रामनारायण राठी अर सेठ मांगीलाल बागड़ी आद रा नांव उल्लेखजोग है। विणज-व्यापार नैं टाळ'र राजनैतिक हलकां में बीकानेर रो नांव रोशन करण आळां में गांव काळू रा श्री रूपचन्द नाहटा रो नांव खास करनै उल्लेखण जोग है। नेपाली क्रान्ति में आंरो अंजसजोग योगदान रह्यो।

आं सेठ-साहूकारां मांय सूं सेठ जयदयाल गोयनका, सेठ हनुमानप्रसाद पोद्दार, सेठ अगरचंद नाहटा, श्री कन्हैयालाल सेठिया अर साहित्य महोपाध्याय माणकचन्द रामपुरिया आद सिरै साहित्यकार हुया है जिणां बीकानेर रो नांव साहित्य जगत मांय उज्ज्वळ कर्‌यो है। पण आज तो अठै रा सैकड़ूं धनीमानी सेठ-साहूकार देस रै विभिन्न अंचळां मांय साहित्य अर शोध रै प्रति समर्पित हुय रह्या है।

अंत मांय म्हारो मानणो है कै वीकानेर सरीखै मरुथळ में पर्यावरण सन्तुलन बणावण माय सांगोपांग योगदान देवण आळी सेठ-साहूकारां री आ बिरादरी भारत रै विभिन्न छोटा-मोटा अंचळा मांय राजस्थान री संस्कृति री अंवेर मे आपरो सांतरो अवदान दियो है।

बीकानेर नगर रो विकास-क्रम

बीकानेर नगर री स्थापना नै लेयनै इतिहासकारां में कोई मतभेद नीं है। उणां मुजब जोधपुर रै शासक जोधा रो पुत्र राव बीको 30 सितम्बर, 1465 ई. नैं आपरै काकै कांधळ अर जांगळू रै अधिपति नापै सांखलै रै साथै जोधपुर सूं नूंवो इलाको जीतण सारू व्हीर हुया। इणरै पछै बीको लगैटगै बीस बरसां तांई वर्तमान बीकानेर नगर रै आसै-पासै रैवण आळा शासकां अर प्रमुख जातियां रै साथै जुद्ध, सँध अर बिवाह सम्बन्ध स्थापित करनै थोड़ो विसराम कर्‌यो अर रातीघाटी में ठावी जाग्यां देखनै आखाबीज रै दिन वि. संवत् 1545 (सन् 1488) में नगर (गढ) री नींव राखी। पांच सौ सूं बेसी बरसां रो लम्बो वगत इण नगर वास्तै हालांकै राजनैतिक दीठ सूं तो मोकळी उठा-पटक रो रह्यो, पण इण नगर रो क्रमिक-विकास नीं रुक्यो।

जद इण नगर रै विकास-क्रम रो अध्ययन करां तो पतो लागै कै लारलै पांच सौ बरसां सूं लगायनै आज तांई इण नगर रो चौफेरी विकास हुयो है। पण औ दुरभाग है कै जयपुर, जोधपुर अर उदयपुर नगरां रै विकास-क्रम री जाणकारी देवण आळी पुरालेख शोध-सामग्री री भान्त बीकानेर नगर री थरपणा री पैली दो सदियां री जाणकारी देवण आळी शोध-सामग्री उपलब्ध नीं है। पण साथै ई सौभाग री बात आ है कै उणरै बाद री जाणकारी सारू शिलालेख, जैन-उपासरां री अभिलेख सामग्री, व्यापारी घराणां री वहियां, मुत्सद्दी घराणां रा कागजात अर सरकारी नै गैर सरकारी अभिलेखागारां री अभिलेख सामग्री आज ई सुरक्षित है। जैन उपासरां में तो बीकानेर-नगर रा सचित्र विज्ञप्ति-पत्र (100 फुट लम्बा) भी है, जिणां में बीकानेर नगर रा बाजार, मारग, मिंदर अर दूजा मुख्य स्थानां नैं चित्रां रै रूप में दरसाया गया है। इणरै साथै जैन कवियां री लिख्योड़ी गजलां आद सूं बीकानेर नगर रै क्रमिक-विकास रै सम्बन्ध में महताऊ जाणकारी मिलै है।

राव बीको जिण गढ री नगर रूप में नींव राखी ही, उण रा अवशेष वर्तमान में लक्ष्मीनाथजी रै मिंदर रै सांमी बताया जावै है। राव बीकै रो समय जुद्ध रै दौरां में गुजर्‌यो हो। इण खातर उणरै साथै जोधपुर सूं आयोड़ा भाई-परसंगी अर दूजी *जात-बिरादरी रा कामगार आपरो रैवास गढ या उणरै आसै-पासै तांई ई सीमित राख्यो।*

मध्यकालीन नगर-व्यवस्था मुजब राव बीको ई नगर नैं व्यवस्थित ढंग सूं बसावणै री परिकल्पना करी हुसी। पण जल्दी ई स्वर्गवास हुय जावण सूं बो नगर-नियोजन री कल्पना नैं साकार रूप नीं दे सक्यो। इणरै बावजूद आपां कल्पना तो कर ही सकां हां कै राव बीकै अेक शासक रै रूप मे नगर री प्राथमिक आवश्यकता तो पूरी करी है। राव बीकै रै पछै उण रा उत्तराधिकारी शासकां बीकानेर नगर रै विकास में आपरो योग दियो। इण समै तक बीकानेर रै आसै-पासै रा लोग रुजगार वास्तै नगर में आवणा सरू हुयग्या हा। पण उण वगत तांई नगर में तरतीव सूं बसणै री व्यवस्था

कायम नीं हुय सकी ही।

राजा रायसिंह जद सन् 1574 में बीकानेर री गद्दी बैठ्यो तो वींरो ध्यान बीकानेर नगर नैं व्यवस्थित ढंग सूं बसावण कानी गयो। जेन उपासरै सूं प्राप्त वच्छावत वंशावळी सूं जाणकारी मिलै है कै राजा रायसिंह रै प्रधानमंत्री करमचन्द वच्छावत पुराणै ढंग सूं बीकानेर नगर नैं फेरूं बसायो अर जाति विशेष अर उणरै गोत्र मुजब नूंवा मोहल्ला वणाया, जिका आज ई बीकानेर रै मांयलै भाग में कम-वेसी रूप में देख्या जाय सकै है। राजा रायसिंह रै शासन-काल में नगर री सीमा रो विस्तार कर्‌यो गयो अर 30 जनवरी, 1589 ई. में नगर रै बारलै पासै नूंवै गढ री नीव राखीजी। इण नूंवै गढ नैं आज जूनागढ रै नांव सूं जाण्यो जावै है। इण रो निर्माण ई रायसिंह रै प्रधानमंत्री करमचन्द वच्छावत री देखरेख में ई हुयो। इणरै शासनकाल में मोकळो साहित्य रच्यो गयो अर बारै सूं विद्वानां नैं बुलायनै भरपूर संरक्षण दियो गयो। राजा रायसिंह रा भाई पृथ्वीराज 'वेलि क्रिसन रुकमणि री' नांव री प्रसिद्ध रचना इणीं वगत में लिखनै बीकानेर रो नांव अमर कर दियो।

महाराजा रायसिंह री मृत्यु रै पछै ई नगर रो बरोबर विकास हुंवतो रह्यो अर महाराजा सुजानसिंह रै शासनकाल तक तो बीकानेर नगर में आधुनिक सुविधावां रो सांतरो विकास हुय चुक्यो हो। महाराजा सुजानसिह रै समै में कवि उदयचन्द सवत् 1765 में आपरी 'बीकानेर गजल' नांव री पोथी मे बीकानेर नगर रा तत्कालीन बजारां, व्यवसायां, तळावां, कुआं-बावड़ियां, मिंदरां अर उण बगत रै रहण-सहन रो सांतरो वर्णन प्रस्तुत कर्‌यो है। उणरै मुजब अठै व्यवस्थित बजार हो, जिणरै बिचाळै अेक चौक हो। अलग-अलग व्यवसाय रा व्यापारी अलग-अलग बजारां में बैठता। साहूकार, बजाज, तम्बोळी, सर्राफ, गांधी, फड़िया, ठंठेरा, तेली, पटुआ, चूड़ीगर, छींपा, रंगरेज, कुम्हार, माळाकार, मोची, दरजी, मणिहार आपरी अलग-अलग दुकानां में कारोबार करता। बजार में हुण्डी रो ई प्रचलन हो। इणरे साथै नाई, वैद्य ई बजार में बैठता। उदयचन्द कवि बीकानेर रै बजार रै बारै में ओ ई बतावै कै नगर में लोगां रै घरां पर जाळियां, गोखा अर कोरणी रो काम हुयोड़ो हो। उस्ता लोग चित्रकारी में संलग्न हा। नगर मे धर्मशाळा अर भांडाशाह, लक्ष्मीनाथ, नीलकठ, नेमनाथ, गोगा पीर री दरगाह, शीतळा, आदिनाथ, चिंतामणि, भैरव, महेश्वर, नागणेचीजी, मदनमोहन, महादेव अर महावीर रा मिंदर बण्योड़ा हा। नगर में पीवण रै पाणी सारू अनूप सागर कुओ, आचार्यां रो कुओ, धवळागिर कुओ, नत्थूसर कुओ अर तळाबां में सूरसागर, जसवंतसर, सीसोळाव, हर्षोळाव तळाव विद्यमान हा। अठै पणिहारियां पाणी भर्‌या करती। इणीं भान्त गढ री गहरी खाई अर इणरै मायलै महला रो वर्णन है। नगर रो इतरो सजीव वर्णन मात्र अेक गजल में दूजी ठौड़ मिलणो मुश्किल है।

महाराजा सुजानसिह री मृत्यु रै बाद बीकानेर नगर में अेक बदळाव आयो अर नगर रै च्यारू कानी परकोटै रो पुख्ता इन्तजाम कर्‌यो गयो। 18वीं सदी में महाराजा

गजसिंह रै शासन-काल में राजाशाही रोड़ा सूं, जिणां नैं मवाली नाव सूं ई पुकार्‌यो जावतो हो, नगर रो नूंवो परकोटो बणायो गयो। इण परकोटै री भींत रो छह फुट चौड़ो औसार राख्यो गयो। ठौड़-ठौड़ दरवाजा अर बारियां राखीजी। आंमें घणकरां रा नांव लोकदेवां रै नांवां पर राखीज्या। जियां गोगो दरवाजो, पाबू बारी, शीतळा दरवाजो आद। समै-समै पर इण परकोटै री भींत में बदळाव अर परिवर्धन ई कर्‌यो गयो। सन् 1899-1900 में महाराजा गंगासिंह उत्तरी-पूर्वी परकोटै री नूंवी भींत बणवाई उणमें लाल पत्थर रो उपयोग करवायो अर भीत रो औसार ई तीन फुट करीज्यो।

आज जूनागढ रो जिको वर्तमान रूप दीखै है, उणमें क्रमश: महाराजा सूरसिंह, कर्णसिंह, अनूपसिंह अर महाराजा गंगासिंह रो नूंवो निर्माण-कार्य उल्लेखनीय है। अठै आ बतावण जोग बात है कै महाराजा गंगासिंहजी जद इण किलै में नूंवो निर्माण सरू करायो, उण बगत गढ में सदियां सूं रैवण आळा लोग, जिका राजघराणै में हा, उणां नैं गढ सूं बारै बसा दिया। गढ रै च्यारूंमेर आज जिका बडा-बडा मोहल्ला बस्योड़ा है, बै उणीं लोगां रै परिवारां रा है।

बीकानेर रा शासकां अठै री स्थापत्य-कला अर चित्रकला रै विकास में ई कम योगदान नीं कर्‌यो। बीकानेर रै राजस्थान राज्य अभिलेखागार में उपलब्ध बडै कमठाणै री बहियां, जिकी 17वीं सदी सूं 20वीं सदी रै मध्य समै तक लगोलग मिलै है, इण बात नैं पुष्ट करै। बीकानेर शासक ई राजस्थान रै दूजै राज्यां रै शासकां री भान्त, मुगल सेवा में लम्बै समै तक रह्या हा। इण कारण सूं बीकानेर में ई मुख्य रूप सूं जूनागढ रै निर्माण में मुगल अर राजस्थान री मूळ स्थापत्य कला रो सम्मिलित रूप निजर आवै। महाराजा सूरसिंह (1613-31 ई.) सूरसागर तळाब अर सूर-मन्दिर उणीं शैली में निर्मित करवायो। महाराजा करणसिंह (1631-69 ई.) द्वारा देवीकुण्ड सागर में बणायोड़ी छत्री फतहपुर सीकरी री मुगल-शैली रो अेक नायाब नमूनो है। महाराजा अनूपसिह (1669-98 ई.) मुगल बादशाह शाहजहां री शैली रै अनुरूप जूनागढ में सफेद संगमरमर रो उपयोग कर्‌यो। इणसूं पैलां महाराजा सूरसिंह अर करणसिंह गढ मे ई कमरां रै आगै दो मंजिला महराबदार संगमरमर रा खंभां रो निर्माण ई मुगल-शैली रै प्रभाव सूं ई करवायो हो। कमठाणां री बहियां सूं जाणकारी मिलै है कै महाराजा करणसिंह अर अनूपसिंह रै समै में बीकानेर रै गढ में मुगल-शैली रा उस्ताद उस्ता अर हिन्दू शैली रा जयपुरिया अर मथेरण चित्रकारां मिलनै चित्रकला में बीकानेर-शैली नैं जन्म दियो।

महाराजा गंगासिंह तो बीकानेर नगर नैं पश्चिमी प्रभाव सूं प्रभावित हुयनै अेक नूंवो रूप देय इणनैं आधुनिक नगर बणाय दियो। सन् 1902 में लालगढ महल अर सन् 1937 तक आप नगर में आलीशान सड़कां, विविध महकमा रा आधुनिक भवन, सिनेमा हॉल, अस्पताळ, असेम्बली भवन, पब्लिक पार्क आद रो विकास कर दियो, जिणनैं आज ई देख्यो जाय सकै है।

राज रै साथै-साथै बीकानेर नगर रो श्रेष्ठी-वर्ग ई बीकानेर री स्थापत्य अर चित्रकला में आपरो भरपूर योग दियो, जिको उणां रो हवेल्यां रै रूप में आज ई देख्यो जाय सकै। आ ई अठै बतावण जोग बात है कै महाराजा गंगासिंह सूं पैला सन् 1886 में महाराजा डूंगरसिंह बीकानेर नगर में सबसूं पैलां बिजळी लाया हा। पण आ बिजळी जूनागढ रै मांय तक ई सीमित ही।

किणी ई नगर रो विकास शिक्षा अर संस्कृति रै अभाव में अधूरो ई मानीजै। उगणीसवीं सदी में अठै रै श्रेष्ठी-वर्ग बाणिका पढावणै री माडजा (मार्जा) पद्धति री पोसाळां, संस्कृत पाठशाळावां अर प्राथमिक शिक्षा रै प्रचार-प्रसार में आपरो कम योगदान नीं दियो। राज रै कानीं सूं ई नगर में बीसवीं सदी में अनेक स्कूलां खोलीजी। उच्च शिक्षा रै वास्तै अेक कॉलेज खोलनै नगर री शिक्षा नैं विस्तार दिरीज्यो।

आजादी मिल्यां पछै तो इण नगर रो इत्ती तेज गति सूं चौफेरी विकास हुयो है कै आज औ बीकानेर नगर हर दीठ सूं राजस्थान रै अग्रणी नगरां री गिणती में आयग्यो है अर *उन्नति-पथ पर लगोलग अग्रसर है।*

बीकानेर नगर री भित्ति-चित्र परम्परा

बीकानेर नगर री भित्ति-चित्र परम्परा नैं लेयनै लारलै तीन दसकां मे कई विद्वानां खासो काम कर्‌यो है। आंमें अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, मोतीचन्द खजांची, रामदयाल लाटा, नवलकृष्ण, कृष्णचन्द्र शर्मा आद प्रमुख नांव है। ऑरै अलावा पत्र-पत्रिकावां रै मार्फत कई दूजा लेखकां ई आपरी लेखनी रै पाण बीकानेर नगर री भित्ति-चित्र कला पर कलम चलाई है।

लगैटगै तीस वरसां पैली म्हैं बीकानेर री चित्रकला, विशेष रूप सूं भित्ति-चित्रकला सूं सम्बन्धित मोकळै आयामां रा स्रोत 'बीकानेर के बड़े कमठाणे की वहियां' अर 'संभाळा वहियां' पर विस्तार सूं टिप्पणियां प्रस्तुत करी ही। बाद में अै ईज टिप्पणियां सूची रै रूप में ई छापीजी। ऊपरला सगळा विद्वानां मांय सूं घणकरा आपरै आलेखा अर शोध-कार्यां में इण सामग्री रो ढबसर उपयोग कर्‌यो है। इण आलेख में राजस्थान अभिलेखागार में उपलब्ध अभिलेख-सामग्री रै साथै आं विद्वानां रै विचारां नैं स्थान दिरीज्यो है।

बीकानेर री चित्रकला रो इतिहास घणो पुराणो कोनीं। इण री सरुआत 17वीं सदी रै विचाळै (मुगलकाल सूं) मानीजै। उण बगत तक राजस्थान रै दूजा राज्यां रा शासकां री भान्त बीकानेर रा शासक राजा रायसिंह ई मुगल दरबार में खासी प्रतिष्ठा हासल कर चुक्यो हो। यां ई दूजा शासकां री देखादेखी आपरै दरबार में मुगल दरबार रै चित्रकारां नैं न्यूंतनै ओपतो आवकारो दियो। अै चित्रकार आपरै साथै मुगल-शैली रै प्रभाव नैं तो लेयनै आया ई हा, साथै ई उणां स्थानीय प्रभाव रै तैहत काम करनै अेक अैड़ी शैली नैं जन्म दियो जिकी 'राजपूत-मुगल शैली' रै रूप में लोकप्रिय हुयी।

17वीं सदी रै मध्य में चित्रकला रै इण रूप नैं 'बीकानेर-शैली' रै रूप में जाणीज्यो। राजा रायसिंह मुगल दरबार रै वां बेजोड़ कलाकारां नैं लाया जका सोनै रा उभारदार काम, अनूठी मीनाकारी, बेल-बूंटी अर फूलां री उम्दा कोरणी में उस्ताद हा। बाद में इणीं चित्रकारां नैं बीकानेर में 'उस्ता' नांव सूं घणी ख्याति मिली।

राजा रायसिंह रै पछै महाराजा कर्णसिंह नैं चित्र कोरावण में खास रुचि ही। उणां आपरी पसन्द रा चितराम बणवाया पण महाराजा अनूपसिंह री तो बात ई न्यारी ही। उणां सन् 1765 में चित्रकला में बीकानेर शैली नै अेक खास रुतबो दिरवायो। उणां दिल्ली अर लाहौर रा चावा चित्रकारां नैं बुलायनै आपरी राजसभा में बांनैं ओपतो आवकारो दियो। महाराजा अनूपसिंह आपरी अभिरुचि अर विषय-वस्तु मुजब चित्र बणवाया। मुगल-शैली रा उण चित्रकारां आपरी भावपूर्ण तूलिका सूं 'नवीन बीकानेर-शैली' रो श्रीगणेश कर्‌यो अर रसिकप्रिया, रागमाळा, बारह मासा, नायिका भेद, शिकारगाहों अर लोकगाथावां ढोला-मारू आद रै चित्रां नैं घणी बारीकी अर चतराई सूं उकेर्‌या।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर री 17वीं सदी री 'संभाळा बही' में इण

रो उल्लेख मिलै। इण बही सूं बीकानेर शैली रै सरुआती चित्रकारां में रुकनुद्दीन, उस्ताद नुरूद्दीन, उस्ताद हसन, उस्ताद अहमद मुराद, उस्ताद हसन रजाक आद चावा चित्रकारां रो नांव मिलै। इण चित्रकारां पर शाहजहां कालीन मुगल शैली रो प्रभाव हो।

बगत परवाण जका नूंवा चित्रकार आया उणां बीकानेर शैली रै चित्रां में गोळाकार धोळै बादळां री छटा, रेत रा धोरां रा दरसाव अर इरानी शैली री पहाड़ियां आद नैं ई आपरै चित्रां मे स्थान दियो। आं चित्रकारां में उस्ताद कायम, उस्ताद कासिम, उस्ताद अबुहमीद, उस्ताद शाह मोहम्मद अर उस्ताद अबुरसा आद रा नांव उल्लेख जोग है। आं चित्रकारां भित्ति-चित्रां रो आलेखन ई बखूबी कर्‌यो। इण आलेखन में उणां रो साथ दियो अठै रा मथेरणां, जयपुर सूं आया जयपुरिया अर दिखणाद सूं आया दिखणादी चित्रकारां। आं रो घणमोलो सैयोग उगणीसवीं सदी रै छेकड़ तांई बीकानेर नगर री अनेकूं जाग्यां पर उकेरीज्या भित्ति-चित्रां में देख्यो जाय सकै।

बीकानेर नगर मे भित्ति-चित्रां रो आलेखन मुख्य रूप सूं राजप्रसाद, मिंदरां, मिरतु-स्मारकां (छत्रियां), सेठ-साहूकार अर मोटै ठिकाणैदारां रै ठिकाणां अर उणांरै बणायोड़ी धर्मशाळावां में हुयो है। बीकानेर में भित्ति-चित्रांकन नैं क्रमबद्ध दीठ सूं देखां तो अठै रै जूनागढ राजप्रसाद रा भित्ति-चित्र सबसूं पुराणा है। बाकी जाग्यां बण्योड़ा भित्ति-चित्र इणरै बाद रा ई है। सगळां सूं पैलां अठै रा मिंदरां में मंड्योड़ा भित्ति-चित्रां री चरचा जरूरी है।

बीकानेर नगर में जैन समाज रा सेठ-साहूकारां री तरफ सूं बण्योड़ै त्रैलोक्य दीपक-प्रसाद (भांडासर जैन मिंदर) चितामणी मिंदर, जैन श्वेताम्बर आदिनाथ मिंदर अर चादकुंवरी जैन मिदर भित्ति-चित्रां री दीठ सूं घणा सिमरध है। आं मांय सूं पैलड़ा दो मिंदर तो बीकानेर नगर री थापना रै आसै-पासै रा ईज है। आ सगळां जैन मिंदरां में मथेरण अर उस्ता कलाकारां समै-समै पर भित्ति-चित्रां रो सांगोपांग अकन कर्‌यो है।

सगळा जैन मिंदरां में जैन कथा-साहित्य माथै आधारित चित्रावळियां री मोकळायत है। भांडासर जैन मिंदर में मंड्योड़ा सरुआती चित्र किणीं हस्थीमल रै उकेर्‌योड़ा है। उणरै बाद रा चित्र मुरादबख्श रा बणायोड़ा है। मुरादबख्श तो लगोतार चार बरसा लग अर उणरै पछै ई जैन कथा-साहित्य सूं सम्बन्धित चित्रां अर सोनै री मनोती रो काम करनै इण जिनालय रै सभा-मण्डप रा गुम्बज रो मांयलो पासो इण ढंग सूं सजाय दियो कै औ मिंदर जैन कथा-साहित्य रो संग्रहालय बाजण लाग्यो। आं भित्ति-चित्रां में पाटलीपुत्र रै राजा नन्द री बगत स्थूलिभद्र स्वामी री दीक्षा सम्बन्धी चित्र घणा मनमोवणा है।

इणरै बाद रा चित्रां में आथूणो प्रभाव ई दृष्टिगोचर हुवै। इण रो अदाजो उण पंख-युक्त टाबर (ऐंजिल) सूं लागै जिणनैं फूलां अर उणरी पांखड़्यां री बेल्यां में उडतो दरसाइज्यो है। इणीं भान्त चिंतामणि मिंदर में ई जैन कथानकां रै साथै गुम्बद रै मायलै पासै पुष्प-बिरखा करता वैमानिक देवां नैं बादळां बिचाळै आभै में विचरण

करता थकां आलेखित करीज्या है। वि. संवत् 1662 में जिनचन्द्र सूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित पुराणै श्री जैन श्वेताम्बर आदिनाथ मिंदर रै गुम्वददार मंडप री छत माथै रंगां रो सांतरो संयोजन करनै घणी बारीकी सूं बेल-वूंट्यां अर दूजी आकृतियां मांडीजी है। गुम्वद री गोळाई री पूर्णता पर सपाट रूप लेवती भीतां पर सुनहरी अर दूजै रंगां सूं च्यारूं कानी देहरियां उकेरीजी है, जिणां में चौबीस तीर्थकरां रा चित्र बण्योड़ा है। इणरै बीच-बीच में काच ई जड़्योड़ा है। सभा-मण्डप रै गुम्वद रै हेठै श्री जिनचन्द्र सूरि नैं वादशाह अकबर नैं उपदेश देतां थकां चित्रित करीज्या है। अेक दूजै चांदकुंवरी जैन महावीर मिंदर रै निज मिंदर में उस्ता कलाकारां द्वारा भगवान महावीर रै 27 भव रा भित्ति-चित्र मंड्योड़ा है। अठै अंकित दूजा चित्र ई जैन कथानकां सूं सम्बन्धित है।

जैन मिंदरा री भान्त नगर रा दूजा मिंदरां में ई भित्ति-चित्रां रो आलेखन हुयो है। डेढसै दोयसै बरस पुराणै मदनमोहन अर मरुनायक मिंदरां में मथेरण अर जयपुरिया कलाकारां हिन्दू देवी-देवतावां रै चित्रां नैं घणी जीवटता सूं चित्रित करया है। इणी मिंदर में जयपुरिया चित्रकार गोपाळ अर मिंदर बणावणिया मोहता सेठां रो अेक ग्रुप चित्र ई कोरयोड़ो है। महाराजा डूंगरसिंह री बगत में बण्योड़ै लालेश्वर महादेव रा शिववाड़ी स्थित मिंदर में जयपुरिया, उस्ता, मथेरण आद चित्रकारां री कलम री कोरणी सूं मिंदर रै मांयलै पासी बेल- बूंट्या, पंखेरुआं अर देवतावां रा चित्र मंड्योड़ा है। इणीं भान्त मोहता परिवार री धर्मशाळा में बण्योड़ै गणेश मिंदर में ई हिन्दू देवी-देवतावां रै अवतारां रो चित्रांकन करयोड़ो है।

मिंदरा रै ज्यूं नगर रा पुराणा व्यापारी घराणां री हवेलियां में ई भित्ति-चित्रां रो घणो बारीक काम देखण नै मिलै। बगतसर सार-संभाळ नीं हुवण सूं कई हवेलियां में मंड्योड़ा अै चित्र अबै मगसा पड़ण लागग्या है। इण तरै री हवेलियां में डागा, बागड़ी, कोठारी, मोहता, दम्माणी, रामपुरिया अर ढढ्ढा आद परिवारां री हवेलियां उल्लेख जोग है। आं हवेलियां में ई उस्ता अर मथेरण आद चित्रकारां रो ई योगदान है। सेठां री हवेलियां री भान्त नगर रा पुराणै ठिकाणैदारां रै रैवास-स्थान में ई भित्ति-चित्र अंकित है। महाराज मानदातासिंह रा रैवास इण दीठ सूं विशेष रूप सूं उल्लेखनीय है।

नगर में सेठ-साहूकारां अर राज-परिवार सूं सम्बन्धित मृत्यु-स्मारकां (छत्रियां) रै मांयलै पासी मनमोवणा भित्ति-चित्र देखण नै मिलै। बीकानेर-शासकां री अै छत्रियां देवीकुण्ड सागर में अेक ई जाग्यां बण्योड़ी है। उगणीसवीं सदी रै मध्य में वण्योड़ी महाराजा रतनसिंह री छत्री रै गुम्बद मांय नीली अर सुनहरी कलम सूं देवी-देवतावां रा मनहरणा चित्र उकेरीज्या है। इणीं भान्त महाराजा डूंगरसिंह री छत्री में कृष्ण-लीला रो चित्रण है। सेठ-साहूकारां री कीं पुराणी छत्रियां में ई मगसा पड़्योड़ा चित्र आज ई निगै आवै।

बीकानेर नगर में जूनागढ रै राजप्रसादां में उकेरयोड़ा भित्ति-चित्र पौराणिक दीठ सूं बेजोड़ है। आं भित्ति-चित्रां री आ खासियत है कै आंरै आलेखन रै सम्बन्ध में

इतिहास रो

सरकारी दस्तावेजां में ई थोड़ी-घणी जाणकारी मिलै। अै सरकारी दस्तावेज बीकानेर राज्य री 'वडा कमठाणां' री वहियां रै रूप में मिलै। आंमें भित्ति-चित्रां रै निर्माण, चित्रकारां रै नांव, उणां री दिहाड़ी अर मासिक पगार, चित्रांकन सूं काम में लिरीज्या रंग अर दूजी सामग्री रो विवरण मिलै, पण आं वहियां रै मार्फत भित्ति-चित्रां रो सही विश्लेषण करणो घणो दोरो काम है।

बीकानेर नगर रै जूनागढ रो मूळ निर्माण राजा रायसिंह रै आदेस सूं सन् 1589 सूं सरू होयनै सन् 1594 तांई चाल्यो। उणरै बाद इणमें बीकानेर रा राठौड़ शासकां आपरी जरूरत मुजब नूंवो निर्माण करवायो। औ क्रम बीसवीं सदी में बीकानेर महाराजा गंगासिंह रै शासन रा सरुआती दसकां तक जारी रह्यो।

आज ई जूनागढ रा कई महलां में ढाई सौ सूं तीन सौ बरसां रै बिचाळै बण्योड़ा भित्ति-चित्र देखण नैं मिलै। राजा रायसिंह रै बणायोड़ै हर-मिंदर, सूर-मिंदर, चौबारा अर रायनिवास तो आज ई मूळ रूप में थिर ऊभा है। जद्यपि राजा रायसिंह रा उत्तराधिकारियां रायनिवास में फूलमहल, चन्द्रमहल, गज-मिंदर आद बणवाय दिया हा। आंमें चन्द्रमहल अर फूलमहल (निवास) भित्ति-चित्रां री दीठ सूं खासा सिमरध है। आं महलां में चूनै रै प्लास्टर री घिसाई इत्ती ज्यादा करीजी है कै आज वो संगमरमर रा पत्थरां रै उणमान दीखै। इण माथै सोनै री उभारदार रेखावां, फूलां रा गुच्छां अर जळपात्रां रै रूप में चित्रित भित्ति-चित्रां नैं अेक-दूजै सूं निरवाळी करती दरसाईजी है। चन्द्रमहल रै अेक कक्ष में छव इंच चौड़ी पट्टी पर घणी बारीकी सूं शिकार रा दरसाव, हाथी-घोड़ां रै साथै शाही लवाजमो, मीन-कन्यावां (पाणी में उछळ-कूद करती), राधा-कृष्ण री अनेक लीलावां रो चित्रण हुयोड़ो है। छत माथै बादळां री घटाटोप सूं घिरयोड़ै आभै में नागण री दांई बीजळ-रेखावां अर अप्सरावां ई मांडीजी है। इणीं भान्त महल रै आंगणै सूं की ऊपर भान्त-भान्त री फूल-पत्तियां अर ठंडळा आळी बेलड़यां रा रंग-बिरंगा चित्राम उकेरीज्या है। आं दोनूं महलां रै माय-बारै दरवाजां पर राधा-कृष्ण अर फूल-पत्तियां चित्रित है। इणमें उस्तां अर जयपुरिया, दोनूं वर्ग रै चित्रकारां आपरो कौशल दिखायो है।

जूनागढ रो जूनौ महल कर्ण-महल है। औ आगरा रै किलै रा खासमहल अर दिल्ली रै लालकिला रा दीवाने-खास, रगमहल अर मुमताज-महल री लघु अनुकृति मानीजै। इण रो निर्माण सन् 1690 में महाराजा अनूपसिंह, आपरै पिता कर्णसिंह री स्मृति में करवायो हो। इण महल रै डागळै री भींतां पर जका चित्र है, बै अबै मगसा पड़ण लागग्या है, पण इणरै बरामदै री छत पर सोनै रो धरातळ अर उण माथै फूल, बारीक डंठळ री बेलड़यां अर तीखी पत्तियां रो सांगोपाग अंकन हुयो है। इणीं भित्ति चित्रां रै हेठै छोटी-बडी हरी पत्तियां अर लाल फूलां रो मोवणो चित्रण करीज्यो है। इणरै अलावा इण महल रै सगळा खंभां ई सुन्दर अलंकरणां सूं आच्छादित है। औ गढ रो पैलो महल है, जिको मुगल बादशाह जहांगीर रै काल रा उत्तरार्ध में विकसित

ाभिजात्य अर अलंकृत मुगल शैली माथै आधारित है।

कर्णमहल रै कनै अनूप-महल है। उणनैं दरबारे-खास भी कह्यो जावै। आं इण ्ग रो सिरै कला-महल है। इणरी छतां, भींतां अर खंभां सोनै सूं जड़्योड़ा है। इण ाहल रै मांयलै पासी लाल रंग री पृष्ठभूमि में सुनहरी आलंकारित फूल, पत्तियां अर ंठ्ळ चित्रित करीज्या है। रेखावां में लय अर गति रो आभास सहजां ई हुवै अर कीं ाग्यां तो सागर-उर्मियां-सो दरसाव दीखै। इण महल रै खंभा पर भी राधा-कृष्ण अर ोपियां नैं फूलां रै गाछां में गुम्फित करीज्यो है। सिन्दूरियां पृष्ठतळ माथै सगळा चित्र लास्टर सूं उभारनै सुनहरी रंग में आच्छादित करीज्या है। बीच-बीच में गहरै हरयै रंग ा जंगळां रो दरसाव है। इण महल रै मांयलै दरवाजां माथै भी राधा-कृष्ण अर गोपियां ो चित्रांकन खासो मनोहारी है।

महाराजा अनूपसिंह रै पछै इण दुर्ग में सगळां सूं वेसी निर्माण कार्य महाराजा ाजसिंह करवायो हो। उणां री बगत रै महलां में गज-मिंदर रो आपरो न्यारो-निरवाळो स्थान है। इण महल में दरपणां नैं उभारदार स्वर्ण-रेखावां रै विचाळै सजायनै विड़ीज्या है। आ उभारदार स्वर्ण-रेखा वेल रै रूप में आलंकारिक ढग सूं वण्योड़ी है। इणमें फूल अर पत्तियां रो आलेखन ई हुयो है। कठै-कठैई पुष्प-गुच्छ अर फळपात्रां नैं ई संयोजित करीज्या है। अंधारै में अेक दीपक रै उजास सूं ई स्वर्ण-रेखावां रै विचाळै जड़्योड़ा दरपणां में पड़बिम्बां रै कारण दीपमाळा जिसो आभास हुवै। इण महल रै अेक छोटै-से भाग में अनमोल पत्थर सुनहरी लतावां अर फूलां री पांखड़्यां सूं अलंकृत है। इण महल री मुख्य छत सिंदूरिया वर्ण छटा री सुनहरी उभार खायोड़ी रेखावां सूं अलंकृत है। आं अलंकृत रेखावां रै विचाळै ड्रेगन, शेर अर अप्सरावां रो ई चित्रण हुयो है। इणीं भान्त इण छत रा किनारा फूल-पत्तियां री अलंकृत लतावां सूं दरसाईजी है। गज-मिंदर रै दरवाजा पर सुनहरी, लाल, नीली, हरी फूल-पत्तियां रै साथै राधा-कृष्ण रा चित्र ई वण्योड़ा है। इण महल रै अेक कक्ष में व्ल्यू पोर्टरी ज्यूं चित्र ई अंकित है, जिणां रै बारै में कह्यो जावै कै औ चित्र दिखणादी चित्रकारां रै बणायोड़ा है।

वादळ-महल अर डूंगर-निवास, दोनूं महलां में लगैटगै अेक सरीखा भिति-चित्रां रो आलेखन हुयो है। वादळ-महल में आभै में काळा-धोळा वादळा रा चित्र मंड्योड़ा है। इणीं महल में अेरावत माथै आरूढ देवराज इन्द्र नैं दरसाइज्यो है। डूंगर निवास में ई अेक कक्ष री छत माथै आभै अर वादळां नैं चित्रित करीज्या है, साथै ई इन्द्र रै च्यारूंमेर अप्सरावां अर हंसां नैं ई दरसायो गयो है। इणरै साथै ई इण महल री धोळी भींता पर फूल, पत्तियां रा आलंकारिक रूपां रै विचाळै कठै-कठैई पखेरू ई मांडीज्या है। डूंगर-निवास रै साथै ई लाल-निवास री छत माथै सुनहरो काम अर महल रै माय च्यारूं कानीं फूल-पत्तियां रो अंकन हुयो है।

जूनागढ में सगळां सूं ऊंचो छत्र-महल है। इणरी छत अर भींतां माथै कृष्ण नैं रासलीला करता थकां दिखाइज्या है। साथै ई फूल, पौधा अर बादळां रो आलेखन हुयो

है। इणा ओळ में देवोद्धारे रो उल्लेख करणो ई लाजमी है। इण कक्ष री आ खासियत है इण रो पूरो आलेखन बीकानेर रा मथेरण चित्रकारां कर्‌यो है। उणां इणमें कई देव-देवतावां रा चित्र हिन्दू अवतारवाद रै आधार पर बणाया है।

किलै में कर्ण-महल रा कोर्टयार्ड में अेक चौवारो है, जिणमें महाराजा गंगासिंह रो जन्म हुयो हो। उणरै चारै आथूणी शैली में डबल रेलगाडी, पाणी में चालती नाव अर हाथी सूं जुड़ी गाडी रो मनहरणो चित्रांकन हुयो है। नीलै रंग रो औ नयनाभिराम चित्रांकन उगणीसवीं सदी रै आखरी दसकां रो प्रतीत हुवै। अठै आ बात ई उल्लेख जोग है कै महाराजा गंगासिंह इण गढ में निर्माण कार्य तो मोकळो करवायो, पण इण नूंवा महलां में भित्ति-चित्रां री ठौड़ पत्थर री कोरणी रो काम ई हुयो है। बावजूद इणरै बीकानेर नगर री भित्ति-चित्र परम्परा घणी सिमरध रह्यी है।

बीकानेर रियासत में दिरीजी लुगाई नैं फांसी

आज तो लुगायां नैं फांसी देवण री बात साधारण-सी लागै पण बीकानेर रियासत रै इतिहास में सन् 1935 सूं पैली सैंकड़ूं बरसां में किणी अपराध सारू कोई लुगाई नैं फांसी देवण री जाणकारी नीं मिलै। पण बीकानेर हाई कोर्ट री डबल बैंच आपरै 19 नवम्बर, 1934 रै फैसलै में अेक हत्या रै मुकदमै में अेक लुगाई नैं फांसी री सजा दी अर उणरै मुताबिक 2 मार्च, 1935 रै दिन बीकानेर री सेंट्रल जेळ में रामेती नांव री अेक बेवा ब्राह्मणी नैं आपरै प्रेमी अमरसिंह रै साथै फांसी माथै चढणो पड़्यो। उण वगत इण घटना री बीकानेर राज में मोकळा दिनां तांई चरचा रही। औ महाराजा गंगासिंहजी रो जमानो हो।

रामेती अर अमरसिंह माथै औ आरोप हो कै उणां दोनूं मिलनै अमरसिंह री लुगाई चंद्रावळी (उमर 22 बरस) री हत्या करी है। मुकदमै में जिकी गवाहियां हुई अर कोर्ट नैं जिका हालात निजर आया, उण मुजब हत्या री घटना इण भान्त ही–

अमरसिंह (उमर 32 बरस) बीकानेर राज रै टीबी परगनै में अेक बिस्वेदार हो। पैलड़ी लुगाई मर जावण सूं उणरो दूजो ब्यांव चंद्रावळ सागै हुयो। कह्यो जावै कै इण दूजै ब्यांव सूं पैली ई अमरसिंह रा नाजायज सम्बन्ध इण रामेती नांव री बेवा ब्राह्मणी सागै होयग्या। ब्यांव हुयां पछै ई औ सम्बन्ध कायम रह्या। इण कारण रामेती अर चंद्रावळी में खटपट हुवणी सुभाविक ही। 12 मार्च, 1933 रै दिन या दोनूं रै बिचाळै खासो झोड़ हुयग्यो। रामेती, चंद्रावळी नैं मारी-कूटी अर घरै आयां अमरसिंह रा कान भरया। तापछै दोनूं जणां चंद्रावळी नै मारण री तेवड़ली। बै उणनैं अेक कोठड़ी में लेयग्या अर कटार नैं लाठी सूं वार करनै मार न्हाखी। अमरसिंह लाठी सूं 16 चोटां करी अर रामेती कटार सूं च्यार वार करया। कोठड़ी खून सूं भरीजगी, सो उणनै लीप पोतनै लास नैं दूजी ठौड़ लेयग्या। दिन उग्यां अमरसिंह आपरै कुटुम्बियां री मदत सूं लास नैं बाळण री त्यारी करली। अमरसिंह रै पाड़ौस में अेक-दो आदम्यां नैं इण बात री ठा पड़गी ही। इण वास्तै उणां झांझरकै ई जायनै पुलिस थाणै में इतला कर दी। पुलिस बगत माथै मसाणां में पूगगी अर लास आपरै कब्जै करली। पोस्टमार्टम हुयां पुलिस अमरसिंह अर रामेती नैं गिरफ्तार कर लिया।

सरूपोत में इण दोनूं माथै बीकानेर रै सेशन कोर्ट में मुकदमो चाल्यो अर अदालत आपरै दिनांक 12.9.33 रै फैसलै में अमरसिंह अर रामेती नैं उमर-कैद री सजा दी। पण राज री अपील माथै हाईकोर्ट री डबल बैंच आं दोनां नैं मिल्योड़ी उमर-कैद री सजा नैं मौत री सजा में बदळ न्हाखी। ज्यूडिसियल कमेटी ई इण दोनूं नैं मिल्योड़ी मौत री सजा नैं कायम राखी। रामेती हाईकोर्ट रै फैसलै रै खिलाफ महाराजा गंगासिंहजी सूं शाही माफी बख्सणै री अपील करी। इणमें उण लिख्यो कै बीकानेर

रियासत रै इतिहास में आज दिन ताईं कोई लुगाई नैं फांसी री सजा नीं मिली अर वा लुगाई हुवण रै साथै अेक ब्राह्मण कन्या ई है।

महाराजा गंगासिंहजी रामेती नैं आपरै कनै बुलायनै साची बात केवण रो कह्यो। रामेती आपरो अपराध कबूल करता थकां माफी देवण री मांग करी। महाराजा गंगासिंहजी आपरै फैसलै में लिख्यो–

''म्हनैं लागै कै बीकानेर रा लोगां में आ धारणा है के जे कोई लुगाई अर वा ई ब्राह्मणी कोई जघन्य अपराध ई कर देवै तो उणनैं राज में फासी री सजा नीं दी जावै। म्हैं जनता रा इण भरम नैं तोड़णी चावूं। बीकानेर रियासत में नीं तो पैली इसो कानून हो अर नीं आज ई है, जिको किणी अपराधी लुगाई नैं फांसी चढावण सूं रोक सकै। रामेती रो अपराध जघन्य है। म्हैं ज्यूडिशियल कमेटी रै निरणै सूं पूरी तरयां सहमत हूं अर रामेती नैं मिल्योड़ी मौत री सजा नैं सहमति देवूं।''

इण भान्त 2 मार्च, 1935 रै दिन अमरसिंह अर रामेती दोनूं नैं फांसी दिरीजी।

बीकानेर-जोधपुर री लड़ाई रो अनाम जोधो : नोगजो पीर

राजस्थान रै इतिहास में इसी-इसी विभूतियां हुई है, जिकी आपरी जान देयनै दूजां री जान बचायी है। आं मांय सूं मोकळी विभूतियां नै इतिहास में उचित स्थान नी मिल्यो। आंमें नोगजो पीर ई अेक अैड़ी ई विभूति ही। बीकानेर नगर रै माय कोट-दरवाजे सूं सीधै दाऊजी मंदिर कानी जावां जद मंदिर सूं थोड़ो पैली दुकानां रै आगै अेक कब्र बण्योड़ी है। इण कब्र माथै मिन्नत मांगण आळा लोगां रो तांतो लाग्यो रैवै है। अठै मुसळमानां रै साथै हिन्दू लोग ई आवता-जावता निंगै आवै। आ अेक विडम्बना ई है कै आज नोगजै पीर जिसै इतिहास निर्माता पुरुष रै बारै में कोई की नीं जाणे। इतिहास री इण अछूती घटना नैं सुधी पाठकां रै सांमी राखण रो अठै प्रयास कर्यो जाय रह्यो है।

जयसोम विरचित 'कर्मचंद्र वंशोत्कीर्तनकं काव्यम्' में उल्लेख मिलै है कै ईस्वी सन् 1541 में जोधपुर रै राजा मालदेव बीकानेर माथै आपरो अधिकार करण सारू कूंपा महाराजोत अर पचायण करमसिंघोत री अध्यक्षता में अेक लूंठी सेना बीकानेर भेजी। जोधपुर अर बीकानेर बीच जुद्ध हुयो अर दूजा लोगां रै साथै बीकानेर रा शासक राव जैतसी ई खेत रह्या। इण जुद्ध में जैतसी री हार रै लारै ख्यातां रै माय अेक घटना रो उल्लेख मिलै है, जिणनैं प्रसिद्ध इतिहासविद पं गौरीशंकर हीराचंद ओझा आपरै ग्रंथ बीकानेर का इतिहास में उल्लेख ई कर्यो है। आ घटना इण भान्त है–

आपरै सिरदारां कूंपा महाराजोत अर पंचायण करमसिंघोत नैं साथै लेयनै मालदेव रै बीकानेर चढ आवण सूं बीकानेर रा राव जैतसी सेना रै साथै मुकाबलो करण सारू आगै वध्या' अर गांव सोहवा में डेरो दियो। सांखला महेसदास अर रूपावत भोजराज नैं नगर अर गढ री रक्षा सारू बीकानेर मे ई छोड दिया। राव जैतसी पैली किणी बगत पठाणां सूं घोड़ां री खरीद करी ही, जिण रा दाम कामदारां चुकाया कोनी हा। इण कारण सूं बै पठाण दाम वसूल करण वास्तै सोहवा पूग्या। राव जैतसी उण बगत किणी रो करजो राखणो ठीक नीं जाण्यो अर इण खातर उणां आपरै सेवकां नैं औ आदेस देयनै कै जद तांई म्हैं पाछो नीं आऊं, औ भेद किणीं नैं बतायो नी जावै कै म्हैं बीकानेर गयो हूं, उणी बगत पठाणां रै साथै बीकानेर वहीर हुयग्या। वठै पूगनै उणां आपरै कामदारां नैं करड़ो ओळमों दियो अर पठाणां नैं रकम चुकावण रो हुकम दियो। पण संकट री इण घड़ी में पठाणां रुपिया लेवण सूं इनकार कर दियो। आं बातां रै कारण राव जैतसी नैं सोहवा पाछो पूगण मे अेक पहर लागग्यो। इण बीच सोहवा में राव जैतसी रै बीकानेर जावण री खबर सगळी सेना में फैलगी अर घणकरा सिरदार आप आपरी सेना लेयनै पाछा बावड़ग्या। दूजी कानी ज्यूं ई मालदेव नैं जैतसी रै पाछै आवण री खबर मिली त्यूं ई उण बां पर हमलो बोल दियो। राव जैतसी बच्योड़ा डेढ

सौ राजपूता रै साथै मालदेव री सेना रो सामनो कर्‌यो। पण राजा मालदेव री भारी सेना रै सांमी टिक नीं सक्या अर आपरी फौज रै साथै वै काम आयग्या।

इण घटना में जिका पठाणां रो उल्लेख हुयो है, उणां में नोगजा पीर ई अेक हो। जद राव जैतसी पाछा सोहवा जावण लाग्या तो पठाण नोगजो पीर ई उणांरै सागै हुयग्यो। जद राव जैतसी आपरै राजपूतां रै साथै जोधपुर री सेना माथै टूट पड़्‌या, तो नोगजो पीर ई बांरी तरफ सूं लड़ाई लड़ी। इण लड़ाई मे राव जैतसी रै साथै नोगजो पीर ई काम आयो।

नोगजै पीर री बहादुरी अर सकट री घड़ी में बीकानेर रै शासक री मदत करण वास्तै, उणरै शव नैं बीकानेर लायनै दफनायो गयो। बीकानेर में जिकी जाग्यां उणरी लाश दफणाइजी उठै ई आज नोगजा पीर री कब्र बण्योड़ी है। बीकानेर रा शासक नोगजा पीर री कब्र नैं सम्मान प्रदान करता रह्या है। स्वर्गीय महाराजा गंगासिंह तो राज रै खरचै सूं कब्र री देखभाळ सारू आर्थिक सहायता ई दी ही।

इतिहास रा साक्षी डॉ. टैस्सीटोरी

सन् 1917 रै मांय पीळीबंगा अर काळीबंगा मे दूंढयोड़ी पुरातात्तिव सामग्री सूं ई सन् 1920-21 मांय काळीबंगा मांय हड़प्पा अर मोहनजोदड़ोकालीन सभ्यता रो उत्खनन संभव हुय सक्यो हो। उण वगत डॉ. टैस्सीटोरी आ वात नीं जाणता हा कै आगै जायनै उणां री दूंढयोड़ी विविध रूपां री ठीकरयां राजस्थान अर भारत री अेक महान सभ्यता हड़प्पा-मोहनजोदड़ो रो अेक केन्द्र विन्दु वणावण रो गौरव दिरासी।

इटली री फ्लॉरेंस युनिवर्सिटी सूं अंग्रेजी साहित्य में अेम. अे. पास करयां पछै रामचरितमानस माथै निवन्ध लिखनै पीअेच. डी. री डिग्री लेवण आळा डॉ. टैस्सीटोरी अंग्रेजी, लेटिन, संस्कृत, प्राकृत, जूनी गुजराती, नूंवी गुजराती, अपभ्रंश, उर्दू अर व्रज भापा रै साथै-साथै राजस्थानी, विशेप रूप सूं मारवाड़ी भापा रा विद्वान हा। राजस्थानी भापा रै इण विशेप ज्ञान रै कारण वांनें राजस्थान रै इतिहास में घणी रुचि ही। अठै अेक वात खास तौर सूं ध्यान देवण री है कै राजस्थानी भापा में लिख्योड़ी जूनी सामग्री राजस्थान रै इतिहास रो ई मोटो आधार है। कैवण रो मतलब औ कै राजस्थान रो इतिहास अर राजस्थानी भापा दोनूं अेक-दूजै रा पूरक है। भापाविज्ञ श्री ग्रियर्सन रै प्रयत्नां सूं डॉ. टैस्सीटोरी कलकत्ते री 'अेशियाटिक सोसाइटी ऑफ वंगाल' मे 'वार्डिक अेण्ड हिस्टोरिकल सर्वे ऑफ राजपूताना' रै अधीक्षक रो पद संभाळण रै कोई तीन महीनां पछै 22 जुलाई, 1914 नैं राजस्थान आयग्या हा। सवसूं पैलां वां जोधपुर में सर्वेक्षण रो काम करयो अर वाद में दिसम्वर, 1915 में राजस्थानी भापा अर उणरी लिपियां रै विशेपज्ञ रै रूप में वीकानेर सरकार आपनैं आपरै अठै वुलवाय लियो। अठै वै च्यार वरसां तांई रह्या। वीकानेर में रैवता थकां वां इतिहास सूं सम्वन्धित हस्तलिखित पाण्डुलिपियां अर विड़द गाथावां रो व्यापक सर्वेक्षण करयो। अठै मूं अप्रैल 1915 नैं डॉ. टैस्सीटोरी छह महीनां री छुट्टी माथै यूरोप चल्या गया। पण छुट्टी पूरी कर पाछा वीकानेर वावड़ण रै तीन हफ्तां रै मांय वीमार पड़नै 22 नवम्वर, 1919 नैं देवलोक हुयग्या।

डॉ. टैस्सीटोरी आपरै जीवणकाल में मारवाड़ी अर गुजराती भापा नैं आधार वणायनै वांरा कोश अर व्याकरण त्यार करया, गंभीर शोध लेख लिख्या, जैन प्राकृत ग्रंथां रो इटालियन भापा में अनुवाद करयो अर साथै ई घणकरी पाण्डुलिपियां नैं व्यवस्थित करनै उणां रो सम्पादन करयो। डॉ. टैस्सीटोरी रै आं सगळां कामां री सूचना, उणरै सर्वेक्षण कार्य री प्रगति रिपोर्टा राजस्थान भारती रै विशेपांक में विस्तार सूं मिलै है। अठै राजस्थान राज्य अभिलेखागार में उपलब्ध सामग्री अर डॉ. टैस्सीटोरी री राजस्थानी अर डिंगल भापा री आज उणीं'ज सामग्री रो उल्लेख करयो जा रह्यो है जिकी नैं डॉ. टैस्सीटोरी उजास में लाया। इणमें राजस्थान रै इतिहास री थोड़ी-घणी जाणकारी ई मिलै है।

अठै आ बतावण जोग बात है कै राजस्थान में डॉ. टैस्सीटोरी रै आवण सूं पैलां चारण-साहित्य रै सर्वेक्षण रो खासो काम हुय चुक्यो हो। इण योजना सूं जुड़योड़ा महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री सन् 1908 सूं इण काम नै अठै सरू करा दियो हो। उणांरै प्रयत्नां सूं जोधपुर में 200 सूं ज्यादा चारण-साहित्य सूं सम्बन्धित पाण्डुलिपियां रो केटलॉग त्यार हुयग्यो हो। बीकानेर में ई महाराजा गंगासिंह आपरै होम मैम्बर कामताप्रसाद नैं पैली सूं सुरक्षित चारण-साहित्य री पाण्डुलिपियां रो केटलॉग बणावण रो आदेस दे दियो हो। जोधपुर अर बीकानेर, दोनूं जाग्यां रा दीवानां री अध्यक्षता में सर्वेक्षण कमेटी ई बणाली गयी ही। रामकरण आसोपा अर मरारीदान जोधपुर में तो डिंगळ भाषा री व्याकरण तक त्यार करली ही। इण सबसूं डॉ. टैस्सीटोरी नैं राजस्थान में चारण-साहित्य नैं समझण में खासो सहारो मिल्यो हो।

बंगाल ऐशियाटिक सोसाइटी अर भारत रो शिक्षा विभाग डॉ. टैस्सीटोरी नैं पांच बरसां रो अेक कार्यक्रम बणायनै दियो। इणमें जोधपुर, बीकानेर, कोटा-बून्दी, उदयपुर अर जैसळमेर में बिखर्‌योड़ै चारण-शैली रै डिंगळ अर संस्कृत साहित्य रो सर्वेक्षण करण रो काम भेळो हो। पण वै जोधपुर अर बीकानेर में ई आपरो काम कर सक्या। अठै औ ई उल्लेखनीय है कै जोधपुर में उठै रा शासक री छोटी अवस्था हुवण सूं उठै सत्ता री देखभाळ करण आळां डॉ. टैस्सीटोरी रो समन्वय कोनीं बण सक्यो। इण कारण सूं बै लगैटगै डेढ बरस में ई जोधपुर रो काम बीच में ई छोडनै बीकानेर आयग्या।

आपरै जोधपुर प्रवास में डॉ. टैस्सीटोरी 129 शिलालेखां रो अवगाहन कर्‌यो अर 100 रै अेड़ै-गैड़ै ग्रंथा रो सर्वेक्षण कर्‌यो। आं सगळी पाण्डुलिपियां री नकलां आज राजस्थान राज्य अभिलेखागार में सुरक्षित है। आं ग्रंथां में कीं महताऊ ग्रंथां रा नांव इण भान्त है– चन्द्रकुंवर री बात, राठौड़ रतनसिह री वचनिका, उदैपुर री गजल, दूदोड़ रा चांपावता री तवारीख, छंद रत्नावली, महाराजा अभयसिंहजी रा कवित्त, ओसवाळां री उत्पत्ति, रतना हमीर री बात, नाथचन्द्रिका, अचलदास खीची री वचनिका, जगदे पंवार री बात, पन्ना री बात, सूरज-प्रकाश कविया करणीदान रो कह्यो, वीरमायण ढाढी बहादर री कही, जोधपुर राजा चारणां नूं सासण दिया तेरी विगत, पाबूजी रा दूहा, खावड़िया राठौड़ां री बात, राठौड़ां री खांपां री पीढियां, अचलदास खीची री बात, जोधपुर रै राठौड़ां री ख्यात, पदमणि चौपई।

शिलालेखां में वि. संवत् 1236 रो फळोदी, वि. संवत् 1219 रो चौहाण गजसिंहदे अर वि. संवत् 1227 केलहण दे रै झंवर रै दो शिलालेख रै साथै वि संवत् 15वीं, 16वीं अर 17वीं सदी रा शिलालेखां रो सविस्तार विवरण आपरी रिपोर्टां में प्रस्तुत कर्‌यो है।

इणीं भान्त बीकानेर प्रवास में तो डॉ. टैस्सीटोरी खाली सर्वेक्षण कार्य ईज नीं कर्‌यो बल्कै अेक इतिहास लेखक अर पुरातत्त्वविद रै रूप में ई खुद नैं प्रस्तुत कर्‌यो। उणांरै ढूंढ्योड़ा अर सम्पादित कर्‌योड़ा अैतिहासिक ग्रंथ घणा महताऊ है। डॉ. टैस्सीटोरी अनूप संस्कृत पुस्तकालय में 81 फरमानां नैं व्यवस्थित करनै बीकानेर रै

इतिहास सारू उपलब्ध करावण में आगरो योग दियो। औ फरमान मुगल बादशाह वगत-वगत माथै बीकानेर रै शासकां नैं लिख्या हा। इणी भान्त बीकानेर रै राठौड़ां री ख्यात सिंढायच दयालदास कृत, राठौड़ा री वंशावळी अर पीढिया री फुटकर वातां, बीकानेर रै राठोड़ां री ख्यात देस-दरपण, पट्टै रै गांवा री विगत, बीकानेर रै राठौडां री वात अर वंशावळी, बीकानेर री ख्यात महाराजा सुजानसिंहजी सूं महाराजा गजसिहजी तांईं, नागौर रै मामलै री वात, राजा करणीसिघजी रै कंवरां री वात अर नापै सांखलै री वात, जन्मपत्रियां, फुटकर वातां आद ग्रंथां नैं व्यवस्थित करवायनै आंरो केटलॉग त्यार करवायो। इसा ग्रंथां में बीकानेर रा कवित्त, राव जैतसी रो पागडी-छन्द, छन्द त्रोटक पावू जियाराउ वीठू मेहा रउ कहियो, सांढी नाथी रो कवित्त, ढोला-मारू रा दूहा, पावूजी रा छन्द, वेलि क्रिसन रुकमणि री, करणीजी रा दो कवित्त आद ई उल्लेख जोग है। इतिहास जगत में डॉ. टैस्सीटोरी नैं जिकी मान्यता मिली, वा 'वेलि क्रिसन रुकमणि री', जगै खिड़ियै री 'वचनिका राठौड़ रतनसिंहजो री' अर वीठै सूजै रो 'छन्द राव जइतसी रउ' जिसा महताऊ ऐतिहासिक ग्रंथां रै सम्पादन रै कारण ई संभव हुयी। लारला दो ग्रंथ तो मुगल इतिहास री महताऊ लड़ाइयां, घरमत रो जुद्ध अर हुमायूं रै बेटै कामरां रै साथै बीकानेर रै शासक राव जइतसी रै जुद्ध री जाणकारी रा अलभ्य ग्रंथ वणग्या है। इणरै माथै 'क्रॉनोलाजी ऑफ बीकानेर 1887-1916 ऐडी' अर 'हिस्ट्री ऑफ बीकानेर' इं राजस्थान रै इतिहास में डॉ. टेस्सीटोरी री रुचि रो नमूनो मान्यो जाय सकै। सन् 950 सूं 1850 ई. तक रा उण रा ढूंढयोड़ा बीकानेर राज्य रा शिलालेख आज तांईं महताऊ शोध अर संदर्भ सामग्री रै रूप में सुरक्षित है।

पुरालेख सामग्री रै उद्धार रै साथै-साथै डॉ. टैस्सीटोरी पुरातात्त्विक सामग्री रो ई भारी संग्रह करयो हो। आज वडी-वडी रकमां नैं लेवण आळा अर सुविधा प्राप्त इतिहासकार इत्तो अथाह सामग्री रो सग्रह नीं कर सकै, जित्तो पांच वरसां री अवधि में डॉ. टैस्सीटोरी कड़की में करग्या। सरकारी पत्र-व्यवहार सूं ठा पड़ै कै डॉ. टैस्सीटोरी री आर्थिक स्थिति ठीक नीं ही। राजस्थान रै प्रारंभिक काल मे आर्थिक स्थिति ठीक नीं हुवण सूं वांनैं जाग्यां-जाग्यां सूं पईसा मांगणा पड़ता हा। जैनाचार्य जिनविजयधर्म सूरिजी, जिणांरै चरणां में बैठनै वां प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथां रो अध्ययन करयो हो, उणां सूं ई डॉ. टैस्सीटोरी नैं समै-समै पर आर्थिक सहायता मिल्या करती ही। डॉ. टैस्सीटोरी बीकानेर रै सैकड़ां गांवां में घूम फिरनै 729 शिलालेखां रो संग्रह करयो। इण भान्त कई तरै री मृणमयी मूर्तियां अर दूजी पुरातात्त्विक सामग्री वडोपळ, सूरतगढ, भूडा तहसील हनुमानगढ, धूलिया तहसील भादरा, कालीरो थेड़ी, मानक थेड़ी, रंगमहल, सरदारगढ तहसील अर सियाणा आद सूं भेळी करी। इण पुरातात्त्विक सामग्री में शामिल कुल वस्तुआं री संख्या 982 है। आ जाणकारी पैलां उजास में नीं आय सकी ही। डॉ. टैस्सीटोरी रै सरकारी पत्र-व्यवहार सूं पतो लागै है कै डॉ. टैस्सीटोरी नैं इण सामग्री नैं प्राप्त करण में मोकळी अवखायां रो सामनो करणो पड्यो हो। आ सामग्री घणकरी तो गांवां रै किसानां अर चौधरयां रै घरां रै आळां, दहलीजां अर पगोथियां में

साधारण पत्थर रै रूप में मजबूती सारू लाग्योड़ी ही। इणनैं प्राप्त करण खातर डॉ. टैस्सीटोरी नैं राज रै अधिकारियां तक रो सहयोग लेवणो पड़्यो अर कठै-कठैई सूं उणनै आ सामग्री मोल ई खरीदणी पड़ी।

डॉ. टैस्सीटोरी री सोध्योड़ी गोरधनधारी कृष्ण 229 वि. सं., दानलीला कृष्ण 227 वि. सं., उमा-माहेश्वर, अेक मुख शिवलिंग अर जैन सरस्वती री मूर्तियां तो आज जगचावी पुरातात्त्विक सामग्री में गिणी जावै। आज इतिहास रै लेखन रै संदर्भ में जिकी अेक माथै मोकळो जोर दियो जा रह्यो है वा आ है कै इतिहास में प्रदेस रै जन-साधारण रै जीवण री सीधी जाणकारी दी जावै। डॉ. टैस्सीटोरी जिकी पुरालेख अर पुरातात्त्विक सामग्री रो संकलन अर संग्रह कर्‌यो, वा इण दीठ सूं मोकळै महत्त्व री हुयगी है। हालांकै आ अेक विडम्बना ई है कै इतिहासवेत्ता राजपूत इतिहास रै वास्तै फारसी तवारीख नैं तो ठोस प्रमाण मानै है अर चारण-साहित्य नैं कपोल कल्पित माननै अमान्य सिद्ध कर देवै है जदकै चारण-साहित्य रै आधार माथै लारलै तीन-चार दसकां में इतिहास में व्याप्त कई भ्रांतियां रो निराकरण हुयो है। डॉ. दशरथ शर्मा री 'राजस्थान थ्रू द एजेज' जिणरी कै देस-विदेस रै नामी इतिहासकारां भूरि-भूरि प्रशंसा करी है, रै अध्ययन सूं ठा पड़े कै डॉ. टैस्सीटोरी द्वारा संग्रहीत सामग्री रो उण पोथी में कित्तो महताऊ उपयोग हुयो है।

डॉ. टैस्सीटोरी फगत इतिहास री सामग्री रा संकलन अर संग्रहकर्ता ई कोनी हा वल्कै वै खुद इतिहासकार अर संग्रहालय अध्यक्ष ई हा। बीकानेर सरकार वांनैं बीकानेर रो इतिहास लिखण रो काम सूंप्यो हो, जको आधो-अधूरो ई रैयग्यो। डॉ. टैस्सीटोरी आपरै बीकानेर रै इण इतिहास में बीकानेर रै संस्थापक राव बीकै नैं राव जोधै रो सबसूं मोटो बेटो प्रमाणित कर्‌यो है। इतिहासकार इण विषय पर मौन ई रह्या हा। डॉ. टैस्सीटोरी रै इण अधलिख्यै इतिहास नैं आधार बणायनै पछै रा इतिहासकारां ई इतिहास लिख्यो है। डॉ. टैस्सीटोरी री खोज्योड़ी पुरातात्त्विक सामग्री आज बीकानेर संग्रहालय में थोड़ी मात्रा में ई दीखै है। इतिहास रै प्रति उण रो कित्तो रुझान हो, इण रो बेरो उणां रै निधन रै पछै बारै सामान (जिको नीलाम हुयो) में बाकी बची पोथ्यां सूं लागै। आं पोथ्यां में इतिहास री वै घणमोली पोथ्या ई ही, जिणां नैं आज रो शोध-अध्येता आपरै शोध-प्रबंधां सारू जोवता फिरै है। डॉ. टैस्सीटोरी री सगळी पोथ्यां अेसियाटिक सोसाइटी बंगाल भेज दी गयी है। आ पोथ्यां री सूची राजस्थान राज्य अभिलेखागार में आज ई देखण सारू उपलब्ध है।

इतिहासवेत्ता डॉ. टैस्सीटोरी राजस्थान मांय वैज्ञानिक दीठ सूं इतिहास-लेखन री जिकी दिशा दी, बा ई सदा स्मरणीय रैसी। अठै अेक बतावण जोग बात आ भी है कै राजस्थानी भाषा, साहित्य अेवं संस्कृति अकादमी आपरै शैशवकाल में जद डॉ. टैस्सीटोरी आसन भाषण-माळा सारू म्हारै सूं जिको व्याख्यान दिरायो हो, बो ईज इण आलेख रूप में प्रस्तुत हुयो है। पण वर्तमान मांय डॉ. टैस्सीटोरी माथै खासो शोध हुय चुक्यो है, उण रो उल्लेख इण आलेख में नीं हुय सक्यो है।

डॉ. टैस्सीटोरी बाबत कीं नूंवी जाणकारी

डॉ. अेल. पी. टैस्सीटोरी रो बीकानेर-प्रवास च्यार वरसा रो रह्यो। अठै ई उणां रो देहावसान हुयो। इण आलेख में डॉ. टैस्सीटोरी रै फगत बीकानेर-प्रवास री जाणकारी दिरीज रह्यी है। डॉ. टैस्सीटोरी बीकानेर में मारवाड़ी भाषा विशेषज्ञ रै रूप में आया हा। दिसम्बर 1915 में भारत सरकार सूं उणारी सेवावां उधार लिरीजी ही। डॉ. टैस्सीटोरी अठै च्यार वरस काम करयो अर सन् 1919 रै अप्रैल महीनै में बै छव महीनै री छुट्टियां बितावण सारू योरप गया। उठै सूं आवण रै तीन हफ्तां पछै बीकानेर में बै बीमार पड़ग्या अर 22 नवम्बर, 1919 नैं देवलोक हुयग्या। बीकानेर में उणांनैं फिललोजिकल अर इतिहास सम्बन्धी काम ई सूंप्यो गयो हो। अठै उणां बीकानेर री स्टेट लाइब्रेरी में चारण-साहित्य रा गीत अर वातां सम्बन्धी साहित्यिक अर अैतिहासिक सामग्री रो आलीशान केटलॉग त्यार करियो अर राजस्थानी भाषा री कई महत्वपूर्ण रचनावां रो वेजोड़ सम्पादन करनै उणांनैं छपवायी। अठै आ बतावण जोग बात है कै उणारै अैतिहासिक ज्ञान नैं देखनै बानैं बीकानेर राज्य रो इतिहास लिखणै अर राज्य सारू अेक संग्रहालय त्यार करण रो काम ई सूंप्यो गयो। पण दोनूं ही काम उणां रै असामयिक निधन रै कारण अधविचाळै ई रैयग्या।

डॉ. टैस्सीटोरी नैं बीकानेर साढी सात वरसां तांई काम करण सारू बुलाया हा अर उणां रो अठै रो कार्यकाल सन् 1924 रै अक्टूबर महीनै में पूरो हुवणो हो। इणरी जाणकारी राजपूतानै रा गवर्नर-जनरल रै अैजंट रै उण कागद में मिलै है जिको उण कलकत्तै में अेकाउंटेंट जनरल नैं लिख्यो हो। टैस्सीटोरी री बहन एलन टैस्सीटोरी 28 दिसम्बर, 1919 नैं उदीनै (इटली) सूं लिंगविस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया रै सुपरिन्टेंडेंट नैं अेक कागद में लिख्यो, 'उणरै परिवार नैं डॉ. टैस्सीटोरी रै निधन री सूचना इटली में छाईस (26) दिनां बाद मिली है अर बा ई पूरी कोनीं। इण खातर सगळो परिवार परेशान है अर चावै है कै टैस्सीटोरी रै शव नैं इटली भेज्यो जावै। डॉ. टैस्सीटोरी रो बाप अर बहन धापनै गरीब हे, इण खातर उणांरी मदत करी जावै।'

डॉ. टैस्सीटोरी रै शव नैं बीकानेर री कब्र सूं काढनै इटली भेजण सारू उच्च-स्तर माथै मोकळा प्रयास हुया पण कामयाब नीं हुय सक्या। बम्बई सहित इटली रै एक्टिंग कौसल श्री लुईजी सेग्री बीकानेर रै अधिकारी श्री जी. डी. रडकिन नै लिख्यो, 'बम्बई रै नगरपालिका नियमां रै मुजब बूरयोड़ी लाश अट्ठारै महीनां पछै ई निकाळी जाय सकै है, जे थै टैस्सीटोरी री लाश वेगी निकळवा सको तो विशेष स्टीमर रै जरियै इणनैं इटली भेजण रो प्रबंध करयो जाय सकै है।' पण राज्य में इसा कोई नियम नीं हुवण उण उथळै माथै कोई कार्रवाई नीं हुय सकी। डॉ. टैस्सीटोरी रा कपड़ां रा दो बक्सा जरूर सन् 1920 में इटली भिजवाया जाय सक्या हा। टैस्सीटोरी री मौत रै बाद रा कागदां नैं देखण सूं बेरो पड़ै कै उणरै कोफिन बणावण माथै 73 रुपिया, 3

आना अर 9 पईसा ग खरचो आयो हो। इणी ज भान्त उणांरी कब्र माथै अेक क्रास लगायो गयो हो जिणरी उण बगत 7 रुपिया 15 आना 3 पईसां रो खरचो आयो। अठै आ फेरूं बतावण जोग बात है कै डॉ. टैस्सीटोरी री कब्र माथै टोम्ब बणावण रो काम उणारै परिवार रा लोगां पर ई छोड दियो गयो हो।

डॉ. टैस्सीटोरी रै निधन रै पछै उणारो निजू पुस्तकालय कलकत्तै री अेसियाटिक सोसायटी बंगाल नैं सूंप दियो गयो हो। इण पुस्तकालय री पोथियां रो विगत इण पोथी रै अेक दूजै आलेख में दिरीजी है। डॉ. टैस्सीटोरी रै घर रो सामान बीकानेर में ई नीलाम कर दियो गयो हो। कई इच्छुक अध्येतावां री जाणकारी मुजब खास-खास सामान नीलामी में कुण-कुण लियो उणरी विगत इण भान्त है– सेठ बहादुरमल रामपुरिया डॉ. टैस्सीटोरी रा च्यार आसण, दो तलवार, अेक ढाल अर डार्क-रूम लैम्प; सेठ छगनलाल बागड़ी दो टेबल लैम्प; पं. विश्वेश्वरनाथ चाय रा बरतण, वाशिंग मशीन अर पाकिट नाइफ; लाला बृजलाल पालिस सैट; सेठ बृजरतन कोठारी 13 चमचा; रावत मिस्त्री तोलण री मशीन; सेठ बृजरतन डागा दो तस्तरयां, तेल स्टोव, साल्ट बोटल; ललताप्रसाद अग्निहोत्री फाउटेन पैन, रैजर अर काम्बळ; मेजर हेनसन लाल तस्तरी अर अलमिरा बाक्स; सेठ चुन्नीलाल चौपड़ा लैम्प स्टैण्ड सहित, पीतळ लैम्प स्टैण्ड सहित, फोटुआ; सेठ नरसिंहदास डागा ग्रास लैम्प, काम्बळ, पिस्तौल, सेविंग सैट, होलडोल; सेठ केदारनाथ डागा चार सैट्स पेग अर आवल ट्रे; राजकुमार भेरूसिंह घोड़ा काठी अर छोटो लैम्प; डब्ल्यू अंच. जेम्स पाणी री बोतल, अेक काम्बळ, नौ चाकू अर पाच कांटा। आं लोगां रै अलावा धनराज ट्रेजरार, विक्टोरिया मैमोरियल क्लब, हजारीमल मोदी, कुशल मोदी, महावीर सिंह, सरदार हरनामसिंह, फतै मोहम्मद, सिकंदर अली अर अब्दुल लतीफ आद ई मुतफरकात सामान खरीद्यो।

डॉ. टैस्सीटोरी रै सुरग सिधायां पछै उणां रा पिताजी उणारै हस्तलिखित ग्रंथां रै बारै में घणा चिंतित हा। इणरी जाणकारी 28 दिसम्बर, 1919 नैं उदीनै (इटली) सूं बम्बई में विजयधर्म सूरिजी नैं लिख्योड़ै बारै अेक कागद सूं मिलै। अेक दूजै कागद सूं औ ठा पड़ै कै डॉ. टैस्सीटोरी री मौत पछै उणां रा संग्रहीत मेनुस्क्रिप्ट बडल बणायनै बीकानेर सूं क्रमशः काळू गाव रै गणेशीलाल ब्राह्मण, फळोदी रै महाजन जोरमल, जोधपुर रै चारण किशोरदान, हनुमानगढ रै जति गणेशीलाल अर बम्बई रा विजयधर्म सूरिजी नै भेज्या गया हा।

सुरसती अर लिछमी रो मेळ घणो ओखो है, आ बात डॉ. टैस्सीटोरी रै साथै ई ही। डॉ. टैस्सीटोरी जद योरप सूं छुट्टियां बितायनै पाछा बीकानेर आवै हा तद उणां 3 दिसम्बर, 1919 नैं बम्बई में विजयधर्म सूरिजी नैं बतायो कै उणांनैं आपरै पिताजी नैं भेजण सारू दो हजार रुपियां री जरूरत है। इण वास्तै बां दो हजार रुपिया उधारा दिरावण री अरज करी। आ अेक विडम्बना ई है कै डॉ. टैस्सीटोरी री 22 नवम्बर नैं मौत हुयगी अर रुपिया दो दिना पछै बीकानेर पूग्या। पण इण मांय सू अेक हजार रुपिया

बम्बई रै सेठ जयपाल पानाचन्द भेज्या हा। आ भी अेक विडम्बना ई है कै उणांरी मौत पछै आं रुपियां नैं पाछा लेवण वास्तै 9 फरवरी, 1920 नैं बम्बई सूं हाईकोर्ट रै वकील रो अेक नोटिस आयो। पण बाद में बीकानेर राज्य अै रुपिया पाछा कर दिया तो मामलो रफा-दफा हुयग्यो।

अठै अेक बात बतावणी जरूरी है कै कीं बरसां पैलां म्हैं बंगाल ओसियाटिक सोसाइटी रै कलकत्तै स्थित कार्यालय में गयो हो अर बठै डॉ. टैस्सीटोरी द्वारा संग्रहीत सामग्री ई देखी ही। औ जाणनै घणो दुख हुयो कै राजस्थानी भाषा सारू काम करण वास्तै धन हुंवतां थकां ई कोई राजस्थानी साहित्यकार या अध्येता डॉ. टैस्सीटोरी री संग्रहीत सामग्री माथै आगै काम करण नैं हाल ताईं नीं पूग्यो। उम्मीद करणी चाइजै कै भविस में राजस्थानी अकादमी कै कोई दूजी गैर सरकारी साहित्यिक या शोध संस्थावां इण सामग्री पर शोध करण अर छपावण री पहल करसी।

राजस्थान मांय डॉ. टैस्सीटोरी रा शोध-सैयोगी

डॉ. टैस्सीटोरी जद सन् 1914 में राजस्थान में सर्वेक्षण रा काम में लाग्योड़ा हा, तद उणांनैं राजस्थानी भाषा रो कामचलाऊ अर सामान्य ज्ञान ई हो, पण दो-तीन वरसां पछै उणां राजस्थानी भाषा री घणकरी बोलियां रो गहन अध्ययन ई नीं कर्‌यो बल्कै डिंगळ भाषा रा अनेक ग्रंथां रो सम्पादन, पाठ-भेद, टिप्पणी, भाषान्तर जैड़ा अवखा काम ई पार घाल दिया। इणरी पृष्ठभूमि में जोधपुर अर बीकानेर प्रवास में उणांनैं जिका लोगां रो सैयोग मिल्यो, वो कम महताऊ नीं हो। डॉ. टैस्सीटोरी खुद इण वात नैं आपरै पत्रां में स्वीकारी है। इण आलेख नैं त्यार करण सारू म्हैं राजस्थान राज्य अभिलेखागार में उपलब्ध फोरेन पोलीटिकल डिपार्टमेंट, बीकानेर स्टेट री पत्रावळियां रै साथै बंगाल ऐसियाटिक सोसाइटी री वरसाऊ कार्रवाई रिपोर्ट अर डॉ. टैस्सीटोरी रै चारण जाति रा सैयोगियां रा वंशजां सूं लियोड़ा साक्षात्कारां रो भी उपयोग कर्‌यो है।

बंगाल ऐसियाटिक सोसायटी में चारणी स्रोतां रै सर्वेक्षक रै रूप में नियुक्ति रै साथै ई डॉ. टैस्सीटोरी पूर्व सर्वेक्षक डॉ. हरप्रसाद शास्त्री री मारवाड़ सम्बन्धी सर्वेक्षण रिपोर्ट (1909) रो अध्ययन कर्‌यो। उणमें दिरीज्या दिशा-निर्देशां रो पाळण करता थकां डॉ. टैस्सीटोरी सन् 1914 में जोधपुर आयनै आपरो कार्य सरू कर्‌यो। अठै उणां नैं दो अैड़ा मान्य विद्वानां रो सान्निध्य मिल्यो, जिका आप-आपरै विषय रा अधिकृत विद्वान हा। आं मांय सूं अेक स्टेट जोधपुर (महकमा-तवारीख) इतिहास कार्यालय में कार्यरत रामकरण आसोपा हा अर दूजा किशोरदानजी चारण। अठै औ ई उल्लेख जोग है कै पैलां सन् 1910 में जद महोपाध्याय डॉ. हरप्रसाद शास्त्री आपरै सर्वेक्षण कार्य रै दौरान जोधपुर आया तो अठै उण कार्य नैं सुचारू रूप सूं चलावण सारू अेक कार्रवाई दळ रो निर्माण करीज्यो। इण दळ रो संयोजक पण्डित रामकरण आसोपा नैं वणायो गयो अर संग्रहकर्ता अर गवेषकां रै रूप में बारठ जेतदान, किशोरदान अर देथा चारण जुगतीदान अर ब्रह्मभट्ट नानूराम नैं नियुक्त करीज्या। आ समितित मारवाड़ छेत्र रै डिंगळ भाषा रा अनेक ग्रंथां रो सर्वेक्षण करनै उणां रो संग्रह कर्‌यो अर हरेक ग्रंथ री दो प्रतिलिपियां त्यार करी। आं मांय सूं अेक-अेक प्रति ऐसियाटिक सोसाइटी नैं भेजीजी अर दूजी प्रति जोधपुर तवारीख कार्यालय में सुरक्षित राखीजी। इण भान्त रै ग्रंथां री संख्या 50 ही। डॉ. टैस्सीटोरी रै जोधपुर आयां पं. रामकरण आसोपा नैं उणां आपरो पैलो सैयोगी नियुक्त कर्‌यो। अठै औ ई उल्लेख जोग है कै राज्य सरकार द्वारा देय पगार रै अलावा डॉ. टैस्सीटोरी श्री आसोपा नैं डिंगळ भाषा रो ज्ञान प्राप्त करण सारू अलग सूं 50 रुपिया हर महीनै देंवता हा। 55 वरसां रा पं. रामकरण आसोपा उण बगत तक भारत रै प्रमुख शिलालेख-विशेषज्ञां री श्रेणी में आय चुक्या हा। डॉ. टैस्सीटोरी रै सम्पादित 'वचनिका राठौड़ रतनसिंघजी री खिड़िया री जगा री कही' रै सम्पादन में पं. आसोपा रो महताऊ योगदान रह्यो। अैड़ा विद्वान आदमी रो सान्निध्य मिलण सूं डॉ. टैस्सीटोरी रो काम खासो सरल हुयग्यो हो। किशोरदान चारण नैं डॉ. टैस्सीटोरी रो दूजो सैयोगी वणाइज्यो। बां सारू

कह्यो जावै कै डिंगळ भाषा रा वै इत्ता लूठा विद्वान हा कै दूर-दूर सूं लोग उणां सूं परामर्श लेवण सारू आवता हा। डॉ. टैस्सीटोरी अेक जाग्यां खुद लिख्यो है कै आखै मारवाड़ अंचल में बारठ किशोरदान जिसो डिंगळ भाषा रो विद्वान दूजो जोयां ई नीं लाधै। आपरै जोधपुर प्रवास में डॉ. टैस्सीटोरी डिंगळ रै घणकरा महताऊ ग्रंथां रो सर्वेक्षण कार्य आंरै माध्यम सूं ई पूरो कर्यो हो। लोळावास (जोधपुर) गांव रा 40 वरसां रा किशोरदानजी डॉ. टैस्सीटोरी सारू अेक जरूरत वण चुक्या हा। इणरो पतो जोधपुर अर बीकानेर सरकार रै विचाळै हुयै पत्र-व्यवहार सूं लागै, जिणमें डॉ. टैस्सीटोरी रै बीकानेर आगमन पछै उणांरी इच्छा मुजब किणीं तरै अेक वेळा बारठ किशोरदान नैं थोड़ै दिनां सारू बीकानेर में डेपुटेशन माथै भेजण रो आग्रह कर्यो हो, पण जोधपुर सरकार बीकानेर राज रै इण आग्रह नैं ठुकरा दियो। इणरै बावजूद बारठ किशोरदान आपरी निजू हैसियत सूं 1918 तक बीकानेर आयनै डिंगळ ग्रथां रै सम्पादन में डॉ. टैस्सीटोरी रै सांमी आयी अवखायां रो निस्तारण करता रह्या। जोधपुर प्रवास में सर्वेक्षण कार्य में उणांरै दूजै सैयोगियां में श्री पन्नालाल, भट्ट नानूराम, चन्द्रभान पुष्करणा अर ऊजळां रामदयालजी भेळा हा। अै लोग जात्रा अभिकर्ता, गवेषक अर प्रतिलिपिकार रै रूप में लाग्योड़ा हा।

आं तथ्यां सूं स्पष्ट है कै जोधपुर प्रवास में 'वार्डिक अेण्ड हिस्टोरिकल सर्वे ऑफ राजस्थान' योजना रै त्हैत हुयै सर्वेक्षण में डॉ. टैस्सीटोरी री भूमिका अेक अधिकारी अर संयोजक रै रूप में ईज ज्यादा ही। आ अलग बात है कै जोधपुर सरकार सूं मतभेद हुय जावण सूं उणांनैं जोधपुर रो काम विचाळै ई छोडणो पड़्यो। *पण महाराजा गंगासिंह उणांनैं तत्काल बीकानेर बुला लिया। जोधपुर प्रवास में उणां* सैकड़ां शिलालेख अर डिंगळ रा हस्तलिखित ग्रंथां रो संग्रह कर्यो। इण सारू उणां नैं गांव-गांव जावणो पड़्यो। बीकानेर मांय सर्वेक्षण कार्य सरू कर्यो तो उणां नैं कीं अवखायां झेलणी पड़ी। पण उणां रा चारण-सैयोगी आं अवखायां नैं खासी हद तांई मिटा दी। बीकानेर में आपरो काम सरू करण सूं पैलां डॉ. टैस्सीटोरी राज्य सरकार रै सांमी अेक योजना वणायनै प्रस्तुत करी। इणमें उणां लिख्यो कै म्हारै सहायक रै रूप में चारण जाति रै लोगां नैं राख्यो जावै। इणरी पृष्ठभूमि में उणां कारण लिख्यो कै चारण जाति रा लोग ई म्हनैं डिंगळ कवितावां अर अैतिहासिक अर साख रा गीतां री शुद्ध व्याख्या करनै समझाय सकै है। इणरै साथै ई वै मारवाड़ी लिपि में लिख्योड़ी ख्यातां रै कठिन सवदां रो सही ढंग सूं अध्ययन करनै अर्थ बताय सकै। तीजै कारण में उणां लिख्यो कै घणकरै चारण-साहित्य री पाण्डुलिपियां चारण जाति रै घराणां में ई मिलै, इण सारू चारण जाति रो आदमी ई पाण्डुलिपियां राखणिया लोगां सूं सम्पर्क करनै आं पाण्डुलिपियां नैं उपलब्ध करवाय सकै।

इणरै अलावा डॉ. टैस्सीटोरी बीकानेर में आपरै सर्वेक्षण कार्य री 121 रुपियां रै मासिक खर्च री योजना ई प्रस्तुत करी जिणमें उणां खर्च रो हिसाब इण भान्त बतायो– *अेक सहायक नैं 25 रुपिया माहवार, अेक प्रतिलिपिकार नैं 20 रुपिया* माहवार, अेक जात्रा अभिकर्ता (ट्रेवलिंग अेजेंट) नैं 25 रुपिया प्रतिमाह (अर 25 रुपिया अन्य)। राज्य सरकार उणां री इण योजना नैं तुरन्त मंजूरी देय दी। इण योजना

री स्वीकृति रै पछै उणां औ आग्रह भी कर्‌यो कै म्हारो कार्यालय म्हारै निवास-स्थान में ईज रैसी अर म्हारा सहायक, प्रतिलिपिकार अर जात्रा अभिकर्ता म्हारै साथै ई रैसी, ताकै उणां सूं किणी भी वगत विचार-विमर्श कर्‌यो जाय सकै। राज्य सरकार उणांरै इण आग्रह नैं ई स्वीकार कर लियो।

सरकारी दस्तावेजां सूं डॉ. टैस्सीटोरी री सर्वेक्षण प्रणाली पूरी तरयां उजासित हुवै है। इणरै त्हैत जात्रा अभिकर्ता रो औ दायित्व हो कै वो राज्य रा अैड़ा गांवां रो पतो लगावै जठै कोई ग्रंथ या शिलालेख उपलब्ध हुय सकै है। पछै वै उण गगाव या कस्बै री जात्रा करनै सम्बन्धित पाण्डुलिपि या शिलालेख रो अध्ययन करनै उणरै काल अर विषय रो निर्धारण करता हा। उणरै कीं भाग री नकल भी वै आपरी डायरी में उतार लिया करता हा। वै आपरै कनै अेक डायरी राखता जिणमें उण गांव में आपरी हाजरी दरसावण सारू दस्तखत करवा लिया करता हा। वै जिको काम करता हा, उण रो इन्द्राज ई कर लेंता हा। उणरै पछै उण डायरी नैं बीकानेर में लायनै डॉ. टैस्सीटोरी नैं दिखावता अर जे डॉ. टैस्सीटोरी सम्बन्धित सामग्री रो कोई महत्त्व समझता तो उणनैं देखण सारू वै खुद ई गांव री जात्रा कर लिया करता हा। जे जात्रा अभिकर्ता खुद आपरै निजू प्रभाव सूं पाण्डुलिपि बीकानेर लाय सकतो, तो लेय आवतो हो।

डॉ. टैस्सीटोरी नैं जद कदैई सर्वेक्षण जात्रा पर जावणो हुंवतो तो उणां रो कार्यक्रम पैलां सूं त्यार कर लियो जावतो हो अर सुख-सुविधा सारू सम्बन्धित छेत्र रा तहसीलदारां अर चौधरियां नैं आदेस देय दियो जावतो हो। बीकानेर में जात्रा अभिकर्ता अर खोजकर्ता रै रूप में सन् 1916 में सींथळ निवासी बीठू सीताराम नैं नियुक्त करीज्यो। वै डिंगळ रा आछा विद्वान हा। उणारी रचना 'कविकुल कण्ठाभरण' आचार्य केशव री रचना री भांत लक्षण-ग्रंथ मानी जावै। इणरी प्रति उणां रै वंशजां कनै सुरक्षित है। उणां बीकानेर छेत्र रा अनेक शिलालेखां अर चारण-साहित्य रा ग्रंथां रो पतो लगायनै डॉ. टैस्सीटोरी नैं उणरी जाणकारी दी। पण बाद में सर्वेक्षण कार्यप्रणाली सूं सम्बन्धित मतभेद हुवण रै कारण डॉ. टैस्सीटोरी उणां री सेवा लेवण सूं मना कर दियो। इण पर राज्य सरकार उणांरी सेवा समाप्त कर दी। तापछै डॉ. टैस्सीटोरी रै सैयोग सारू दो दूजा चारण नियुक्त करीज्या। इणांमें पैला बीकासर रा सांधु जोरदान अर दूजा मथाणिया रा देवकरण बारठ हा। सन् 1910 में जोरदान सांधु जगात थाणेदार नियुक्त हुया हा पण डिंगळ साहित्य रो उणां रो ज्ञान उच्च कोटि रो हुवण सूं आपनै डॉ. टैस्सीटोरी कनै खोजकर्ता रै रूप में लगा दियो गयो। अै दोनूं आदमी डॉ. टैस्सीटोरी रै साथै उणांरै बंगलै में ईज रह्या करता हा अर बांरो घणकरो वगत डॉ. टैस्सीटोरी रै साथै ई वीततो हो। डॉ. टैस्सीटोरी 6 दिसम्बर, 1918 सूं 31 दिसम्बर, 1919 तांईं आं दोनूं चारणां नैं सर्वेक्षण कार्य रो प्रशिक्षण दियो अर पछै उणां नैं गांवां अर कस्बां में सर्वेक्षण कार्य सारू भेज्या। अै लोग डॉ. टैस्सीटोरी रै निधन तक सर्वेक्षण कार्य में सैयोग करता रह्या। आंरै ढूंढ्योड़ा सैकड़ां ग्रंथ आज ई अनूप संस्कृत लाइब्रेरी अर बंगाल अेसियाटिक सोसायटी में सुरक्षित है।

जैन-साहित्य रै प्रति डॉ. टैस्सीटोरी रो लगाव

उगणीसवीं सदी रै मध्य में आखै यूरोप में बठै रा विद्वानां अर अध्येतावां मांय भारत री प्राच्य-विद्या बाबत ज्यादा सूं ज्यादा जाणकारी लेवण री लाळसा जागृत हुयी ही। इण उद्देश्य नैं पूरण सारू आथूण रा अनेक विद्वानां भारत रै विभिन्न छेत्रां में सृजित प्राचीन-साहित्य री भाषा अर उणरी लिपि रै साथै-साथै ग्रंथां अर पाण्डुलिपियां री विषय-वस्तु रो गहरो अध्ययन कर्‌यो। अठै रा इण महताऊ साहित्य रो कीं हिस्सो खरीदनै बै आपरै साथै ई लेयग्या। वीसवीं सदी री सरुआत तक यूरोप रा कई विद्वान भारत री विभिन्न भाषावां अर धर्मां रो साहित्य आपरै अठै लेजायनै प्राच्य-विधावां सूं सम्बन्धित यूरोप रा पुस्तकालयां अर अभिलेखां नैं सिमरध कर चुक्या हा।

इसा विद्वानां में जरमनी, फ्रांस रै साथै इटली रा विद्वान ई भेळा हा। सन् 1885-86 में इटली रो एंजिलो डी गुवरनाटिस भारत रै सूरत अर बम्बई सूं बडी संख्या में विभिन्न धर्मावलंवियां द्वारा रचित पाण्डुलिपियां खरीदनै आपरै देस में लेयग्यो। आंमें 350 पाण्डुलिपियां तो फगत जैन धर्म रै विभिन्न सम्प्रदायां सूं सम्बन्धित ही। उण आंरो अेक केटलॉग ई त्यार करवा लियो हो। इणीं बीच पुलि नांव रो विद्वान जद 1903 मे भारत सूं पाछो इटली पूगो तो कई नूंवी पाण्डुलिपियां सूं इण संग्रह नैं ओरूं सिमरध कर दियो। औ संग्रह इटली रै प्रमुख शिक्षा-केन्द्र फ्लोरेंस में राखीज्यो हो, इण वास्तै भविष्य में औ फ्लोरेंस संग्रह रै रूप में ई जाणीजण लागग्यो हो। बाद बालीनी अर पावोलिनी सरीखा उठै रा विद्वानां फ्लोरेंस रै इण संग्रह मांय जैन-साहित्य सूं सम्बन्धित कई पाण्डुलिपियां रो अध्ययन करनै उणां माथै आपरा शोध-पत्र लिख्या। इणसूं आं पाण्डुलिपियां रो महत्त्व शोध-जगत रै सांमी आयो। तापछै संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश में लिख्योड़ी आं पाण्डुलिपियां रै अध्ययन सारू इटली रा कई युवा शोधकर्ता आकर्षित हुया। आंमें टैस्सीटोरी नांव रो युवक ई भेळो हो। टैस्सीटोरी नैं प्रो. पावोलिनी जिसा विद्वान रो विद्यार्थी हुवण रो सौभाग मिल्यो।

उण बगत तक जर्मन विद्वान प्रो. एच. जेकोबी, मूलर, मैक्समूलर अर इटली रा डॉ. अेच. हर्टल, डॉ. अे. गुयरीनोट जिसा विद्वान भारत में संस्कृत अर प्राकृत भाषा री पाण्डुलिपियां अर अठै रा धार्मिक सम्प्रदायां रै गुरुआं अर संतां बाबत समूचै यूरोप नैं जाणकारी देय चुक्या हा। इटली ई इणसूं अछूतो नीं रह्यो। फळसरूप टैस्सीटोरी, फ्लोरेंस में आपरै अध्ययनकाल में भारत सूं लायोड़ी पाण्डुलिपियां रो अवगाहन करनै कई पाण्डुलिपियां रो भाषागत अध्ययन कर्‌यो। रामचरितमानस पर आपरै शोधकार्य रै दौरान उणांनै अवधी भाषा रै अध्ययन रो अवसर तो पैलां ई मिल चुक्यो हो। बाद में आं पाण्डुलिपियां रै अध्ययन सूं उणां गुजराती अर पश्चिमी राजस्थानी भाषा, लिपि अर उणरै व्याकरण माथै ई शोध कर्‌यो।

अठै सूं ई उणां रो जैन-साहित्य रै प्रति जुड़ाव बधतो गयो। इण साहित्य रै अध्ययन सूं उणांनैं भारत रै छेत्र विशेष रा भूगोल अर अठै रा रैवासियां रै आचार-विचार, भाषा अर लिपि नैं जाणण-समझण रो मौको मिल्यो। जार्ज ग्रियर्सन जद डॉ. टैस्सीटोरी नैं राजपूताना में चारण-साहित्य अर ऐतिहासिक साहित्य रै सर्वेक्षण रो काम सूंप्यो तो उणां ईं प्रस्ताव नैं सहजां स्वीकार लियो। इण रो मूळ कारण इण विषय पर उणां रो पूर्व में प्राप्त ज्ञान ई हो।

अठै औ ई उल्लेखनीय है कै प्रो. पावेलिनी रै सान्निध्य में डॉ. टैस्सीटोरी फ्लोरेंस रै जैन, प्राकृत संग्रह मांय सूं वैराग्य-शतक (Bhaviragya-sataka) 'उपदेश-माला' (*Uvaesamala*) अर 'इन्द्रिय-पराजय-सवैया' (Indriya parajaya-*sayaya*) नामक गुजराती पाण्डुलिपियां रो सन् 1913 में सम्पादन कर दियो हो। लगैटगै इणीं बगत जैन-साहित्य री दूजी रचना 'करकण्डु की कथा', जिकी जयपुर छेत्र री अेक दिगम्बर जैन पाण्डुलिपि ही, रै साथै मारवाड़ी भाषा री 'नासकेता री कथा' छप चुकी ही। घणकरो जैन-साहित्य अपभ्रंश में रच्योड़ो हुवण सूं उणांनैं इण रो ई गहरो अध्ययन करणो पड्यो। औ अध्ययन भारत प्रवास रै दौरान उणां सारू खासो उपयोगी सावित हुयो। उणां आपरै अध्ययनकाल में ई अेक भाषा वैज्ञानिक रै रूप में Notes on the grammar of the old western Rajasthani with special reference to Apabhranasa and to Gujrati and Marwari. त्यार करनै प्रतिष्ठा प्राप्त करली ही। जद्यपि इणनैं उणां सन् 1914-15 में छपवायी ही। इणमें उणां शोरसेनी अपभ्रंश नैं गुजराती अर मारवाड़ी भाषा री जननी मानी ही। साथै ई बांरो मानणो हो कै यूं तो अपभ्रंश भारत रै असम, महाराष्ट्र, बंगाल अर आंध्रप्रदेस में भी प्रचलन में ही पण इणरी उत्पत्ति आथूणै भारत में ई हुयी ही अर उण रो सगळां सूं बेसी प्रभावित छेत्र गुजरात, राजस्थान अर विदर्भ में विद्यमान हो। चारण जाति रा कवियां अपभ्रंश री सरलता रै कारण उणनैं आपरै डिंगळ गीतां री अभिव्यक्ति रो माध्यम बणायो।

उण बगत तक डॉ. टैस्सीटोरी रो जैन-साहित्य सूं अणूतो लगाव हुयग्यो हो। उणां भारत आयां सूं पैलां ई गुजराती अर राजस्थान री ढूंढाड़ी बोली में "Story of soloman judgement" री कहाणी सूं मिलती-जुलती जैन व्याख्यावां पर आधारित कहाणियां री पाण्डुलिपियां नैं ई सम्पादित कर छोडी ही।

आं सूचनावां रै आधार माथै औ मान्यो जाय सकै है कै डॉ. अेल. पी. टैस्सीटोरी रै सन् 1914 में भारत आगमन सूं पैलां ई जैन-साहित्य सूं बांरो लगाव हुयग्यो हो। पण सन् 1915 सूं लेयनै 1919 में उणारै निधन तक जोधपुर अर पछै बीकानेर में चारण-साहित्य, राजपूतां रै इतिहास, पुरातात्त्विक अवशेषां री खोज अर सर्वेक्षण रा कामां में पूरी तरयां व्यस्त हुय जावण रै उपरांत भी उणांरो जैन-धर्म रै प्रति औ लगाव कम नीं हुयो हो। बै राजपूताना, गुजरात अर दूजी किणीं जागयां आपरै सर्वेक्षण कार्य सूं

जावता अर उठै उणांनैं जे कोई जैन उपासरो हुवण री ठा पड़ जावती तो वणती कोशिश वै उणों में ठैरता। वै उठै जैन साधुवां अर श्रमणियां री दैनिक दिनचर्या रो बारीकी सूं अध्ययन करता। अठै ईज उणांनैं जैन-साहित्य नैं नैड़ै सूं देखण-समझण रो मौको मिल्यो।

मध्यप्रदेस रै शिवपुरी में निवास कर रह्या जैन सम्प्रदाय रा श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन सन्त विजयधर्म सूरि री धर्म अर साहित्य रा लूंठा विद्वान हा। वां री विद्वता रै कारण उगणीसवीं सदी रै आखरी दसकां में भारत री प्राच्य-विद्या रा यूरोपियन विद्वान उणां सूं घणा प्रभावित हा। सन् 1910-11 तक विजयधर्म सूरि पूरै यूरोप में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुक्या हा अर उणांरी प्रमुख रचना 'श्री यशोविजय ग्रंथमाळा' नैं ओपतो आवकारो मिल्यो। जर्मनी अर इटली रा विद्वान ऑरै खासा नैड़ा आयग्या हा। आं मांय प्रो. एच. जेकोबी, डॉ. अेच. हर्टल अर डॉ. अे. गुयरीनोट आद भेळा हा। डॉ. विंटरनित्स ई उणांरै सम्पर्क में आयग्या हा। जैन धर्म री क्लिष्ट बातां री सरल व्याख्या करण आळा आं जैन मुनि नैं भारत री अेसियाटिक सोसाइटी सहित इटली अर जर्मनी री अेसियाटिक सोसायटी अर ओरियंटल सोसाइटी ई आपरा मानद सदस्य बणाय राख्या हा। इण कारण डॉ. टैस्सीटोरी आपरै अध्ययनकाल में ई आं जैन मुनि सूं परिचित हा। वर्तमान में आचार्य विजयधर्म सूरि अर डॉ. अेल. पी. टैस्सीटोरी रै बीच अेक सुदीर्घ पत्र-व्यवहार उजास में आय चुक्यो है। भारत में आपरै प्रवास में डॉ. टैस्सीटोरी आचार्य विजयधर्म सूरि सूं तीन-च्यार वार ही मिल्या हा। औ अेक संजोग ई हो कै डॉ. टैस्सीटोरी रो निधन तो सन् 1919 में हुयग्यो अर आचार्य विजयधर्म सूरि रो देहावसान सन् 1922 में हुयो।

आचार्य विजयधर्म सूरि अर उणांरा शिष्य इन्द्रविजय सूरि डॉ. टैस्सीटोरी री घणी सहायता करी ही। उणांरै भारत आगमन रै साथै ई राजस्थान रै पाली कस्बै में अर काठियावाड़ छेत्र रा तालजा कस्बै में आचार्य रा शिष्यां डॉ. टैस्सीटोरी रै काम में घणी मदत करी। इत्तो ई नीं, डॉ. टैस्सीटोरी आचार्य विजयधर्म सूरि नैं आपरो गुरु माननै उणांरै सम्मान में सन् 1917 में वांरी जीवनी छपवायी। 'विजय धर्म सूरि; अे जैन आचार्य ऑफ द प्रेजेण्ट डे' नांव री इण पोथी में आचार्य विजयधर्म सूरि रै सम्बन्ध में विस्तार सूं चर्चा करी है।

भारत प्रवास रै दौरान डॉ. टैस्सीटोरी चारण-साहित्य अर पुरातात्त्विक सामग्री रै सर्वेक्षण करती वगत आपरै सारू कीं पाण्डुलिपियां री खरीद ई करली ही। अठै औ भी उल्लेखनीय है कै उण वगत यूरोपीय विद्वानां में अेक चलन हो कै भारत में उपलब्ध प्राच्य-विद्या सूं सम्बन्धित ग्रंथां नैं खरीदनै आपरै देस में ले जायो जावै ताकै बठै रा पुस्तकालय सिमरध हुय सकै अर शोधार्थी घणमोलो ज्ञान हासल कर सकै। इण ओळ में प्रो. अेच. जेकोबी द्वारा सन् 1874 में जैसळमेर सूं अनेक संस्कृत पाण्डुलिपियां अर जैन-साहित्य नैं खरीदनै आपरै देस में ले जावण रो उल्लेख मिलै। इणीं भान्त जर्मन विद्वान मेक्समूलर ई महाराष्ट्र छेत्र री कई संस्कृत पाण्डुलिपियां प्रो. कीलहार्न री मदत सूं

खरीदनै उणानैं जर्मनी पुगायदी ही। मेक्समूलर अठै 1863 सूं 1880 तक रह्यो हो। अेक दूजा जर्मन विद्वान भूलर तो भारत रै जैन-साहित्य री नकलां या मूळ रूप, जिणमें आगम कथावां नै पद्य आद उल्लेख जोग हो, नैं रोयल लाइब्रेरी बर्लिन लेजावण आळा विद्वानां में प्रमुख हा। इण लोभ सूं डॉ. अेल. पी. टैस्सीटोरी ई बच नीं सक्या। इणरी जाणकारी सन् 1923 में उणांरै परिवार द्वारा फ्लोरेंस पुस्तकालय नैं सूंपीज्यै 'डॉ. टैस्सीटोरी ग्रंथ संग्रह' सूं हुवै। इणमें कुल 250 पाण्डुलिपियां अर बाकी छप्योड़ी पोथ्यां ही। इण संग्रह में जैन-साहित्य रै रूप में धर्म, दर्शन सूं सम्बन्धित सामग्री उल्लेखनीय ही। साथै ई जैन साधु-संतां री विभिन्न रचनावां, जिणां में कीं टीकावां रै साथै सिद्धान्त अर आगम री पाण्डुलिपियां भी ही। आंमें जैन सन्त हेमविजय रो साहित्य ई भेळो हो। इण संग्रह री घणकरी फोटो प्रतियां भारत में भी उपलब्ध है। अठै इण संग्रह री सामग्री पर भी थोड़ी चर्चा लाजमी है। इणसूं आपांनैं डॉ. टैस्सीटोरी रै जैन-साहित्य रै प्रति असीम अनुराग री जाणकारी ई मिलसी।

इण संग्रह में जैन साधु व्याकरणाचार्य सुन्दर द्वारा 16वीं सदी में विरचित 'उक्ति-रत्नाकर' नांव री संस्कृत पाण्डुलिपि घणी महताऊ ही। इणरै महत्त्व नैं समझनै ई डॉ. टैस्सीटोरी इणरी दो दूजी प्रतियां नैं आधार बणायनै इण रो सम्पादन कर दियो हो। मारवाड़ी भाषा री व्युत्पत्ति नैं लेयनै सात खंडां में छप्योड़ी आ पाण्डुलिपि डॉ. टैस्सीटोरी री भूमिका अर आखिर में दिरीजी सबदावळी रै पाण शोध-जगत सारू घणी महताऊ बणगी है।

जैन-साहित्य री दूजी पाण्डुलिपियां में 18वीं सदी रा चावा-ठावा जैन टीकाकार देवेन्द्र सूरि री प्राकृत में लिख्योड़ी (Sidhi damdik avacurih) सिद्धि दामदिक अवचूरी, कर्मग्रंथ री पाण्डुलिपियां आद उल्लेखनीय है। आं कृतियां रै अलावा टैस्सीटोरी रै उक्त संग्रह में प्राकृत अर अर्धमागधी में गोतमकुलम (प्राकृत भाषा), गोतम स्वामी गीतम् (प्राचीन मारवाड़ी) आद पाण्डुलिपियां जैन-साहित्य सूं ई सम्बन्धित ही।

इणीं भान्त शान्तिसूरि की टीकाएं, अभयदेव सूरि की टीकाएं, देवेन्द्र सूरि की टीकाएं, कल्याण-मंदिर स्त्रोतम्, सिद्धसेन दिवाकर अर हेमचन्द्र री अभिधान चिंतामणि नाम माला, अभिधान चिंतामणि कोश, त्रिशष्टिशलाका पुरषचरित्र, हेमविजय नैं समर्पित कथामहोदधि (संस्कृत) आद उल्लेखनीय जैन-साहित्य रचनावां ही।

छेकड़ जातां आपां कैय सकां हां कै डॉ. अेल. पी. टैस्सीटोरी रो जित्तो लगाव राजपूत संस्कृति सूं हो, उत्ता ई बै जैन-संस्कृति सूं भी प्रभावित हा। इण आलेख नैं त्यार करण में म्हनैं जठै राजस्थान राज्य अभिलेखागार रै टैस्सीटोरी सम्बन्धी संग्रह सूं सहायता मिली, बठै ई बीकानेर में 21 सूं 23 फरवरी, 1996 में डॉ. टैस्सीटोरी री स्मृति में हुयी इंटरनेशनल कांफ्रेंस में पढीज्या शोध-पत्रां सूं भी कई नूंवी जाणकारियां मिली।

राजस्थानी अभिलेखां में शिवाजी : आंख्यां देखी विगत

आ बात कम लोग ई जाणै कै शिवाजी बाबत राजस्थानी भाषा में लिख्योड़ी मोकळी सामग्री है। सन् 1939 में जयपुर राज रै मेहकमा खास रेकर्ड ऑफिस में करीब 68 इसा कागद-पत्र हाथ लाग्या जिणां में शिवाजी री आगरा जात्रा अर बीं रै लारली घटनावां रो सांगोपांग वर्णन मिलै। अे कागद आगरै में जयपुर नरेश सवाई जयसिंह प्रथम रै कुंवर रामसिंह रै डेरै सूं जयपुर रै वकील परकालदास जयपुर रै दीवान कल्याणदास नैं लिख्या हा। आं मांय सूं अेक कागद बानगी सरूप प्रस्तुत है। इण पत्र सूं ठां पड़ै कै शिवाजी बाबत राजस्थानी रै कागदां में कितरी झीणी अर प्रमाणिक सामग्री मिलै। इण कागद में जिकी लोकरुचि री बातां है फगत वै ई अठै उल्लेखित है।

शिवाजी जिसो बादशाह ओरंगजेब रो कट्टर विरोधी, जयपुर नरेश रै समझावण सूं जद बादशाह रै दरबार में आगरै पूगो तो आ अेक अैतिहासिक घटना ही। सगळो देस इण घटना नैं घणी उत्सुकता सूं देखै हो। सगळा इण बात री सही जाणकारी चावै हा के आ घटना साची है कै गप्पोड़ो है। कारण कै आम आदमी रै दिमाग में आ बात दौरी बैठै ही कै शिवाजी आगरै जायनै बादशाह रै दरबार में हाजरी देय सकै। बांरी निजरां में तो शिवाजी अंक अपराजित हीरो हो। वो आगरै दरबार में जायनै हाजरी देवै, आ बात लोगां री कल्पना सूं परै ही।

पण जिका लोग इण बात सूं वाकब हा, बांरै मन में भान्त-भान्त री जिज्ञासावां ही। वै जाणणी चावै हा कै शिवाजी री कद-काठी अर शक्ल-सूरत किसीक है ? आगरै में बो किसीक त्यारी साथै आयो ? दरबार में बो किण भान्त हाजर हुयो ? बादशाह उणरै सागै किसोक बरताव करयो अर किण भान्त पडूत्तर दियो ? इसी मोकळी जिज्ञासावां जयपुर रै दीवान कल्याणदास रै मन में ई ही। उण यांरी जाणकारी सारू वकील परकालदास नैं आगरै कागद लिख्यो। परकालदास इण कागद रो पडूत्तर 29 मई, 1666 रै दिन दियो। इण कागद में शिवाजी बाबत दूजी बातां रै साथै उणरै डील-डौल बाबत ई खासी जाणकारी मिलै। अठै आ बात उल्लेख जोग है कै इण कागद रै पैली शिवाजी रै डील-डौल बाबत लोगां नैं इतरी जाणकारी नीं ही।

परकालदास इण कागद में लिखै कै शिवाजी आगरै में आपरै दो-ढाई सौ सवारां साथै आया। शिवाजी अर बांरा अधिकारी पालक्यां में सवार हा। शिवाजी रो झंडो नारंगी रंग रो हो। शरीर पतळो अर कद घणो डींगो नीं हो। बांरो रंग गोरो निछोर हो अर बै दीसता ई राजवी ज्यूं हा। शिवाजी री हिम्मत अर मरदानगी देखतां ई बणै आवै ही। शिवाजी रै डाढी राख्योड़ी है। बांरै साथै बांरो नव बरस रो बेटो ई हो। बो फूटरो अर गोरो हो। यूं तो लोगां शिवाजी री मरदानगी बाबत सुण्यो ई हो पण आगरै आयनै ई उणां बादशाह सूं करड़ा सवाल-जवाब करया, इणसूं लोग बांरी मरदानगी री सरावणा करै हा।

वकील परकालदास रो ओ मूळ कागद कोई तीन सौ सवा तीन सौ वरसां जूनो। इणी तरै रा 68 कागद तो शिवाजी माथै आज ई मौजूद लाधै। आं री भापा घणी सिमरध है। शिवाजी रो नांव वीं वगत सिवो या सेवाजी लिखिजतो हो। आपां आज राजस्थानी भापा बावत सतरै वातां करां अर इणरी सिमरधता अर भापा हुवण माथै ई आंगळी उठावां पण उण जमाना में ई इण भाषा री आ छटा ही। सगळी लिखा-पढी अर राज-काज इण भाषा में मजै सूं चालता। ढूंढाड़ सूं लगायनै मारवाड़ अर मेवाड़ तांईं सगळै राजपूतानै रा लोग इणनै समझता, लिखता, वांचता अर मामूली फरक-फार साथै धड़ल्लै सूं आपरो काम चलावता।

मूळ कागद

॥ श्री रामजी ॥

सिद्धि श्री सरवोपमा विराजमान दीवानजी श्री कल्याणदासजी जोग्य लिखतं आग्याकारी परकालदास केनी सेवा मुजरो अवधारजो। ....और इनायतनामो एक बलुसाहजी का कासिद हाथ आयो। बहुत खुशहाली हुई जी। श्री राज लिखो थो जु सेवा कांठे रे केतोक साथ छो, किसाक तुजुक सूं आन मिलो सु वोरो लिखजो। सु साहिब सेवो छड़ो सो ही साथी ओठो आयो जी। असवार सौ दोई अथवा अढाई सौ सगळा छै जी। त्यां में असवार सौ एक खुद असपां वाकी वारगीर का पावा वाळा। और सेवो पालकी असवार होई तव तुरकां की सी रवस पयादा खड़ोत सा मोढा आगे बहुत चालो जी। सेवाजी के नारंजी सी दरयायी का निसान सुनहरी छापा का छाप्पां चोळो छै जी। ऊंट सेवा की सरकार में थोड़ा बार बरदारी ने बोल ही वहोत लदो छो जी। विणजारा को सो ठाठो। और सेवा का चाकरां को बड़ा आदम्यां को पालकी असवारी सगळां को सु पालकीयां के बहुत। अर सेवोजी डील तो हकीर छोटो सो ही देखता दिसजी। अर सुरती बहुत अजाइब। गौरो रंग अपुछो राजबो दीसोजी। हिम्मती मरदानगी ने देखतां ही इसो दिसो जु बहुत मरदानो हिम्मतबुलंद आदमी छो। सेवाजी के डाढ़ी छै। और सेवाजी को बेटो बरस 9 को छ, सु भी बहुत अजाइब सुरती छै जी गोरो रंगी। और सेवाजी आयो सु जमीअती तो थोड़ी ही थी पनी भला तुजक अदाई सो आयो जी। हाथी मोढ़ा आगे धर्‌या, त्यां उपरी नीशान। घोड़ा को तील मोंढ़ा आगे बहुत ही अहतमाम तुजक करता असी भान्त आयाजी। हथणी-हथणी होदा की पुठी पाछै। सुखपाल मूंढ़ा आगे, ज्यां सुखपाल का वास रूपा सो मंढ़्या और सुखपाल का सगळा फूंदा को रूपां का बड़ा-बड़ा झाबा। पालकी सगळो ठो रूपा का पत्रां सो मंढ़ी, रूपा की ही पालकी पाया व खूंटी सोना का पत्रां सो मंढ्या जी। असी भांति आयो। आगे तो सेवाजी की मरदानगी न हीमती ने खलक सराही थी। अर अब ओठो पातशाह जी की हजुरी भी आई। सखती करी करड़ा जबाब कह्या, तींथे खलक सेवाजी की मरदानगी ने बहुत सराहो जी।....।

पं. नेहरू रो निजू कागद पालीवाळजी रै नांव

17 जुलाई, 1955 में प्रधानमंत्री निवास, नई दिल्ली सूं लिख्योड़ो औ कागद पं. नेहरू राजस्थान रा तत्कालीन मंत्री श्री टीकाराम पालीवाळ नैं लिख्यो। पं. नेहरू रा हस्ताक्षर करयोड़ो दो पेज रो अंग्रेजी में लिख्योड़ो औ कागद निजू अर गोपनीय है। पण आज औ कागद राज्य अभिलेखागार में शोध अध्येतावां वास्तै उपलब्ध है। इण कागद रो घणकरो भाग तो टंकित है पण अंत में दो लाईनां नेहरूजी आपरै हाथ सूं लिखी है। कागद रो मूळ विषय शेख अब्दुल्ला रो बेटो फारूख अब्दुल्ला है। शेख अब्दुल्ला उण वगत जेळ में हा अर वांरै बेटै फारूख अब्दुल्ला नैं जयपुर मेडिकल कॉलेज में जिकी अबखायां भुगतणी पड़ रह्यी ही वांनैं मिटावण वास्तै लिख्योड़ो औ कागद यूं तो साधारण सो लागै, पण इण कागद रै अध्ययन सूं पं. नेहरू री दरिया-दिली रो ठा पड़ै। इण महताऊ कागद रा भाव इण भान्त है–

पं. नेहरू श्री पालीवाळ नैं लिख्यो, 'म्हनैं इण बात री घणी प्रसन्नता है कै छेवट फारूख अब्दुल्ला नैं जयपुर मेडिकल कॉलेज में दाखिलो मिलग्यो। कई लोग आ बात गळत रूप सूं सोचै कै म्हारा शेख अब्दुल्ला साथै सम्बन्ध आछा नीं है इण कारण बांरै बेटै अर परिवार सागै आछो वैवार नीं हुय रह्यो है। पण बात इणसूं उल्टी है। आज जद शेख अब्दुल्ला जेळ में है तो म्हैं उणां रै टाबरां रो ध्यान राखण री म्हारी विशेष जिम्मेवारी समझूं।

थोड़ाक दिन पैली फारूख अब्दुल्ला म्हासूं मिल्यो। पैली ई बो कई बार लिख चुक्यो है कै जयपुर मेडिकल कॉलेज रा कीं छात्र उणनैं देसद्रोही कैयनै अपमानित करै। आ बात सुणनै म्हनैं घणो दुख हुवै। म्हैं आ बात ई जाणूं कै लड़कां नैं रोकणा घणा दौरा है, पण आपां कोशिश करनै इस्यो वातावरण जरूर बणाय सकां जिणसूं इसी बातां रोकी जाय सकै। म्हनैं आ जाणनै प्रसन्नता है कै मेडिकल कॉलेज रा प्रिंसिपल डा. कासलीवाळ फारूख अब्दुल्ला रो ध्यान राखनै उणमें रुचि लेय रह्या है। श्री हीरालाल शास्त्री ई फारूख अब्दुल्ला रो ध्यान राखण रो वादो करयो है।

अेक काम म्हैं थांनैं (टीकाराम पालीवाळ नैं) सूंपणी चावूं कै जे संभव हुवै तो फारूख अब्दुल्ला नैं सिनेमाघर रै कनला होस्टल सूं हटायनै मेडिकल कॉलेजरै हथै में बण्योड़ै होस्टल में राख दियो जावै। कमरो नैनो हुवै तो ई कोई बात नीं पण हुवणो स्वतंत्र चाहीजै। जिको सहपाठी छात्र उणनैं नीं चावै अर उणरी मजाक करै, संभव है वीं रै वैवार सूं कई अबखायां पैदा हुय जावै। पाछला दोय अेक बरसां सूं फारूख बडै कठण दौर सूं गुजर रह्यो है। इण नैनी उमर में उणरै मन में किणी तरै री हीन भावनावां (कॉम्पलेक्स) नीं आय जावै। जे उणनैं रैवण नैं आछी जाग्यां अर चोखा मित्र मिल

जावै तो उणरै मन माथै आछो प्रभाव पड़सी। म्हैं थानैं औ काम व्यक्तिगत रूप सूं सूंप रह्यो हूं। थै इण मामलै में प्रिंसिपल कासलीवाळ सूं ई सम्पर्क करजो। फारूख नैं ई कहीजो कै उणनैं कोई शिकायत हुवै के कोई जरूरत हुवै तो थांसूं मिलै।'

कागद रै अंत में पं. नेहरू श्री पालीवाळ नैं लिखै कै बै फारूख अब्दुल्ला री ओळखाण जयपुर में कोई प्रतिष्ठित मुस्लिम परिवार सूं कराय सकै तो घणो आछो रहसी।

बियां तो आज औ कागद दिल्ली सूं प्रकाशित पण्डित जवाहरलाल नेहरू रा पत्रां में छप भी चुक्यो है। पण फेरूं भी राजस्थान मांय इण कागद रो आपरो अलग ही महत्त्व रैवैला।

घणी तपम्या कीधी थी घणा दान किया जदां श्री साहेब जी सरीसा खावन्द पाया ढोलिया री चाकर उपर सुब नीजर रखाईजै मारै तो आधार श्री खावन्दा रो हे राज रा चरणा लपटी हूं श्री साहेब जी सा दुहो देव नदी धीया खड़ी कीम कर आऊं हजूर मुजरो मारो मानजोजी नीत ऊगते सूर श्री जी सा आपरी तपस्या भारी ने आपनै श्री जळंधरनाथ जी साय कीवी नै राजसथान मैं धीन धीन किया श्री नाथ जी आपरै किले सांमो जोये जीण नै *श्री नाथ जी भसम कर देवै आपरी फतै हुई न आप गढ़ा पधारिया* जीण री खुशी रो पार लिख्यो जावे नहीं हरख हीया में मावे नहीं हीरा मोतियां रो मैहे उठो श्री जी सा मैं तो खानजादा नै ई दरसण दीराईजै नै श्रीनाथ जी रा दरसण कराई नै भेंट कराईजै आप नै राज श्री जळंधरनाथ जी दियो श्री जी सा अेक बार तो फुरमास सुणाई हुती आप री मरजी तो चाकर माथै रखाईजो ई जे आप री फुरमास सुणी नहीं जिण सूं चीन्ता हुवै है श्री जी सा चूक तो मोकळो पड़ेयो है पण आप रो बीरद वीचार नै फुरमास सुणइजे श्री जी सा अरजी में दसकत हुवो वो लीखायो हुवै तो गुनो माफ करावसी हु कांही जाणु नहीं राज छै चतुर परवीण।'

अठै आ बात भी बतावण जोग है कै अभिलेखागार में जयपुर राज्य री सैंकड़ूं पातरियां अर पासवानां रा राजी-खुशी रा पत्र संग्रहीत है। पण किणी व्यक्ति विशेष वास्तै इत्ता विशेषण अर उपमावां सूं लड़ालूंब पत्र देखण मांय नीं आवै।

सांकेतिक लिपि में राजस्थानी रा दो कागद

सांकेतिक लिपि में समाचार भेजण री परम्परा मोकळी पुराणी है। प्राचीन भारत में लिख्योड़ा इसा कागद तो आज उपलब्ध कोनी पण मध्यकाल अर अंग्रेजा री बगत में प्रशासकां अर अधिकारियां रै हाथ सूं सांकेतिक लिपि में लिख्योड़ा इसा गोपनीय कागद आज ई भारत रै अभिलेखागारां में मिलै। आं कागदां में इसा समाचार रैवता जिका नैं सुरक्षा री दीठ सूं गोपनीय राखणो जरूरी हुंवतो। इण भांत कदाच अै कागद गैर आदमी रै हाथ पड़ जावता तो ई वो आंरो अरथ समझ नीं सकतो। संकेत लिपि में लिखणवाळा अर बांचण वाळां कनै संकेतां री कुंजी त्यार रैवती। राजस्थान राज अभिलेखागार, बीकानेर में जयपुर राज में मध्यकाल में काम आवणवाळी सांकेतिक लिपि री सांतरी कुंजी मिलै। राजस्थान में शोध अध्येतावां सांकेतिक लिपि में आप आपरै ढंग सूं मोकळो काम कर्‍यो है। सांकेतिक लिपि मे लिख्योड़ा राजस्थानी भाषा रा दो कागद इण भान्त है–

मध्यकाल में राजस्थान रै रजवाड़ां में घणी भांत री सांकेतिक लिपियां रो उपयोग हुंवतो। सगळी सांकेतिक लिपियां रो वर्णन अठै संभव कोनी। इण वास्तै अंकात्मक लिपि, जिकी आज तांई गुप्त समाचार भेजण सारू काम में लिरीजै, वीं रो वर्णन करूं। मध्यकाल में इण लिपि में लिख्योड़ा कागदां नैं बांधणी कागद कैंवता। अै बांधणी कागद इण कारण कैवीजता कै लिपि नैं अंकां में बंधाय दी ही। दूजी विधियां में भी लिपि में आखर री ठौड़ अंक निर्धारित करनै लिखीजता। जयपुर राज में महाराजा सवाई जयसिंह जयपुर रै बगत में अंकात्मक सांकेतिक लिपि रा तै शुदा अंक इण भांत हा, जिणां नैं आधार बणायनै समाचार भेजीजतो ।

अ ई उ क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ ण

५ ६ ७ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१

ड त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व

८ २२ २३ २४ ४ १ २५ २६ २७ २८ २ २९ ३० ३१ ३२

स ह

३ ३३

स्वरां नैं इण भांत लिखता हा–

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः

५) ५१) ६) ६) ७) ७) ५) ५) ५ो) ६ो) ५ं) ५ः)

मात्रा रै साथै व्यंजनां नैं लिखणै रो तरीको इण भांत हो –

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

९) ९ा) ९ि ९ी ९ु ९ू ९े ९ै ९ो ९ौ ९ं ९ः

ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः
१०) १०ा) ि१० १०ी १०ु १०ू १०े १०ै १०ो १०ौ १०ं १०ः

ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः
११ ११ा ि११ ११ी ११ु ११ू ११े ११ै ११ो ११ौ ११ं ११ः

ऊपर लिख्योड़ी अंक लिपि माथै आधारित अेक कागद इण भांत लिख्योड़ो मिलै–

५ौ) ३०) ३) २४) १०ा) १) २६) ३०) २१) २१ै) २४ ३) ३१ा)
१०) ३०ु) २५) २१ै) २५े) ३) २४ो) ३३) २) ११) १५)
३०ा) २२) ११) ३ु) २७ा) २३ु) २) १ै) २४े) २२े) ३३ै)

इण कागद रो अरथ इण भांत है–

"ओरूं सइद खां नै फरमायो दस लाख रुपयो पेसकस दो हमां गुजरात का सूबा तुम को देते हैं"

इणीं भांत अेक दूजो कागद ओरूं मिलै, जिणमें ऊपरलै कागद दांई अंकां रै साथै अेक अक ओर बधाय दियो गयो है। पण इण बधायोड़ै अंक री कोई सार्थकता नीं हो। औ कागद इण भांत लिख्योड़ो मिलै।

२१) ३३०ा) ३०५ा) १५४ा) ३१३ा) २५) ि२२५) ३०१ा) १५३ा)
१५६) ३१ो) २२१) ३१ै) १२३) १३ा) ५३े) ३०) २१ा) १३२ा) ३०१)
५३) २७१) १५३ु) २३ौ) ३३१) ५१ा) ११८ौ) १४५ै) २२३ा) १३ौ) ११)
३३५ो) १२) २३ा) १३ै) ५१) २७०) २२२ौ) ३०१ा) १५२) ३०)
१२३) ११ा) २७ो) १७२ा) ३०१) २२५) १२) ५१) ३०२) १३ा)
२३५) ३०१) १०२ां) ३२ै) १५३) ३२ो) २२५) ३२ं) १२५)
११२) ११३) २७५) ११३) ३३५) ११३) २१३ौ)

इण कागद रो अरथ इण भांत है–

"महाराजा सलामति राजा जसोत संघ का अे समाचार अब जु मौ (मुं) ह आग छै त्यां को कहो न मानै अब तो राजसंघ रा बेटा रतन अर नाहर खां सो सजोत संघ गड़बड़ है गयो।"